

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182970

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—23—4—4—69—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 83 / S 61 m Accession No. H 2269

Author सोम. राजेश्वर प्रसाद -

Title महान् उपराधो।

This book should be returned on or before the date
last marked below. /

सरस्वती-सिरीज़

स्थायी परामर्शदाता—डा० भगवानदास, पण्डित अमरनाथ झा, भाई परमानंद, डा० प्राणनाथ विद्यालङ्कार, श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार, पं० द्वारिका-प्रसाद मिश्र, संत निहालसिंह, पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे, बाबू संपूर्णानन्द, श्री बाबूराव विष्णुपराङ्कर, पण्डित केदारनाथ मट्ट, ब्योहार राजेन्द्रसिंह, श्री पदुमलाल पुत्रालाल बख्शी, श्री जैनेन्द्र कुमार, बाबू वृन्दावनलाल वर्मा, सेठ गोविन्ददास, पण्डित चेत्रेश चटर्जी, डा० ईश्वरीप्रसाद, डा० रमाशंकर त्रिपाठी, डा० परमात्माशरण, डा० बेनीप्रसाद, डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, पण्डित रामनारायण मिश्र, श्री संतराम, पण्डित रामचन्द्र शर्मा, श्री महेश-प्रसाद मौलवी फ़ाजिल, श्री रायकृष्णदास, बाबू गोपालराम गहमरी, श्री उपेन्द्र-नाथ “अशक्त”, डा० ताराचंद, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार, डा० गोरखप्रसाद, डा० सत्यप्रकाश वर्मा, श्री अनुकूलचन्द्र मुकर्जी, रायसाहब पण्डित श्रीनारा-यण चतुर्वेदी, रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, पण्डित सुमित्रानन्दन पंत, पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’, पं० नन्ददुलारे वाजपेयी, पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी, पण्डित मोहनलाल महतो, श्रीमती महादेवी वर्मा, पण्डित अयोध्या-सिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’, डा० पीताम्बरदत्त बडधवाल, डा० धीरेन्द्र वर्मा, पण्डित रामचन्द्र शुक्ल, बाबू रामचन्द्र टंडन, पण्डित केशवप्रसाद मिश्र, बाबू कालिदास कपूर, इत्यादि, इत्यादि।

रहस्य-रामांच

महान् अपराधी

चालाक अपराधी और चतुर भेदिये के मनोरंजक तथा कौतूहलवर्द्धक दृष्ट की रोचक तथा सनसनीपूर्ण कहानी।

राजेश्वरप्रसादसिंह

यदि आप अभी तक इस सिरीज़ के ग्राहक नहीं बने हैं, तो ग्राहक बनने में शीघ्रता कीजिए; या पुस्तक के पृष्ठभाग पर दी हुई सूची में से अपनी पसंद की पुस्तकें चुनकर अपने स्थानीय पुस्तक-एजेंट से लीजिए ।

खून किसने किया ?

शेरसिंह

मेरा असली नाम शेरसिंह है, लेकिन मेरे अनेक अन्य नाम हैं; जिनकी मुझे समय-समय पर जरूरत पड़ती है। मैं कौन हूँ ? यह आपको अभी मालूम हो जायगा। ज़रा सब्र कीजिए।

दिसम्बर की ५वीं तारीख थी और प्रातःकाल का समय, जब मेरे और रायबहादुर जतीन्द्रनाथ मुकर्जी के बीच वह द्वंद्व-युद्ध आरम्भ हुआ। एक ट्राम पर सवार होकर कई मील इधर-उधर बेमतलब जाकर, एक स्थान पर उतरकर जब मैं एक गली में घुसा तो जीवन या मरण की समस्या एक बार फिर मेरे सामने अचानक आ उपस्थित हुई।

मुझे आश्चर्य हुआ, यह मानना पड़ेगा। खुफिया पुलिस के प्रत्येक व्यक्ति को मैं जानता था और मुझे पूरा विश्वास था कि सरकार के उस प्रशंसनीय मुहकमे में कोई ऐसा नहीं, जो मेरे दैनिक जीवन के भेदों से परिचित हो सके या इस बात का पता लगा सके कि मैं ही हूँ वर्तमान युग का वह सर्वश्रेष्ठ खल-नायक, जो शेरसिंह के नाम से मशहूर है। इसलिए, जब मैंने सादे लिबास में दो कास्टेबिलों के साथ एक सब-इंस्पेक्टर को अपनी ओर आते देखा, तब मैं तुरन्त ताड़ गया कि इस चाल के पीछे किसी अन्य व्यक्ति का हाथ है। समय नहीं के बराबर था, फिर भी मैंने देखा कि उधर उस मकान की एक खिड़की का पर्दा हटा और एक व्यक्ति ने सिर निकाला। मैं समझ गया कि अगर इस बार मैं बच निकला, तो जीवन के इस विचित्र खेल में आगे मुझे बड़ी हौशियारी से भाग लेना होगा। खिड़की से झाँकनेवाले उस व्यक्ति को मैं फौरन पहचान गया। रायबहादुर महोदय ही तो थे। उनके काले बालों में कुछ-कुछ सफेदी तो जरूर आ चली थी, लेकिन उनकी सुस्त-शक्ल ज्यों की त्यों बनी रही—

वे ही तेज आँखें, वही लम्बी नाक, वही सुदृढ़ मुख, वही लम्बा चेहरा। खुफिया पुलिस के विभाग में वे पहले सुपरिन्टेंडेंट के पद पर आरूढ़ थे और उनकी कार्य-कुशलता से प्रसन्न होकर सरकार ने उन्हें रायबहादुर का खिताब दिया था। वे ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिनसे मैं और मेरे सहयोगी डरते थे। कई वर्ष पहले जब उन्होंने स्वेच्छा से अपने पद से इस्तीफा दे दिया था, तब हम लोगों ने बड़ी खुशियाँ मनाई थीं। आज जब मुझे यह ज्ञात हुआ कि अपना पुराना पेशा उन्होंने पुनः ग्रहण कर लिया है, तब मेरे हृदय में उनके प्रति जो घृणा दबी पड़ी थी वह फिर उठ खड़ी हुई। उसी समय मैंने इरादा कर लिया कि कभी किसी तरह अगर वे मेरी पकड़ में आगये तो उन्हें जीता न छोड़ूँगा।

गली छोटी थी, और ३०-४० गज की दूरी पर एक सड़क थी, जिस पर साधारणतया भीड़-भाड़ रहती थी। लेकिन दिन अभी ज्यादा नहीं चढ़ा था और कम लोग आ-जा रहे थे। सदैव मेरा यह सिद्धान्त रहा है कि अपनी रक्षा करने का सबसे अच्छा ढंग यह है कि तुरन्त स्वयं ही अप्रक्रमण कर दिया जाय। सब-इंस्पेक्टर मुझे गिरफ्तार करने के लिए मेरे सामने पहुँचा ही था कि मैंने उसके ऊपर गोली चला दी, जो उसके दाहने कंधे को पार कर गई। वह लड़खड़ाया और करीब था कि ज़मीन पर ढेर हो जाय कि उसके दोनों साथियों ने लपककर उसे सँभाल लिया। सब-इंस्पेक्टर को वे एक दीवार के सहारे खड़ा करने ही में लगे थे कि मैं दौड़कर एक दूसरी गली में गायब हो गया। सामने ही एक डाकखाना था। बड़े इत्मीनान से मैंने उसमें प्रवेश किया।

उस समय डाकखाना बन्द था, केवल तार की खिड़की खुली थी। मेज़ के सामने बैठे हुए तारबाबू तार का खटका खटखटा रहे थे। एक व्यक्ति खिड़की के सामने खड़ा था। एक बार मेरी ओर देखकर वह अन्दर भाँकने लगा। खिड़की पर तार के सादे फार्मों का ढेर रक्खा हुआ था। दो-तीन फार्म लेकर मैं उधर पड़ी हुई मेज़ पर जा बैठा। रसीद लेकर वह व्यक्ति चला गया। तुरन्त उठकर मैं वेष बदलने लगा। मैंने ओवर-कोट उतारकर पलट डाला जो काले रंग से बदलकर भूरे रंग का हो गया, ढीला पायजामा ऊपर चढ़ा लिया और उसके नीचे छिपी हुई धोती बाहर

निकाल ली, किस्ती-नुमा टोपी सिर से उतारकर जेब में डाल ली, ऊपर चढ़ी हुई सुन्दर मूछें उतार डालीं और आँखों पर चश्मा लगा लिया। शीघ्रता से अपने एक साथी के नाम मैंने एक तार लिखा और खिड़की के सामने पहुँच गया। मैंने यह सब कुल आठ मिनट में कर डाला।

गली में शोर मचा हुआ था। तारबाबू का ध्यान गली की ओर लगा था। तार और एक रुपया उसके सामने रखकर, मैंने कहा—
क्या बात है? कहीं आग लग गई है क्या?

“मुझे पता नहीं!”

तार देखकर, रुपया बजाकर, फार्म, टिकट और बाकी पैसे उसने मेरे सामने खिसका दिये। टिकट चिपकाकर मैंने तार फिर उसके सामने रख दिया। रसीद पाकर मैं निश्चिन्त भाव से गली में उतरा और सड़क की ओर चला। सड़क पर एक छोटी-सी भीड़ जमा थी। एक एम्बूलेंस कार तेज़ी से दौड़ती हुई आ पहुँची। मैं धीरे धीरे टहलता हुआ एक टैक्सी के समीप पहुँच गया।

“क्या पानी बरसेगा?” आकाश में उमड़ते हुए बादलों की ओर देखकर मैंने कहा।

“रंगत तो नहीं मालूम होती, हुज़ूर!” ड्राइवर ने उत्तर दिया।

“तब ईडन गार्डन चलो,” मोटर में बैठते हुए मैंने कहा।

“बेहतर है।” कार चल पड़ी।

ट्राम और बसों पर सवार होकर मैं घंटों इधर-उधर घूमता रहा। फिर एक होटल में खाना खाकर और एक टैक्सी पर सवार होकर मैं तीसरे पहर देवीगंज पहुँचा। देवीगंज शहर से कई मील की दूरी पर एक शान्त सुहल्ला है, जहाँ शान्त जीवन व्यतीत करनेवाले थोड़े से लोगों के मकान हैं।

पंडित काशीनाथ पाण्डेय के नाम से मैंने यहाँ एक मकान किराये पर ले रक्खा था। एक अर्धेड़ सेवक और एक युवती सेविका के अतिरिक्त यहाँ मेरे घर में और कोई न था। सेवक था—गंगाराम दुबे, और सेविका थी—उसी की भतीजी सावित्री। दोनों घर की देख-भाल और मेरा सारा काम-काज करते थे। गंगाराम उस समय बाग में काम कर रहा था। उसने सिर झुकाकर चुपचाप मेरा स्वागत किया। सावित्री ने

भट बैठक का दरवाजा खोला। जब मैं कमरे में बैठ गया, तब अन्दर आकर उसने पूछा—चाय ले आऊँ ?

“हाँ।”

“कुछ खाइएगा ?”

“दो अण्डे उबाल लेना।”

“बहुत अच्छा।”

वह चली गई। कैसी विचित्र है सावित्री ! कौतूहल तो जैसे उसे कभी छू नहीं पाता। मेरी सारी विचित्रताये वह चुपचाप प्रसन्न भाव से स्वीकार कर लेती है। कभी कोई प्रश्न करने की आवश्यकता उसे नहीं होती। फिर भी उसे लेकर कभी-कभी मुझे अपने मन में विचित्र बेचैनी का आभास मिलता है।

थोड़ी देर के बाद वह चाय की ट्रे लेकर आई और उसे उधर पड़ी हुई गोल मेज पर रखकर चुपचाप खड़ी होगई। मैं उसकी ओर ताकता रह गया। आग के सामने रहने के कारण उसका चेहरा सुर्ख हो गया था। सुन्दरता उसके सुगठित शरीर से फूटी पड़ती थी। आज मुझे ज्ञात हुआ कि वह असाधारण सुन्दरी है।

“मेरी गैरहाजिरी में यहाँ कोई बात तो नहीं हुई सावित्री ?”

“जी नहीं।”

“कोई आया तो नहीं था ?”

“किराया माँगने के लिए एक आदमी आया था। वह आपके शहर का पता पूछता था।”

“बता दिया तुमने ?”

“मुझे मालूम कहाँ है ?”

मैं आँखों से चश्मा उतार कर साफ़ करने लगा। चेहरा देखकर मनोभावों का पता लगाने में मैं दक्ष हूँ। लेकिन उस समय उस लड़की ने मुझे परास्त कर दिया।

“अगली दफ़ा शहर जाने से पहले तुम्हें पता बतला जाऊँगा। मेरा आसमानी रंगवाला सूट निकाल दो। मैं क्लब जाऊँगा।” उठकर मेज के सामने बैठकर मैं चाय पीने लगा।

“रात को क्या खाइएगा ?”

“यह बात मैं तुम्हारी मर्जी पर छोड़ता हूँ। जो कुछ जी में आये पका लेना।”

वह चुपचाप चली गई। चाय पी चुकने के बाद मैं ऊपर गया। मेरा शयनागार सफ़ाई से चमक रहा था। सारी चीज़ें कायदे से सजी हुई थीं। आसमानी रंग का सूट एक ओर ठीक ढंग से तहाया हुआ रक्खा था।

कपड़े बदल कर मैं घर से निकला और क्लब की ओर चला। क्लब मेरे घर की बगल में ही था। मेरे घर और क्लब के बीच कोई दीवार न थी। कुछ वृक्ष और झाड़ियाँ थीं, जो दोनों को अलग करती थीं।

क्लब के दालान में क्लब के मंत्री से भेंट हुई।

“नमस्कार !”

“नमस्कार !”

“शतरंज खेलिएगा, मिस्टर पाण्डेय ?”

“जरूर। इसी लिए तो मैं आया हूँ।”

“उधर उस कमरे में एक साहब बैठे हुए हैं। उन्हें एक अच्छे खिलाड़ी की तलाश है।”

मैंने उस कमरे में प्रवेश किया। सामने स्वयं रायबहादुर जतीन्द्रनाथ मुकर्जी एक आरामकुर्सी पर आसीन थे—वे ही जो अभी कुछ घंटे पहले मुझे गिरफ़्तार करने के चक्कर में थे।

जतीन्द्रनाथ मुकर्जी

दो कारणों से मैंने खुफ़िया पुलिस में अपने प्रतिष्ठित पद से इस्तीफ़ा दे दिया था। एक कारण यह था कि उच्च अधिकारियों ने एक ऐसा अन्याय किया था जिससे मेरे अधिकांश सहयोगी उत्तेजित हो उठे थे, यद्यपि उससे मेरी कोई व्यक्तिगत हानि नहीं हुई थी। दूसरा कारण यह था कि दूर के मेरे एक सम्बन्धी का देहान्त हो गया था और मैं उनकी बहुमूल्य सम्पत्ति का एकमात्र स्वामी बन गया था। इस तरह मुझे

आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त हो गई थी। अपनी सम्पत्ति का समुचित प्रबंध कर चुकने के बाद मैं भ्रमण के निमित्त विदेश चला गया था। तीन वर्ष तक योरोप और अमेरिका में भ्रमण करने के बाद जब मैं स्वदेश वापस आया तब मेरा मन अपने पुराने पेशे के लिए बेचैन हो उठा। मुझे स्पष्ट ज्ञान हो गया कि खुफिया-विभाग का अपराधी-वर्ग पर अब वैसा आतंक नहीं रहा, जैसा मेरे जमाने में क्रायम हो गया था। कितनी ही भयानक हत्याओं और भीषण डकैतियों की समस्यायें ज्यों-की-त्यों पड़ी हुई थीं। मैं उन समस्याओं में एक बाहरी व्यक्ति की हैसियत से दिलचस्पी लेने लगा। उन समस्याओं के सम्बन्ध में मुझे जो कुछ ज्ञात हुआ, वह या तो समाचारपत्रों के द्वारा, या आर० एन० कौल के इशारों से। मिस्टर कौल खुफिया-विभाग में मेरे रिक्त पद पर आरुढ़ हुए थे। धीरे-धीरे मैं एक दिन निश्चित परिणाम पर पहुँचा लेकिन मैंने किसी से उसका जिक्र नहीं किया क्योंकि मैं जानता था कि खुफिया-विभाग का कोई मुझसे सहमत न हो सकेगा। मैंने यह राय क्रायम की कि उपर्युक्त जर्मन एक व्यक्ति ने किये हैं या एक ऐसे गोल के व्यक्तियों ने किये हैं जिनका नेता एक उस्ताद मुजरिम है। बस, मैं उस उस्ताद मुजरिम की तलाश में लग गया। थोड़े ही दिनों के बाद मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि मैं ठीक रास्ते पर चल रहा हूँ।

तीन बारदातें ऐसी थीं जो एक ही व्यक्ति-द्वारा की गई जान पड़ती थीं। पहली घटना यह थी कि प्रसिद्ध जौहरी मेसर्स लालचन्द हीराचन्द की दूकान में डाका डाला गया, बहुत-से बहुमूल्य जवाहिरात उड़ा दिये गये और चौकीदार गोली से मार डाला गया। दूसरा मामला यह था कि एक राजा का विश्वासपात्र सेवक कई लाख रुपये लेकर एक-ड्रेन से सफ़र कर रहा था। रुपये उससे छीन लिये गये और उसे गोली मार दी गई। कई मास की चिकित्सा और सेवा-शुभ्र्वा से वह अच्छा तो हो गया लेकिन स्वस्थ हो जाने पर वह उस डाके का ठीक-ठीक वर्णन न कर सका। और तीसरी घटना यों थी कि सेठ प्रेमदास गोविन्ददास के घर पर डाका डाला गया, उनके बहुमूल्य जवाहिरात लूट लिये गये और स्वयं उन्हें ज़ख्मी कर दिया गया। सेठ जी आक्रमणकारी के

सम्बन्ध में कुछ बतला न सके, क्योंकि उनके ऊपर अँधेरे में हमला हुआ था। अन्य घटनायें भी थीं जिनका सम्बन्ध मेरी समझ में उपर्युक्त घटनाओं से हो सकता था, किन्तु इस विषय में मुझे किंचित् मात्र संदेह न था कि उपर्युक्त तीनों घटनाओं की योजनायें एक ही व्यक्ति के मस्तिष्क की उपज थीं। मैं इस व्यक्ति की खोज में लग गया और शीघ्र ही वह दिन भी आ पहुँचा जब मैंने उसका पता लगा लिया। इस बात की आवश्यकता नहीं कि मैं उन सारी बातों का विस्तारपूर्वक वर्णन करूँ जिनके द्वारा मुझे अपने प्रयत्न में सफलता मिली। इतना कह देना काफी होगा कि कुछ सप्ताह की निगरानी के बाद मुझे विश्वास हो गया कि मोहनलाल नामक चमड़े के व्यापारी का उपर्युक्त बार-दातों से किसी न किसी रूप में सम्बन्ध है। मैंने पता लगाया कि वह अपने कारबार की ओर ध्यान नहीं देता, लेकिन आराम से रहता है, महीनों शहर से गायब रहता है और उस मकानवाले को भी पता नहीं दे जाता जिसके मकान में वह किरायेदार है। कई साल से वह उस मकान में रहता था लेकिन मकान-मालिक को उसके सम्बन्ध में कोई विशेष जानकारी न थी और भी कई बातें मालूम हुईं जिनसे मेरे संदेह की पुष्टि हो गई। मैंने सारी बातें मिस्टर कौल को बतलाईं और यह निश्चय हुआ कि उसे गिरफ्तार किया जाय।

उस प्रस्तावित गिरफ्तारी की कार्रवाई जैसी भद्दी और बेढंगी रीति से की गई, वैसी कभी मेरे देखने-सुनने में नहीं आई थी। जिस सब-इंस्पेक्टर को कौल ने अभियुक्त को गिरफ्तार करने के लिए नियुक्त किया था वह नियत समय से एक घंटा बाद दो कांस्टेबलों के साथ उस गली में पहुँचा जिसमें उस संदिग्ध व्यक्ति की दूकान थी। उसने अभियुक्त को ललकारा और उसे तुरन्त ज्ञात हो गया कि कैसे व्यक्ति से उसका पाला पड़ा है। अभी उसके मुख से केवल दो चार शब्द ही निकले थे कि कंधे में गोली खाकर वह लड़खड़ाया। किसी तरह उसे सँभालकर उसके साथी अभियुक्त को खोजने लगे लेकिन उसका कहीं पता न था। मोहनलाल ऐसी सफ़ाई से गायब हुआ कि उसका कोई चिह्न, कोई सुराग न मिल सका। ऐसा जान पड़ा जैसे किसी असाधारण शक्ति के द्वारा

वह इस पृथ्वी ही से अदृश्य हो गया हो । उस प्रातःकाल को उस असाधारण व्यक्ति के आश्चर्यजनक कौशल तथा चातुर्य की यथेष्ट अभिव्यक्ति हुई । जब उसके हिसाब-किताब की जाँच की गई तब उसमें किसी जायज सौदे का वर्णन नहीं मिला । जो व्यक्ति उसकी दूकान में काम करता था वह एक ईमानदार आदमी साबित हुआ लेकिन अपने मालिक के सम्बन्ध में वह इससे अधिक नहीं बतला सका कि नई एजेंसियाँ लेने के लिए वह अक्सर बाहर जाया करता है । बैंक में मोहनलाल के नाम इतने रुपये जमा थे कि उसका हिसाब साफ़ किया जा सके ।

छः महीने के मेरे कठिन परिश्रम पर पानी फिर गया । मेरा चित्त खिन्न और उदास हो गया । इस दुःखद प्रसंग की स्मृति अपने मस्तिष्क से मिटा देने के लिए मैं घंटों इधर-उधर घूमता रहा । तीसरे पहर इसी अभिप्राय से मैं शहर से दूर स्थित 'इंडियन क्लब' में जा उपस्थित हुआ । शतरंज खेलने का मुझे बड़ा शौक है और इसी खेल में मैं सिद्धहस्त हूँ । क्लब के मंत्री ने एक स्थानीय खेलाड़ी काशीनाथ पाण्डेय से मेरा परिचय कराया । बिसात बिछी, मोहरे लगे और हम दोनों तन्मय होकर खेलने लगे । पाण्डेय कम बोलता था लेकिन मनहूस भी न था । उसकी उम्र ४० वर्ष की जान पड़ती थी और वह शातिर खेलाड़ी था । हर चाल वह बहुत सोच समझकर चलता था । उसका खेल बड़ा सुव्यवस्थित था । मेरी कोई चाल ऐसी न थी जिसे वह पहले से न ताड़ जाता हो । कुल छः बाजियाँ हुईं । तीन बाजियाँ मैं जीता, तीन वह । इसके बाद हम दोनों बाहर निकलकर मैदान में टहलने लगे । जब हम उधर उन पेड़ों और झाड़ियों की भुर्मुट के समीप पहुँचे, तब पाण्डेय ने मुझे वह पगडंडी दिखाई जो उसके घर की ओर जाती थी । एक कुत्ता एक दूसरी पगडंडी से वहाँ आ निकला और किसी चीज़ को देखकर बड़े उत्तेजित भाव से भौंकने लगा । कौतूहलवश हम झाड़ियों में घुस पड़े । पाण्डेय ने चौककर कुछ कहा । मैं तुरन्त उसके समीप पहुँचा । सामने ज़मीन पर एक आदमी की लाश पड़ी हुई थी । मृतक व्यक्ति चित्त पड़ा था और उसके माथे में एक नीला सूराख था । लाश अभी गर्म थी । संयोगवश मैं उसे तुरन्त पहचान गया । मृतक व्यक्ति था उन दो

कांस्टेबलों में से एक, जो प्रातःकाल उस सब-इंस्पेक्टर के साथ मोहनलाल को गिरफ्तार करने के लिए भेजे गये थे ।

सावित्री

पाँचवीं दिसम्बर को तीसरे पहर मेरे मालिक अकस्मात् घर लौट आये । बहुत दिनों से वे बाहर थे । नित्य प्रातःकाल से संध्याकाल तक मैं बड़ी आतुरता से उनकी प्रतीक्षा करती थी और उनके वापस आने के निमित्त असीम मनोयोग से प्रार्थनायें करती थी । पिछली रात को जब मैंने उन्हें स्वप्न में देखा था, तब मुझे विश्वास हो गया था कि अब वे शीघ्र ही अवश्य लौट आयेंगे । ऐसी मनोदशा में जब मैंने उन्हें पहले-पहल फाटक पर देखा तब मेरा दिल खुशी से उछल पड़ा और मेरा शरीर विकटरूप से आन्दोलित हो उठा । अगर वे उसी समय मुझे देख लेते तो सब कुछ तुरन्त समझ जाते । जब तक वे बरामदे में पहुँचे तब तक मैंने अपने को क्राबू में कर लिया । उस समय उन्होंने सदैव की भाँति मुझे एक साधारण सेविका से अधिक कुछ न समझा होगा ।

कपड़े बदलकर जब वे क्लब चले गये तब उतारे हुए कपड़े तहाकर रखने के लिए मैं उनके शयनागार में गई । मैंने देखा कि उन्होंने वे कपड़े एक दराज में रख दिये हैं और दराज का ताला बन्द कर दिया है । इस नई बात ने, उन दूसरी बातों से मिलकर, जिनका पता पहले मिल चुका था, मुझे विचारमग्न कर दिया । दिन-प्रति-दिन मुझे इस बात का आभास मिलता जा रहा था कि मेरे मालिक के जीवन-क्रम में कोई न कोई ऐसी बात अवश्य है जिसे वे संसार से गुप्त रखना चाहते हैं । इस बात का एक और प्रमाण उस समय मिला, जब मैंने देखा कि सबसे ऊपरवाले दराज में, जिसे उन्होंने एक टाई निकालने के लिए खोला था, उन्होंने एक छोटा, गोली से भरा हुआ रिवाल्वर छिपा रक्खा है । पहले यह रिवाल्वर वहाँ न था । एक व्यापारी जो शान्तभाव से व्यापार करता है, हर घड़ी रिवाल्वर लिये नहीं घूमता । जब मैं उसे हाथ में लेकर देखने लगी तब मेरा हृदय उत्तेजना से धड़कने लगा और मैं अपने मालिक की

अन्यमनस्कता की बात भूल गई। मैं भूल गई कि यद्यपि मैं असुन्दर नहीं हूँ और अनेक व्यक्ति मुझसे प्रेम पाने की अभिलाषा रखते हैं किन्तु वे कभी मेरी ओर आकर्षित नहीं हुए। स्वयं आगे बढ़ने पर मुझे अब भी विजय प्राप्त करने की सुदृढ़ आशा थी। किन्तु इस तरह मैं कभी किसी पुरुष की ओर नहीं बढ़ी थी। मैं समझती थी कि उन्होंने उदासीन और अरसिक बने रहने की आदत डाल ली है। लेकिन मुझे विश्वास था कि यदि मैं उन्हें उस अग्नि से परिचित करा सकी, जो मेरे अन्तर्देश में प्रज्वलित थी, तो उन्हें कृत्रिम उदासीनता के पर्दे से बाहर निकलकर मुझे अपना ही पड़ेगा।

अभी मैं उसी कमरे में बन्द दरवाज़ की ओर देखती हुई खड़ी थी कि सहसा आश्चर्य से चकित रह गई। एक व्यक्ति ने एकाएक कमरे में प्रवेश किया। वह दुबला-पतला था, उसके गाल पिचके थे, आँखें गढ़ों में धँसी थीं और मूँछें वेढ़गी थीं। मैं आसानी से डर जानेवाली स्त्री नहीं हूँ। लेकिन जब उसने अन्दर आकर दरवाज़ा बन्द कर लिया, तब मुझे सचमुच भय का अनुभव हुआ।

“आप क्या चाहते हैं?” मैंने तीव्र स्वर में कहा। “यहाँ आ जाने की कैसे आगने हिम्मत की?”

वह मुझे गौर से देखने लगा। यह स्पष्ट हो गया कि उसके सम्बन्ध में मेरा पहला अनुमान गलत था। यह व्यक्ति मेरे उन प्रेमियों में से नहीं था जिनसे पीछा छड़ाना अकसर कठिन हो जाता था।

“सुनो,” उसने कहा, “मैं पुलिस का आदमी हूँ। तुम समझदार लड़की मालूम होती हो। मेरे प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर दो। मेरे काम में दखल मत दो। तुम्हें इनाम मिलेगा।”

कई क्षणों तक मैं निस्तब्ध खड़ी रही। मेरा ख्याल है कि मेरे चेहरे का रंग नहीं बदला, और मेरे हृदय में जो भय था वह भी प्रकट नहीं हुआ। मैं विचारों में मग्न खड़ी रही। मालिक खतरे में हैं। कैसे उनकी सहायता करूँ? कैसे उनकी सहायता कर सकती हूँ?

“करीब एक घंटा हुआ, तुम्हारे मालिक यहाँ वापस आये थे” उसने फिर कहा, “और अब क्लब गये हैं। मैं वे कपड़े चाहता हूँ जो वे उस समय पहने हुए थे, जब वे घर वापस आये।”

“आपने कैसे जाना कि उन्होंने कपड़े बदल डाले?” मैंने प्रश्न किया।

“मैंने उन्हें अन्दर आते और बाहर जाते देखा था,” उसने शान्त-भाव से उत्तर दिया। “उनका शयनागार यही है न?”

“हाँ !”

“तब वे कपड़े यहीं होंगे। कहाँ हैं वे कपड़े?”

“मैं नहीं जानती,” मैंने उत्तर दिया। “मैं खुद ढूँढ़ रही थी। गुसलखाने में देखने जा रही थी कि कहीं वहाँ न उतार दिये गये हों।”

मुड़कर उसने गुसलखाने में प्रवेश किया। कुछ सेकन्ड ही वह वहाँ रहा; लेकिन इस बीच में टाईवाला दराज़ खोलकर मैंने रिवाल्वर निकाला और उसे अपनी साड़ी में छिपा लिया।

“वहाँ नहीं है,” लौटकर उसने कहा। “अब मैं दराज़ों की तलाशी लूँगा। तब तक तुम यहीं रहो।”

मैंने कोई आपत्ति नहीं की। शीघ्रता से उसने ऊपर के दोनों दराज़ देख डाले। जब उसने तीसरे दराज़ पर हाथ लगाया, तब उसे बन्द पाकर वह खीझ उठा।

“इसकी कुंजी तुम्हारे पास है?”

“नहीं,” मैंने उत्तर दिया। “मालिक अपने साथ लेते गये।”

बिना किसी पसोपेश के जेब से एक औज़ार निकालकर उसने उस दराज़ का ताला तुरन्त खोल डाला और उसमें बन्द चीज़ों की जाँच करने लगा। वह प्रायः चुप रहनेवाला व्यक्ति जान पड़ता था लेकिन जाँच करते समय वह कुछ भुनमुनाता रहा। फिर वह तन कर खड़ा होगया। उसके चेहरे पर विजय की मुस्कान थी।

“तुम्हारे मालिक कब लौटेंगे?”

“मैं नहीं कह सकती,” मैंने उत्तर दिया। “वहाँ वे कुछ देर खेलेंगे, कुछ देर गप-शप करेंगे। मुमकिन है, सात बजे तक वापस आ जायें।”

संतोष के भाव से उसने सिर हिलाया। फिर उसकी आँखें मेरे चेहरे पर जम गईं। उसके चेहरे पर मैंने वह भाव देखा जिसे देखने की मैं आदी हो गई थी। वह मेरे निकट आ गया।

“अपने मालिक को पसन्द करती हो ?” उसने पूछा ।

“उससे बहुत कम भेंट होती है,” मैंने उत्तर दिया । “वे मुझे तंग नहीं करते ।”

“क्या तुम जानती हो कि तुम कितनी सुन्दर हो ?” ज़रा और निकट आकर उसने कहा ।

“उस अजनबी से मैं सतर्क रहती हूँ जो मुझसे ऐसी बातें कहता है,” एक कदम पीछे हटकर मैंने उत्तर दिया ।

वह हँस पड़ा ।

“यह लो, और” पाँच रुपये का एक नोट मेरी ओर बढ़ाकर उसने कहा । “तुम बड़ी होशियार लड़की हो और तुमने मुझे वह सब बतला दिया जो मैं जानना चाहता था ।”

“यह सब मुझे पसन्द नहीं,” उसका हाथ हटाकर मैंने कहा ।

मैं नहीं समझती थी कि वह ऐसे दुस्साहस से काम ले सकेगा । जीवन में पहली बार एक पुरुष ने मेरा चुम्बन किया । ऐसा भयानक क्रोध उस समय मेरे हृदय में उसके प्रति उमड़ पड़ा, जिसका वर्णन करना इस समय भी मेरे लिए असम्भव है । इस भय से कि मेरे हृदय में उमड़ती हुई भयंकर बातों का आभास पाकर वह कहीं सचेत न हो जाय, मैंने चुप रहना ही उचित समझा । बड़ी लापरवाही से वह कमरे से बाहर निकला और कुछ मिनट में बाग़ में पहुँच गया । अपने मालिक की दूरबीन उठाकर मैंने ध्यान से देखा । वह भाड़ियों की ओर चला जा रहा था । पंद्रह मिनट तक मैं रुकी रही । फिर मैं चुपके से बाहर निकल आई और एक दूसरे मार्ग से धीरे-धीरे भाड़ियों की ओर चली । उधर एक पेड़ के सहारे सीने पर हाथ रखे हुए वह खड़ा था । मैं उसके निकट पहुँच गई । दबे पाँव, बिलकुल दबे पाँव चलने की मैं आदी हूँ । मैं उसके बिलकुल निकट पहुँच गई । लेकिन वह न तो मुझे देख सका और न मेरी आहट पा सका । मैं भावुक नहीं हूँ, और मेरा निश्चय सुदृढ़ था । यह विचित्र बात है कि उन चन्द क्षणों की छोटी-छोटी बातों की स्मृतियाँ भी मेरे मस्तिष्क में सुरक्षित हैं । तेज़ हवा चल रही थी और आकाश में बादल उमड़ रहे थे । वृक्षों की सरसराती हुई डालें ज़मीन पर लोट

पड़ने के लिए मचल रही थीं। ऊपर किसी डाल पर बैठी हुई एक चिड़िया गा रही थी। मुझे याद है कि उस उत्तेजना की दशा में मैं उस मधुर गान का भावार्थ समझने का प्रयास करने लगी। वह जीवन के उल्लास से विभोर होकर गा रही थी। फिर मेरी आँखों के सामने जूरी और जज से विभूषित एक अदालत का दृश्य आ उपस्थित हुआ। मैं एक क्षण के लिए काँप उठी। फिर मुझे उस घृणित आलिंगन तथा चुम्बन की बात याद आगई। मालिक की सूरत मेरे सामने आई, और मैं मुस्कराई। अगर वे मेरे मन की बात जान पाते, तो मुझे कितना सुख होता ! एक दिन वे अवश्य जान लेंगे

मैं उस पुलीसवाले के दस्तान निकट पहुँच गई थी कि शायद उसे मेरी साँस लगी अथवा उसे अज्ञात रूप से मेरी शारीरिक उपस्थिति की अनुभूति हुई। वह तेज़ी से मुड़ा और आँखें फाड़कर मेरी ओर देखने लगा। वह खिसक जाता लेकिन जैसे उसे लकवा मार गया। वह खड़ा का खड़ा रह गया। मैंने तुरन्त गोली चला दी जो उसके मस्तक में घुस गई। लड़खड़ाकर वह ज़मीन पर ढेर हो गया। मैं एक क्षण खड़ी रही फिर घर लौट चली। मेरा काम पूरा हो गया।

शेरसिंह

यह तो मानना पड़ेगा कि क्लब में जब मेरा उस व्यक्ति से सामना हुआ, जो मेरा पुराना बैरी था और जो अभी चन्द घंटे पहले मुझे गिरफ्तार कराने का विफल प्रयत्न कर चुका था, तब मुझे कुछ धक्का ज़रूर लगा लेकिन रायबहादुर जतीन्द्रनाथ मुकर्जी के साथ शतरंज खेलते समय मेरे मन में सन्देह या भय किंचित् मात्र भी न था। मैंने समझ लिया कि यहाँ उनका आगमन केवल संयोगवश हुआ है; इस स्थान के सम्मानित तथा निर्दोष निवासी, काशीनाथ पाण्डेय से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। बड़ी शान्ति और कुशलता से मैंने शतरंज खेला। मेरी शान्ति तो उस समय भंग हुई जब हम मैदान में टहलते हुए झाड़ियों के समीप पहुँचे और वहाँ वृक्षों की झुमट में एक लाश पड़ी देखी। हम दोनों उसे तुरन्त पहचान गये। वह लाश थी उस सादी वर्दीवाले सिपाही

की जो उस अभागे सब-इंस्पेक्टर के साथ प्रातःकाल मुझे गिरफ्तार करने आया था। लेकिन कोई बात मेरे मुख से ऐसी नहीं निकली जिससे प्रकट होता कि मैं उसे पहचानता हूँ।

दो-चार क्षणों के बाद जब आश्चर्य का भाव जाता रहा तब मुकर्जी ने स्वभावतः मामला अपने हाथ में ले लिया। वह यह देखने के लिए कि कहीं कोई अस्त्र तो नहीं है इधर-उधर खोजने लगे। कोई अस्त्र वहाँ नहीं मिला। तब उन्होंने मुझसे अनुरोध किया कि मैं किसी आदमी को सहायता के लिए बुलाऊँ। यह जानते हुए भी कि गंगाराम एक काम से बाहर गया है, मैंने उसे व्यर्थ आवाज़ दी। क्लब में काम करनेवाला एक मजदूर उधर आ निकला। उसकी सहायता से लाश उठाकर हम बाग में बनी हुई उस कोठरी में ले गये जहाँ मेरे बाग में काम आनेवाले औज़ार रक्खे जाते थे। लाश कोठरी में रख दी गई। मुकर्जी ने उसका दरवाज़ा बन्द करके ताला लगा दिया। इसके बाद उन्होंने टेलीफोन से पुलिस को इत्तला दी और एक डाक्टर को बुलाया।

“यह सब कार्रवाई करने के लिए आप मुझे क्षमा करें, मिस्टर पाण्डेय!” उन्होंने कहा। “बात यह है कि कभी खुफ़िया पुलिस से मेरा कुछ सम्बन्ध था।”

“क्षमा करने की इसमें कोई बात नहीं, जनाब,” मैंने उत्तर दिया। “मेरे लिए तो यह बड़ी अच्छी बात है कि आप यहाँ मौजूद हैं। यह आत्म-हत्या का मामला है!”

“इसमें मुझे सन्देह है। इसके अलावा अगर यह आत्म-हत्या का मामला होता, तो हथियार भी कहीं जरूर मिलता। चूँकि यह घटना आपकी हद में हुई है, इसलिए अगर मैं आपके नौकरी से दो-चार प्रश्न करना चाहूँ तो शायद आप बुरा न मानेंगे?”

“नहीं, नहीं, मैं बुरा क्यों मानूँगा?” मैंने कहा। “आप जो कुछ पूछना चाहें शौक से पूछें। यहाँ मैं बहुत कम आता हूँ, इसलिए इस घर में मेरा केवल एक सेवक है और एक सेविका। सेवक अपने एक सम्बन्धी के यहाँ गया है। सेविका अन्दर मौजूद होगी।”

मैं उन्हें मकान के अन्दर लिवा ले गया। सावित्री रसोई-घर में काम कर रही थी लेकिन मेरे बुलाने पर वह तुरन्त आ उपस्थित हुई। सदैव की भाँति वह बहुत साफ़-सुथरी थी।

“हम यह जानना चाहते हैं,” मुकर्जी ने पूछा। “आज यहाँ तीसरे पहर कोई आया था या नहीं।”

“नहीं, महाशय,” सावित्री ने उत्तर दिया। “सिवाय एक लड़के के, जिससे मैंने कुछ सामान मँगवाया था और यहाँ कोई नहीं आया।”

“यहाँ आस-पास तुमने किसी को देखा था?”

“किसी को नहीं।”

“पिस्तौल की-सी कोई आवाज़ तुमने सुनी थी?”

“नहीं, महाशय।”

“तुम खुद घर से बाहर कहीं गई थी?”

“नहीं,” सावित्री ने सिर हिलाकर उत्तर दिया। “घर से बाहर जाने का मुझे कोई काम नहीं पड़ा। मैं तो रसोई-घर में व्यस्त थी।”

दो-चार अन्य अनावश्यक प्रश्न करने के बाद मुकर्जी ने उसे जाने की आज्ञा दी। शीघ्र ही एक डाक्टर के साथ पुलीस आ पहुँची। जब वे मौक़े की जाँच करने गये तब मैं उनके साथ नहीं गया। उनके जाने के बाद मैं तुरन्त ऊपर गया। टाईवाला दराज़ खोलकर मैंने देखा। रिवाल्वर उसमें नहीं था। आखिरी दराज़ खोलकर मैंने कपड़ों की तलाश की। वे भी ग़ायब थे। तब मुझे ज्ञात हुआ कि एक नवीन समस्या फिर मेरे सामने अनायास आ उपस्थित हुई है। कोई मेरे गढ़ में अवश्य घुस आया था। मैं खतरे में था, शायद अब भी हूँ। मैं पुस्तकालय में पहुँचा और वहाँ सावित्री को बुलाया। मैं दरवाज़े के समीप एक कुर्सी पर बैठ गया। सावित्री को मैंने खिड़की के सामने खड़े होने की आज्ञा दी। उधर भ्राड़ियों के निकट पुलीस इंस्पेक्टर मुकर्जी से बातें कर रहा था।

“उस मामले के बारे में कुछ और भी जानती हो?”

“जी हाँ” उसने उत्तर दिया। “जानती हूँ।”

विचारपूर्ण दृष्टि से मैं उसकी ओर देखने लगा। संध्या के उस भ्रिल-

“यहाँ आस-पास तुमने किसी को देखा था?”

“किसी को नहीं।”

उसने अपनी आँखें मेरी आँखों से मिला दी। स्त्रियों के सौन्दर्य का मैंने विशेष अध्ययन नहीं किया है किन्तु मुझे ज्ञात हुआ कि धनुषाकार भौहों से विभूषित उसकी आँखें अत्यन्त सुन्दर हैं, यद्यपि वे किंचित् निर्दयतापूर्ण भी हैं। उसके ओठों की रेखाओं से तीव्रतम उत्तेजना की अभिव्यक्ति होती थी। समुचित रीति से सँवारे हुए उसके केशों में विचित्र चमक थी।

“अच्छा यही होगा सावित्री कि तुम मुझे सब कुछ बता दो।”

“जब आप चले गये,” उसने कहा, “तब वह व्यक्ति, जो वहाँ उस कोठरी में मरा पड़ा है, यहाँ आया और मुझसे आपके बारे में प्रश्न करने लगा। वह आपके शयनागार में घुस आया। वह उन कपड़ों की खोज में था, जिन्हें पहनकर आप घर लौटे थे। सबसे नीचे वाला दराज उसने खोल डाला और वे कपड़े उसे मिल गये।”

“सबसे ऊपर के दराज में एक रिवाल्वर था,” मैंने कहा।

“उसे मैंने छिपा लिया था।”

“फिर क्या हुआ?”

“आपकी प्रतीक्षा करने के लिए वह भाड़ियों की ओर गया।”

“तुम्हें उसने बतलाया था कि वह क्या चाहता है?”

“उसने यह बतलाया था कि वह पुलिस का सिपाही है।”

“और तब?”

“एक दूसरे मार्ग से मैं भी भाड़ियों की ओर गई, और उस स्थान पर पहुँची जहाँ वह खड़ा था। जब मैं उसके इतने निकट पहुँच गई कि निशाना चूकने का डर जाता रहा, तब मैंने उसे गोली मार दी।”

मैं एक ऐसा व्यक्ति हूँ, जिसके स्वभाव में साहस घुल-मिल गया है। मैंने एक कुशल मदारी की तरह मृत्यु के साथ खेला है, उसकी अवहेलना की है और दूसरों को भी उसकी अवहेलना करते मैंने देखा है, लेकिन ऐसे ठंडे दिल से और इतनी लापरवाही से मृत्यु की चर्चा करते मैंने किसी को नहीं सुना। उधर उस छोटे से जंगल में इंस्पेक्टर और मुकर्जी की आकृतियाँ अब भी दृष्टिगोचर हो रही थीं। मृतक पुलिसवाले का शव थोड़ी ही दूर पर पड़ा था। आगे झुककर,

सावित्री के चेहरे पर आँखें गड़ाकर, मैं उस जटिल भावार्थ को समझने का प्रयत्न करने लगा जो उसके शब्दों में मुझे नहीं मिल सका था।

“ऐसा तुमने क्यों किया, सावित्री ?”

“उसने मेरे साथ वह बरताव किया जो आज तक कभी कोई पुरुष करने का साहस नहीं कर सका,” उसने उत्तर दिया। “उसने मेरा चुम्बन कर लिया था ! मुझे तो आश्चर्य इस बात पर है कि उसी ममय मैंने क्यों नहीं उसकी हत्या कर डाली।”

“इसके अतिरिक्त और कोई कारण नहीं था, सावित्री ?”

“मैं आपकी रक्षा करना चाहती थी।”

“किस बात से रक्षा ?”

“क्रान्त के पंजे से।”

“तुम समझती हो कि मैं खतरे में था ?”

“अवश्य।”

“तुम्हारी समझ में मैं कौन हूँ ?”

“एक महान् अपराधी !”

मुझे करारा धक्का लगा। यह स्पष्ट था कि अनेक बार मेरी स्वतंत्रता इस लड़की की इच्छा पर निर्भर रही होगी।

“हमेशा मेरा विश्वास रहा है,” वह कहती गई, “कि आप दुरंगी जिन्दगी व्यतीत कर रहे हैं। जब कभी आपसे कोई मिलने आता था, तब रात में और गुप्त रूप से आता था। जिस दिन आप यहाँ रहने के लिए आते हैं उसके दूसरे ही दिन किसी डकैती या दुःखपूर्ण घटना की खबर सुनने को मिलती है। मुझे सदैव ऐसा अनुभव होता रहा है कि एक न एक दिन मुझे आपसे यह सब कहना ही पड़ेगा। और मैं प्रसन्न हूँ कि आखिर यह बात हो ही गई।”

“यह समझ रही हो या नहीं कि तुमने शान्त चित्त से एक मनुष्य की हत्या की है ?” पूरे तौर से उसकी परीक्षा लेने के लिए मैंने कहा।

“मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि मैंने ऐसा किया,” उसने उत्तर दिया।

“तुमने एक सेविका के कर्तव्य खूब पूरे किये !”

“मेरा मजाक मत उड़ाइए। मैं एक स्त्री हूँ। खतरनाक, किन्तु चतुर ! केवल सेविका बनने के निमित्त मेरा पालन-पोषण नहीं हुआ था। वरन्.....

“जीवन में मैंने कभी किसी स्त्री पर विश्वास नहीं किया।”

“आप मुझ पर विश्वास कर सकेंगे।” उसने मंद स्वर में कहा। “यह बात आपको याद रहेगी कि मैंने आपके लिए क्या किया है। मैं ही वह स्त्री हूँ जिसकी सृष्टि आपके जीवन को पूर्ण बनाने के लिए की गई है। उचित यही है कि आप यह समझ लें और मुझसे काम लें। इसके लिए आपको कभी खेद न करना पड़ेगा।”

वह मेरे ज़रा और निकट आ गई। फुर्सत के समय, मन बहलाने के सामान से अधिक मैंने स्त्रियों को कभी कुछ नहीं समझा किन्तु उस समय सावित्री के शब्दों से प्रभावित हुए बिना मैं न रह सका। उसकी स्वाभाविक उत्तेजना मेरे हृदय में प्रवेश कर गई। मेरी समस्त इंद्रियाँ उत्तेजित हो उठीं। उस समय जीवन मुझे एक नवीन रूप में दृष्टिगोचर हुआ। उसकी वाणी अत्यन्त कोमल तथा गर्म हो गई। उसके नयनों में अगाध विनय था और किञ्चित् नृशंसता भी।

“आप मुझे जीवन-संगिनी बना लीजिए,” उसने कहा। “मेरी यह प्रबल इच्छा है। सोचिए, इससे आपको कितना लाभ होगा। अगर संकट आयेगा तो मैं आपके विरुद्ध गवाही न दे सकूंगी। लेकिन मेरा तो ह्याल यह है कि संकट आयेगा ही नहीं। मैं जानती हूँ, आप बड़े चतुर हैं। मुझमें भी बुद्धि की कमी नहीं है। बोलिए, कहिए कि यह आपके मतलब की बात है। अपने अनुराग का मैं प्रमाण दे चुकी। अब आप उसका बदला चुकाइए।”

मैंने उसे कर-पाश में बाँध लिया। उसके अधरों में भीषण ज्वाला थी, जिससे मेरा रक्त अत्यधिक गर्म हो उठा। उसकी विचित्र आँखों में विकट आह्लाद था, जिससे मैं चकित, आन्दोलित और आनन्दित हो उठा। ऐसा जान पड़ा जैसे उसने मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व पर अधिकार जमा लिया हो। भाड़ियों में खड़े हुए उन लोगों की आकृतियाँ धुंधली हो गईं।

“पिस्तौल कहाँ है ?” मैंने कहा।

“वहाँ, जहाँ उसे कभी कोई पा न सकेगा ?”

“और कपड़े ?”

“जल गये। जब आपकी रक्षा का प्रश्न उपस्थित होता है, तब मैं कोई बात उठा नहीं रखती।”

करीब आध घंटे के बाद मुकजी महोदय भाड़ियों से वापस आये। मैं एक कार्य में व्यस्त था। सावित्री रसोईघर में खाना पका रही थी। मेरे हठ करने पर मुकजी ने थोड़ी-सी मदिरा ग्रहण की। वे थके हुए और कुछ उदास दिखाई दे रहे थे।

“कुछ पता लगा ?”

“कुछ नहीं,” उन्होंने सिर हिलाकर कहा। “जहाँ तक शहादत का सवाल है, मुझे भय है कि हमें निराश होना पड़ेगा। ऐसी पाशविक हत्या की घटना कभी मेरी जानकारी में नहीं आई। बेचारा रामदीन अभी जवान ही था। एक स्त्री और तीन-चार बच्चों को अनाथ कर गया। वह अपना कर्तव्य पालन कर रहा था तब उसकी हत्या कर डाली गई। अगर...”

वे रुक गये, उमड़े हुए आँसुओं को रोका और दरवाजे की ओर मुड़े।

“मैं आशा करता हूँ, मिस्टर पाण्डेय,” उन्होंने कहा। “कि आपके साथ दो चार बाज़ियाँ किसी दिन फिर होंगी।”

“जरूर। बड़ी खुशी से।”

जतीन्द्रनाथ मुकजी

पोस्टमार्टम परीक्षा के बाद रामदीन के शव की अन्त्येष्टि क्रिया कर दी गई। उसकी हत्या करनेवाले का पता नहीं लग सका। यह बात मेरे दिल में बराबर चुभती रहती है। रामदीन को कोई सुरास मिला था, जिसे उसने किसी को नहीं बताया। मुझे विश्वास है कि शेरसिंह उर्फ मोहनलाल की खोज में ही वह देवीगंज गया था। वहाँ स्वयं मोहनलाल या उसके किसी साथी ने उसकी हत्या कर डाली लेकिन शहादत का एक टुकड़ा भी हममें से किसी को नहीं मिल सका।

अनेक बार मैं देवीगंज गया, मिस्टर पाण्डेय के साथ शतरंज खेला और उनके घर पर भोजन किया—कितना बढ़िया खाना उनके घर पर पकता है। मिस्टर पाण्डेय की इच्छा है कि हत्याकारी को पकड़वा देनेवाले को इनाम देने की घोषणा कर दें लेकिन अभी तक मैंने उन्हें रोक रक्खा है। मैं नहीं चाहता कि बहुत-से ऐसे-गैरे इस मामले में हाथ डाले। मैंने यह बात किसी से नहीं कही, मिस्टर पाण्डेय से भी नहीं लेकिन मैंने अपने जीवन का यह उद्देश्य बना लिया है कि मोहनलाल का जरूर पता लगाऊँगा। जिस दिन उसका पता लगा लूँगा उसी दिन रामदीन की हत्या का रहस्य भी खुलेगा। मैं जरूर उसका पता लगाऊँगा।

२

बहुमूल्य हार की चोरी

जतीन्द्रनाथ मुकर्जी

उस दिन संध्या के समय, जब मैं मंगनीफ्रिसेंट होटल के लाउंज में बैठा हुआ था, एक अंधेड़ व्यक्ति ने अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया। कई मास तक बर्मा की सैर करने के बाद उसी दिन मैं घर वापस आया था। लाउंज के एक कोने में वह बैठा था। उसे पहचानने में मुझे कई क्षण लग गये और इस बीच में अनेक अप्रिय स्मृतियाँ मेरे मस्तिष्क में चक्कर काट गईं।

“नमस्कार !” उस व्यक्ति ने कहा।

“नमस्कार !” मैंने उत्तर दिया।

“मुझे पहचान नहीं सके, मिस्टर मुकर्जी ? देवीगंज में मेरे साथ शतरंज खेलने की बात भूल गये ?”

तुरन्त उसके सम्बन्ध की सारी बातें मुझे याद आ गईं।

“आप मिस्टर पाण्डेय हैं न ?”

मैंने उत्तर दिया। “नहीं जनाब, वह सब मैं भूला नहीं हूँ।”

जिस दावत में मुझे शरीक होना था उसमें अभी कुछ देर थी इसलिए मैंने उनके साथ शराब पीने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

“उस रहस्यपूर्ण हत्या की घटना बड़ी विचित्र थी। उसके बाद वह घर मुझे खटकने लगा। साल भर के अन्दर ही मैंने उसे छोड़ दिया।”

“हाँ, मैंने सुना था कि आपने वह घर छोड़ दिया,” मैंने कहा। “आपकी वह आदर्श सेविका क्या अब भी आपके साथ है?”

“कुछ दिनों के बाद ही वह मेरी नौकरी छोड़कर चली गई,” उसने खेदपूर्ण स्वर में कहा। “उस मामले की तहकीकात में आप सफल नहीं हुए, मिस्टर मुर्ज्जी?”

मैंने सिर हिलाया। उस मामले की याद मेरे लिए अब भी दुःखद थी।

“मुझे ज़रा भी सफलता नहीं मिली,” मैंने स्वीकार किया। “मैं कुछ नतीजों पर पहुँचा और कुछ आगे बढ़ा लेकिन सारे सुराग़ एकाएक खत्म हो गये। फिर भी मैं निराश नहीं हुआ हूँ। मुझे बराबर ऐसा मालूम होता है कि एक न एक दिन मैं उस रहस्य का उद्घाटन अवश्य करूँगा।”

वेटर शराब ले आया। हमने गिलास उठाये।

“मैं उस दिवस के आगमन की शुभ कामना प्रकट करता हूँ,” मिस्टर पाण्डेय ने कहा।

“मैं भी आपके साथ हूँ।” मैंने सहर्ष कहा।

कुछ देर तक हम इधर-उधर की बातें करते रहे, खासकर शतरंज के बारे में। उस दिन उस होटल में कई शानदार दावतों का आयोजन था और अनेक सुन्दर स्त्रियाँ उस समय लाउंज में दृष्टिगोचर हो रही थीं। एक सुन्दरी ने विशेष रूप से मेरा ध्यान आकृष्ट किया। वह लम्बी थी, दुबली-पतली थी लेकिन बड़े सुन्दर साँचे में ढली थी। उसके शरीर का रंग कुन्दन की तरह दमक रहा था। विचित्र रंगवाली उसकी आँखों में अद्भुत आकर्षण था। उसके काले मुलायम बाल रेशम की तरह चमक रहे थे। दुर्लभ बहुमूल्य मोतियों की एक बड़ी सुन्दर माला उसके गले में पड़ी थी। हमारे पास से वह निकली। पाण्डेय ने नमस्कार किया; उसने मुस्कराकर उत्तर दिया।

“बड़ी सुन्दर है वह !” मैंने कहा। “कौन है वह, आप जानते हैं ?”

“एक रानी हैं—देवनगर की रानी। फ्रेंशन की पुतली हैं, व्यक्तिगत स्वतंत्रता की जबरदस्त हामी। जहाँ जी में आता है आती जाती हैं। एक सेविका के अतिरिक्त सफ़र में किसी को अपने साथ नहीं रखती।”

“आप उनसे परिचित हैं ?”

“यों ही थोड़ा बहुत।” पाण्डेय ने उत्तर दिया। “जैसे कमरे उसी मंजिल पर हैं, जिस पर मेरा है। इधर-उधर आते-जाते, कभी कभी उनसे भेंट हो जाती है।”

मेरे मित्र आगये। पाण्डेय से मैंने विदा ली। मैं इस भेंट से आनन्दित नहीं हुआ। मुझे यह अपमानजनक बात याद आ गई कि कांस्टेबिल रामदीन के क्रातिल का पता अभी तक नहीं लगाया जा सका और वह असाधारण अपराधी जो अपने को मोहनलाल कहता था हमारी आँखों के सामने से गायब हो गया और आज तक उसके सम्बन्ध में कोई बात नहीं सुनी गई। मेहमानों में एक सरकारी अफसर भी थे। उन्होंने अपराधों की चर्चा छेड़ दी।

“खुफ़िया-विभाग से अब आपका कोई सम्बन्ध नहीं रहा, मिस्टर मुकर्जी,” उन्होंने कहा। “इसलिए सच्ची बातें सुनकर शायद आप बुरा न मानेंगे। अपराधों की जो महामारी अभी दो वर्ष पहले ज़ोरों से जारी थी, आज फिर उसी तरह फैल गई है। चार निर्मम हत्याओं और पाँच संगीन डकैतियों की वारदातें ऐसी हैं जो अभी तक पहेलियाँ बनी हुई हैं। खुफ़िया-विभाग के अधिकारियों का ख्याल है कि इन वारदातों के लिए वही व्यक्ति जिम्मेदार है जिसने दो वर्ष पूर्व उन रहस्यपूर्ण डकैतियों की योजनाओं की सृष्टि की थी और उस सब-इंस्पेक्टर को गोली मार कर भाग निकला था।”

मैंने ज़ाहिर तो यह किया कि मुझे इस सूचना में कोई विशेष दिलचस्पी नहीं लेकिन यथार्थ यह है कि मेरा मन आन्दोलित हो उठा और मेरा स्वाभाविक उत्साह जाग्रत हो गया। अगर वह व्यक्ति जिसने पिछली मर्तबा अपने को मोहनलाल के नाम से मशहूर किया था किन्तु जो मेरे विचारानुसार वास्तव में शेरसिंह था फिर मैदान में आ गया है, तो इसमें कोई

सन्देह नहीं कि अगले चन्द मास के अन्दर ही जीवन मेरे लिए एक नवीन आकर्षण की सृष्टि करेगा ।

हमारी उस पार्टी में छः व्यक्ति सम्मिलित थे—फ़ौजदारी के एक मशहूर वकील और उनकी पत्नी; सरकारी अफ़सर, उनकी पत्नी और भावज तथा मैं । दावत का आयोजन वकील साहब ने किया था ।

“यह बहुत अच्छा हुआ, मिस्टर मुकजी,” वकील साहब ने कहा, “कि आपने अपने पद से उसी समय अवकाश ग्रहण कर लिया जब आपकी ख्याति अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी । अपराधों के संसार में एक नये युग का आविर्भाव हुआ है और अब पुलिस और अपराधियों के बीच की लड़ाई बराबरी की लड़ाई नहीं रही । केवल गुंडे ही अब अपराधों की ओर नहीं झुकते । सिद्धहस्त, हृदयहीन वैज्ञानिकों ने भी उनकी सहायता करना शुरू कर दिया है । अब तो अधिकतर यही देखा जाता है कि अपराधियों की मानसिक शक्तियाँ जासूसों की मानसिक शक्तियों से कहीं अधिक प्रबल होती हैं ।”

“तब तो जासूस के लिए लड़ाई और भी दिलचस्प होनी चाहिए,” मैंने मुस्कराकर कहा ।

मैं यह नहीं चाहता था कि यह बात लोगों में आमतौर से फैल जाय कि अपने पुराने पेशे के प्रति मेरा आकर्षण ज्यों-का-त्यों बना हुआ है । इसलिए बग़ल में बैठी हुई महिला से मैं इधर-उधर की बातें करने लगा । हम देवनगर की रानी और उनके अद्भुत मोतियों की सराहना करने लगे । वकील साहब वार्तालाप में शरीक हो गये थे ।

“ऐसी ही स्त्रियाँ,” वकील साहब ने कहा, “जो बहुमूल्य जवाहिरात धारण किये फिरती हैं, वास्तव में अपराधियों को प्रोत्साहन देती हैं । मोटे तौर पर मेरा ख्याल है कि वह हार चार लाख रुपये का है । अगर यह चुरा लिया जाय तो चोर को इसके लिए शायद तीन लाख जरूर मिल जायेंगे । वैज्ञानिक चोर के लिए यह कैसा ज़बरदस्त आकर्षण है ! अगर यह सत्य है कि मोहनलाल फिर मैदान में उतर आया है तो उसके लिए यह कैसा सुन्दर अवसर है !”

“ऐसा खतरा उठानेवाली स्त्री,” वकील की पत्नी ने कहा, “बड़ी दिलेर होगी।”

“मेरा खयाल है,” मैंने कहा—“कि जवाहिरात ज्यादातर होटल की तिजोरी में बन्द रहते होंगे ? उन्हें पहनकर रानी साहबा होटल से बाहर न जाती होंगी।”

वकील साहब मुस्कराये।

“मेरा अनुमान है,” उन्होंने कहा, “कि मोहनलाल को इस काम के लिए होटल में चन्द मिनट काफ़ी होंगे। मोहनलाल या उसके साथिया की नज़र में इन मोतियों के मूल्य के सामने मानव-जीवन का मूल्य कुछ न ठहरेगा। शायद आजकल के चोरों का ‘सब कुछ, या कुछ नहीं’ यही नवीन सिद्धान्त है। देखते ही मार डालने पर शायद बच निकलना ज्यादा आसान हो जाता है।”

इस विषय की वार्त्ता समाप्त हो गई। काफ़ी, मदिरा और सिगरेट पीते हुए हम कुछ समय तक बैठे रहे। हमारी पार्टी के सब लोग चले गये, केवल मैं रह गया। प्रधान वेटर से, जिससे पहले ही से परिचित था, मैं बातें करने लगा। एकाएक सामने का दरवाज़ा खुला, एक व्यक्ति तेज़ी से अन्दर आया और दफ़्तर की ओर जाने लगा। सहसा मेरी ओर देखकर वह रुका, फिर मेरे समीप आया।

“माफ़ कीजिएगा,” उसने कहा।

“आप रायबहादुर मुकर्जी ही हैं न ?”

“जी हाँ।”

“क्या आप अपने मूल्यवान् समय के पाँच मिनट मुझे देने की कृपा करेंगे ? एक ज़रूरी मामले के सम्बन्ध में आपसे बात करना चाहता हूँ।

किंचित् आश्चर्य से मैं उसकी ओर देखने लगा। उसकी आवाज़ और उसके रंग-रुंग से भद्रता टपकती थी और इस होटल के अन्य सभ्य ग्राहकों से वह किसी तरह भिन्न न था। उसने अपना कार्ड निकालकर पेश किया।

“मैं जानता हूँ,” उसने कहा, “कि आपको तकलीफ़ देने के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है। लेकिन मामला बहुत ज़रूरी है और अगर आप आज्ञा दें तो मैं दो-चार मिनट में सारी बातें बयान कर दूँ।”

एक लैम्प के नीचे जाकर मैंने काँड़ पर दृष्टि डाली। उस पर लिखा था—

‘मिस्टर विनयमोहन वर्मा’

नीचे एक मशहूर बीमा-कम्पनी का नाम था। मिस्टर वर्मा को साथ लेकर मैं लाउंज में पहुँचा। हमारे अतिरिक्त वहाँ उस समय कोई न था। हम दोनों कुर्सियों पर बैठ गये।

“कई वर्ष हुए, मिस्टर मुकर्जी,” उसने कहा, “जब आप खुफिया-विभाग में थे, एक बहुमूल्य पन्ने की चोरी के मामले में आपने हमारी कम्पनी को भारी हानि उठाने से बचाया था।

“मुझे वह घटना खूब याद है।”

“हमें ज्ञात है कि आपने अपने पद से अवकाश ग्रहण कर लिया है लेकिन हमने सोचा कि अपनी व्यक्तिगत हैसियत से शायद आप हमारा एक छोटा-सा काम कर देना पसन्द करें। हमारे प्रधान को यह बात अकस्मात् ज्ञात हुई कि आप इस होटल में ठहरे हुए हैं और उन्होंने तुरन्त मुझे आपकी सेवा में उपस्थित होने की आज्ञा दी।”

“मामला क्या है?” मैंने पूछा।

“इस होटल में,” बीमा-कम्पनी के एजेंट ने कहा, “देवनगर की रानी ठहरी हुई हैं। उनके पास मोतियों का एक बहुमूल्य हार है। दस लाख रुपये पर उस हार का उन्होंने हमारी कम्पनी में बीमा कराया है। यह पॉलिसी मंजूर करके हमने बड़ी भूल की। यह बात स्वीकृति देने के कुछ देर बाद ही हमें मालूम हो गई। रानी साहबा के सम्बन्ध में कुछ भी मालूम नहीं, ऐसी हालत में खतरा उठाना हमारी व्यावसायिक नीति के विरुद्ध है। हमने अपनी रक्षा का प्रबन्ध कर रखा है। रानी से हम अपना सम्पर्क बनाये हुए हैं और होटल के जासूस से रोज़ मिलते रहते हैं। आज संध्या की ढाक से हमें उस जासूस का एक पत्र मिला है जिसमें उसने सूचना दी है कि वह बीमार पड़ गया है और चौकीदार उसकी अनुपस्थिति में उसकी ड्यूटी भी पूरी करेगा। उस पॉलिसी की अवधि एक सप्ताह के बाद समाप्त हो जायगी और अब हम आगे उसे किसी शर्त पर स्वीकार न करेंगे। हम यह जानना चाहते हैं कि मनमानी फ़ीस लेकर क्या आप

एक सप्ताह तक उस हार की रक्षा का भार ग्रहण करने की कृपा करेंगे ?”

“क्या इधर यहाँ आस-पास चोरियाँ हुई हैं ?”

“जी नहीं, कोई चोरी नहीं हुई,” उसने उत्तर दिया। “मैं आपसे कोई बात न छिपाऊँगा। किसी मामूली चोरी या डकैती का भय हमें नहीं है ! किसी कारण से हमारे सूचना-विभाग को स्वयं रानी साहबा के ऊपर सन्देह है।”

“अच्छा, यह बात है !” मैंने कहा। “आपको बनावटी चोरी का भय है।”

“बेशक। ज्यों ही जासूस का पत्र हमें मिला, हमने होटल के मैनेजर को फोन किया। उनसे हमें केवल इतना मालूम हो सका कि वह अकस्मात् बीमार पड़ गया और इसलिए क्षणिक सूचना देकर तुरन्त घर चला गया। हमने अनुरोध किया कि उसकी बीमारी की अवधि तक के लिए कोई दूसरा जासूस रख लिया जाय, लेकिन हमें उत्तर मिला कि प्रबन्ध-विभाग के विचार में इस बात की कोई आवश्यकता नहीं। और हमें यह भी सूचित किया गया कि इस होटल से गहने या जवाहिरात कभी चोरी नहीं गये और चौकीदार जासूस की ड्यूटी पूरी कर सकने के योग्य है।

मैं विचार करता रहा।

“हमारे मैनेजर मिस्टर नलिनीरंजन बोस ने मुझे यह भी आदेश दिया है कि मैं आपसे यह अर्ज कर दूँ कि इस कष्ट के लिए कम्पनी आपको तीन हजार रुपये प्रसन्नतापूर्वक भेंट कर सकती है।”

“मुझे मंजूर है।”

होटल के मैनेजर से मैं अच्छी तरह परिचित था। दूसरे दिन सबेरे मैंने उससे भेंट की। जब मैंने देवनगर की रानी और उनके हार की खर्चा बलाई तो वह कुछ खीझ उठा।

“रानी साहबा से होटल को फ़ायदा है,” उसने कहा, “लेकिन सब पूछिए, मिस्टर मुकर्जी, तो मुझे इस बात का खेद है कि मैंने उन्हें यहाँ ठिकाना मंजूर किया।”

“क्यों ?”

“जिन लोगों के पास बहुमूल्य जवाहिरात हों,” उसने उत्तर दिया, “उन्हें किसी कदर धैर्यवान् होने की जरूरत है। इस होटल में जवाहिरात की चोरी होने की कोई आशंका नहीं है। रानी साहबा भी खूब होशियार रहती हैं। लाउंज और रेस्त्राँ के अतिरिक्त वे कहीं हार पहनकर नहीं जातीं और हर रात को वह होटल की तिजोरी में जमाकर दिया जाता है। ऐसी हालत में मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि वे क्यों चिन्तित हैं और बीमा-कम्पनी क्यों इतनी परेशान है। खैर, मैं आपको इस बात का आश्वासन देता हूँ कि हम आपको अपने कर्त्तव्य के पालन के निमित्त हर तरह की सुविधायें देंगे। मैं समझता हूँ कि अगर आप एक बार रानी साहबा से भी मिलें तो बहुत अच्छा हो?”

इस बात का ख्याल मुझे पहले ही आया था। उसी दिन तीसरे पहर मैंने रानी के पास अपना कार्ड भेजा। जब मैं भेंट करने के लिए उनके पास पहुँचा तब अपनी बैठक में बैठी हुई वे पत्र लिख रही थीं। एक काली साड़ी उनके शरीर पर थी और गले में वह हार शोभित था। उनके शरीर के अद्भुत लावण्य तथा चाल-ढाल की सुघरता से मैं एक बार फिर प्रभावित हो उठा। जब उन्होंने मुड़कर मुझे बैठने के लिए आमन्त्रित किया तब मेरे मन में अनायास ही स्मृति की एक हलकी-सी छाया जाग्रत हो उठी। उस छाया की रूप-रेखा स्पष्ट नहीं हो सकी। संक्षेप में मैंने अपने आगमन का कारण बतला दिया। वे उपेक्षा के भाव से मुस्कराईं।

“यह सच है कि मैं बड़ी बेवकूफ हूँ,” रानी ने कहा, “लेकिन सदा अन्ध-विश्वासिनी रही हूँ। कई साल से यह हार मेरे पास है और मैं ऐसे स्थानों में भी रही हूँ जहाँ कानून की एक नहीं चलती। फिर भी मेरे मन में जैसी आशंका आज है वैसी कभी नहीं रही।”

“यह बात सचमुच आश्चर्यजनक है,” मैंने उत्तर दिया। “इस होटल के सेवकों का चुनाव बड़ी सतर्कता से किया जाता है और यहाँ के प्रायः सभी ग्राहक सुपरिचित हैं।”

वे सिहर उठीं।

“जैसी आशंका मुझे है, उन्होंने कहा, वैसी आशंकायें विवेक पर आधारित नहीं होतीं। खैर, मैं यह स्वीकार करती हूँ कि यह जानकर कि

बीमा-कम्पनी ने आपकी सेवायें प्राप्त कर ली हैं, मेरा चित्त अब कुछ शान्त हो गया है। देखिएगा इन मोतियों को ?”

वे मेरे निकट आ गई और बिना गले से उतारे, हार मेरे हाथ पर रख दिया। मोती काफ़ी बड़े और एक ही रंग के थे। दूध के समान उनका कोमल श्वेत रंग अत्यन्त सुन्दर था और यही था रानी के कथनानुसार उनकी दुर्लभता का प्रमाण। हम दोनों बिलकुल समीप खड़े थे। उनके कोमल केशों की एक लट चोटी से मुक्त होकर मेरे मथ्य से छू गई। धीरे से हँसकर उन्होंने उसे पीछे हटा दिया। मैं उनके चेहरे की ओर देखने लगा। उनकी मुस्कान और आँखों में विचित्र भाव अठखेलियाँ कर रहे थे। मेरे शरीर में सनसनी पैदा हो गई। मैं तुरन्त समझ गया कि उनकी ओर मुड़-मुड़कर देखने की लोगों की क्यों इच्छा होती है। वह भी एक अद्भुत प्रतिरूप है उन असाधारण नारियों का जिन्होंने प्रायः प्रत्येक युग में पुरुषों पर अपने रूप का मोहन-मन्त्र चलाने की मैं अपने अस्तित्व की सार्थकता देखी है।

“पसन्द हैं मेरे मोती ?” उन्होंने धीरे से पूछा।

मैंने अपने हाथ से हार छोड़ दिया।

“बड़े सुन्दर हैं, ” मुझे स्वीकार करना पड़ा।

वे धीरे से हट गईं। मैंने शान्ति की साँस ली। मुड़कर उन्होंने मेरी ओर देखा, और मेरा रुयाल है कि वे मेरे मन का भाव समझ गईं। उनकी पेशानी पर पड़ा हुआ हलका-सा बल गायब हो गया। स्पष्टतः वे कुछ सन्तुष्ट हो गईं।

“मुझे बतलाइए, मिस्टर मुकर्जी,” एक आरामकुर्सी पर बैठकर उन्होंने कहा, “मेरे हार की आप किस तरह रक्षा करेंगे ? क्या आप वेटर का रूप बनाकर रात के समय मुझे भोजन करायेंगे और मेरे दरवाजे के सामने बिस्तर डालकर सोयेंगे ? मैं तो इस तरह की जासूसी की बात सोचती हूँ तो काँप उठती हूँ।”

“विश्वास कीजिए,” मैंने आश्वासन दिया, “मेरे कारण आपको किसी तरह की कोई असुविधा न होगी। मैंने सुना है कि हर रात को आप अपना हार होटल की तिजोरी में जमा कर देती हैं।”

“यह तो मैं बराबर करती आ रही हूँ,” उन्होंने उत्तर दिया। “क्या आपका ख्याल है कि उसे यहीं रखना बेहतर होगा? क्या आप इस बात का वादा कर सकते हैं कि अगर मैं उसे यहीं रखूँ, तो आप हाथ में रिवाल्वर लिये रात भर यहीं बैठे रहेंगे?”

“हर्गिज नहीं,” मैंने कहा। “होटल की तिजोरी इस स्थान से कहीं अधिक सुरक्षित है।”

“आपका निर्णय सुनकर मुझे खुशी हुई,” मुस्कराकर उन्होंने कहा। “अगर हार यहीं रहे और उसकी रखवाली करने के लिए आप यहाँ बैठे रहें तो शायद मुझे रात भर नींद न आयेगी। कितनी परेशान करने-वाली यह बात होगी।”

“चमत्कारों से तो शायद किसी तरह बचत नहीं हो सकती,” मैंने कहा, “लेकिन मेरा ख्याल है कि हार के सम्बन्ध में आप निश्चित रह सकती हैं। अगर आपको किसी समय मेरी आवश्यकता हो तो आप मुझे बुला लें। मेरे कमरे का नम्बर ४३५ है।”

“आपका कमरा इसी मंजिल पर है?”

“हाँ, इसी मंजिल पर।”

मैं उठ खड़ा हुआ।

“एक बात बतालाइए, मिस्टर मुकर्जी,” उन्होंने एकाएक कहा, “वह दुबला-पतला, अधेड़ व्यक्ति जिससे लाउंज में आप कल रात बातें कर रहे थे, कौन है? इधर-उधर आते-जाते मैं उसे अकसर देखती हूँ।”

“उसके सम्बन्ध में मैं बहुत कम जानता हूँ। मेरा ख्याल है कि उसका नाम मिस्टर पाण्डेय है। एक बार मैंने उसके साथ देवीगंज में शतरंज खेला था।”

“मिस्टर पाण्डेय! क्या इसी व्यक्ति के मकान की हद में एक बार एक हत्या हुई थी—एक पुलिसवाला मरा पाया गया था?”

“हाँ,” मैंने कहा। “उस समय मैं पाण्डेय के साथ क्लब के मैदान में घूम रहा था।”

“और क्रातिल का पता नहीं लग सका?”

“नहीं।”

“मुझे आश्चर्य है कि आपने उस मामले में दिलचस्पी नहीं ली ?”
उन्होंने कहा।

“दिलचस्पी मैंने ली थी।”

वे चौकीं।

“अपने हार के सम्बन्ध में मेरी आशंका फिर जाग पड़ी,” उन्होंने कहा। “आप जैसे धुरंधर जासूस के लिए तो यह बड़ी आसान बात होनी चाहिए थी कि आप क्रातिल का पता लगा लेते ?”

“कम से कम उसे सजा दिला सकना तो मेरे वश की बात नहीं,” मैंने उत्तर दिया। “बहुतेरे अपराधी ऐसे हैं जो आज आज़ाद घूम रहे हैं लेकिन प्रमाणों के अभाव के कारण उन्हें गिरफ्तार नहीं किया जा सकता।”

“कितनी सनसनीखेज़ बात है यह !” उन्होंने धीरे से कहा। “क्या किसी रात को आप मुझे भोजन के लिए निमन्त्रित करेंगे और अपने अनुभव की कहानियाँ सुनायेंगे ?”

“ज़रूर, मुझे इस बात से बड़ी प्रसन्नता होगी।”

किंचित् अनिच्छा से उन्होंने मुझे बिदा दी। मैं मिथ्याभिमानि नहीं हूँ, और मुझे इस बात से आश्चर्य हुआ कि वे बार-बार मेरे प्रति अनुग्रह प्रदर्शित करती रहीं। मैं इस निर्णय पर पहुँचा कि वे उन स्त्रियों में हैं जो पुरुषों को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए चिन्तित रहती हैं। वह बात मैंने अपने दिमाग से निकाल डाली।

संध्या के समय मुझे एक पत्र मिला। उसमें लिखा था :—

“प्रिय मिस्टर मुकजी,

मेरी एक सखी और उनके पति आज रात को मेरे साथ भोजन करने को थे। लेकिन वे न आ सकेंगे। क्या आप मेरे मेहमान बनने की कृपा करेंगे ? अगर आप राजी हों तो मुझसे आठ बजे लाउंज में मिलें। आशा है, आप मुझे निराश न करेंगे।

आपकी

देवनगर की रानी।”

मैंने अपनी स्वीकृति लिख भेजी। ऊपर से उतरकर जब मैं लाउंज में पहुँचा तो मुझे ऐसा लगा जैसे अगले कुछ घंटे मेरे लिए बड़े दिलचस्प साबित होंगे।

ठीक आठ बजे रानी साहबा आ पहुँचीं। वे एक रंग की रेशमी साड़ी धारण किये हुए थीं और हार उनके गले में पड़ा हुआ था। लोग मुड़-मुड़कर, उचक-उचककर उन्हें देखने लगे। वे मेरे समीप आईं। मैंने उठकर अभिवादन किया। फिर हम रेस्त्राँ में चले गये। पाण्डेय, जो अपने निश्चित स्थान पर बैठा हुआ मदिरा पी रहा था हमारी ओर आश्चर्य से देखता रहा। रेस्त्राँ में हम अपने स्थान पर बैठ गये।

“वह व्यक्ति जो मुझे धूरा करता है वहाँ मौजूद था,” रानी ने कहा।
“आपने उसका नाम क्या बतलाया था—मिस्टर पाण्डेय ?”

“हाँ, हमें एक साथ देखकर उसे जरूर आश्चर्य हुआ होगा। कल रात को मैंने उससे आपके बारे में प्रश्न किया था।”

“क्यों ?”

“उसी वजह से जिससे और लोग यह प्रश्न करते हैं।”

उन्होंने ज़रा मुख विचकाया।

“आज मैंने अपनी अत्यन्त प्रिय साड़ी पहनी है,” उन्होंने कहा, “लेकिन आपने तो जैसे इरादा कर रक्खा है कि मेरी प्रशंसा न करेंगे।”

“मैं आपकी सुरुचि की सराहना करता हूँ।”

“और ?”

“यहाँ की तमाम स्त्रियों में आप सबसे अधिक सुभूषित और सबसे अधिक सुन्दर हैं।”

“असन्तोषजनक !”

मैंने मोतियों का ज़िक्र छेड़ दिया। उन्होंने मुझे बतलाया कि ये मोती उनके पति ने उनके लिए प्राप्त किये थे—कुछ भारत से, कुछ मलाया से और कुछ पेरिस से। और उन्होंने अपने पति के पाण्डित्य की, देशाटन-प्रेम की, स्वभाव की और सुरुचि की बड़ी सराहना की। बड़ी स्पष्ट-वादिता से उन्होंने मेरे समस्त प्रश्नों के उत्तर दिये।

बाद में जब मैं अपने उन विचित्र अनुभवों के वृत्तान्त सुनाने लगा जो

प्रकाशित हो चुके थे तब उन्होंने बड़ी दिलचस्पी दिखलाई। मुझे यह अनुभव होने लगा कि उनके सम्बन्ध में राय कायम करने में मुझे भूल हुई है, वे वही हैं जो दीखती हैं—एक अमीर, स्वतन्त्र, खुशमिजाज और यात्रा-प्रेमी स्त्री अभी तक अपने लिए जीवन-मार्ग खोज रही है।

भोजन के उपरान्त लाउंज में जाकर हम काफ़ी पीने लगे। उधर एक कोने में बैठा हुआ पाण्डेय सिगार पी रहा था और प्रत्येक आने-जानेवाले व्यक्ति को गौर से देख रहा था।

“वह, अजीब आदमी है” रानी ने कहा। “उसे देखकर उन विचित्र पात्रों की याद आ जाती है जिनके कारनामे पुस्तकों में पढ़ने को मिलते हैं, जो केवल अपने आनन्द के लिए अपराधों की समस्याएँ हल करते हैं और अप्रत्याशित स्थानों में गुप्त खजानों का पता लगाते हैं।”

“वह एक अवकाश-प्राप्त व्यवसायी है,” मैंने कहा, “जिसे शतरंज खेलने की सनक है। यही बतलाया था मुझे देवीगंजवाले क्लब के मन्त्री ने।”

नृत्य-गृह से आती हुई मधुर ध्वनियाँ अपने मधुर ढंग से आमन्त्रित करने लगीं। उठकर हम वहाँ पहुँचे। अनेक योरोपीय तथा हिन्दुस्तानी स्त्री-पुरुष असीम तन्मयता से नृत्य कर रहे थे। बँड बज रहा था।

मेरे अनुरोध पर उन्होंने कई बार मेरे साथ नृत्य किया। बड़ा आनन्ददायक था हमारा वह नृत्य। उसमें केवल एक खटक थी। हार की चिन्ता के कारण रह-रहकर वे काँप उठती थीं। उनकी विकलता बढ़ती ही गई। तब उन्होंने मुझे अनुरोध किया कि मैं उन्हें ऊपर पहुँचा दूँ और जब उनकी सेविका होटल की तिजोरी में जमा करने के लिए हार लेकर नीचे जाय तो मैं भी उसके साथ जाऊँ। नृत्य-गृह से निकलकर हम लिफ्ट की ओर बढ़े।

मैंने लिफ्ट के लिए घंटी बजाई, और हम दोनों एक साथ तीसरी मंजिल पर पहुँचे। उन्होंने मुझे कुंजी दी, और मैंने उनके सुन्दर सैलोन का दरवाजा खोला। उन्होंने एक आराम-कुर्सी की ओर संकेत किया।

“आप ज़रा देर आराम से बैठें,” भीतर के कमरे के दरवाजे के अन्दर पहुँचकर, मुड़कर, उन्होंने कहा। “मैं पहले साड़ी बदलूंगी, फिर मैं अपनी

सेविका केतकी को हार का केस दे दूंगी। नीचे जाते समय वह आपको बुला लेगी।”

सिर हिलाकर वे चली गईं। मैं एक क्षण खड़ा रहा, फिर आराम-कुर्सी पर बैठ गया। दरवाजा धीरे से बन्द हो गया। मैंने सुना कि अन्दर के किसी कमरे में उन्होंने अपनी सेविका को आवाज दी।

अगले कुछ सेकंड बड़े आश्चर्यजनक तथा महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए। मुझे विश्वास है कि किसी अज्ञात प्रेरणा के वशीभूत होकर ही मैंने कार्य किया। मेरे दिमाग में कोई निश्चित बात न थी जब उस बन्द दरवाजे के पीछे खड़े खड़े मेरे मन में वह आकस्मिक विचार उत्पन्न हुआ। बैठक पार करके मैंने वह दरवाजा खोला जो गलियारे की ओर खुलता था। गलियारे में उस समय कोई न था और मैंने देखा कि साधारण नियम के विपरीत आज बिजली की कम बत्तियाँ जल रही हैं। सारी शक्ति लगाकर मैं सुनने की कोशिश करने लगा और आहट लेने लगा रानी के लौटने के शब्द की, उनके किसी दरवाजे के खुलने की आवाज की। ज़रा देर में वही बात हुई जिसके होने का अनुमान मैंने लगाया था। रानी के शयनागार का दरवाजा धीरे से खुला। दरवाजे के सोंक से मैं भाँकता रहा। सेविका केतकी बाहर निकली और खड़ी होकर आहट लेने लगी। फिर वह गलियारे में तेज़ी से बढ़ी और बाईं ओर मुड़ी जिधर लिफ्ट और सीढ़ियाँ थीं। मैं भी तुरन्त बाहर निकला और दबे पाँव तेज़ी से उस ओर बढ़ा। मोड़ के निकट रुककर मैं उसकी ओर देखने लगा। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि लिफ्ट से आगे बढ़कर वह उस ओर मुड़ी जहाँ सीढ़ियाँ थीं। ज्यों ही वह नज़र से ओझल हुई, मैं तेज़ी से उसकी ओर लपका। ज्यों ही मैं उस मोड़ के समीप पहुँचा तमाम बत्तियाँ सहसा बुझ गईं। एक हलकी-सी चीख सुनाई दी फिर फ़र्श पर किसी के गिरने की आवाज आई। दो क्षण में मैं उस स्थान पर पहुँच गया। धुंधले प्रकाश में मैंने देखा, कठिनाई से साँस लेती हुई केतकी अर्ध-चेतना की अवस्था में फ़र्श पर पड़ी हुई थी। उसके पास ही हार का केस खुला पड़ा था। हार गायब था।

किसी को आवाज देना मैंने मुनासिब नहीं समझा। मैं केतकी के ऊपर झुका—यह देखने के लिए कि वह बन तो नहीं रही है। मुझे विश्वास

हो गया कि वह बन नहीं रही है, उसके ऊपर अवश्य कुछ बल-प्रयोग किया गया था। सामने के शयनागारों के दरवाजे की ओर मैंने दृष्टि डाली। जहाँ मैं खड़ा था वहाँ से मोड़ तक तीन दरवाजे थे। सहसा सबसे दूरवाला दरवाजा धीरे से खुला। एक व्यक्ति की आकृति दृष्टिगोचर हुई। आगे झुककर उसने अपने जूते बाहर चटाई पर फेंक दिये। मेरा खयाल है कि मैं उसे दिखाई दे गया क्योंकि एकाएक सीटी बजाना बन्द करके वह मेरी ओर मुड़ा।

“कौन है ?” उसने आवाज़ लगाई।

तुरन्त जब से टार्च निकालकर मैंने उसके ऊपर रोशनी फेंकी। धारीदार पायजामा और सिलीपर पहने, ओठों में सिग्रेट दबाये मेरे शतरंजी मित्र मिस्टर पाण्डेय खड़े थे।

“वहाँ आप क्या कर रहे हैं, जनाव ?” पाण्डेय ने पूछा। “बत्तियाँ किसने बुझा दीं ?”

“जरा बत्तियाँ जला दीजिए तो आपको सब मालूम हो जाय,” मैंने उत्तर दिया। “आपके दरवाजे के पास ही एक स्विच है।”

दो क्षण तक टटोलने के बाद उसे स्विच मिल गई। बत्तियाँ रोशन हुईं और वह हमारी ओर आश्चर्य से ताकता खड़ा रह गया। सेविका को अब काफ़ी होश आगया था। दीवार के सहारे बैठी हुई, अपना गला सहलाती हुई, वह सिसक रही थी। हार का खाली कंसे एक ओर पड़ा हुआ अपनी करुण कहानी कह रहा था।

“हे ईश्वर !” पाण्डेय घबराकर चिल्लाया। “डाका !”

“अपनी घंटी बजाइए,” मैंने कहा।

वह अपने कमरे में अदृश्य होगया। एक मिनट के बाद वह वापस आया।

“तीनों घंटियाँ बजाई मैंने लेकिन बेकार।”

“तार काट दिये गये हैं,” मैंने कहा। “लिफ्ट के पास जाइए और किसी को बुलाइए।”

वह चला गया। मैं सेविका की ओर झुका, वह रो रही थी।

“अपने ऊपर आक्रमण करनेवाले को तुमने देखा था ?”

“नहीं,” अवरुद्ध कण्ठ से उसने उत्तर दिया । “तमाम बत्तियाँ एकबारगी बुझ गईं । कोई मेरे पीछे आया । उसकी ज़रा भी आहट मुझे नहीं मिली । बस मुझे यही मालूम हुआ कि कोई एकाएक मेरा गला पकड़कर दबा रहा है ।

“तुमने मुझे साथ क्यों नहीं लिया, और लिफ्ट से तुम क्यों नहीं गई ?” मैंने प्रश्न किया ।

वह ज़रा घबराई ।

“लिफ्ट से मैं कभी नीचे नहीं जाती,” उसने उत्तर दिया ।

“क्यों ?”

“दूसरी मंज़िल पर काम करनेवाले सेवक ननकू से प्रायः भेंट हो जाती है और वह मुझे तंग करता है ।”

“मैं समझ गया,” मैंने कहा । “लेकिन क्या तुम्हारी मालकिन ने तुम्हें मेरे साथ नीचे जाने की आज्ञा नहीं दी ?”

उसे आश्चर्य हुआ ।

“नहीं,” उसने कहा, “रानी साहबा ने मुझे केवल जल्दी नीचे जाने की आज्ञा दी थी ।”

गलियारे में छाई हुई निस्तब्धता सहसा भंग होगई । एक छोटी-सी भीड़ आ पहुँची—मिस्टर पाण्डेय थे, होटल के मैनेजर थे और अनेक सेवक थे ।

“दो विश्वास करने योग्य नौकरों को छोड़कर बाकी सब लोगों को यहाँ से हटा दीजिए,” मैंने मैनेजर से कहा । “देवनगर की रानी का हार चोरी चला गया ।”

सनसनी और उत्तेजना की लहरें दौड़ गईं, फुसफुसाहट सुनाई देने लगी । दो को चुनकर मैनेजर ने बाकी सेवकों को चले जाने की आज्ञा दी । एक को उसने लिफ्ट के पास तैनात कर दिया और दूसरे को सीढ़ियों के समीप । चन्द शब्दों में मैंने मामला बयान कर दिया ।

“आपके खयाल में क्या चोर भाग गया ?” मैनेजर ने पूछा ।

“कुछ कहा नहीं जा सकता,” मैंने उत्तर दिया । “मैं इन कमरों के बारे में जानना चाहता हूँ ।”

उसने कमरों के नम्बरों पर दृष्टि दौड़ाई।

“उस कमरे में मिस्टर पाण्डेय रहते हैं,” उसने कहा। “बाकी दोनों कमरे खाली हैं।”

“आपको पूरा विश्वास है,” बिलकुल समीपवाले कमरे की ओर इशारा करके मैंने कहा, “कि यह कमरा खाली है?”

“बेशक,” उसने दृढ़ता से उत्तर दिया। “मेरी कुंजियाँ लीजिए, और खुद देख लीजिए।”

मैं उसकी बात मानने ही वाला था कि रानी साहबा आ पहुँचीं। वे प्याज्जी रंग की साड़ी पहने हुए थीं, और उत्तेजना के कारण जैसे उनके सौन्दर्य में कुछ वृद्धि होगई थी।

“कहाँ है मेरा हार?” घबराई हुई आवाज़ में उन्होंने कहा। “लुट गया क्या?”

“रानी साहबा,” मैनेजर ने कहा, “बड़े अफ़सोस के साथ मुझे कहना पड़ता है कि—”

“आप क्या कर रहे थे, जनाब?” मेरी ओर मुड़कर वे बीच ही में चीख उठीं। “केतकी तो आपके साथ गई थी? तो क्या वह आपकी मौजूदगी में लुट गया।”

“मैं केतकी के साथ नहीं था,” मैंने उत्तर दिया। “हार का केस लेकर वह आपके शयनागार से बाहर निकली थी, आपकी बैठक में तो उसने कदम भी नहीं रखा।”

“क्या यह बात सच है, केतकी?”

“सच क्यों नहीं है, रानी साहबा?” लड़खड़ाई हुई आवाज़ में केतकी ने कहा। “बैठक में जाने की तो आपने मुझे आज्ञा नहीं दी थी। मुझे यह मालूम कहाँ था कि इनके साथ मुझे नीचे जाना होगा?”

“यह लड़की भूठ बोल रही है,” रानी ने क्रोधपूर्ण स्वर में कहा।

“ये सब बातें फिर की जा सकती हैं,” मैंने कहा। “सबसे मुख्य काम इस समय हमारे सामने यह है कि हम किसी तरह हार का पता लगायें। मैं यह चाहता हूँ कि मेरे और आपके अतिरिक्त अब यहाँ और कोई न रहे।” और मैनेजर की ओर मैं मुड़ा।

मैनेजर दृढ़ निश्चय का मनुष्य था। दो-तीन क्षणों में गलियारा खाली होगया। पाण्डेय अब भी अपने दरवाजे के निकट रुका था।

“क्या मैं यहाँ रुका रह सकता हूँ?” उसने पूछा। “इस मामले में मुझे खास दिलचस्पी है क्योंकि मेरा कमरा घटनास्थल से बिलकुल निकट है।”

मैनेजर ने उसे चले जाने का संकेत किया।

“जो कुछ मिस्टर मुकर्जी कहना चाहते हैं उसे मैं एकान्त में सुनना चाहता हूँ।”

तब पाण्डेय अपने कमरे में चला गया। सबसे पहले हमने उस कमरे में प्रवेश किया जो हमारे ठीक सामने था। यह बिलकुल खाली था और जान पड़ता था कि इसमें कोई आया-गया नहीं। बाई ओर एक दूसरा दरवाजा था।

“यह दरवाजा कहाँ खुलता है?” मैंने पूछा।

मैनेजर ने वह दरवाजा खोला। ठीक उसी तरह के एक दूसरे कमरे में वह खुलता था। वह कमरा भी खाली था। उसके बाद पाण्डेय का कमरा था, और एक दरवाजे के द्वारा वह भी इससे मिला हुआ था। इस तरह सब दरवाजे खोल देने पर तीनों कमरे एक किये जा सकते थे।

“ये हमारे सबसे सस्ते कमरे हैं,” मैनेजर ने कहा। “इनमें आमतौर से नौकर टिकते हैं या ऐसे लोग जिन्हें किफायतशारी पसन्द होती है।”

हम लोग पहले कमरे में वापस गये।

“अपनी वह कुंजी मुझे दे दीजिए जो सब तालों में लगती है,” मैंने अनुरोध किया।

वह कुंजी गुच्छे से निकालकर उसने मुझे दे दी।

“मिस्टर मुकर्जी,” उसने कहा, “अगर इस हार को खोज निकालने में आप सफल होंगे, तो हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। और होटल के अधिकारी आपके बड़े कृतज्ञ होंगे, यदि आप इस दुःखद घटना को प्रकाशित होने से बचा सकें।”

मैंने सहमतिसूचक भाव से सिर हिलाया ।

“आजकल किसी असाधारण घटना को समाचारपत्रों में जाने से रोक सकना बहुत कठिन है,” मैंने कहा, “लेकिन जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं इस मामले में खामोशी से काम लूंगा।”

कई दिन गुजर गये । रानी, बीमा-कम्पनी और होटल के प्रबन्ध-विभाग के प्रश्नों, शिकायतों और अनुरोधों के मारे नाक में दम हो गया । उपर्युक्त घटना को समाचारपत्रों में प्रकाशित होने से हम किसी तरह रोक नहीं सके । उसकी चर्चा हर गली-कूचे में होने लगी । सैकड़ों मनचले जासूसों ने अपने अनोखे अनुमान पेश किये, और हजारों नौसिखियों ने दावा किया कि वे बड़ी आसानी से खोर का पता लगा सकते हैं । छठवें दिन का प्रातःकाल आया । तबीअत बहुत ऊब गई थी । जी में आया कि कहीं बाहर जाकर जी बहलाना चाहिए । मैंने पाण्डेय से देवीगंज चलकर शतरंज खेलने का प्रस्ताव किया । वह तुरन्त राजी हो गया । टैक्सी पर सवार होकर हम देवीगंज पहुँचे । क्लब में हम दोनों ने भोजन किया, फिर शतरंज खेलने लगे । बड़े मनोयोग से हम खेलते रहे । जोड़ बराबर का था, बड़ी सरगमी थी । बाजी पर बाजी हो रही थी । कोई बाजी वह जीतता, कोई मैं ।

संध्या होगई । उठकर बाहर निकलकर हम मैदान में टहलने लगे । टहलते-टहलते हम झाड़ी के पास पहुँचे । सहसा अन्तर्ज्योति की एक दिव्य किरण मेरे मस्तिष्क में झलमला उठी । इसी अन्तर्ज्योति, इसी अन्तःप्रेरणा के क्षणों को मैं अपने जीवन के बहुमूल्य क्षण मानता हूँ । अभी अभी हमने उस दुःखान्त घटना पर वार्त्तालाप किया था जो एक दिन इसी स्थान पर घटी थी । मत्थे में गोली खाकर पड़े हुए कान्स्टेबिल रामदीन का करुण चित्र मेरी आँखों के सामने आगया, फिर आई पाण्डेय की उस बिचित्र सेबिका की शान्त, गम्भीर रूपरेखा । स्मृति के पन्ने उलटता हुआ मैं चुपचाप खड़ा था । पाण्डेय अपने पाइप में तम्बाकू भर रहा था । हलकी हवा चल रही थी, और पेड़ों की पत्तियाँ सरसरा रही थीं । ऐसा जान पड़ा मानो मेरी मानसिक शक्तियों में एक नया उत्साह,

एक नई उत्तेजना आगई हो। क्या यह सम्भव नहीं कि उसी विचित्र सेविका ने रामदीन की हत्या की हो? सम्भव क्यों नहीं हो सकती यह बात? तब उसके ऐसा करने की क्या वजह हो सकती है? किसकी रक्षा करने के लिए उसने वह हत्या की? अपने मालिक की रक्षा करने के लिए? उसके मालिका का नाम क्या पाण्डेय के बजाय मोहनलाल नहीं हो सकता? पाण्डेय और मोहनलाल एक ही कद और डील-डौल के हैं और मिस्टर कौल ने हमेशा इस बात पर जोर दिया है कि मोहनलाल या शेरसिंह वेष बदलने में बड़ा दक्ष है। सारी बातें मेरे सामने दिवस के प्रकाश की भाँति स्पष्ट होगई और हार की गुत्थी भी सुलभ गई। मुड़कर मैं दूसरी ओर देखने लगा। मुझे सहसा ज्ञात हुआ कि मेरा साथी मुझे बड़े गौर से देख रहा है। ऐसा जान पड़ा जैसे उसकी तीव्र दृष्टि मेरे सिर को छेदकर उसके अन्दर चलते हुए विचार-क्रम को देखने की कोशिश कर रही हो। मैं समझ गया कि मेरे चेहरे के किसी भाव ने मेरा भेद खोल दिया।

“चलिए,” उसने कहा। “अब वापस चलें, और विहस्की पियें।”

“चलिए,” मैंने उत्तर दिया।

क्लब में पहुँचकर मैंने विहस्की लाने का आर्डर दिया।

“ज़रा मैं हाथ-मुँह धो आऊँ,” पाण्डेय ने कहा।

“ज़रूर धो आइए।”

वह चला गया। शराब आई। शराब पीकर, दो एक मित्रों से कुशल-क्षेम पूछकर और बिल चुकाकर पाण्डेय की खोज में मैं बाहर निकला। लेकिन यह तकलीफ़ उठाने की कोई ज़रूरत न थी। न तो पाण्डेय का कहीं पता था, और न टैक्सी का। एक टैक्सी बुलाने के लिए शहर को फोन किया गया। मैं इन्तज़ार में बैठा रहा। आध घंटे के बाद टैक्सी आई और मैं उस पर सवार होकर अकेले होटल की ओर रवाना हुआ।

होटल में नाटक बड़े शानदार ढंग से खेला जा रहा था। वहाँ पहुँचकर मुझे मालूम हुआ कि बीमा-कम्पनी का प्रतिनिधि मुझसे मिलने के लिए बैठा हुआ है और देवनगर की रानी साहूबा भी अपने कमरे में मौजूब हैं। मिस्टर वर्मा और मैनेजर को साथ लेकर मैं रानी से भेंट

करने के लिए रवाना हुआ । मेरा खयाल है कि आनेवाली बातों के लिए वे पूरी तरह से तैयार बैठी थीं । किंचित् रुखाई से उन्होंने हमारा स्वागत किया ।

“सारे दिन मैं आपकी कम्पनी का सन्देश पाने की प्रतीक्षा करती रही,” वर्मा की ओर उन्होंने मुड़कर कहा । “मेरे जौहरियों ने हार का मूल्य निश्चित कर दिया है और मेरे वकील ने मेरा दावा तैयार कर दिया है । मैं यह जानना चाहती हूँ कि मुझे आपकी कम्पनी से चेक कब मिलेगा?”

“रानी साहबा,” मैनेजर ने आगे बढ़कर कहा, “मुझे यह कहते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि आपको अब चेक की जरूरत न पड़ेगी । लीजिए अपना हार ।”

मैनेजर ने हार रानी के हाथ में दे दिया । आँखें फाड़कर वे आश्चर्य से ताकने लगीं । आनन्द का कोई चिह्न उनके मुखमंडल पर उदित नहीं हुआ । ऐसा जान पड़ा जैसे उनके ऊपर वज्रपात हो गया हो ।

“यह कब मिला ?” उन्होंने धीरे से पूछा ।

“उसी रात को चोरी जाने के चार घंटे बाद,” मैंने उत्तर दिया ।

“कहाँ मिला यह ?”

“अगर आप मेरे साथ चलने की तकलीफ़ करें,” मैंने कहा, “तो मैं आपको वह स्थान दिखला दूँ ।”

सब लोगों को साथ लेकर मैं कमरे से बाहर निकला । गलियारे में जिस स्थान पर केतकी के ऊपर हमला किया गया था वहाँ पहुँचकर मैंने सबसे निकट के कमरे का दरवाजा खोला । हम उस कमरे में घुसे । अन्दर के दरवाजे में लगे हुए भारी ताले को देखकर रानी कुछ चौकीं ।

“मैंने राय कायम की,” मैंने बयान किया, “कि चोर इन्हीं कमरों में से किसी कमरे में छिपा रहा होगा । और मैंने यह भी सोचा कि हार यहीं कहीं छिपा दिया गया होगा ।”

“यह आपको कैसे मालूम हुआ ?” रानी ने पूछा ।

“इसलिए कि चोर से ज़रा-सी गलती हो गई थी,” मैंने उत्तर दिया । “जब मैं बाहर अन्धकार में केतकी के पास खड़ा था, तब मुझे दरवाजे

की एक सौंक से इस कमरे के अन्दर रोशनी की एक झलक दिखाई दी थी। खैर, मुझे यह मानना पड़ेगा कि हार को खोज निकालने में चार घंटे लग गये।”

“यह था कहाँ ?” रानी ने हैरत से पूछा।

एक स्थान से मैंने दरी हटाई। कमरे का फर्श लकड़ी का था। एक सड़ते में एक गाँठ थी। अपनी जेब से एक पेंचकश निकालकर मैंने उस गाँठ में फिट किया, और उसे खींचा। गाँठ बाहर निकल आई। तब मेरे कहने पर वर्मा ने अपनी एक उँगली उस छेद में डालकर देखा। फर्श के नीचे की तरफ एक हुक लगा हुआ था।

“हार उसी हुक में टँगा हुआ था,” मैंने कहा। “मेरा खयाल है कि जो कोई इस कमरे में ठहरता उसी को यह हार मिल जाता और सत्य तो यह है कि यह जून के प्रथम सप्ताह के लिए ले भी लिया गया है।”

“किसने लिया है इसे ?” रानी ने पूछा।

“मिस्टर पाण्डेय ने,” मैंने उत्तर दिया। “जून में वे फिर वापस आ रहे हैं, और ऐसा मालूम होता है कि जिस कमरे में रह चुके हैं उससे इस कमरे को ज्यादा पसन्द करते हैं।”

क्षणभर के लिए निस्तब्धता छा गई ! मिस्टर वर्मा ने आगे बढ़कर मुझसे हाथ मिलाया।

“हम बड़े अनुगृहीत हैं, मिस्टर मुकर्जी,” उसने कहा। “हार का बीमा आज दोपहर को समाप्त हो गया। यह कहने की जरूरत नहीं कि बीमा अब फिर नहीं किया जा सकेगा। सब लोगों को सलाम !”

वह चला गया। मैंनेजर मेरी ओर मुड़ा।

“मिस्टर मुकर्जी,” उसने कहा, “इस मामले में बहुत-सी बातें ऐसी हैं जिन्हें समझ पाना कठिन है। मैं आशा करता हूँ कि आप इस केस को पुलिस में देने का निश्चय न करेंगे ?”

मैंने रानी की ओर देखा।

“क्या आप मुकदमा चलाना पसन्द करेंगी ?” मैंने पूछा। “बहुत काफ़ी शहाबत जमा की जा सकती है।”

“किसके ऊपर मुकदमा चलाऊँ ?”

“उन्हीं महाशय के ऊपर जिनका नाम पाण्डेय है ।”

उपेक्षासूचक भाव से वे हँस पड़ीं ।

“उस मसखरे के ऊपर जो लाउंज में बैठा दिखाई देता था ? इससे बेहतर तो यही होगा, मिस्टर मुकर्जी, कि मैं आप ही को चोर समझूँ और आपके ऊपर मुकदमा चलाऊँ । मेरा हार मिल गया, और अब मुझे किसी बात की चिन्ता नहीं है ।”

सन्तोष की साँस लेकर मैनेजर चला गया । रानी ने मुझे अपने साथ चलने का इशारा किया । अपनी बैठक में पहुँचकर उन्होंने दरवाज़ा बन्द कर दिया । तब वे मेरी ओर मुड़ीं । उत्तेजित शेरनी की भाँति वे उस समय दृष्टिगोचर हो रही थीं । ऐसा विकट साहस मुझे कभी किसी दूसरी स्त्री में देखने को नहीं मिला ।

“कथानक का उपसंहार भी कह डालिए, मिस्टर मुकर्जी,” दृढ़तापूर्ण स्वर में उन्होंने कहा ।

“मुझे खेद है,” मैंने उत्तर दिया, “कि उसे अभी मुलतवी रखना पड़ेगा । आज ही क्लब के मैदान में मेरे मस्तिष्क में दो साल पहले के एक रहस्य का उद्घाटन हुआ है । सब बातें साफ़ होगईं । मुझे मालूम होगया कि वह गोली किसने चलाई थी जिसने रामदीन के दिमाग में घुसकर उसकी जान ले ली थी । और मैं यह भी जान गया हूँ कि किसके लिए वह हत्या की गई थी ।”

“फिर भी आपने उसे भाग जाने दिया !”

“अगर मैं यह जान पाता,” मैंने धीरे धीरे कहा, “कि वह निकल भागेगा, तो मैं उसका गला घोट देता । खैर, जो हो गया, सो हो गया । यह तो मानना ही पड़ेगा कि इस बार वह मुझे चक्रमा दे गया । लेकिन आपको यह याद रखना चाहिए कि वह संसार, जहाँ ऐसा आदमी रह सकता है, बहुत बड़ा नहीं होता ।”

“और मुझे क्या कहते हैं आप ?” उन्होंने पूछा । “ज्यों ही मैंने सुना कि वह आपके साथ अकेले बाहर गया है, मैं समझ गई कि अब क्या होने जा रहा है । मुझे भय नहीं हुआ । मैं आपका इन्तज़ार करती रही ।”

मैंने हार पर दृष्टि डाली, और अपने कन्धे हिलाये।

“दस लाख रुपये छोड़ जाना आसान काम नहीं,” मैंने कहा, “और जहाँ तक आपने समझा था उसके अनुसार खेल अभी समाप्त नहीं हो गया था। इस होटल का कोई आदमी यह नहीं जानता था कि हार मैंनेजर की तिजोरी में बन्द है। खैर, यह तो मानना ही पड़ेगा कि यहाँ रुकी रहकर आपने असाधारण साहस का परिचय दिया है।”

वे ज़रा मेरे और निकट आ गईं। उनकी आँखों का प्रकाश कोमलतर हो गया। मुझे उनके उन्मत्तकारी आकर्षण का अनुभव हुआ, और यही वे चाहती भी थीं।

“जब मैं प्रेम करती हूँ,” उन्होंने कहा। “तब मैं साहस और शैतान-द्वारा निर्मित सभी विशेषताओं का परिचय दे सकती हूँ, एक स्थायित्व को छोड़कर। क्या आप मुझसे इसलिए डरते हैं, मिस्टर मुकजी, कि मैंने एक ऐसे मनुष्य की हत्या की है जिसने—”

“अपराध स्वीकार कर रही हैं?” मैंने धीरे से कहा।

वे हँस पड़ीं।

“कोई गवाह यहाँ मौजूद नहीं है,” उन्होंने कहा। “एक बार आप ही ने तो कहा था कि हत्या एक ऐसा अपराध है जो बड़ी आसानी से किया जा सकता है। जो कुछ आप जानते हैं और जो कुछ मैं जानती हूँ, उससे मेरे ऊपर मुकदमा नहीं चल सकता। मेरे दुश्मन! अगर आप चला सकें, तो क्या मेरे ऊपर मुकदमा चलायेंगे?”

मैं ज़रा पीछे हट गया। उनकी साँस मेरे मुख पर लग रही थी, और उनके ओंठों में नियन्त्रण का भाव प्रकट हो गया था।

“बेशक,” मैंने उत्तर दिया। “अगर चला सकूँ तो मैं आपके ऊपर ज़रूर मुकदमा चलाऊँ। आपने एक अपराधी और हत्यारे की रक्षा करने के लिए बड़ी निर्दयता से एक मनुष्य की हत्या की। न्याय का चक्र धीरे धीरे चलता है लेकिन एक न एक दिन उसकी पकड़ में प्रत्येक अपराधी को आ जाना पड़ता है।”

वे उपेक्षा के भाव से हँस पड़ीं।

“अज्ञानता के कारण आप ऐसी बात कह रहे हैं,” उन्होंने कहा

“आइए हम लोग दोस्ती कर लें कम से कम उस समय तक के लिए जब तक कि मुझे फाँसी के तख्ते पर खड़ी कर सकने की स्थिति में आप न आ जायें। अपने दाहने हाथ से मैंने उसके ऊपर गोली चलाई थी।”

अपना बायाँ हाथ उसने मेरी ओर बढ़ा दिया। भुक्कर मैंने उनका वह हाथ चूम लिया।

“विश्वासघात का.....!” मैंने चेतावनी दी।

“विश्वासघाती को असाधारण चातुर्य का परिचय देना पड़ेगा,” उन्होंने मुस्कराकर उत्तर दिया।

३

सरला बैंक पर डाका

शेरसिंह

आवश्यक सूचनायें प्राप्त करने और प्रारम्भिक कार्रवाईयाँ करने में महीनों लग गये। लेकिन निश्चित समय आखिर आ ही पहुँचा। हीरापुर के कमला स्ट्रीट में दास स्टोर्स के सामने एक दिन ठीक साढ़े बारह बजे में एक पुरानी फ़ोर्ड कार से उतरा। हीरापुर व्यवसाय का एक उगता हुआ केन्द्र है। अनेक मिलें और फ़ैक्टरियाँ यहाँ खुल गई हैं और अनेक खोली जा रही हैं। उसका यह मुहल्ला शहर से दूर है और यहाँ के छोटे-छोटे घरों में अधिकतर मजदूर और मध्यम श्रेणी के लोग रहते हैं। सुबह-शाम यहाँ खूब चहल-पहल रहती है लेकिन दोपहर के समय, जब प्रायः सभी पुरुष और अधिकांश स्त्रियाँ मिलों में काम करती रहती हैं और बच्चे पाठशालाओं में पढ़ते रहते हैं, मुहल्ला सुनसान और उजड़ा हुआ-सा दृष्टिगोचर होता है। दूसरी पटरी पर एक बड़ी सफ़री कार खड़ी थी। उस पर दो यात्री सवार थे—एक स्त्री और एक पुरुष। शोफ़र मोटर में पेट्रोल भर रहा था। इधर-उधर दृष्टि दौड़ा-कर मैंने देखा, उन लोगों के अतिरिक्त और कोई दृष्टिगोचर नहीं हुआ।

एक पगडंडी पर चलकर एक ओर मुड़कर मैं एक मैदान में पहुँच गया। और मेरा खयाल है कि कोई मुझको देख नहीं सका। मैदान में वाई ओर एक गढ़ा था जिसमें कूड़ा-कर्कट का एक बहुत बड़ा ढेर पड़ा सड़ रहा था और दुर्गन्ध फैला रहा था। दाहनी ओर अनेक अधबने मकान खड़े थे। मजदूर और राजगीर शायद आज छुट्टी मना रहे थे क्योंकि वहाँ कोई दिखाई नहीं दे रहा था। एक नई इमारत उस ओर खड़ी थी और उसी से मुझे मतलब भी था। उस इमारत के फाटक पर लगा हुआ पीतल का साइन-बोर्ड सूचित कर रहा था कि वह सरला बैंक की एक शाखा है। आस-पास की फ्रैक्टरियों की सुविधा के लिए ही शायद उस बैंक की स्थापना उस स्थान पर की गई थी।

मैंने इधर दृष्टि दौड़ाई। सौभाग्य मेरा साथ देने को तैयार था, कोई दिखाई न दिया। तब मैं बड़ी सावधानी से अन्दर घुसा। सामने कमरे में बैंक के मैनेजर और क्लर्क के अतिरिक्त और कोई न था। काउन्टर के पीछे बैठे हुए वे नोट गिन रहे थे। नोटों के कई बड़े ढेर उनके सामने लगे थे। मैंने कमरे में प्रवेश किया। प्रश्नसूचक दृष्टि से वे मेरी ओर देखने लगे। अजनबी लोग यहाँ मुश्किल से आते हैं, शायद यही था उनके कौतूहल का कारण।

मेरी योजना बड़े सुव्यवस्थित ढंग से बनाई गई थी और उसकी हर एक तफ़्सील पहले ही से सोच ली गई थी। डराने-धमकाने की निरर्थक क्रिया में समय बरबाद करने का मेरा इरादा लेशमात्र न था। समय मेरे पास बिलकुल न था फिर भी यह आश्चर्य की बात है कि उन कुछ क्षणों की छोटी-छोटी बातें भी मेरे मस्तिष्क में बड़ी सफ़ाई से अंकित हैं। मैंने देखा कि उसके ओठों से मुस्कान एकदम उड़ गई और उसकी आँखों में सन्देह उदित हुआ। सन्देह ने भय को स्थान दिया। जब मेरे रिवाल्वर से निकली हुई गोली उसके दाहने कंधे में घुस गई तब वह पीड़ा से तड़प उठा। क्लर्क तो शायद यह भी न जानता था कि साहस किसे कहते हैं। उसका चेहरा फ़क़ हो गया। दोनों हाथ ऊपर उठाकर दया के लिए गिड़गिड़ाता हुआ वह थरथर कापता खड़ा रहा।

मुझे विश्वास है कि अगर मैं उससे कुछ न बोलता तो भी वह दो-चार सेकेंड में खुद बेहोश होकर फ़र्श पर ढेर हो जाता। लेकिन मैं किसी तरह का कोई खतरा उठाने को तैयार नहीं था। आगे झुककर मैंने उसके मुख पर एक घूँसा जमा दिया। लड़खड़ाकर वह कटे हुए पेड़ की तरह फ़र्श पर गिर पड़ा। तब मैंने नोटों के बंडल उठा लिये और बड़े इत्मीनान से बैंक के बाहर निकला। कुल एक लाख दस हजार रुपये के नोट थे। कुल डेढ़ मिनट में उपर्युक्त सारी कार्रवाइयाँ मैंने कर डाली। मैं कमला रोड की ओर रवाना हुआ जहाँ मेरे साथी मेरा इन्तज़ार कर रहे थे।

गली की मोड़ पर पहुँचकर मैंने पीछे देखा। बैंक के सामने जीवन का कोई चिह्न दृष्टिगोचर नहीं हुआ। जिस स्थान पर मैं खड़ा था वहाँ के खाली मकानों के सामने दो-चार बच्चे खेल रहे थे। और एक मकान की खिड़की के पीछे काम-धन्धे में लगी हुई दो-तीन स्त्रियाँ दिखाई दे रही थी। एक दरवाज़े के सामने एक स्त्री अपने बच्चे को डाँट रही थी। उसने मेरी ओर देखा किन्तु उसकी दृष्टि में कौतूहल का भाव न था। मेरी पनामा हैट मेरी आँखों के ऊपर तक झुकी हुई थी क्योंकि कड़ी धूप से उनकी रक्षा करना ज़रूरी था। तेज़ी से चलकर मैं दो मिनट में दास स्टोर्स के सामने पहुँच गया। एक आदमी उस फ़ोर्ड कार के ऊपर झुका खड़ा था जिस पर मैं यहाँ आया था। मैंने उसकी ओर दृष्टि नहीं डाली। दूसरी पटरी पर पहुँचकर मैं उस भूरे रंग की सफ़री कार पर सवार हो गया। कार का इंजन भरभरा रहा था और शोफ़र अपनी सीट पर तैयार बैठा था। मोटर तुरन्त चल पड़ी। सावित्री मेरी बग़ल में आसीन थी। एक हलकी-सी नक्काब उसके चेहरे पर पड़ी थी इसलिए उसे पहचान सकना कठिन था। एक मिनट में हम बड़ी सड़क पर पहुँचकर सलीमनगर की ओर तेज़ी से रवाना हुए।

जब हमारी कार नगर की सीमा से बाहर हो गई तब सावित्री ने चाँदी का एक फ़्लास्क मेरी ओर बढ़ाया। मैंने इनकार किया।

“तुम जानती हो,” मैंने कहा, “एक वज्र से पहले मैं कुछ नहीं खाता-पीता। अभी नहीं पीऊँगा।”

मेरा खयाल है कि मैंने उसके चेहरे पर उस समय उस आराधना-पूर्ण अनुराग की एक झलक देखी जिसके कारण ही मैं इस स्त्री के ऊपर जितना विश्वास करता हूँ जितना आज तक किसी दूसरी स्त्री के ऊपर नहीं कर सका ।

“कैसा जबरदस्त साहस है तुममें !” उसने कहा ।

“मुझमें न तो साहस है और न भय” मैंने कहा । “इन दोनों का पवाल ही मेरी हालत में नहीं उठता । इस समय तक तुम्हें यह बात समझ लेनी चाहिए थी ।”

“सब कार्रवाइयाँ सहूलियत से हो गईं ?” उसने पूछा ।

“बिल्कुल कार्य-क्रम के अनुसार । अगर कोई ग्राहक एक-एक उस समय आ जाता तो शायद कुछ दिक्कत होती । लेकिन यह दिक्कत भी पेश नहीं आई ।”

“हुआ क्या ?”

“मैंने मैनेजर के कंधे में गोली मार दी । दिल पर निशाना लगाता, तो शायद ज्यादा अच्छा होता लेकिन खिड़कियों के पर्दे गिरे हुए थे और मेरी हैट, नक्काब का काम कर रही थी । उसका क्लर्क तो भय के मारे ही मरा जा रहा था । एक घूँसा ही उसके लिए काफी साबित हुआ । दूसरी गोली बरबाद करने की जरूरत नहीं पड़ी ।”

“और मिला कितना ?” उसने पूछा ।

“एक लाख दस हजार । जितनी तैयारी करनी पड़ी और जितना खतरा उठाना पड़ा उसके मुकाबिले में यह रकम बिल्कुल मामूली मालूम पड़ती है । फिर भी कुछ तो करना ही था ।”

कार तेजी से चली जा रही थी । इधर-उधर बंजर भूमि फैली हुई थी और दो-चार काँटीले पेड़ दृष्टिगोचर हो रहे थे । सावित्री और मैंने नोटों को तीन भागों में बाँट दिया और तीन बंडल बनाये । तब उसने अपने बेग से एक नक्शा निकाला ।

“आगे बीरपुर मिलेगा न ?” उसने पूछा ।

“हाँ ।”

कुछ दूर आगे जाकर हमें एक छोटी-सी मोटर कार दिखाई दी

जो एक पटरी पर थी। उसका मालिक जमीन पर बैठा हुआ था। ज्यों ही हम उसके निकट पहुँचे, वह उठ खड़ा हुआ। दो क्षण के लिए हमारी कार रुकी। मैंने उस व्यक्ति को नोटों का एक बंडल और एक काला थैला जिसमें मेरी पनामा हैट बंद थी दे दिया।

“कार्रवाई ठीक तरह से हो गई?” उसने पूछा।

“बिलकुल ठीक तरह,” मैंने उत्तर दिया।

हम बीस मील और निकल गये। तब उसी तरह की एक दूसरी घटना घटी। एक आदमी जो अपनी मोटर साइकिल के पास बैठा हुआ था उठ खड़ा हुआ। ज्यों ही हम उसके निकट पहुँचे मैंने उसे दूसरा बंडल दे दिया।

“सब खैरियत है?” उसने पूछा।

“बिलकुल,” मैंने उत्तर दिया।

हम फिर चल पड़े। कार ही में हमने भोजन किया। उत्तर की ओर चालीस मील तक और जाने के बाद हम एक पहाड़ी पर पहुँचे। सामने एक बड़ी-सी सफ़री कार जिसका मुख हमारी ओर था खड़ी हुई थी और उसमें एक आदमी मूर्तिवत् बैठा हुआ था। जब हम उसके निकट पहुँचे तब उसने अपना हाथ बाहर निकाला और अपनी घड़ी पर दृष्टि डाली।

“आश्चर्य!” उसने धीरे से कहा। “आप तीन मिनट पहले ही पहुँच गये।”

मैंने उसे नोटों का तीसरा बंडल दे दिया। उसने हाथ हिलाया और अपना इंजन खोला। हम आगे बढ़ गये। पीछे उठकर मैंने एक सिगरेट जलाई।

“अब मुझे केवल एक चिन्ता है,” मैंने कहा।

“किस बात की चिन्ता?” सावित्री ने तुरन्त पूछा।

“अपने बाग़ की चिन्ता। माली होशियार नहीं है, कहीं उसकी दुर्गति न हो रही हो।”

वह मुस्कराई।

“मैंने तो समझा था कि मुक़र्जी का ज़िक्र करोगे,” उसने कहा।

मैंने सिर हिलाया।

“मुकजी नैनीताल गये हुए हैं। और मैं यह नहीं कह सकता कि मुझे इस बात का खेद नहीं है।”

“क्यों?”

मैंने सामने दृष्टि डाली। सूर्य का प्रखर प्रकाश चारों ओर फैला हुआ था। घनी भाड़ियाँ इधर-उधर बिखरी हुई थीं। दूर, बहुत दूर भाड़ियों की पंक्तियाँ आकाश की नीलिमा से आलिंगन करती हुई-सी जान पड़ती थीं। बड़ा मनोरम दृश्य था। बड़ा सुन्दर दिन था और बड़ा सुन्दर था वह प्रदेश जिसमें हम उस समय गुजर रहे थे।

“कई वर्षों से,” मैंने कहा, “मुकजी ने हम लोगों का जीवन असुविधा-जनक बना रक्खा है। मेरे एक बड़े योग्य सहयोगी को अपना सारा समय उनके ऊपर नज़र रखने में लगाना पड़ रहा है। अनेक ऐसे स्थान हैं, जहाँ मैं जाना चाहता हूँ, लेकिन जा नहीं पाता। उनमें बड़ी विलक्षण प्रतिभा है। और वे एक विशेष घटना का संबंध एक विशेष व्यक्ति से बड़ी आसानी से जोड़ लेते हैं। उनकी इसी योग्यता के कारण हमें इतने दिनों तक बेकार रहना पड़ा और नौबत यहाँ तक पहुँच गई कि हम क़रीब क़रीब कंगाल हो गये। इस भोजन का सारा खर्च अदा कर देने के बाद हमारे पास सिर्फ़ इतना बच रहेगा कि हम दो तीन महीने तक आराम से गुज़र बसर कर सकेंगे। अगर हम मुकजी को साफ़ कर दें तो हमारा रास्ता भी साफ़ हो जाय और हम मनमानी कर सकने के लिए आज़ाद हो जायें।”

“क्यों नहीं कर देते साफ़?” सावित्री ने अन्यमनस्कता से कहा।
“अन्य मनुष्यों की भाँति वह भी तो आखिर एक मनुष्य ही है।”

मैंने गहन विचारों से निमग्न होने का भाव प्रकट किया। लेकिन यथार्थ यह है कि मैं सावित्री का अध्ययन कर रहा था। कोई प्राणी या कोई सेविका किसी की इतनी वफ़ादारी से सेवा नहीं कर सकती, जितनी वफ़ादारी से उसने मेरी सेवा की है। किन्तु मुझमें जो सहज अन्तर्ज्ञान है वह उसे लेकर कभी कभी शंकित हो उठती है। मैं जानता हूँ कि उसका मस्तिष्क बड़ा विचित्र है और उसके स्वभाव में बड़ी विचित्र तथा उत्कट भावुकता है। अभी तक मैं उसका जीवनसंगी रहा हूँ।

लेकिन मैं कभी कभी सोचता हूँ कि अगर मैं उसका जीवनसंगी न बना होता तो क्या मुक़र्जी उसके जीवन साथी न बन जाते ।

रात में हम जहाँ ठहरना चाहते थे वह स्थान अभी दूर था और अभी दो-चार सनसनीपूर्ण मिनट और आने को थे । अभी अभी हम एक छोटे-से क़सबे से बाहर निकले थे । हमारा शोफ़र मोटर तेज़ करने ही जा रहा था कि हमारे सामने वह दृश्य आ उपस्थित हुआ जिसे हमारी उस परिस्थिति में किसी तरह चित्ताकर्षक नहीं कह सकते । दो आदमी जो बाइसिकिलों पर सवार थे और हमारी ओर आ रहे थे अपनी बाइसिकिलों से उतर पड़े और हाथ फैलाकर सड़क के बीच में खड़े हो गये । सूर्य के तेज प्रकाश में उनकी वर्दियाँ चमक रही थीं । हम तुरन्त समझ गये कि वे पुलिसवाले हैं । शोफ़र ने ज़रा मुड़कर मेरी ओर देखा ।

“अब क्या करोगे ?” सावित्री ने पूछा ।

“क्या करूँगा ? वही जो ऐसी हालत में करना चाहिए । इन्हीं सारी बातों का अनुमान और उनसे निपटने का इन्तज़ाम किया जा चुका है । रामसिंह, ये पुलिसवाले शायद हमसे कुछ कहना चाहते हैं । गाड़ी रोको ।”

उन लोगों के सामने दो-तीन गज़ की दूरी पर कार रुक गई । उन दोनों में से जो ज़्यादा लम्बा था और हवलदार मालूम होता था, बड़ी शान से हमारे निकट आया ।

“सलाम, हवलदार साहब ।” मैंने कहा । “क्या मैं आशा करूँ कि हम किसी आफ़त में फँस गये हैं ?”

उसने मेरी ओर इस तरह देखा जैसे मैंने उसके किसी प्रिय मित्र का खून कर डाला हो ।

“मामला आपके नम्बर-प्लेट से संबंध रखता है, जनाब,” उसने कहा । “खानपुर से हमें आदेश मिला है कि हम आपकी गाड़ी रोकें और आपका ध्यान उसकी ओर दिलायें ।”

“क्या खराबी है मेरे नम्बर-प्लेट में ?” मैंने पूछा ।

“उस पर धूल और कीचड़ जमी हुई है । नम्बर पढ़ सकना नामुमकिन है । आपकी कार किसी ऐसे स्थान पर चली होगी जहाँ कीचड़ रहा होगा ।”

सावित्री ने मेरा हाथ दबाया। उसकी उँगलियाँ बर्फ की तरह ठण्डी थीं। उस क्षण के महत्त्व से और उसका जो असर सावित्री पर पड़ा था उससे प्रभावित हुए बिना मैं नहीं रह सका। शोफ़र, हवलदार और मैंने नम्बर-प्लेट का निरीक्षण किया। अपने औज़ारों के थैले से शोफ़र ने एक भाड़न निकाला, और रगड़-रगड़ कर नम्बर-प्लेट साफ़ कर दिया।

“अब तो यह ठीक है, हवलदार साहब?” मैंने पूछा।

“हाँ, अब यह बिल्कुल ठीक है, जनाब,” मत्थे से पसीना पोंछकर उसने कहा। “बड़ी सस्त गमी है और कड़ी धूप में बाइसिकिलों पर सवार होना तो और भी आफ़त है।

मैंने उसके हाथ में एक रुपया रख दिया। उसकी आँखें चमक उठीं। अधिक भी मैं दे सकता था लेकिन ऐसा करके सन्देह को प्रोत्साहन देना नीति के विरुद्ध था।

“मुझे इस बात का अफ़सोस है कि मेरी वजह से आपको इतनी तकलीफ़ हुई,” मैंने कहा। “हम यात्री लोग अपने नम्बर-प्लेटों का खयाल नहीं रखते। मैं आशा करता हूँ कि आप कुछ खयाल न करेंगे।”

“कोई बात नहीं है, जनाब,” हवलदार ने कहा। फिर मुझे और सावित्री को सलाम करके उसने अपने साथी से कहा, “चलो निसार, ज़रा हौली की तरफ़ चलें।”

फिर हम उत्तर की ओर चल पड़े। मेरा शोफ़र अघेड़ व्यक्ति था और मेरे जीवन के विचित्र खेलों में, मेरे समस्त सुख-दुख में एक ज़माने से शरीक था। साहस की उसमें कमी न थी लेकिन जिस ढंग से वह कुछ समय तक मोटर चलाता रहा उससे मुझे ज्ञात हुआ कि वह उत्तेजित हो उठा था। सावित्री ऊपर से तो शान्त दिखाई देती थी लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि उसके अन्दर अब भी घबराहट कम नहीं हुई थी। मैं एक कोने में आराम से उठँग गया, आँखों पर चश्मा लगा लिया, जब से शतरंज के विषय की एक पुस्तक निकालकर पढ़ने लगा। इस तरह यात्रा करके रात के समय हम एक छोटे-से नगर में पहुँचे और रात बिताने के लिए होटल में ठहर गये।

दूसरे दिन तीसरे पहर हम अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गये। सामने एक सफेद बैंगला था जो मेरे लिए किराये पर लिया गया था। उसके आस-पास मीलों तक बंजर ज़मीन फैली हुई थी। उधर उस ओर एक दूसरी इमारत थी। एक लम्बे-चौड़े व्यक्ति ने अन्दर से आकर फाटक खोला। बड़े संतोष से मैं इधर-उधर दृष्टि दौड़ाता रहा।

“बीरू तुम्हारा ही नाम है?” कार से सिर निकालकर मैंने पूछा।

“जी हाँ, हुज़ूर,” अदब से सलाम करके उसने कहा।

“क्लब किधर है?”

“उधर।” उसने उस दूसरी इमारत की ओर उँगली से इशारा किया। मैंने संतोष की साँस ली।

“यहाँ सब इन्तजाम हो गया है?”

“जी हाँ।”

“अच्छा, अन्दर आओ।”

कार अन्दर घुसी।

जतीन्द्रनाथ मुकजी

जिस दिन मैं नैनीताल से वापस आया उसी दिन रात के समय मेरे मित्र मिस्टर कौल मुझसे मिलने आये। उन्होंने किंचित् आश्चर्य से इधर-उधर देखा क्योंकि मेरा बहुत-सा सामान अब भी बँधा पड़ा था।

“फिर कहीं की तैयारी है क्या?” उन्होंने चिन्तापूर्ण स्वर में पूछा।

“नहीं भाई, आज ही तो वापस आया हूँ। वहाँ मन नहीं लग सका। इस लम्बे सफ़र की सारी ज़हमत बेकार साबित हुई। नैनीताल के बजाय अगर कहीं और जाता तो शायद ज्यादा अच्छा होता।”

कौल ने एक दीर्घ-निःश्वास छोड़ी।

“खैर, मुझे तो इस बात से बड़ी खुशी है कि आप जल्द ही वापस आगये,” एक आरामकुर्सी पर बैठकर उन्होंने कहा।

“हीरापुर का कुछ हाल सुनाइए,” मैंने कहा, “समाचार-पत्रों के देखने से तो मालूम होता है कि आप लोग बड़ी परेशानी उठा रहे हैं, यद्यपि मामला बड़ा साधारण है।”

कौल की पेशानी पर बल पड़ गया । कई क्षणों तक वे चुपचाप बैठे रहे । मैंने देखा कि उनका चेहरा उतरा हुआ है और जैसे उनकी तबीअत कुछ खराब है ।

“मेरा खयाल है कि मेरी बुद्धि कुछ कुंद हो गई है,” उन्होंने कहा । “कल रात को जब मैं वापस आया तब हमारे प्रधान महोदय ने भी इसी बात की ओर इशारा किया था । सच तो यह है कि मैं इस समय यह जानने ही के लिए हाज़िर हुआ हूँ कि इस मामले में आप मेरी कुछ मदद कर सकते हैं या नहीं ।”

“अगर कर सका, तो ज़रूर करूँगा । यह बात आप अच्छी तरह जानते हैं ।”

“मामले का सीधा-सादा बयान तो आप अखबारों में पढ़ ही चुके हैं,” कौल ने कहा । “दो विश्वसनीय गवाहों ने यह बयान किया है कि ठीक उसी समय जब यह डाका डाला गया उन्होंने देखा कि आदमी जो भूरे रंग का एक सूट और पनामा हैट पहने हुए था एक पुरानी फ़ोर्ड कार पर उस सड़क पर आया और अपनी कार दास स्टोर्स के सामने छोड़कर उस मैदान की ओर रवाना हुआ जहाँ सरला बैंक स्थित है । तीन स्त्रियों और दो बच्चों ने दो मिनट के बाद उसे गली में गुज़रते देखा, और इसके तीस सेकेंड बाद सड़क पर आकर उसने दास स्टोर्स में प्रवेश किया । उस दूकान से उसने चाय, मार्मलेड और चीनी खरीदी । दूकान पर काम करनेवाले क्लर्क का बयान है कि इसके बाद वह फ़ोर्ड कार पर सवार होकर चला गया । दूकानवाले उस व्यक्ति से परिचित हैं । उसका नाम सुरेन्द्रकुमार बोस है । इसमें कोई शक नहीं कि कार उसी की थी । डाका पड़ने के आधे घंटे बाद वह अपने घर पर गिरफ़्तार किया गया । उस समय वह अपनी कार की सफ़ाई में लगा हुआ था । उसने अपने कपड़े बदल डाले थे । लेकिन उसका वह भूरा सूट, जिसे वह कुछ देर पहले पहने हुए था, एक आलमारी में बन्द पाया गया और उसी में वह पनामा हैट भी मिली । सूट और हैट में ताज़ा पसीना लगा हुआ था । कपड़े बदलने का कारण उसने यह बताया कि वह पुराने कपड़े पहनकर ही कार की सफ़ाई करता है । उसने बयान किया कि कुछ ज़रूरी चीज़ें

खरीदने के लिए वह दास स्टोर्स गया था और वहाँ से सीधे घर वापस आया और कही आया गया नहीं। दो गवाह यह हल्फिया कहने को तैयार हैं कि उन्होंने उसे फ़ोर्ड कार से उतरकर बैंक की ओर जाते हुए देखा था। दूकान के क्लर्क को, जिसने उसे सामान दिया था, इस बात का पक्का विश्वास है कि जब कार दूकान के सामने रुकी तब उसके तीस सेकंड बाद ही वह दूकान के अन्दर आया और सौदा ले चुकने के बाद ही कार पर सवार होकर चला गया।”

“यह बोस किस तरह का आदमी है ?” मैंने पूछा।

“बदमाश है,” तुरन्त उत्तर मिला। “किसी समय वह घुड़दौड़ के टिकट बेचा करता था लेकिन इस काम में वह असफल रहा। जाल के द्वारा सामान प्राप्त करने के अपराध में वह जेल जा चुका है और कर्ज-सम्बन्धी कई नालिशों उसके ऊपर दायर हैं ! आजकल दलाली करके वह किसी तरह थोड़ा-बहुत पैदा कर लेता है। हीरापुर के उस मुहल्ले से वह अच्छी तरह परिचित है। और एक बार उसे यह कहते हुए सुना गया कि जहाँ सरला बैंक स्थित है, वह स्थान सुरक्षित नहीं है। तमाम बातें इस परिणाम की ओर संकेत करती हैं कि यह डाका इसी व्यक्ति की कारवाही है लेकिन हमारे तमाम गवाह भिन्न भिन्न बातें कहते हैं। इसके अतिरिक्त इस व्यक्ति के पास एक कौड़ी भी बरामद नहीं हुई और वह कहता है कि वह उसी दिन अपनी कार बेंचकर कुछ रुपये प्राप्त करने की कोशिश करने जा रहा था।”

“मुझे ऐसा मालूम होता है,” मैंने कहा, “कि इस व्यक्ति के खिलाफ़ मुकदमा तैयार करने में आपने कुछ जल्दबाज़ी से काम लिया है।”

“मैजिस्ट्रेटों का भी यही खयाल है,” कौल ने अन्यमनस्कता से कहा। “दो बार हमें अदालत से मोहलत माँगनी पड़ी। आज सबेरे वह छोड़ दिया गया।”

“अगर दूकान का क्लर्क सत्य कह रहा है,” मैंने कहा, “तो यह सम्भव नहीं कि इस व्यक्ति ने डाका डाला हो। वह क्लर्क किस तरह का आदमी है ?”

“बड़ा शरीफ और जहीन आदमी है,” कौल ने उत्तर दिया।
“मेरा खयाल है कि जिरह में उसे उखाड़ सकना असम्भव होगा।”

“खैर, यह सब तो हुई मिस्टर सुरेन्द्रकुमार बोस की बात,” मैंने कहा।
“अब आगे कहिए !”

“यही तो परेशानी है,” कौल ने कहा। “कुछ समय में नहीं आता कि आगे क्या किया जाय ? उस समय केवल दो व्यक्ति और कमला रोड पर मौजूद थे—एक भद्र पुरुष और उसकी स्त्री। वे एक बड़ी सफ़री कार पर सवार थे और तुरन्त सलीमनगर की ओर रवाना हो गये। दास स्टोर्स में कुछ सामान खरीदने के लिए वे रुके थे लेकिन उन दोनों में से कोई गाड़ी से नहीं उतरा।”

“उस व्यक्ति की कुछ हुलिया मालूम है ?” मैंने पूछा।

“हाँ, दूकान का क्लर्क उन लोगों का आर्डर लेने गया था और उसने उसे देखा था। वह कहता है कि वह एक खेलाड़ी मालूम होता था, भूरे अलपाका का कोट पहने हुए थे और एक भूरी हैट लगाये हुए था। इस तरह का आदमी अगर गाड़ी से उतरता और सड़क पर चलता, तो यह नामुमकिन है कि किसी का ध्यान उसकी ओर न जाता।”

“स्त्री कैसी थी, कुछ मालूम है ?”

कौल ने सिर हिलाया।

“सच तो यह है कि उसके बारे में मैंने कुछ दर्याफ्त ही नहीं किया,” उन्होंने कहा। “कार की छत पर अन्य सामान के अलावा एक बन्दूक भी थी। यह साफ़ है कि उन लोगों ने सलीमनगर में कोई स्थान ले रक्खा था और मनोरंजन के निमित्त वहाँ जा रहे थे।

ऊपरी बातों से उन यात्रियों का बैंक के उस डाके से कोई सम्बन्ध नहीं जान पड़ता था। फिर भी उन दोनों का खयाल मेरे दिमाग से दूर नहीं हो सका। एक पुरुष और एक स्त्री, बैंक पर डाका और यह खबर कि मैं नैनीताल में हूँ ? इस पहली के टुकड़ों को इधर-उधर से उठाकर मैं अपने ढंग से एक साथ फ़िट करने लगा।

“मेरा खयाल है कि आप सब कुछ कर चुके मिस्टर कौल,” मैंने अन्त में कहा। “लेकिन चूँकि मेरी नैनीताल की यात्रा निष्फल सिद्ध हुई, इसलिए

मैं सोचता हूँ कि एक पखवारे के लिए ज़रा सलीमनगर हो आऊँ । क्या आप यह पसन्द करेंगे कि मैं बीच में कुछ समय के लिए हीरापुर में रुकूँ और यह देखूँ कि कुछ कर सकता हूँ या नहीं ?”

“मैंने भी यही सोचा था कि आप इसी बात का प्रस्ताव करेंगे,” उन्होंने उत्सुकता से कहा । “मैंने इस मामले पर इतना ज़्यादा गौर किया है कि मेरा खयाल है कि अब मैं इसके जाहिरी पहलू के अतिरिक्त किसी बात पर विचार नहीं कर सकता । हीरापुर के अधिकारियों के नाम प्रधान महोदय आपको एक पत्र दे देंगे । क्या आप यह पसन्द करेंगे कि मैं भी आपके साथ चलूँ ?”

मैंने सिर हिलाया ।

“नहीं,” मैंने कहा । “बेहतर यही होगा कि मैं वहाँ एक अजनबी की तरह जाऊँ ।”

उसी रात को मैंने हीरापुर की यात्रा की ।

कमला स्ट्रीट और उसके आस-पास के स्थान में कोई ऐसी बात न थी जो कौल के बयान से भिन्न हो । दिन के ठीक उसी समय मैं उस सड़क पर पहुँचा, दास स्टोर्स से बैंक तक गया और लौटकर उस दूकान में दो-एक मामूली चीज़ें खरीदीं । यह सब मैंने समय का ठीक अन्दाज़ लगाकर किया और एक सेकंड को भी इधर-उधर नहीं होने दिया । वह मुहल्ला घना बसा था और इधर-उधर टुकड़ों में विभाजित था । लेकिन यहाँ वहाँ खाली ज़मीनें भी पड़ी थीं । दास स्टोर्स के सामने की ज़मीन एक इमारत बनाने के लिए नपी-नपाई तैयार थी लेकिन काम अभी शुरू नहीं हुआ था । उसी दिन एक शराबखाने में मैंने सुरेन्द्रकुमार बोस से भेंट की । मौक़ा ताड़कर मैंने उससे बातचीत शुरू की ।

“क्या आप वही व्यक्ति हैं जिसके ऊपर इस बैंक के डाके के सम्बन्ध में सन्देह करके पुलिस खुद बेवकूफ़ बन गई ?” मैंने पूछा ।

“इससे आपको क्या मतलब है, जनाब ?” उसने उत्तर दिया ।

उसके व्यवहार में हल्काई थी और मैं समझ गया कि उसे ज़रा फुसलाने की ज़रूरत पड़ेगी ।

“सिर्फ़ इतना,” मैंने कहा । “मैं एक पत्रकार हूँ और एक सचित्र

पत्र का प्रतिनिधि भी हैं। आपको दस रुपये प्रस्कार के रूप में दूंगा, अगर आप अपना एक चित्र ले लेने की आज्ञा दे दें।”

उसका रंग-रुंग बदल गया।

“अपने पत्र मं देने के लिए, आप मुझमें भेंट तो नहीं करने आये हैं?”

“जी नहीं,” मैंने तुरन्त आश्वासन दिया।

“तब ले लीजिए मेरा चित्र।”

तुरन्त जब से कैमरा निकालकर मैं उसका चित्र खींचने लगा।

“मैंने इस केस का विवरण पत्रों में पढ़ा था,” मैंने कहा। “एक मूर्ख भी यह बात समझ लेता कि आपका इस मामले से कोई सम्बन्ध नहीं है।”

कुल्हड़ मुख से हटाकर वह मेरी ओर कौतूहल पूर्ण दृष्टि से देखने लगा।

“अगर मैं पुलिस होता,” मैंने कहा, “तो मैं उन यात्रियों का पता लगाना, जो उस दिन सलीमनगर की ओर जा रहे थे।”

“तब आप भी उतने ही बेवकूफ हैं जितनी पुलिस है,” “उसने उत्तेजित स्वर में उत्तर दिया। “उन लोगों का इस मामले से कोई सम्बन्ध न था। पेट्रोल भरने के लिए उनकी कार रोकी गई थी और वे गाड़ी से उतरे भी नहीं।”

मैं मुस्कराया और चित्र खींचना मैंने जारी रक्खा। स्पष्ट चिन्ता के भाव से वह मेरी ओर देखता रहा।

“वे शिकारी हैं,” उसने कहा, “और उधर शिकार खेलने गये हैं।”

“हो सकता है,” मैंने कहा। “लेकिन उन्हें कोई जल्दी तो नहीं थी?”

“इससे आपका क्या मतलब है?”

“अगर उन्हें जल्दी होती तो वे दासपुर में दो रातें क्यों काट देते?”

“यह किसने बतलाया?” उसने पूछा। “वहाँ वे केवल एक रात छहरे थे और उन्हें इस बात का अफ़सोस था कि उन्हें रुकना पड़ा।”

“यह आपको कैसे मालूम हुआ?” उसके चेहरे की ओर देखते हुए मैंने पूछा।

“मैंने उनके शोफ़र से बातचीत की थी,” उसने उत्तर दिया। “उसने मुझे यह भी बतलाया था कि इंजन में कुछ खराबी आगई थी।”

मैंने वार्त्तालाप का विषय पलट दिया। चित्र समाप्त करके मैंने पुरस्कार अदा किया और उससे बिदा ली। उसी रात को डाकगाड़ी से मैं सलीमनगर की ओर रवाना हो गया।

उस दम्पति का पता लगाने में कई दिन लग गये। मुझे खबर मिली कि उन लोगों ने अपने नाम श्रीयुत और श्रीमती रतननाथ किचलू प्रकट किये थे। कई दिनों की दौड़-धूप के बाद आखिर मैं सलीमनगर के उस निर्जन स्थान पर पहुँच ही गया, जहाँ एक बँगला किराये पर लेकर वे अस्थायी तौर पर रह रहे थे। दूसरे दिन प्रातःकाल मुझसे एक ज़रा-सी भूल हो गई। खाकी रंग का एक सूट पहनकर मैं उस पहाड़ी भूमि पर घूमने के लिए निकल पड़ा। अभी मैं एक टीले के ऊपर, जो एक नदी के किनारे खड़ा हुआ था पहुँचा ही था कि दूसरी ओर से आते हुए एक दल से मेरी मुठभेड़ हो गई। उस छोटे से दल में हमारे पूर्व-परिचित मिस्टर पाण्डेय, उनकी स्त्री, एक लम्बा-तगड़ा सेवक और दो कुत्ते सम्मिलित थे। पहले तो वह महत्त्वपूर्ण क्षण दुःखान्त घटनाओं की सम्भावनाओं से परिपूर्ण प्रतीत हुआ; किन्तु बाद में उसने केवल साधारण शिष्टाचार को जन्म दिया। पहले मैंने देखा कि मिस्टर पाण्डेय के हाथ में एक बन्दूक उठकर, तनकर, चमक उठी। फिर मैंने देखा कि उसकी स्त्री ने उसका हाथ पकड़कर उसे गोली चलाने से रोका और उसके कान में कुछ कहा। मैंने अभिवादन किया और उसने समुचित उत्तर दिया। उसकी बन्दूक नीचे लटककर भूलने लगी। मेरा हाथ भी जो भीतरी जेब में घुसकर एक सख्त चीज पर पहुँच गया था बाहर निकल आया।

“कैसी विचित्र है यह भेंट!” हलकी मुस्कान के साथ सावित्री ने कहा। “तो आप भी कभी-कभी छुट्टी मना लिया करते हैं, मिस्टर मुकर्जी?”

“हाँ, कभी-कभी,” मैंने स्वीकार किया। “नैनीताल से मैं एकाएक बापस आ गया। वहाँ मेरा मन नहीं लग सका।”

“क्या आपको यह मालूम नहीं है महाशय, कि आप मदाखलत बेजा का जुर्म कर रहे हैं?” सेवक ने कड़े स्वर में पूछा।

“मुझे यह मालूम नहीं था भाई, कि यह तुम्हारे मालिक की ज़मीन है,” मैंने उत्तर दिया। “यहाँ कोई नोटिस भी तो नहीं लगी है।”

“कोई हर्ज नहीं,” सावित्री ने ब्रीचबचाव किया। “हम इधर चिड़ियों का शिकार करने के लिए निकल आये हैं।”

“जहाँ तक मुझे पता है, मेरे कारण कोई चिड़िया उड़ नहीं गई।” मैंने आश्वासन दिया।

“वे यहीं पास ही होंगी।” सेवक ने कहा। “कुछ दूर और चलना चाहिए।”

“आप यहाँ कब तक रहेंगे, मिस्टर मुकर्जी?” पाण्डेय ने पूछा।

“करीब एक सप्ताह तक, अगर यहाँ तबीअत जम गई तो,” मैंने उत्तर दिया।

“मैंने उधर वह बँगला कुछ समय के लिए ले लिया है,” उस ओर इशारा करके उसने कहा। “यहाँ से जाने से पहले ज़रा एक बार हमसे मिल लीजिएगा।”

“बेहतर है।”

“क्या आप कृपा करके आज रात हमारे यहाँ आकर भोजन करने की तकलीफ़ गवारा कर सकेंगे?” सावित्री ने निमन्त्रण दिया। उसकी आँखों में चुनौती का भाव था।

मैं पशोपेश में पड़ गया। वह निमन्त्रण एक ढंग से आकर्षक प्रतीत हो रहा था, और दूसरे ढंग से अवांछनीय। पाण्डेय मेरी ओर इस ढंग से देख रहा था जैसे मेरे विचारों को जानने की कोशिश कर रहा हो।

“यदि आपत्ति हो तो आप हमारा नमक न खाइएगा।” पाण्डेय ने गम्भीर भाव से कहा।

“आपके यहाँ भोजन करने में मुझे बड़ी खुशी होगी।” मैंने कहा। “आठ बजे के करीब आऊँ?”

“करीब नहीं, आपसे अनुरोध करती हूँ।” सावित्री ने विनयपूर्ण स्वर में कहा। “बीरू हमारे लिए आज एक खास किस्म की मछली पकड़कर लायेगा और पकने के बाद उसे ताज़ी ही खाने में मज़ा आता है। मेहरबानी करके ठीक पौने आठ बजे तशरीफ़ लाइए।”

“बेहतर है।” मैंने बाबा किया। “बिल्कुल ठीक वक़्त पर आऊँगा।”

तीसरा पहर मैंने इधर-उधर घूमने-फिरने, कुछ लिखने-पढ़ने और टेलीफोन पर बात करने में गुज़ार दिया। आठ बजने में बीस मिनट बाक़ी थे, जब मैंने पाण्डेय के मकान के उस लम्बे-चौड़े हाते में प्रवेश किया। उसकी लम्बी और ऊबड़-खाबड़ सड़क पर चलकर मैं सदर दरवाज़े के सामने पहुँचा। मैंने घंटी बजाई। तुरन्त ही एक साफ़-सुथरा सेवक हाज़िर हुआ। वह मुझे अन्दर लिवा ले गया। जब मैं हाल में पहुँचा तो सावित्री उसके दूसरे सिरे से मेरा स्वागत करने के लिए आगे बढ़ी। ठीक उसी समय डिनर का घंटा बजा और चन्द मिनट के बाद एक विचित्र भोजनालय में एक चमकती-दमकती मेज़ पर भोजन करने के लिए हम बैठ गये। खाना बहुत बढ़िया पका था और परोसने का काम कर रहा था वही सेवक, जिसने द्वार पर मेरा स्वागत किया था। मदिरा भी बहुत बढ़िया थी और मेरे मेज़बान ने मेरा ध्यान इस बात की ओर आकर्षित किया कि मेरे ही सामने बोतल खोली गई थी। भोजन जब समाप्त हो गया तब हम बग़ल के एक चबूतरे पर पहुँचे, जहाँ एक मेज़ पर फलों की तश्तरियाँ सजी हुई थीं और काफ़ी तैयार रखी थी। हम आराम-कुर्सियों पर बैठ गये और सामने फैला हुआ, हलकी चाँदनी में झलमलाता हुआ सुहावना दृश्य देखने लगे। सामने दूर तक ऊँची-नीची, पथरीली भूमि फैली हुई थी, आकाश में तारे खिलखिला रहे थे और बड़ी मधुर हवा बह रही थी।

“आप बड़े बहादुर आदमी हैं, मिस्टर मुकर्जी!” सावित्री ने एकाएक कहा।

“क्यों?” मैंने पूछा।

“आप जानते हैं और केवल आप ही जानते हैं कि मैंने एक आदमी का खून किया है, हालाँकि आप यह बिलकुल ठीक-ठीक नहीं जानते कि मैंने ऐसा क्यों किया,” उसने कोमल स्वर में कहा। “आपको इस बात का शक क्यों नहीं हुआ कि मैं आपको कहीं ज़हर न दे दूँ? मैंने विषों के बारे में बहुत कुछ पढ़ा है और इस विषय का बहुत काफ़ी अध्ययन किया है। यदि आप शंकित होते, तो यह बिलकुल स्वाभाविक होता। लेकिन आपने तो बेधड़क अपने को मेरे हाथ में सुपुर्द कर दिया।”

“आप मुझे ज़हर क्यों देतीं ?” मैंने कहा। “मुझे पूरा विश्वास है और मैं आपको इस बात का श्रेय देता हूँ, कि आपके दिलों में मेरे प्रति कोई विद्वेष नहीं है। बदला लेने की भावना एक अर्थहीन भावना है। हम लोगों के बीच उधर एक संघर्ष अवश्य हुआ था। मेरे कारण शायद एक हार की बनावटी चोरी के सिलसिले में एक बीमा-कम्पनी से दस लाख रुपये ठगने में आप सफल नहीं हो सकीं। लेकिन आपने तो शायद अपनी योजना बनाते समय इस अनहोनी घटना की सम्भावना का लिहाज अवश्य रक्खा होगा। मुझे इस बात के लिए पुरस्कार मिला था कि मैं अपनी बुद्धि से आपकी बुद्धि का मुकाबिला करूँ और यही मैंने किया भी। आपकी इस छोटी सी भूल के लिए आप दोनों के ऊपर मुकदमा चलाने के लिए कोई विशेष चिन्तित नहीं है।”

पाण्डेय अपनी कुर्सी में आगे झुका।

उसका चेहरा गम्भीर और चिन्तामग्न था और उसकी दृष्टि तीव्र और कठोर थी।

“लेकिन आपने तो इस घटना के पहले की बहुत-सी बातें मेरे खिलाफ़ दर्ज कर रक्खी हैं !” उसने कहा।

सिर हिलाकर मैंने सहमति प्रकट की।

“लेकिन मेरी स्थिति तो ठीक वैसी ही है जैसी खुफ़िया-विभाग की है,” मैंने कहा। “उन मामलात के बारे में मेरे पास कोई सबूत नहीं है। आपके खिलाफ़ मैं सिर्फ़ इतना कर सकता हूँ कि एक पुलिस इंस्पेक्टर को निर्दयतापूर्ण ढंग से ज़ल्मी कर देने के अपराध के सम्बन्ध में आपकी गिरफ़्तारी का वारंट निकलवाऊँ। बाकी बातें ऐसी हैं, जिनके सम्बन्ध में मैं सन्देह करता हूँ लेकिन मेरे पास प्रमाण नहीं है।”

“आप क्या सन्देह करते हैं ?” पाण्डेय ने पूछा।

इनकारसूचक ढंग से मैंने सिर हिलाया।

“मेरी स्पष्टवादिता की भी एक हद है।” मैंने कहा। “आपको यह मानना पड़ेगा कि मैं अनुचित और बेमतलब की लुका-छिपी और मौन से काम नहीं ले रहा हूँ, क्योंकि आपके अन्य साधारण मेहमानों की तरह मैं आपके घर पर हाज़िर हुआ, आपकी मेज़ पर खाना खाया, आपके

मामलात पर बातचीत की और अभी चुपचाप चला जाऊँगा। भूतकाल के सन्देशों को मैं अपने ही तक सीमित रखना चाहता हूँ। मैं अपना शत्रु हूँ, और आप यह अच्छी तरह जानते हैं। अगर मेरी हत्या करने की चेष्टा करने में आप अपनी कोई भलाई देखेंगे तो मेरा खयाल है कि आप ऐसा जरूर करेंगे।”

“अगर मैं ऐसा करूँ तो सावित्री मेरा साथ न देगी,” गम्भीर मुस्कान के साथ पाण्डेय ने कहा। “आपसे अपनी इन भेंटों को वह अत्यन्त आनन्द-दायक और प्रेरणाजनक समझती है।”

सावित्री ने मेरी ओर देखा। उसके ओठों पर बड़ी अद्भुत और बड़ी सुन्दर मुस्कान थी। वह अपने पति से कुछ दूर एक खम्भे की आड़ में बैठी हुई थी और उसका चेहरा पाण्डेय की नज़र से छिपा हुआ था।

“मैं आपकी यह बात पसन्द नहीं करती कि हम एक दूसरे के दुश्मन हैं,” सावित्री ने कोमल स्वर में कहा। “मैं यह सोचना ज्यादा पसन्द करती हूँ कि हम दो प्रतिद्वन्द्वी दलों के सैनिक हैं और परस्पर युद्ध कर रहे हैं। हम लड़ रहे हैं इसलिए कि यह हमारा फ़र्ज है। और इस तरह हम एक दूसरे के दुश्मन हैं। इस बात से हमारी व्यक्तिगत भावनाओं में कोई फ़र्क़ न आना चाहिए।”

“यह बिलकुल सत्य है।” मैंने अन्यमनस्कता से स्वीकार किया। “मैं ऐसे व्यक्ति को पूर्णतया नापसन्द नहीं कर सकता जो इतना अच्छा शतरंज खेलता है, जितना अच्छा आपके पति खेलते हैं।”

“और मेरे बारे में आपकी क्या राय है ?” उसने बनावटी रोष के साथ पूछा।

“आप मुझे इस बात के लिए मजबूर कर रही हैं कि मैं साफ़गोई से काम लूँ।” मैंने उत्तर दिया। “शायद कोई व्यक्ति ऐसी स्त्री को नापसन्द नहीं कर सकता जो सौन्दर्य के संसार की श्री-वृद्धि में सहायक सिद्ध हो रही हो।”

बह धीरे से हँस पड़ी।

“आप पूरे चारण हैं मिस्टर मुकजी,” उसने कहा। “आपकी सराहना से, फूलों की महक से और मदिरा के ज़ायके से मेरा सिर फिरा

जा रहा हूँ। मैं कल्पना करने लगी हूँ कि आप लोभ दिलानेवाले एक सर्प हैं और मेरे इस काल्पनिक स्वर्ग में अनायास ही घुसआये हैं।”

“आपने शतरंज का जिक्र छोड़ा है, मिस्टर मुकजी !” पाण्डेय ने कहा, “तो यह बतलाइए कि क्या हमारी आपकी दो-चार बाज़ियाँ यहाँ न होंगी ?”

“बड़ी खुशी से,” मैंने कहा।

“कल दोपहर के समय ?”

“हाँ दोपहर के समय, और क्लब में।”

“बेहतर है,” उसने कहा। “हम लोग बहुत जल्द सो जाया करते हैं।”

मैं तुरन्त उठ खड़ा हुआ। इशारा विलकुल साफ़ था। मैंने बिदा ली, सड़क पार की और फाटक से बाहर निकला। आकाश में चन्द्रमा निकल आया था। चारों ओर रहस्यमय प्रकाश फैला हुआ था। किसी आनेवाली दुःखान्त घटना की सम्भावनायें मेरे मन में काली घटाओं की तरह उठने लगीं।

दूसरे दिन बारह बजने के पाँच मिनट पहले पाण्डेय क्लब के हाते में प्रवेश करता हुआ दृष्टिगोचर हुआ। दूर ही से मैंने उसका अभिवादन किया और उत्तर में उसने भी नमस्कार किया। एक कमरे में जाकर हम दोनों एक मेज़ के सामने बैठ गये। बिसात बिछी, मुहरें लगीं। सहसा तीन चार आदमी सादे लिबास में कमरे में तेज़ी से घुसे। पाण्डेय को सतर्क होने का अवसर ही नहीं मिला। पाँच सेकंड में उसकी कलाईयों पर हथकड़ियाँ शोभा देने लगीं। उन आदमियों में से एक ने, जो पुलिस का एक बड़ा अफ़सर था, इस सम्बन्ध में सारे आदेश दिये थे।

“तुम्हारे ऊपर ये जुर्म लगाये गये हैं,” उसने कहा, “कि तुमने हीरापुर के सरला बैंक पर डाका डाला, उसके मैनेजर और क्लर्क को ज़ख्मी किया और एक लाख दस हजार रुपया चुरा ले गये। तुम्हारी खैरियत इसी में है कि तुम हमारे साथ चुपचाप चले चलो। जो कुछ तुम्हें कहना हो बाद में कहना।

मैंने पाण्डेय के ऊपर दृष्टि डाली। मैं यह शपथपूर्वक कह सकता हूँ कि मेरे उस पुराने वैरी के चेहरे या चाल-ढाल में ज़रा भी परिवर्तन नहीं हुआ। औरों की ओर ध्यान न देकर, उसने मेरी ओर देखा।

“यह आप ही की कार्रवाई है, जनाब ?” उसने पूछा।

“बिल्कुल,” मैंने स्वीकार किया।

“डाके का भेद आपको कल रात को मालूम हुआ था न ?”

“हाँ, आप ही ने तो कहा था कि मेरा नमक न खाइएगा,” मैंने उत्तर दिया।

सिर हिलाकर उसने सहमति प्रकट की।

“बाज़ी इस बार आपके हाथ रही,” उसने कहा। “मैं तैयार हूँ, सज्जनो !”

बाहर एक मोटरकार तैयार खड़ी थी। वह चुपचाप उस पर जाकर बैठ गया। पुलिस के दो लम्बे-तगड़े सिपाही उसके अगल-बगल बैठ गये। खुफ़िया पुलिस का एक होशियार अफ़सर भी गाड़ी पर सवार हो गया। कार चल पड़ी। मैं और कौल पीछे रह गये। थोड़ी देर के बाद हम दोनों शतरंज खेलने लगे। रह-रहकर मेरी दृष्टि पाण्डेय के उस घर की ओर दौड़ जाती। वहाँ कोई चहल-पहल दृष्टिगोचर नहीं हो रही थी।

“अब भी यह बात मेरी समझ में नहीं आरही है,” कौल ने कहा, “कि आपने इस जटिल मामले को कैसे इतनी जल्दी और इतनी आसानी से हल कर लिया ?”

“यह बात मान लेने पर कि सफ़री कार के यात्रियों का डाके से सम्बन्ध था, मामला बिल्कुल आसान हो गया,” मैंने उत्तर दिया। “निस्सन्देह मुरेन्द्रकुमार बोस भी इस मामले में पूरी तरह से शरीक था। बोस की फ़ोर्ड कार पर सवार होकर पाण्डेय दास स्टोर्स के सामने आया और उतर कर बैंक की ओर रवाना हो गया। सफ़री कार पहले ही से वहाँ मौजूद थी और उस पर सावित्री और बोस सवार थे। बोस भूरी हैट पहने हुए था। शोफ़र कुछ चीज़ों का आर्डर लेकर दूकान में गया और दूकान का क्लर्क वे चीज़ें सफ़री कार में दे आया। इस

बिलम्ब लगाने के लिए शोफ़र मोटर में पेट्रोल भरने लगा। ज्यों ही पाण्डेय फ़ोर्ड से उतरा और बैंक की ओर रवाना हुआ बसने भूरी हैट उतार डाली और दूकान में जाकर कुछ चीज़ें खरीदीं। जब डाके के बाद पाण्डेय आया तो बस भी तुरन्त ही दूकान से बाहर निकल आया और फ़ोर्ड में बैठकर चला गया। पाण्डेय सफ़री कार में बैठकर, भूरी हैट पहनकर इधर सलीमनगर की ओर रवाना हो गया। इस कार्रवाई का प्रयोजन यह था कि हम लोग धोखे और भुलावे में पड़ जायें। बैंक के चुनाव से लेकर सफ़री कार के रुकने का स्थान निश्चित करने तक की सारी योजना बड़े मौलिक ढंग से तैयार की गई थी।”

“इस मामले को हल करने का श्रेय मुझे देकर आप बड़ी उदारता का परिचय दे रहे हैं,” कौल ने कहा।

“अगर पाण्डेय वास्तव में मोहनलाल हैं और मोहनलाल शेरसिंह हैं,” मैंने कहा, “तो मैं केवल इस बात के ज्ञान ही से सन्तुष्ट हो जाऊँगा कि अन्त में मैं उसे क़ानून के पंजे में फँसाने में सफल हुआ।”

“क्या आप समझते हैं कि वही शेरसिंह है?” कौल ने पूछा।

“मुझे इस बात का पक्का विश्वास है,” मैंने उत्तर दिया।

हमने कई बाज़ियाँ खेलीं, नास्ता किया और फिर कई बाज़ियाँ खेलीं। उधर उस बँगले में अब भी कोई आता-जाता दिखाई न दिया। न जाने क्यों वहाँ की यह गम्भीर ख़ामोशी मुझे आतंकजनक प्रतीत हो रही थी। ज्यों ज्यों समय बीतने लगा मेरी बेचैनी बढ़ने लगी। रात के समय मैं भोजन करने ही जा रहा था कि मुझे ख़बर दी गई कि मुझसे कोई टेलीफ़ोन पर बात करना चाहता है।

“मैं हूँ इन्स्पेक्टर बनर्जी,” टेलीफ़ोन के दूसरे छोर से आवाज़ आई।

“आप मिस्टर मुकर्जी हैं न?”

“हाँ,” मैंने उत्तर दिया।

“आपने कुछ सुना?”

“नहीं,” मैंने कहा। “दोपहर के बाद से मैंने कुछ नहीं सुना।”

“पाण्डेय यहाँ से ११ मील की दूरी पर फ़रार होंगा,” इन्स्पेक्टर ने उदास स्वर में कहा।

“फ़रार हो गया ! यह क्या कह रहे हैं आप ?”

“हाँ साहब, भाग निकला । एक पिस्तौल से, जो उसके जूते के तल्ले में फिट किया हुआ था, उसने दोनों सिपाहियों के ऊपर गोली चला दी । वह गोली दूसरे जूते की नोक से उसने चलाई थी । खुफ़िया-विभाग के मिस्टर सिंह भी सख्त घायल हो गये हैं और एक दूसरे आदमी के पैर में गोली लगी है । इसके बाद पाण्डेय मोटर के ड्राइवर को धमकाने लगा । मजबूर होकर ड्राइवर ने उसकी हथकड़ियाँ खोल दीं और उसे एक रेलवे स्टेशन के पास तक पहुँचा दिया । वहाँ उसने ड्राइवर को बाँध दिया और गाड़ी खुद हाँककर गायब होगया । इसके बाद की उसकी कोई खबर हमें अभी तक नहीं मिली ।”

मैं कोई सन्तोषजनक बात न कह सका । मैंने इस तरह की कोई बात कही कि मैं मिस्टर कौल के साथ दूसरे दिन रवाना हो जाऊँगा । तब मैं क्लब से बाहर निकल गया । मुझे चक्कर-सा आगया, मेरा हृदय अस्वस्थ हो गया और मैं अपने ऊपर भल्ला उठा और भाग्य के भी । पाण्डेय के उस मकान की ओर ताकता हुआ मैं कुछ समय तक मूर्तिवत् खड़ा रहा । फिर मुझे एक दुर्निवार्य अन्तःप्रेरणा के सामने आत्म-समर्पण कर देना पड़ा । मैं तेज़ी से उस घर की ओर बढ़ा । उस घर के द्वार पर पहुँचकर मैंने घंटी बजाई । घर सुनसान पड़ा हुआ था । किसी के चलने-फिरने की आवाज़ नहीं आ रही थी । घंटी के स्वर की प्रतिध्वनियाँ घर के उस सूनयेन में बड़ी कर्कशता से गूँज उठीं । मेरे जी में आया कि अपने ऊपर और यहाँ आने की अपनी बेवकूफी पर हँस पड़ूँ । मैं लौटने ही वाला था कि एकाएक दरवाज़ा धीरे से खुला । सावित्री सामने खड़ी हुई मेरी ओर देख रही थी ।

मैं मानता हूँ कि मैं घबरा गया । मुझे अपने ऊपर काबू नहीं रहा और मेरी वह तमाम शक्तियाँ लोप हो गईं जिनके द्वारा ही मनुष्य किसी असाधारण परिस्थिति का सामना कर सकता है । कारण यह था कि इस स्त्री ने मानसिक अशान्ति का कोई चिह्न प्रकट नहीं किया । मुझे वह कभी इतनी सुन्दर प्रतीत नहीं हुई जितनी इस समय हो रही थी । वह एक सफ़ेद साड़ी और एक सफ़ेद जम्पर पहने हुए थी । उसके बाल खूब

चमक रहे थे और उसकी आँखों में कठोरता भी थी—कोमलता भी। वह दरवाजे से हट गई।

“अन्दर आइए,” उसने कहा। “मैं आप ही का इन्तज़ार कर रही थी।”

हमारे पैरों की आवाज़ें हाल में गूँज उठीं। वह मुझे बैठक में लिवा ले गई जिसके सागने एक बरामदा था और उस सोफ़े पर बैठ गई जिस पर शायद वह अभी तक आराम करती रही थी।

“विश्वासघाती !” उसने धीरे से कहा।

“तब तो तुम्हें सब मालूम हो गया ?” मैंने सख्ती से पूछा।

“हाँ, सब मालूम हो गया—बच निकलने की वह छोटी-सी घटना भी मालूम हो गई। कैसे बेवकूफ़ होते हैं पुलिसवाले !”

“अभी वह सुरक्षित नहीं है,” मैंने कहा।

व्यंग्य के भाव से वह हँस पड़ी।

“अब मुझे उनकी कोई चिन्ता नहीं है,” उसने कहा, “यह बराबरी की लड़ाई नहीं है। मुझे तो अब केवल अपनी चिन्ता है।”

“अकेली हो यहाँ !” मैंने कहा।

उसने सिर हिलाया।

“रामसिंह, जो हमारा वाक्ची, शोफ़र और सहयोगी है, कार लेकर गया है। आप खुद सम्भल सकते हैं कि वह कहाँ गया होगा।

हमारे सेवक बीरू की आज सवेरे टाँग टूट गई और वह अस्पताल में पड़ा हुआ है। चोरों का मुझे डर नहीं है लेकिन चूहों से डरती हूँ और चूहे इस घर में भरे पड़े हैं। इसके अलावा मैं इस बात के खयाल से भी घबरा रही हूँ कि कल सवेरे उठकर मुझे अपने लिए चाय बनानी पड़ेगी।”

मैं उठ खड़ा हुआ।

“क्लब में कई कमरे खाली हैं,” मैंने कहा, “और वहाँ तुम्हें हर तरह का आराम मिल सकता है। अब मैं वापस जाता हूँ। क्या तुम्हारे लिए एक कमरा ठीक कर दूँ ?”

“लेकिन क्या आप यह बात पसन्द करेंगे कि मैं वहाँ रहूँ—उसी मकान में जिसमें आप जैसे भद्र और सम्मानित व्यक्ति निवास कर रहे हैं?” उसने कृत्रिम कौतूहल से पूछा।

“क्यों नहीं?”

“क्या मैं एक मशहूर अपराधी की स्त्री नहीं हूँ, एक ऐसे व्यक्ति की स्त्री जिससे आपने विश्वासघात किया है! और भी एक भेद है जिसे हम दोनों जानते हैं? क्या आप इस बात का आश्वासन दे सकेंगे कि मैं भद्र स्त्री हूँ?”

मैं उसकी ओर एक कदम बढ़ा। उसकी आँखों में कोमलता और निर्दयता की मिश्रित ज्योति भरी थी। उसके ओठ तर थे और काँप भी रहे थे—क्या आन्तरिक रोष के कारण? उसने अपना कोमल, नग्न हाथ सिर के नीचे से निकाला। और तब उस निस्तब्धता में एक कर्कश आवाज़ गूँज उठी।

“हाथ ऊपर उठाओ—तेजी के साथ।”

मैंने अपने हाथ ऊपर उठा दिये। मैं पहचान गया उस आवाज़ को। वह आवाज़ थी पाण्डेय की जो रामसिंह की वर्दी पहने हुए एकाएक चुपचाप आ पहुँचा था।

“जो प्रार्थनायें करनी हों कर डालो।”

“अगर तुम मुझे गोली मारना ही चाहते हो, तो जल्दी चला दो गोली,” मैंने उत्तर दिया।

सावित्री तेजी से उठी, और हम दोनों के बीच में खड़ी होगई।

“बेवकूफी मत करो,” उसने नवागन्तुक से कहा। “मिस्टर मुकर्जी का काम तमाम करना किसी तरह मुनासिब नहीं। इनके बिना हमारी ज़िन्दगी के सारे खेल नीरस हो जायँगे। ऐसा प्रतिद्वंद्वी मिलेगा कहाँ!” इन्हें पैरोल पर छोड़ दो। ये हर तरह विश्वास करने योग्य हैं।”

पाण्डेय ने अपनी पिस्तौल नीचे झुका दी।

“तुम ठीक कहती हो,” उसने स्वीकार किया। “बोलो मुकर्जी! इस दुनिया में बारह घंटे तक खामोश रहोगे या हमेशा के वास्ते खामोश हो जाना पसन्द करोगे?”

“मैं बारह घंटे तक खामोश रहूँगा,” मैंने वादा किया।

उसने दरवाज़े की ओर इशारा किया।

“अब आप मेहरबानी करके तशरीफ़ ले जायें,” उसने कहा। “अब मैं चाहता हूँ कि दो-चार घंटे अपनी बीबी के साथ एकान्त में रहूँ। शायद आइन्दा मुझे इस बात का मौक़ा ही न मिले।”

बिना एक बार भी पीछे मुड़कर देखे हुए मैं बाहर चला गया। मैंने सदर दरवाज़ा खोला फिर बन्द किया और सड़क पर चल पड़ा। उधर जंगल में उल्लू चीख रहे थे। चमगीदड़ धुंधले प्रकाश में इधर-उधर उड़ रहे थे और चन्द्रमा आकाश में मन्दगति से चल रहा था। इन सब बातों का मुझे केवल हल्का-सा आभास मिला। मेरी आँखों के सामने एक भीना परदा आ गिरा था और दिमाग़ में कुहरा छाया था। उन चन्द्रक्षणों में पाण्डेय के बच निकलने और फिर उसके द्वारा मेरे हृदय पर पिस्तौल ताने जाने की याद भी धुंधली पड़ गई थी। स्पष्ट ज्ञान तो मुझे केवल अपने क्रोध का था और अपने अपमान का। और मेरा हृदय अपनी कमज़ोरी पर घृणा से भरा था।

क्लब के बरामदे में एक आरामकुर्सी पर बैठे हुए मिस्टर कौल सिगार पी रहे थे। उन्होंने पाण्डेय के घर की ओर इशारा किया। उनके उदास चेहरे से यह जाहिर था कि इन्स्पेक्टर बनर्जी से उन्हें भी सूचना मिल चुकी थी।

“ज़रा वहाँ चल कर जाँच की जाय, आपका क्या खयाल है?” उन्होंने कहा।

मैंने अपनी पैरोल की शर्तों का पालन किया। नहीं, मेरा तो खयाल है कि उन शर्तों की हद से मैं आगे बढ़ गया।

“बिलकुल बेकार होगी यह ज़हमत।” मैंने उत्तर दिया। “चलो, ज़रा चलकर विलियर्ड खेलें और इस वाहियात मामले को भूल जाने की कोशिश करें। भाड़ में जाय पाण्डेय!”

४

तीन लुटेरे

सावित्री

तीन महीने तक अपनी स्वामिनी, श्रीमती मायादेवी बंका की नौकरी करने के बाद मैंने उनके माल पर हाथ साफ़ करने का निश्चय कर लिया। नौकरी के विचारमात्र से मेरा जी जल उठता था। लेकिन करती क्या, मजबूर थी? इधर करीब साल भर से मुझे अपने पति का कुछ पता न था। उन्होंने मेरी खोज-खबर नहीं ली, कोई पत्र भी नहीं भेजा। पैसा हाथ में नहीं था और मुझे आराम से रहने की आदत पड़ गई थी। आराम के साधन प्राप्त करने ही के लिए मुझे श्रीमती बंका की नौकरी करनी पड़ी। इससे पहले मैं एक दर्ज़िन की दूकान पर बहुत दिनों तक काम करती रही। वहाँ जो वेतन मिलता था उससे किसी तरह काम चल जाता था। किन्तु एकाएक काम में भन्दी आ जाने के कारण उस दर्ज़िन ने मुझे नोटिस दे दिया। इसके बाद मैंने एक मास एक फ़ोटोग्राफ़र के स्टूडियो में और तीन सप्ताह तक एक प्राइवेट दफ़्तर में काम किया। इन दोनों स्थानों की नौकरी मुझे एक ही कारण से छोड़नी पड़ी। अपने ही हाथों से मैंने एक मनुष्य की हत्या की है और अनेक डाकों में भाग लिया है, लेकिन मेरे पूर्वजों का जो एक महान् गुण मेरे अन्दर मौजूद है उसे कोई क्षति नहीं पहुँच पाई—कितना असुविधाजनक, कितना अकल्याणकारी वह गुण बाज़ मौकों पर प्रतीत होता है ! अपना आत्मसम्मान मैंने कभी नहीं खोया। इस बात के विचारमात्र ही से मेरा हृदय घृणा से भर जाता है कि कोई ऐसा व्यक्ति मेरे शरीर पर हाथ रखे जो मुझे प्रिय नहीं है। मेरी यही भावना तो ज़िम्मेदार थी मेरे जीवन के सबसे बड़े अपराध के लिए।

श्रीमती मायादेवी बंका ने एक समाचारपत्र में इस आशय का एक विज्ञापन प्रकाशित कराया कि उन्हें एक ऐसी नवयुवती की आद-

इयकता है जो उनकी सखी और नेविका दोनों का काम कर सके। मैंने प्रार्थना-पत्र भेजा और सफल हुई। मेरी स्वाभिनी बड़ी अमीर और मोटी-ताजी महिला थीं। बड़ी शान-शौकत से वे रहती थीं और स्पष्टतः उनके पास बहुत काफ़ी धन था। पैंतालीस साल की वे एक विधवा थीं और एक तरह से अब भी सुन्दर थी। मध्यम श्रेणी के दृष्टि-कोण से वे सुशिक्षिता भी थीं। पशु अथवा पक्षियों से उन्हें प्रेम न था। उन्हें तो शौक था केवल पुरुषों को अपने मनोरंजन का साधन बनाने का। अपना यहाँ शौक पूरा करने के लिए वे विभिन्न स्थानों की यात्रा करती रहती थी। जवान स्वरूपवान् और बेवकूफ़ मर्द ही उन्हें अधिक पसंद थे। इस सम्बन्ध में विवाह का विचार उनके मस्तिष्क में स्थान नहीं पाता था।

हम एक सागरतटवर्ती नगर, राजगढ़ के रोआयल होटल में ठहरे हुए थे जब मेरे मन में वह विचार उठा जिसका जिक्र मैं ऊपर कर चुकी हूँ। शीघ्र ही मेरी योजना बन गई। इस काम में मैं अभी कुछ दिनों की देर ज़रूर करती लेकिन दो कारणों ने मुझे राजगढ़ कर दिया। एक कारण यह था कि मेरा वेतन बहुत कम था और कुछ बचा सकना असम्भव सिद्ध हो रहा था और दूसरा कारण मेरा यह भय था कि कहीं कोई दूसरा व्यक्ति मुझसे दाजी न भार ले जाय। अपने भित्तों के चुनाव में श्रीमती बंका ज़रा भी सतर्कता से काम नहीं लेती थीं। मिस्टर विमलकुमार गुप्त नामक एक नवयुवक से आजकल उनकी घनिष्ठता बहुत बढ़ी हुई थी। उस व्यक्ति को पहली ही बार देखने के बाद मैंने यह राय कायम कर ली थी कि वह संदिग्ध इरादों का व्यक्ति है। वह गोरा, दुबला-पतला और लम्बे क्रद का था, उसके पिचके चेहरे पर मुँहासे के दाग़ थे, उसकी छोटी-छोटी आँखें मक्कारी से भरी प्रतीत होती थीं और उसके मुख से लोभ टपकता था। वह हमेशा नये से नये फ़ैशन के वस्त्र पहने रहता था और आधुनिकता के रंग में रंगे हुए नवयुवकों की समस्त विशेषतायें उसने प्राप्त कर ली थी। श्रीमती बंका उसे सराहती थीं और उसका पूर्णतया विश्वास करती थीं। इसके विपरीत मैं उससे घृणा करती थी और उसके ऊपर मुझे ज़रा भी विश्वास

न था । बैठक में जब कभी वह मुझे अकेली पा जाता तब मुझे छेड़ता लेकिन बिना उसे ज्यादा नाखुश किये मैं बड़ी होशियारी से बच जाती । मेरी स्वामिनी के प्रेमी की हैसियत से वह मुझे जो इनाम देता उसे लेने से इनकार करना मैं मुनासिब नहीं समझती थी । मैं यह ठीक तरह समझती थी कि उसकी वास्तविक आकांक्षा क्या है । जब कभी श्रीमती बंका अपने भारी भरकम शरीर पर नित्य से अधिक आभूषण धारण कर लेतीं तो उसकी लोभ से भरी हुई आँखें चमक उठतीं । उनके आभूषण बहुमूल्य थे और उनके धन का एक काफ़ी बड़ा अंश उनमें केंद्रित था । मैं देखती कि वह अपने दिमाग में उन आभूषणों के मूल्य का अन्दाज़ा लगा रहा है और उस समय मुझे उसकी आँखों में लोभ और भयानक कठोरता के भाव दृष्टिगोचर होते । उन गहनों में हीरों का एक हार भी था जो उसे विशेष रूप से आन्दोलित करता जान पड़ता था । मुझे विश्वास हो गया कि जब कभी वह चेष्टा करेगा तब इसी हार को हड़पने की चेष्टा करेगा ।

राजगढ़ में रहते चार मास व्यतीत हो चुके थे । एक दिन मध्याह्न के समय विमलकुमार मेरे पास आया, और मुझसे मीठी-मीठी बातें करने लगा । उसे मालूम था कि आमतौर पर जो वस्त्र और गहने मैं निकाल देती हूँ वे ही मिसेज़ बंका धारण कर लेती हैं । मेरे ऊपर उसे ज़रा भी सन्देह नहीं था, और वह मुझे बिलकुल भोली-भाली समझता था । उसने मुझसे अनुरोध किया कि उस रात को मैं मैडम को हीरे का हार, इयरिंग और ब्रेसलेट पहनाऊँ । उसका मतलब ताड़कर मैं तुरन्त राज़ी हो गई ।

मैं समझ गई कि उसी रात को वह मैडम का हार हड़पने की कोशिश करेगा । मैं मन-ही-मन उसे परास्त करने की योजना बनाने लगी ।

मैडम के पहनने के लिए मैंने उपयुक्त वस्त्र और वे ही गहने निकाल रखे । थोड़ी देर के बाद वे आईं, और सजधजकर विमलकुमार के साथ चली गईं । दस मिनट के बाद ही अपना कोट लेने के लिए वे वापस आईं । तब विमलकुमार ने उनसे अनुरोध किया कि वे गहने उतार दें । गहने उतार कर उन्होंने मुझे रखने के लिए दे दिये । मैंने उनसे गहनों के केस की चाभी माँगी, लेकिन उन्होंने मुझे आदेश दिया कि मैं गहनों

को एक दराज में रख दूँ। यही विमलकुमार चाहता था, क्योंकि दराज खुला रहता था और मैडम की अनुपस्थिति में उसमें से गहने निकाल लेना बड़ा आसान था।

भोजन कर चुकने के बाद मैं विमलकुमार के शयनागार में गई, और वहाँ पे उनकी कुछ चीजें उठा लाईं—इस इरादे से कि उनसे काम ले चुकने के बाद फिर चुपचाप रख आऊँगी।

दस मिनट के बाद होटल के मैनेजर, मिस्टर रामदेव सोहनी, मेरे पास आये। उन्होंने मैडम के गहनों के सम्बन्ध में चिन्ता प्रकट की, और पूछा कि वे अपने गहने कहाँ रखती हैं। मैंने उन्हें गहनों का केस दिखा दिया। उन्हें यह बात सख्त नापसन्द थी कि मैडम अपने गहने होटल की तिजोरी में जमा नहीं करती।

भद्रोचित ढंग से नमस्कार करके वे चले गये। तब मैं अपने कमरे में गई, अपने कपड़े उतारे, मिस्टर गुप्त का एक सूट पहना और सिर पर उनकी हैट लगाई (यह सब मैं उसके कमरे से उठा लाई थी)। जब चौकीदार की पीठ मेरी ओर फिरी मैं बाहर निकली, सामने की सीढ़ियों पर उतरी, फिर ऊपर चढ़ी, जोर से गलियारे में चली, मिस्टर गुप्त के कमरे में गई, कुछ देर रुकी रही, फिर बाहर निकली और स्वामिनी की बैठक में चली गई। एक घंटे में मिस्टर गुप्त के कपड़े उनके कमरे में वापस हो गये और मैसेज बंका के हीरे ठिकाने लग गये।

जतीन्द्रनाथ मुकजी

राजगढ़ के उस डाके और हत्या के मामले में मेरे दिलचस्पी लेने का प्रथम कारण भिन्नवर कौल का अनुरोध न था। इससे पहले ही मुझे होटल के एक डायरेक्टर, रमणीरंजन घोष का एक पत्र मिला था, जिसमें उन्होंने मुझसे अनुरोध किया था कि मैं इस मामले में जिस तरह चाहूँ होटल का प्रतिनिधित्व करूँ और इसी अनुरोध के बल पर मैंने राजगढ़ की यात्रा की और रोआयल होटल में अस्थायी तौर पर ठहर गया।

मैनेजर और पुलिस इंस्पेक्टर से सारी बातें सुन लेने के बाद मैंने चौकीदार का बयान लिया। इंस्पेक्टर को विमलकुमार के ऊपर सन्देह

था, और चौकीदार के बयान से उसकी पुष्टि होती थी। लेकिन मैं सरसरी तौर पर किसी नतीजे पर पहुँचने का आदी नहीं हूँ। मैंने स्वर्गीया मिसेज़ बंका की सेविका से भेंट करने की इच्छा प्रकट की।

उसके आने में थोड़ा-सा विलम्ब हुआ। इसके बाद बाहर किसी के चलने और एक दरवाज़े के खुलने और बन्द होने की आवाज़ आई। चौकीदार के बयान की नक़ल मेरे सामने पड़ी थी और मैं उसका अध्ययन कर रहा था। कागज़ से दृष्टि उठाकर मैंने सामने देखा और मुझे ऐसा कड़ा धक्का लगा जैसा इस जीवन में शायद पहले कभी नहीं लगा था। दरवाज़े से सटी हुई और हैडिल पकड़े हुए वह स्त्री खड़ी हुई थी जिसे मैं सावित्री पाण्डेय के नाम से जानता था !

कई क्षणों तक हम दोनों में से किसी की ज़वान नहीं खुल सकी। उसके ओठ खुले हुए थे लेकिन उसके मुख का कोई शब्द मेरे कानों में नहीं पड़ा। विकट आश्चर्य से भरी हुई उसकी आँखें मेरे चेहरे पर जमी थीं। मैं देख रहा था कि उसका सीना तेज़ी से उठ और गिर रहा है। यह स्पष्ट हो गया कि किसी ने मेरा नाम उससे नहीं लिया, मुझे अजनबी समझकर वह मेरे पास आई, और यहाँ आकर उसे भी उतना ही आश्चर्य हुआ जितना उसे देखकर मुझे। मैं उठ खड़ा हुआ और जब मैंने बोलने की कोशिश की तब मेरा मन एक नवीन त्रास से आन्दोलित हो उठा। वही थी मृतक स्त्री की सेविका ! बड़े अशुभ संयोग की बात थी यह !

धीरे धीरे वह मेरे समीप आई।

“मैं यह नहीं जानती थी कि यहाँ आप मौजूद हैं,” उसने कहा।

“और मुझे भी यह नहीं मालूम था कि तुम फिर एक साधारण सेविका बन गई हो,” मैंने उत्तर दिया।

वह किंचित् विचलित हुई, किन्तु एक क्षण के बाद उसने बड़े शान्त भाव से उत्तर दिया।

“दरिद्रता बड़ी कठोर स्वामिनी है। एक मुद्त से मेरे पति ने मेरी खोज खबर नहीं ली। उनका मुझे कुछ भी पता नहीं। उधर

जब आपसे भेंट हुई थी और मैंने आपके साथ लंच खाया था मैं एक दर्ज़िन की दूकान पर काम करती थी। काम में मन्दी आ जाने के कारण उसने मुझे अलग कर दिया। इसके बाद कुछ दिनों तक मैंने एक फ़ोटोग्राफ़र के यहाँ और फिर कुछ समय तक एक प्राइवेट दफ़्तर में काम किया। टिक सकना असम्भव हो जाने के कारण ही मुझे उन दोनों स्थानों से अलग होना पड़ा। मेरे पास सिर्फ़ तीन रुपये बचे थे जब मैंने मिसेज़ मायादेवी बंका का विज्ञापन देखा। मैंने प्रार्थना-पत्र भेजा और इस तरह यहाँ आ गई।”

“अब तो तुम्हारी आर्थिक स्थिति सुधर गई होगी?” मैंने कहा।

उसका स्वाभाविक आत्म-नियन्त्रण अब वापस आने लगा था।

“क्या यह उचित न होगा कि आप मुझे इस बात की चेतावनी दे दें कि मैं इस समय जो कुछ कहूँगी वह शहादत के रूप में मेरे विरुद्ध इस्तेमाल किया जा सकता है?” किञ्चित् व्यंग्यपूर्ण स्वर में उसने कहा।

“तुम ठीक कहती हो। अच्छा, मैं तुमसे एक प्रश्न, केवल एक प्रश्न करूँगा।”

“उस प्रश्न का उत्तर देने का मैं वादा नहीं कर सकती।”

“नहीं, उत्तर तुम्हें देना पड़ेगा,” उसकी ओर एकटक देखते हुए मैंने जोर देकर कहा, “और सच्ची बात मुझे बतलानी पड़ेगी। मिसेज़ बंका की हत्या से तुम्हारा कोई सम्बन्ध था?”

“नहीं, बिल्कुल नहीं,” स्पष्ट स्वर में उसने उत्तर दिया। उसकी वाणी में ज़रा भी खटक, ज़रा भी हिचक नहीं थी।

मैं एकाएक कुर्सी पर बैठ गया। मेरे मन में, उसका वह उत्तर सुनकर शान्ति की लहरे दौड़ने लगीं। अपनी उस भावना का मनो-वैज्ञानिक निरूपण कर सकना उस समय मेरे लिए असम्भव था।

“तुम्हारा ज़रा भी सहयोग नहीं था उस जघन्य कार्य में?”

“एक प्रश्न पूछने का आपने वादा किया था,” उसने कहा। “उस प्रश्न का उत्तर मैं दे चुकी।”

कई क्षणों तक मैं विचारमग्न बैठा रहा। मैं विचार कर रहा था डाक्टर के बयान पर। उससे प्रश्न किया गया था कि मृतक स्त्री के

गले पर जो ज़रूम था वह क्या किसी स्त्री के द्वारा जान पड़ता था। उत्तर मेरे सामने लिखा पड़ा था, “नहीं, मेरे विचार में इस बात की सम्भावना बिल्कुल नहीं।”

“अच्छी बात है,” मैंने कहा, “अपना दूसरा प्रश्न मैं छोड़े देता हूँ। उसके स्थान पर मैं तुमसे एक अनुरोध करूँगा। यहाँ मैं उस व्यक्ति का पता लगाने के लिए आया हूँ, जिसने तुम्हारी स्वर्गीया स्वामिनी की हत्या की और उसके गहने लूट लिये। मेरी मदद कर सकती हो?”

“कर भी सकूँ, तो क्यों आपकी मदद करूँ?” उसने पूछा। “हम दोनों तो दो विरोधी दलों में सम्मिलित हैं।”

“उन जवाहिरातों की खोज निकालनेवाले को पुरस्कार मिलेगा।”

“वह पुरस्कार प्राप्त करना मैं अवश्य पसन्द करूँगी,” उसने कहा।

“लेकिन मुझे तो यह मालूम नहीं कि चोरी किसने की।”

“क्या तुम्हें यह मालूम है,” मैंने पूछा, “कि उस रात को ब्रिज-पार्टी में जाते समय मिसिज़ ब्रंका गहने पहनकर क्यों नहीं गईं?”

एक क्षण तक वह सोचती रही।

“मिस्टर गुप्त ने उन्हें सलाह दी कि वे हीरे उतार डाले, और उन्हें यहीं होटल में छोड़ जायें,” उसने उत्तर दिया।

“और उन्होंने उनकी सलाह मान ली?”

“जी हाँ।”

“तुम जानती हो कि तुम्हारी स्वामिनी के सूट में मिस्टर गुप्त वापस आये थे?”

“ऐसा मैंने सुना है।”

“और तुम्हें यह भी मालूम है कि उनके आगमन के समय सम्बन्धी शहादत में विभिन्नता है?”

“हाँ, यह मैं जानती हूँ। लेकिन यह भुमकिन है कि वे दो बार आये हों?”

“ऐसा हो सकता है,” मैंने स्वीकार किया। “तुम्हारी समझ में क्या मिस्टर गुप्त ही वे व्यक्ति हैं जिनकी हमें तलाश है?”

“यह आप क्यों सोचते हैं कि अगर मैं आपकी मदद कर सकती हूँ तो जरूर करूँगी ?” उसने रूखे स्वर में उत्तर दिया ।

“जो कुछ मुझे मिस्टर विमलकुमार गुप्त के बारे में मालूम हुआ है उससे तो यही जान पड़ता है कि वे पूरे बछिया के ताऊ हैं,” मैंने कहा ।

“मैं तो समझती हूँ,” उसने कहा, “कि उनमें इतनी भी हिम्मत नहीं कि वे एक मुर्गी की गर्दन भी ऐंठ सकें ।”

मैं उसे गौर से देखने लगा ।

“यह पुरस्कार प्राप्त करने की कोशिश तुम क्यों नहीं करती ?” मैंने पूछा ।

“मैं सोच रही हूँ इसके बारे में,” उसने उत्तर दिया । “अगर मुझे कुछ सफलता मिली, तो मैं आपके पास आऊँगी ।”

वह चली गई । तब मैं सागर-तट की ओर घूमने के लिए चला गया । वहाँ विमलकुमार मौजूद था । मैंने उसे आश्वासन दिया कि यदि वह मुझे सच्ची बातें बता देगा, तो जहाँ तक हो सकेगा मैं उसकी सहायता करूँगा । तब उसने सारी बातें साफ़-साफ़ बयान कर दीं । उसने बतलाया कि उसने न तो मैडम के गहने ही चुराये और न उनकी हत्या ही की, लेकिन उनके गहने चुराने की कोशिश जरूर की थी ।

हम लौट पड़े ।

मैं होटल वापस आया और वहाँ मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे मित्र मिस्टर कौल आ पहुँचे हैं और मामले को अपने हाथ में ले चुके हैं । वे मैनेजर, चौकीदार और गाबिनी से बातें कर चुके थे । अब वे मिस्टर विमलकुमार गुप्त की प्रतीक्षा में थे, जिसका निन्दनीय एमालनामा वह अपने साथ लाये थे । बिना किसी दिलचस्पी के मैंने उसे पढ़ा । कौल मेरी ओर कौतूहलपूर्ण दृष्टि से देखते रहे ।

“यह नवयुवक पूरा बदमाश है,” उन्होंने कहा । सिर हिलाकर मैंने सहमति प्रकट की ।

“केवल एक बात उसके अनुकूल है,” मैंने कहा । “उससे बात करने से मालूम होता है कि वह बिलकुल मरियल है । साहस या किसी अन्य पुरुषोचित गुण का उसमें पूर्णतः अभाव है । मुझे पता नहीं मिस्टर

कौल कि आपके ध्यान में यह बात आई है कि नहीं। लेकिन मेरा तो खयाल है कि किसी स्त्री का गला घोटने और उसे मरते देखने के लिए काफी बल और साहस की जरूरत होगी। बाज़ वक़्त मैं सोचता हूँ कि विमल-कुमार के मान की यह बात नहीं; हत्या उसने नहीं की।”

कौल सहमत नहीं हो सके।

“उससे बात कर लेने के बाद शायद मैं यह ज्यादा समझ सकूंगा कि वह अपराधी है या नहीं,” उन्होंने कहा।

“यहाँवालों को कल से पहले उसे गिरफ़्तार करने की आज्ञा न दीजिएगा,” मैंने सलाह दी।

दोपहर की ट्रेन से मैं काली नगर की ओर रवाना हो गया। होटल के मैनेजर, मिस्टर रामदेव सोहनी ने भी मेरे साथ यात्रा की। वह डाक्टरों से सलाह-मश्विरा करने के लिए जा रहे थे। यह स्पष्ट था कि इस मामले के कारण वे बड़े दुखी थे। उन्होंने मिरोज़ बंका के सुपुत्र का एक तार मुझे दिखाया जो पेरिस से आया था। तार इस आशय का था—

‘गहरा आघात लगा। १८ तक पहुँचूँगा। आशा है पुलिस अपराधी का पता लगा लेगी। विश्वास है जवाहिरात ही माता की सम्पत्ति का अधिकांश भाग है। उन्हें खोज देनेवाले को पुरस्कार देने की घोषणा कर दीजिए।’

“बीमे की रकम का दशमांश पुरस्कार के रूप में देने की सलाह ठहरी है,” उन्होंने कहा। “वापस आने से पहले इस सम्बन्ध में वकीलों से मिल लूँगा।”

गाड़ी जब स्टेशन पर पहुँची तब मैंने प्रस्ताव किया कि वह मेरी ही कार में बैठकर शहर चलें। उन्होंने इनकार किया यह कहकर कि उनके साथ शराब का एक पीपा भी है जिसे दुकानदार को वापस करने के लिए वे ले जा रहे हैं। मैंने दो-चार मित्रों से भेंट की, अपने क्लब में भोजन किया और तीसरे पहर की एक ट्रेन से राजगढ़ वापस आ गया। होटल के हाल में कौल से भेंट हुई। हम दोनों ने मैनेजर के दफ़्तर में प्रवेश किया। मैनेजर मिस्टर रामदेव सोहनी दिनभर के परिश्रम के कारण बहुत थके हुए दिखाई दे रहे थे। उत्तेजित स्वर में आप टेलीफोन पर बात कर रहे थे।

“यह फ़िज़ूल बात है,” मिस्टर सोहनी ने कहा। “आज कई बार मैंने उस नम्बर से बात किया था। वहाँ का टेलीफ़ोन बिलकुल ठीक है।”

“अगर आप नं० १६३३ का ज़िक्र कर रहे हैं,” मैंने कहा, “तो मुझे भय है कि सुपरवाइज़र ठीक कह रहा है। उस नम्बर का सम्बन्ध कट गया है।”

“आपका मतलब क्या है?” उसने पूछा।

“सिर्फ़ इतना कि खुफ़िया-विभाग ने आपके कालीनगरवाले टेलीफ़ोन को काट दिया है इस भय से कि कहीं फ़ोन करके आप इस बात का पता न लगा लें कि शराब का जो पीपा आज अपने घर ले गये थे वह खोल तो नहीं डाला गया,” मैंने कहा। “मिस्टर कौल, अब आपका काम है।”

कौल ने तेज़ी दिखाई, लेकिन काफ़ी नहीं। सोहनी का हाथ दराज़ में पहुँच चुका था। बड़ी तेज़ी से उसका रिवाल्वर निकला और उसकी कनपटी के पास पहुँचा। गोली चल गई। मेरा ख़याल है कि वह ख़त्म हो चुका था जब कौल उसके पास पहुँचे। मैं दरवाज़े पर खड़ा रहा। कौल ने एक डाक्टर को फ़ोन किया। डाक्टर ज़रा देर में आ पहुँचा। शव की परीक्षा कुछ सेकंड में समाप्त हो गई।

“बड़ी सफ़ाई दिखलाई उसने,” डाक्टर ने राय दी। “वह तुरन्त ही मर गया होगा।”

मिस्टर कौल बाद में मेरी बैठक में आये। और उन्होंने ह्विस्की और पोडा पिया।

“आज सबेरे आप ज़रा चुप्पी साधे हुए थे, मिस्टर मुकर्जी?” उन्होंने कहा।

“हमें गुमशुदा गहनों की तलाश थी,” मैंने कहा। “ज्यों ही सोहनी ने मुझे बतलाया कि उसके साथ शराब का एक केस है। मैं समझ गया कि काम बन गया।”

“उसका आमालनामा आपको कब मिला?”

“आज सबेरे की डाक से,” मैंने उत्तर दिया, “और वह प्रशंसनीय नहीं है। कालीनगर में एक फ़र्जी नाम से उसने एक भकान क एक भाग

ले रक्खा था। कर्ज के बोझ से वह दबा हुआ था। सिर्फ एक महाजन को उससे बीस हजार पाना था। उसके घर की व्यवस्था भी सन्देहजनक थी। रुपये की उसे बड़ी सख्त जरूरत थी।”

“अब भी इस मामले की बहुतेरी बातें जटिल बनी हुई हैं,” कौल ने कहा। “जब मिसेज़ बंका वापस आ गईं तो रामदेव सोहनी उनके सूट में गया और जब वह गहनों का केस लेकर जाने लगा, तो वह जाग पड़ीं और इसलिए उसने उनका गला घोंट दिया। लेकिन विमलकुमार गुप्त जो दो बार उस सूट में गया था, उसके बारे में आप क्या कहते हैं? गुमशुदा गहने भी तो अभी तक नहीं मिले? आगे तो यह बतलाया था कि वे गहने उस केस में नहीं मिले जिसे आपने सोहनी के काली नगर-वाले घर से बरामद करवाया था?”

“मेरा खयाल है कि चौकीदार को दृष्टिभ्रम हो गया था,” मैंने कहा। “यह भी हो सकता है कि गुप्त ने उन्हें ठिकाने लगा दिया हो। और यह भी सम्भव है कि वे कहीं पड़े हों और बाद में मिल जायें।”

“सोहनी के ऊपर आपको पहले-पहल कैसे सन्देह हुआ?” कौल ने बाद में पूछा जब वे उठकर जाने लगे।

“एक बड़ी मामूली बात से मेरे दिल में सन्देह उत्पन्न हुआ,” मैंने उत्तर दिया। “जैसा आप जानते हैं, मृतक स्त्री का गला घोंटा गया था लेकिन उसकी गर्दन पर उँगलियों के जो निशान थे उनकी पहचान नहीं की जा सकी। गले पर एक खरोँच मौजूद था और खून के चन्द कतरे जमे हुए थे। स्पष्टतः यह खरोँच क्रांतिल के नाखून से लगा था। विमल-कुमार गुप्त के नाखून विलकुल कटे हुए दृष्टिगोचर हुए और इसके विपरीत मैंनेजर के नाखून काफी बड़े हुए थे। उसके नाखून बड़े और नुर्काले थे। उसकी दाहिनी तर्जनी का नाखून एक स्थान पर टूटा हुआ था।”

“अच्छा, अब समझ में आया!” कौल ने कहा। “नमस्कार!”

मैं कुछ समय तक उस घटना की प्रतीक्षा में बैठा रहा जिसका घटना मुझे सम्भव प्रतीत हो रहा था। एक बजे के करीब किसी ने कमरे के बन्द दरवाजे पर धीरे से धक्का दिया। मेरे निर्मंत्रित करने पर सावित्री कमरे में आई। वह पूर्णतया शान्त थी। दरवाजा बन्द करके वह मेरे समीप आई।

“हीरे मुझे मिल गये,” उसने कहा।

“मुबारकबाद !” मैंने उत्तर दिया।

“जो कुछ हुआ है वह सब मैं सुन चुकी हूँ,” उसने कहा। “पुरस्कार के सम्बन्ध में कोई दिक्रकत तो न खड़ी होगी ?”

“जर्रा भी नहीं,” मैंने आश्वासन दिया। तब हार, ईयर-रिंग्स और ब्रायलेट उसने मेरे सामने मेज पर रख दिये।

“ये तुम्हें कहाँ मिले ?” मैंने पूछा।

“एक छोटे से रेशमी थैले में जो मिसेज बंका अपने साथ ब्रिज-पार्टी में जाते समय ले गई थीं,” उसने उत्तर दिया। “रवाना होने से पहले एक क्षण के लिए वे अपने शयनागार में वापस आई थीं और बिना किसी से कुछ कहे हुए गहनों को उस थैले में रखकर लेती गई होंगी।”

“बड़ी अनोखी सूझ है यह !” मैंने धीरे से कहा।

उसने मेरी ओर देखा। उसकी आँखों में बड़ी विचित्र ज्योति थी। वाणी की उसे आवश्यकता न थी। वह दात में अच्छी तरह समझ रहा था जिसकी वह मुझे याद दिला रही थी। उठकर उसके लिए मैंने दरवाजा खोला।

“नमस्कार, सावित्री !” मैंने कहा। “तुम्हारे मार्ग में मैंने अनेक बार बाधाएँ उपस्थित की हैं। इस बार मुझे इस बात की खुशी है कि मैं स्वर्गीया मायादेवी बंका का प्रतिनिधित्व नहीं कर रहा हूँ। पुरस्कार तुम्हें अवश्य मिलेगा।”

५

मौत की घटायें

जतीन्द्रनाथ मुकर्जी

मनोविज्ञान का मैं पंडित नहीं और मुझे यह ज्ञान नहीं कि किन किन बाह्य प्रभावों और मानसिक स्थितियों से किन मानसिक अवस्थाओं तथा प्रतिक्रियाओं का जन्म होता है। राजगढ़वाले मामले के बाद उस शरद

ऋतु में जो कुछ मेरे ऊपर गुजरा, उसके कारण, मेरे लिए अब तक अज्ञेय बने हुए हैं। उसका वर्णन मैं यहाँ करने जा रहा हूँ इसलिए कि वह भी इस कथानक का एक महत्त्वपूर्ण अंश है।

मैं बलिष्ठ था, पूर्णतया स्वस्थ था और देहात के शान्त वातावरण और खुली हवा में जीवन व्यतीत कर रहा था। किन्तु एकाएक मेरे हृदय में भय का उदय हुआ। मुझे पक्का विश्वास हो गया कि कोई भयंकर मुसीबत मेरे सिर पर मँडरा रही है। हर रोज़ प्रातःकाल जब मैं अपनी बन्दूक लेकर शिकार खेलने के लिए घर से निकलता या कार पर सवार होकर सैर-सपाटे के लिए बाहर जाता, तब मेरा मन किसी अज्ञात दुर्घटना की पूर्व सूचना से आन्दोलित हो उठता। यह बात नहीं कि अपना स्वाभाविक धैर्य मैं खो बैठता। नहीं, अब भी मैं शिकार और शतरंज पहले की भाँति खेलता था। अब भी मैं बिना ज़रा भी घबराहट के अपनी कार चलाता था और दैनिक जीवन के कार्य सुचारु रूप से सम्पादित करता था। मेरे भय दुर्ज्ञेय थे और जान पड़ता था कि मुझे उनकी सूचनायें अधिकतर स्नायुमण्डल की अपेक्षा मस्तिष्क से मिलती थी। चारों ओर मुझे अनिष्ट की अनुभूति होती थी और मेरे मन में सदैव किसी शत्रु से मुठ-भेड़ होने की आशा बनी रहती थी। रात में अकसर मैं जाग पड़ता और निर्भय भाव से आहट लेने लगता किन्तु खतरे का स्वागत करने की आशा से। मैंने अपने वसीयतनामे में परिवर्तन किये और उसे अपने वकील के पास भेज दिया। अपनी रियासत-सम्बन्धी कई मामले बिना अपने एजेंट की सलाह लिये मैंने शीघ्रता से तय कर डाले। मेरी जान में मेरा एक दुश्मन इस संसार में था और यह प्रायः असम्भव प्रतीत होता था कि वह इस समय भारतवर्ष में हो। फिर भी मैं मौत की प्रतीक्षा कर रहा था।

उन दिनों मैं अपने उस छोटे से, आरामदेह मकान में रहता था जो देहात में स्थित था और जो मुझे अन्य सम्पत्ति के साथ विरासत में मिला था। अविवाहित पुरुष की आवश्यकताओं के विचार से भी इस घर में मेरे सेवकों की संख्या अधिक न थी। गंगोत्री देवी नाम की एक बूढ़ी स्त्री थीं, जो घर का प्रबन्ध करती थीं और जिन्होंने इसी घर में

अपना सारा जीवन व्यतीत किया था। वे बड़े मृदुल स्वभाव और ऊँचे सिद्धान्तों की स्त्री थी। उनका भतीजा, शिवमोहन, मेरा वटलर और खास सेवक था। एक सेवक और दो सेविकायें और थीं। इन लोगों के अतिरिक्त एक थीं श्रीमती एलिस पाल जिन्हें कालीनगर की एक मशहूर कम्पनी की खास सिफारिश से मैंने अपना सेक्रेटरी बनाया था। इन्हें मैं अपनी अपराध और अपराधी-सम्बन्धी एक पुस्तक लिखाता था जिसकी रचना करने का संकल्प मैंने खुफिया-विभाग से अलग होने के बाद ही किया था। आपकी उम्र पचास साल के करीब थी और आप बड़ी नेक और सीधी जान पड़ती थीं। कभी कभी मैं आपको अपने साथ भोजन करने का निमंत्रण देता था। आपसे मेरी भेंट सिर्फ़ काम के समय होती थी या कभी कभी घर के बाहर जब आप अपनी साइकिल पर सवार होकर घूमने जाया करती थीं। घर के बाहर दो चौकीदारों के अतिरिक्त एक सेवक था शिवमोहन का भाई, राममोहन, जो मुझे शिकार खेलाता था और किसानों से लगान वसूल करता था और दूसरा था मेरा विश्वसनीय शोफ़र, सिद्धू, जो कई वर्षों से मेरी सेवा कर रहा था और बड़ा सीधा और होशियार था। ये सब थे वे थोड़े से लोग जिनके सम्पर्क में मैं नित्य आता था। इनमें से शायद किसी को मुझसे विद्वेष न था। फिर भी उनके बीच रहते हुए मैं मृत्यु की प्रतीक्षा करता रहता था।

नवम्बर का महीना था। एक दिन प्रातःकाल में घर से लम्बी गश्त के लिए निकल पड़ा। मेरे साथ राममोहन था और मेरे दो कुत्ते। फ़ाख्तों और बटेरों की तालाश में इधर-उधर घूमते हुए—हम एक सुनसान स्थान में पहुँच गये। दाहनी ओर दूर तक फैली हुई ढलुई ज़मीन थी जो घनी झाड़ियों से भरी पड़ी थी। राममोहन से मैं बीस-पचीस क़दम आगे चल रहा था। सहसा मुझे एक चिर-परिचित सनसनी की अनुभूति हुई। हवा में सनसनाती हुई एक गोली आई, बन्दूक के चलने की आवाज़ हुई और मेरी हैट में एक साफ़, गोला सुराख बन गया।

“हे ईश्वर!” राममोहन चिल्लाया और जोर से उछल पड़ा।
 “यह क्या हो रहा है?”

मैंने उसे अपनी हैट दिखाई। मुख खोले हुए, आँखें फाड़े हुए वह उसकी

और देखता खड़ा रह गया। फिर कोई दूसरी आवाज़ भाड़ियों से नहीं आई। उस दुर्गम स्थान में किसी की खोज करना बेकार था।

“अब घर चलना चाहिए, राममोहन,” मैंने कहा।

“ज़रूर कोई बदमाश उधर छिपा हुआ है,” भाड़ियों की ओर भयपूर्ण दृष्टि से देखते हुए उसने कहा।

“चूँकि वह हमें देख सकता है और हम उसे किसी तरह नहीं देख सकते,” मैंने कहा, “इसलिए मेरे खयाल में अब यही बेहतर होगा कि हम सीधे सड़क की ओर चलें।”

राममोहन को गठिया का रोग था और जब कभी मैं बहुत तेज़ चलने लगता था तो वह पैरों में दर्द की शिकायत करता था। लेकिन इस मौके पर जब मैं सड़क पर पहुँचा तो वह मुझसे सौ गज़ आगे पहुँच चुका था। जब हम घटना-स्थल से काफी दूर निकल गये तब उसने अपनी चाल धीमी की।

“मेरा भतीजा सुखदेव और घासीराम इधर के खेत जोतते हैं,” उसने कहा, “लेकिन किसानों के पास बन्दूक कहाँ होती है। और जहाँ तक मुझे मालूम है इधर आस-पास आपके सिवाय किसी के पास बन्दूक नहीं है।”

“क्या उनमें से कोई अपने यहाँ यात्रियों को स्थान देता है?” मैंने पूछा।

उसे यह बात ठीक ठीक ज्ञात न थी। उसी दिन तीसरे पहर अपनी कार पर सवार होकर मैंने इधर-उधर जाँच की। मालूम हुआ कि इधर आस-पास बहुत दिनों से किसी ने किसी यात्री को अपने यहाँ नहीं ठहराया और कोई अजनबी इधर हाल में नहीं देखा गया। सिर्फ़ एक छोटे ज़मींदार के पास एक बन्दूक थी लेकिन उसे देखने से मालूम हुआ कि कम से कम साल भर से वह इस्तेमाल नहीं की गई थी। तब मैं थाने पर पहुँचा। सब-इन्स्पेक्टर साहब उस समय थाने पर मौजूद नहीं थे। उनके नाम एक सन्देश लिखकर मैं वापस आया। संध्या के समय खुद दारोगा साहब मेरे घर पर तशरीफ़ लाये। “मेरे किस्से का आपके ऊपर कोई खास असर नहीं हुआ।” गम्भीर भाव धारण किये हुए आप कुछ देर तक गौर करते रहे।

“मेरा तो खयाल है” दारोगा ने मुस्कराकर कहा, “कि कोई शिकारी शिकार की तालाश में इधर आ निकला होगा और गलती से उसकी गोली आपकी हैट में लग गई होगी।”

मैंने उसे अपनी हैट दिखाई।

शिकारी आमतौर पर ऐसी बन्दूक नहीं इस्तेमाल करते जिनमें इतनी बड़ी गोलियाँ लगती हैं,” मैंने कहा।

वह सिर खुजलाने लगा। मामला निस्सन्देह आश्चर्य में डालनेवाला था, लेकिन उसके लिए यह दिलचस्पी से करीब करीब खाली था।

“शिकारी अकसर बड़े शैतान होते हैं,” उसने सिर हिलाकर कहा। “कोई लापरवाह शिकारी रहा होगा। खैर, मैं तहकीकात करूँगा।”

नाश्ता कराने के बाद मैंने उसे बिदा किया। थोड़ी-बहुत जाँच मैंने और की लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। मैं मुश्किल से एक मील गया था कि एकाएक कार का संचालक यंत्र उखड़ गया। मैं एक गढ़े में गिर पड़ा लेकिन सौभाग्यवश मुझे अधिक चोट नहीं आई। सिद्धू ने मुझे आश्वासन दिया कि वह इस शरारत के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता, यद्यपि मुझे उसके आश्वासन की आवश्यकता न थी। उस टूटी-फूटी हालत में भी उस यंत्र को देखने से यह साफ़ मालूम होता था कि किसी ने उसकी पिन्ने निकाल ली थीं। घुटने की चोट की वजह से घर में बन्दी हो जाने और वक्त-बेवक्त लेखन-कार्य करने के कारण एक दिन संयोग-वश मेरी नज़र मिसेज़ एलिस पाल की डायरी पर पड़ गई। मैं एकाएक कमरे में आगया और उसे लिखते पाया। मैंने समझा कि वह मेरा ही काम कर रही है इसलिए उसके पीछे जाकर देखा। वह अपनी डायरी में पिछले दिन की बातें दर्ज कर रही थी—

‘जि०ना०मु०—दो घंटे तक काम किया, एक मित्र के साथ शतरंज खेला, तीसरे पहर दो सीटवाली कार में बैठकर बाहर गये। दुर्घटना में फँस गये, लेकिन पैदल चलकर घर वापस आ सके। चोटों के बारे में कुछ नहीं कहा, वे सख्त नहीं थीं। वीरपुर के ज़मींदार के साथ अगले शुक्रवार को दस बजे शिकार खेलने का निमंत्रण स्वीकार किया। शायद गोधूली के समय ऊसरवाले रास्ते से लौटेंगे।’

मिसेज़ पाल को एकाएक मेरी उपस्थिति का ज्ञान हुआ। उसने उस पृष्ठ पर अपना हाथ रख दिया।

“यह मेरी प्राइवेट डायरी है, मिस्टर मुकर्जी,” उसने कहा।

“ठीक है,” मैंने उत्तर दिया। “लेकिन मेरी दिन-चर्या में आपको इतनी दिलचस्पी क्यों है?”

“मेरा दिलचस्पी विलकुल व्यक्तिगत है,” उसने आश्वासन दिया।

“आप शरीफ़ आदमी हैं और मैं आपसे विनय करती हूँ कि आप मेरी प्राइवेट चीज़ पर हाथ न लगायें।”

मैं मानता हूँ कि मैंने कमज़ोरी दिखाई। लेकिन उस शान्त, अघेड़ स्त्री से डायरी के लिए छीना-भपटी करना मुझे घृणाजनक प्रतीत हुआ। मैंने घंटी बजाई।

“मैं सिद्ध को हुक्म दिये देता हूँ, मिसेज़ पाल,” मैंने कहा, “कि वह आपको स्टेशन तक पहुँचा दे। गाड़ी साढ़े पाँच बजे जाती है।”

डायरी जोर से हाथ में पकड़े हुए वह उठ खड़ी हुई।

“मेरे खिलाफ़ आपको क्या शिकायत है, मिस्टर मुकर्जी?” उसने पूछा।

“पिछले सप्ताह में दो बार मेरी हत्या करने की कोशिश की गई,” मैंने कहा। “आप मेरी गति-विधि का रिकार्ड रखती रही हैं, इसलिए यह स्वाभाविक है कि मुझे आपके ऊपर सन्देह हो।”

सुनहरे फ्रेम के अपने चश्मे के अन्दर से वह मेरी ओर आश्चर्य तथा अविश्वास के भाव से देखती हुई कई क्षणों तक खड़ी रही। फिर वह मुड़कर कमरे से बाहर चली गई। इसके बाद मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा।

उसी दिन तीसरे पहर, करीब के एक क़स्बे के डाकखाने में अपने हाथ से एक ख़त छोड़कर जब मैं घर वापस आया तो दरवाज़े पर धूल और कीचड़ से ढकी हुई एक बड़ी-सी भूरे रंग की सफ़री कार दिखाई दी। शिवमोहन ने मुझे तुरन्त सूचना दी कि एक महाशय मुझसे मिलने आये हैं और पुस्तकालय में मेरा इन्तज़ार कर रहे हैं। मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य और सन्तोष हुआ कि आगन्तुक महोदय कोई और नहीं मिस्टर कौल हैं।

“अभी आपके नाम एक पत्र छोड़कर आ रहा हूँ,” हाथ मिलाते हुए मैंने कहा ।

“यहाँ कोई बात तो नहीं हुई?” उन्होंने तुरन्त पूछा ।

“बहुतेरी बातें हुई,” मैंने उत्तर दिया । “आप ह्विस्की और सोडा पियेंगे या चाय?”

उन्होंने चाय पी और बहुत-सा टोस्ट खाया ।

“मैं कालीनगर से सीधे यहाँ आ रहा हूँ,” कौल ने कहा । “प्रधान महोदय आपके बारे में बड़े चिन्तित हो उठे हैं।”

“क्या बात है, सुनाइए?” मैंने अनुरोध किया ।

“सब बातें बता सकना कठिन है,” एक सिगार जलाकर उन्होंने कहा । “समाचार-पत्र तो आप बराबर देखते ही होंगे?”

“बराबर।”

“तब तो आपको यह मालूम ही होगा कि पेरिसवालों को इधर कैसी सख्त परेशानियों का सामना करना पड़ता था? दस दिन के अन्दर वहाँ तेरह हत्यायें हुई, तीस-चालीस लाख रुपये चोरी गये । पेरिस की पुलिस बहुत दिनों से तहक्रीकात कर रही थी और उन्हें बीस-पच्चीस दिन हुए सफलता प्राप्त हुई । उन्होंने अपराधियों का पता लगा लिया और एक दर्जन गिरफ्तारियाँ कीं लेकिन उस दल का नेता जो एक भारतवासी था भाग निकला।”

“कौन था वह?” मैंने पूछा ।

“व्यक्तिगत रूप से,” कौल ने विश्वासपूर्ण स्वर में कहा, “मेरी तो यही राय है कि वह व्यक्ति कोई और नहीं वही शक्स है जिसे हम मोहनलाल, काशीनाथ पाण्डेय और शेरसिंह के नामों से जानते हैं । जहाँ तक पेरिस-वाले पता लग सके हैं, वह इस पृथ्वी से अदृश्य हो चुका है । तलाशी के समय एक अधूरा पत्र बरामद हुआ था जो वह शायद उस समय टाइप कर रहा था जब पुलिसवालों ने उसके घर पर छापा मारा था । उसका पहला पृष्ठ नहीं प्राप्त हुआ । दूसरे पृष्ठ में आपका जिक्र है । उसकी नक़ल मेरे पास है।”

अपने पाकेटबुक से निकालकर कौल ने मुझे एक कागज़

हुआ। सारी रात मुझे कल्पना-जनित दुर्भाग्यायें सताती रहीं। इधर-उधर बिखरी हुई झाड़ियाँ घात में बैठे हुए आदमियों के सदृश प्रतीत होतीं। दूर, बहुत दूर कहीं किसी रेल के इंजन ने सीटी दी और मुझे ऐसा मालूम हुआ मानो उसकी वह आवाज शीघ्र ही आनेवाले खतरे का सिगनल है। जब हम अकबराबाद नामक एक छोटे से नगर में पहुँचे, तब मुझे एक मनुष्य अपने द्वार पर खड़ा दिखाई दिया। उसने हमें गौर से देखा। उसके घर की बैठक की खिड़की खुली हुई थी। अन्दर मेज पर मुझे एक टेलीफोन रक्खा दिखाई दिया। मीरपूर में सड़क के किनारे एक व्यक्ति मोटरसाइकिल लिये चुपचाप खड़ा था। वह आगे भुका— शायद हमारी कार का नम्बर देखने के लिए। दस मिनट बाद वह फट-फट करता हुआ हमारी बगल से निकल गया और उसके इंजन की तीव्र ध्वनियाँ रात्रि की निस्तब्धता में भयानक कर्कशता से गूँज उठीं। जब हम टिकैत नामक कस्बे के समीप पहुँचे तो बड़ी तेज और ठंडी हवा बहने लगी। जो प्लास्क मैं अपने साथ लाया था उससे निकाल कर हम दोनों ने थोड़ी-थोड़ी शराब पी, कानों पर मफलर लपेट लिये, और पैरों पर कम्बल डाल लिया। आगे एक चौरास्ता था। उसके समीप एक कार खड़ी हुई थी जिसकी रोशनी गुल थी और जिस पर अजीब मन-हूसियत बरस रही थी। पचास मील फ्री घंटे की रफ्तार से हम उसके बगल से निकल गये। एक व्यक्ति अकेले उसमें बैठा हुआ था लेकिन उसने सिर उठाकर हमारी ओर नहीं देखा। अनेक ग्राम और कस्बे सामने आये और पीछे छूट गये। पचास मील फ्री घंटे की तीव्र किन्तु सुव्यवस्थित गति से हम चले जा रहे थे। चन्द्रमा की ज्योति अब फीकी पड़ती जा रही थी और अरुणोदय के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे थे। सामने आकाश पर फैले हुए बादलों की कोरों पर झलमलाती हुई श्वेत ज्योति क्रमशः पीली होती जा रही थी। हम कालीनगर के समीप पहुँच गये। कार की चाल कुछ धीमी कर दी गई थी फिर भी उस मंद-धूमिल प्रकाश में हम तेजी से दौड़ते चले जा रहे थे।

रेलवे का एक पुल सामने आया। उसके नीचे से हम निकले ही थे कि सहसा ब्रेक लग जाने की आवाज हुई। मैंने तुरन्त खिड़की से सिर

निकाला। कार रुक गई। हमें एक कांस्टेबिल ने रोका था जो नोट-बुक हाथ में लिये एक दूसरी सफ़री कार के यात्रियों से बात कर रहा था। वह सफ़री कार सड़क पर एक ओर खड़ी हुई थी। कांस्टेबिल हमारे समीप आया।

“क्या आप लोग कालीनगर जा रहे हैं?” उसने पूछा।

“हाँ,” मैंने उत्तर दिया। “क्या बात है? तुम्हारे लिए हम क्या कर सकते हैं?”

मेरे शब्द मेरे मुख से निकले ही थे कि मैं समझ गया कि हम किसी जाल में फँस गये हैं। यह मैं समझ न पाता, तो मेरी जान न बच पाती। एक क्षण का विलम्ब भी घातक सिद्ध होता। अपनी पूरी ताकत से मैंने उस छोटे-से काले रिवाल्वर पर धूँसा मारा जो मेरे चेहरे के बिलकुल समीप पहुँच चुका था। रिवाल्वर चलने की तीव्र ध्वनि हुई, मेरे कंधे के ऊपर तेज़ दर्द हुआ और वह रिवाल्वर उस आदमी की कुचली हुई अँगुलियों से छूटकर गिर पड़ा। मैं उसे पकड़ने ही वाला था कि वह भाग निकला। दूसरी सफ़री कार अब धीरे-धीरे चलने लगी थी। वह तेज़ी से दौड़कर, कूदकर उस पर चढ़ गया। उसकी पगड़ी सड़क पर गिर पड़ी। एक दूसरा आदमी भी, जो शायद हमारी कार के नीचे छिपा था, बड़ी तेज़ी से दौड़ा और कूद कर उस चलती हुई कार पर चढ़ गया। बड़ी आश्चर्यजनक गति से वह कार भागने लगी। उसका पीछा करने के खयाल से कौल ने चिल्लाकर शोफ़र को गाड़ी बढ़ाने का आदेश दिया। कार चली, लेकिन कई भयानक धक्के खाकर रुक गई। मैं तुरन्त कूद पड़ा। हमारी कार के दोनों पिछले टायर किसी तेज़ औज़ार से फाड़ दिये गये थे। उधर, दूरी में वह कार हार्न बजाती तीव्र गति से कालीनगर की ओर जाती हुई दृष्टिगोचर हुई।

सावित्री

अक्टूबर के महीने में एक मुद्दत के बाद मेरे पति ने मेरी खबर की। बहुत दिनों से मेरी क्रिस्मत मेरे साथ बड़ी सख्ती से पेश आ रही थी। मिसेज़ मायादेवी बंका के द्वारे खोज निकालने के लिए मुझे

जो पुरस्कार मिला था उसका अधिकांश मैंने एक दूकान में लगा दिया, लेकिन बाद में मालूम हुआ कि वह दूकान एक जमाने से चल रही थी। मेरे रुपये डूब गये। कई नौकरियाँ मैंने कीं और छोड़ीं। कहीं मैं टिक नहीं सकी, और केवल एक ही कारण से। आर्थिक कठिनाइयों के कारण मेरे रूप को भी यथेष्ट क्षति पहुँची थी और वस्त्रों में भी कोई आकर्षण नहीं रह गया था। लेकिन अगर मैं इन्द्रपुरी की कोई परम सुन्दरी अप्सरा भी होती तो भी कदाचित् इतनी तादाद में ऐसे अनुचित ढंग के प्रस्ताव न किये जाते जिनसे स्वामी और सेविका के बीच के साधारण सम्बन्धों का अन्त हो जाना स्वाभाविक है। मैंने क़रीब क़रीब निश्चय कर लिया था कि उस जगह सहायता के लिए अपील करूँ जहाँ शरण लेने से मेरे इस ईमानदारी के जीवन का अन्त हो जाता। लेकिन दूसरे ही दिन प्रातःकाल गृह-स्वामिनी एक नवयुवक को, जो किसी बैंक में काम करनेवाला क्लर्क मालूम होता था, परम निर्लज्जता से मेरे उस कमरे में लिवा लाई जो मेरा शयनागार भी था और बैठक भी। मैं अपना एक कोट तहा रही थी जिसे मैं गिरवी रखने के लिए ले जाना चाहती थी। उस समय मैं खुश नहीं थी। गृह-स्वामिनी के ऊपर मुझे बड़ा क्रोध आया।

“आप क्या चाहते हैं?” मैंने रुखे स्वर में पूछा। “इस कमरे में मैं किसी से भेंट नहीं करती।”

“मैं एक विशेष काम से आया हूँ, मैडम,” उसने कहा। “मिसेज़ सावित्री पाण्डेय आप ही हैं?”

“आमतौर से लोग मुझे इसी नाम से जानते हैं,” मैंने कहा।

अपनी पाकेटबुक खोलकर उसने मेरे सामने मेज़ पर ढाई हजार रुपये के नोट गिन दिये। चौंककर मैं मंत्रमुग्ध भाव से उसकी ओर देखती रह गई।

“बैंक के मैनेजर ने नमस्कार भी कहलाया है,” अपनी हूट उठाकर, दरवाज़े की ओर मुड़कर उसने कहा।

“ये नोट किसने भेजे हैं?” मैंने पूछा। “किस बैंक से ये आये हैं?”

“विश्वास, आशा और उदारता के बैंक से,” उसने मुस्कराकर उत्तर दिया। “नमस्कार !”

कुछ और मैं कहने नहीं पाई। वह चला गया। लोभ से आन्दोलित होकर मैं नोटों का ढेर समेटने लगी। जब फ्रांस में की जानेवाली अपने पति की कुछ कार्रवाइयों की खबर मुझे मिली थी तब मैं इस बात की पूरी कोशिश कर रही थी कि उनकी सहायता के बिना किसी तरह अपना काम चलाती रहूँ। किसी कारण से जिसका ज्ञान स्वयं मुझे भी नहीं था मैं अपने पति और उनके साथियों से दूर ही रहना चाहती थी। किन्तु उस दयनीय दशा में अपनी स्वतंत्रता कायम रखने का विचार मुझे अनुचित तथा हास्थजनक प्रतीत हुआ। उन रूपों की मुझे सख्त ज़रूरत थी।

कई महीने का बाकी किराया मैंने चुका दिया और गृह-स्वामिनी को अपने कपड़े भी भेंट कर दिये। कौन चीजें कहाँ खरीदनी चाहिए, इस कला में मैं दक्ष थी। दोपहर बीतते बीतते सुन्दर नये वस्त्रों से सज्जित होकर बढ़िया सामान लेकर मैं एक प्रतिष्ठित मुहल्ले में स्थित एक आलीशान मकान के एक हिस्से में आ बसी। मेरे शरीर पर कोई आभूषण न था, क्योंकि मेरे गहने मेरे पति के कब्जे में थे और एक जमाने से मुझे उनकी सूरत भी देखने को नहीं मिली थी। लेकिन उसी दिन दो बजे के करीब यह अभाव भी दूर हो गया। एक सेवक ने एक बंडल लाकर मेरे सामने रख दिया। उसे उत्सुकता से खोलकर मैंने देखा। कई सुपरिचित केस दृष्टिगोचर हुए। इस तरह मेरे गहनों का एक भाग, जिसे फिर कभी पा सकने की आशा मुझे नहीं थी, मेरे हाथ में आ गया। यह बात स्पष्ट हो गई कि मेरे पतिदेव या तो आ पहुँचे हैं या शीघ्र ही आनेवाले हैं और उन्हें मेरी सहायता की आवश्यकता है। फिर भी तीन दिन बीत गये और मुझे कोई इशारा या सन्देश नहीं मिला। सुन्दर वस्त्रों, उत्तम इत्रों, स्वादिष्ट भोजन और बढ़िया मदिरा का आनन्द लेते हुए ये तीन दिन मैंने बड़े आनन्द से बिताये। मुझे अनुभव हुआ कि जीवन मेरे अन्दर फिर प्रस्फुटित होने लगा है; स्वस्थ रक्त मेरे शरीर में पुनः प्रवाहित हो रहा है। उन दिनों कोई

चीज मुझे मेरी विगत निस्सहायता और दरिद्रता के समीप वापस ले जाने में सम्भवतः सफल न होती। उसके पास वापस जाने की अपेक्षा कोई भी अपराध करने को मैं तैयार हो जाती।

चौथे दिन जतीन्द्रनाथ मुकर्जी से मेरी भेंट हुई। हाडिंग स्ट्रीट में मैं एक दूकान से निकली ही थी कि वे सामने आते-मेरे नज़र आये। नई खरीदी हुई पुस्तकों का एक बंडल उनकी बगल में दमका हुआ था और स्पष्टतः वे एक टैक्सी की तलाश में थे। वे मेरे धिलचुले के समीप पहुँच चुके थे जब उन्होंने मुझे पहचाना। उनके गम्भीर, कठोर चेहरे पर एक विचित्र भाव चमक उठा और शरीर में एक विचित्र सनसनाहट दौड़ गई। यद्यपि हम एक दूसरे के शत्रु थे, मुझे देखकर उन्हें प्रसन्नता हुई।

“नमस्कार, मिस्टर मुकर्जी !” उनकी ओर हाथ बढ़ाकर मैंने कहा। “क्या संसार में कोई अपराधी नहीं बचा कि आप इस तरह छुट्टी मना रहे हैं ?”

मुस्कराकर उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया। फिर पुस्तकों का बंडल उन्होंने उस टैक्सी में रख दिया जो पास आकर खड़ी हो गई थी।

“अपराधियों का पता लगाने के काम से मैं ऊब गया हूँ,” मुकर्जी ने कहा। “इसके अलावा उलटी गंगा बहने लगी है। अब वे लोग खुद ही मेरे पीछे पड़ गये हैं।”

“अच्छा !” मैंने कहा। “तब तो इसका मतलब यह है कि मेरे पति वापस आ रहे हैं ?”

“इस बात की अफवाहें तो उड़ रही हैं,” उन्होंने उत्तर दिया। “यही कहीं करीब ही ठहरी हो ?”

“मैं रतनचन्द स्ट्रीट में रह रही हूँ,” मैंने कहा। “आप मेरी निगरानी क्यों नहीं करते ? अगर वे वापस आयेंगे तो शायद सबसे पहले मुझसे ही भेंट करेंगे।”

“यह बहुत अच्छा खयाल है,” उन्होंने कहा, और उनकी आँखों में एक विचित्र प्रकाश चमक उठा। “इसकी अपेक्षा तो यह अच्छा होगा कि उन्हें गिरफ्तार करा देने के लिए मैं तुम्हें रिश्तत दूँ।”

“कितना दीजिएगा ?” मैंने पूछा। “इधर मेरे साथ उनका बर्ताव अच्छा नहीं रहा।”

“आज रात को मेरे साथ भोजन करो,” उन्होंने निमंत्रण दिया। “तब इस विषय पर बातें होंगी।”

मुझे इस बात का विश्वास है कि मुकर्जी मेरे भी वैसे ही शत्रु हैं जैसे वे मेरे पति, शेरसिंह के हैं। फिर भी मेरे ऊपर उनका एक विचित्र प्रभाव है जिसके आगे मैं आत्म-समर्पण नहीं करना चाहती। उस प्रभाव को मैं समझ भी नहीं पाती, उसका विश्लेषण कर सकना तो दूर रहा। अकेले उनके साथ भोजन करने के विचार से मेरे शरीर में हलकी-सी कँपकँपी दौड़ गई। मेरे उत्तर की प्रतीक्षा में मुस्कान-सहित मेरी ओर देखते हुए वे चुप-चाप खड़े रहे।

“आपके साथ भोजन करने में मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी,” मैंने साहस-पूर्वक उत्तर दिया।

“मेरे निवासस्थान पर, आठ बजे के करीब,” उन्होंने कहा।

“किसी रेस्टारेंट में क्यों नहीं ?” मैंने पूछा।

“अगर तुम्हारी यही इच्छा है, तो किसी रेस्टारेंट में ही सही,” उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया। “तुम्हारे पति जिस दल के प्रधान हैं उसके द्वारा शायद तुम्हारी निगरानी की जा रही है और तुम्हारी गति-विधि की रिपोर्टें भेजी जा रही हैं। ऐसी दशा में अगर तुम किसी सार्वजनिक स्थान में मेरे साथ अकेले भोजन करती देखी जाओगी, तो वे लोग शायद यह समझेंगे कि तुम दुश्मन से मिल गई हो।”

आपको बड़ा खयाल है मेरा !” व्यंगपूर्ण स्वर में मैंने उत्तर दिया।

“बेहतर है, आपके दौलतखाने पर ही हाज़िर होऊँगी।”

उन्होंने संतोष के भाव से सिर हिलाया, नमस्कार किया, और गाड़ी पर सवार हो गये। मैं उनकी ओर देखती रही, मन में उनसे घृणा करती हुई इसलिए कि वेही एक ऐसे पुरुष थे जिनमें मुझे अशान्त कर सकने की शक्ति थी। उनके शरीर पर सीक जैसे ही सज्जन के जैसे सज्जन

प्रभाव को मैं समझ भी नहीं पाती, उसका विश्लेषण कर सकना तो दूर रहा। अकेले उनके साथ भोजन करने के विचार से मेरे शरीर में हलकी-सी

धारण किये हुए थे। उनकी क्रीमती हैट उनके सिर पर बिलकुल ठीक कोण पर लगी हुई थी। वे एक कुशल, सुगठित शरीरवाले खेलाड़ी की मस्ती-भरी चाल से चलते थे। मैं घृणा करती थी उनकी बुद्धिमत्तापूर्ण, कृपायुक्त मुस्कान से, उनके शरीर के गौर स्वच्छ रंग से, उनकी आँखों के इर्द-गिर्द खिंची हुई हास्यमूलक रेखाओं से। मैं अपने घर वापस गई, और चन्द भावुकतापूर्ण पंक्तियाँ उनके पास लिख भेजीं। मैंने स्पष्ट कर दिया कि किसी रेस्टारेंट में उनके साथ भोजन कर सकती हूँ किन्तु उनके घर पर नहीं और आठ बजे वे मुझे बुला सकते हैं।

उसी दिन साढ़े तीन बजे मुझे यह निमंत्रण मिला जिसकी मैं प्रतीक्षा कर रही थी, और ठीक चार बजे जार्ज स्ट्रीट में एक टैक्सी से उतरी और सालीसिटरों के दफ्तर में घुसी। एक चपरासी ने मेरा स्वागत किया। बड़ी नम्रता से मुझे एक बेल बेंच पर बैठने की सलाह देकर वह इस दफ्तर के प्रधान, मिस्टर दलाल, को इत्तला देने के लिए चला गया। चारों ओर आलमारियों में दस्तावेजों से भरी हुई फाइलें सजी हुई थीं, और ये सारे दस्तावेज उन मामलों से सम्बन्ध रखते थे जिनमें कि दलाल, बनर्जी एंड दलाल नामक इस कम्पनी का हाथ था। चन्द मिनट के बाद उस चपरासी ने उधर का एक दरवाजा खोलकर कहा—
थाइए मैडम, मिस्टर दलाल आपसे भेंट करेंगे।

मैंने उस कमरे में प्रवेश किया। दरवाजा बन्द हो गया। एक लम्बे, बूढ़े व्यक्ति ने विचारमग्न भाव से उठकर मेरा स्वागत किया और मुझसे हाथ मिलाया। उनके कपड़े बहुत साफ़ तो नहीं थे लेकिन वैसे ही थे जैसे वकील आमतीर पर पहनते हैं। वे पुराने ढंग का चश्मा पहने हुए थे, जो इस समय उनके मत्थे पर चढ़ा हुआ था। उनकी टाई और कालर भी पुराने फ़ैशन के थे। इस कमरे में भी चारों ओर आलमारियाँ खड़ी थीं और उनमें फ़ाइलें और क़ानून की पुस्तकें भरी पड़ी थीं। मेज पर कागज़ों का एक बड़ा-सा ढेर बिखरा हुआ था। उन्होंने एक कुर्सी की ओर सङ्केत किया। मैं बैठ गई। तब वे भी बैठ गये, सामने पड़ा हुआ एक दस्तावेज एक ओर हटा दिया, पैर सिकोड़े और मेरी ओर एकटक देखने लगे।

“आप मिसेज़ —आगा हैं?” उन्होंने पूछा। इधर कई मास से लोग मेरा यही नाम जानते थे।

“हाँ, यह भी मेरा एक नाम है,” मैंने स्वीकार किया। “टेलीफोन से मुझे आपका सन्देश मिला था।”

“बिलकुल ठीक, बिलकुल ठीक,” वे मुनमुनाये और कागज़ों के ढेर में कुछ खोजने लगे। “ज़रा ठहरिए! आपके पति—एक मुद्दत तक हमारे मुक्किल रहे हैं। कहाँ गया वह कागज़? मेरी याददास्त बिगड़ती जा रही है। यह मिल गया! हाँ, तो आपके पति ने हमें पेरिस से यह आदेश दिया था कि हम आपको ढाई हजार रुपये दे दें। वे रुपये आपको मिल गये न?”

“हाँ, मिल गये और करीब-करीब खर्च भी हो गये,” मैंने उत्तर दिया।

उनके चेहरे पर छाई हुई दयालुता कुछ घट गई।

“अच्छा!” उन्होंने आश्चर्यपूर्ण स्वर में कहा। “इससे तो किसी क्रद-फ़िज़ूलखर्ची जाहिर होती है।”

“इधर महीनों से मैं बड़ी तंगी में थी,” मैंने कहा।

वे विचारमग्न भाव से अपने ओठ खुजलाने लगे।

“मुझे सूचना मिली है कि आपके पति इधर कुछ दिनों से पेरिस में कुछ नाज़ुक ढंग की कार्रवाइयों में व्यस्त थे। अर्थ-संसार में भी सदैव अनेक गुप्त भेद रहते हैं। खैर, उन्होंने अपनी वह कार्रवाइयाँ अब खत्म कर दी हैं। शायद आपको यह मालूम होगा कि वे हिन्दुस्तान वापस आगये हैं?”

मेरा हृदय उछल पड़ा। मैं यह नहीं कह सकती कि मेरी इस भावना में हर्ष अधिक था या भय।

“वे खैरियत से हैं?” मैंने पूछा।

“खैरियत से?” मिस्टर दलाल ने कहा। “क्यों नहीं?”

कई क्षणों तक निस्तब्धता रही। मैंने कमरे में इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई और उस वकील के किंचित् चकराये हुए चेहरे की ओर देखा। और उस दफ़्तर के गम्भीर वातावरण को ध्यान में चढ़ाती हुई

में खामोश रही। मिस्टर दलाल सहसा मुस्कराये और अपनी दाहिनी तर्जनी में मेज़ पर थपकियाँ देने लगे। उनकी दशा उस वकील की-सी हो गई जिसे किसी महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ में किसी त्रुटि का एकाएक ज्ञान हुआ हो।

“अब मैं समझ गया,” उन्होंने कहा। “आपके प्रश्न का महत्त्व पहले मेरी समझ में नहीं आया था। पेरिस बड़ा विचित्र स्थान है। जिन आर्थिक कार्रवाइयों में आपके पति लगे हुए थे वे लाभदायक तो अवश्य सिद्ध हुई हैं लेकिन यह बहुत सम्भव है कि उन कार्रवाइयों के कारण बहुतेरे लोग उनके दुश्मन बन गये हैं। अपना एक नया नाम रखकर वे भारत वापस आये। क्या है उनका वह नाम? कहाँ गया वह कागज़? अभी तो मेरे हाथ में था? हाँ, यह है, यही तो है। मिस्टर बी० एफ० मर्चेट! मुझे आदेश दिया गया है, मैडम, कि मैं आपको इत्तला दूँ कि आपसे मिलकर आपके पति को बड़ी प्रसन्नता होगी।”

“उनका पता आपको मालूम है?”

कई क्षणों तक मिस्टर दलाल फिर परेशान नज़र आये। तब विजयसूचक ढंग से मुस्कराकर उन्होंने वह कागज़ पलटकर देखा जो उनके हाथ में मौजूद था।

“उनका पता?” उन्होंने कहा—“बिल्कुल ठीक! यह है उनका पता—नम्बर १२, क्लाइव स्ट्रीट। हाँ, एक बात और याद आ गई। आपके पति का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, उनसे ऐसी दशा में मिलने के लिए आपको तैयार रहना चाहिए। यथार्थ तो यह है मैडम, कि वे एक नर्सिंग-होम में पड़े हुए हैं।”

“क्या वे सख्त बीमार हैं?” मैंने पूछा।

“नहीं, मुझे विश्वास है कि बात ऐसी नहीं,” उन्होंने निश्चयपूर्वक कहा। “आध घंटे में इस बात की जाँच आप खुद कर सकेंगी। आपको जब सुविधा हो उनसे मिल लीजिए।”

मैं चुपचाप मूर्तिवत् बैठी रही। उद्युक्त तमाम बातों में अपने मस्तिष्क में संचित करने के प्रयत्न में लगी थी। मिस्टर दलाल ने अपनी घड़ी पर नज़र डाली, और तुरन्त घटी बजाई।

“आप मुझे क्षमा करे मैडम,” उन्होंने उठकर कहा। “वकीलों की एक सभा में मुझे सम्मिलित होना है। अपने पति से कृपया मेरा सलाम कह दीजिएगा और उनसे यह भी कह दीजिएगा कि अगर वे मुझसे कुछ और सेवा लेना चाहें तो मुझे इत्तला दें।”

चपरासी दरवाजा खोले खड़ा था। पुराने ढंग से सिर झुकाकर मिस्टर दलाल ने नमस्कार किया। मैं दफ्तर से बाहर निकली और अपनी टैक्सी पर सवार हो गई। उस समय मैं कुछ हैरान-सी हो गई थी। थोड़ी देर के बाद क्लाइव स्ट्रीट में पहुँचकर नम्बर १२ वाले मकान के सामने मेरी गाड़ी रुकी। मैंने उस चिकित्सालय में प्रवेश किया। एक नर्स ने रजिस्टर देखा और मुझे ऊपर लिवा ले गई।

“मिस्टर मर्चेट बड़े सन्तोषप्रद ढंग से अच्छे हो रहे हैं,” दूसरे मंजिल के एक कमरे के सामने रुककर उसने कहा—“डॉक्टर को आशा है कि वे इन्हें इस सप्ताह के अन्त तक यहाँ से बिदा होने की आज्ञा दे सकेंगे। अन्दर चलिए। आप जब तक चाहें रुक सकती हैं।” फिर दरवाजा खोलकर उसने कहा, “मिस्टर मर्चेट, आपकी बीबी आई हैं।”

मैं अन्दर गई। उसने दरवाजा बन्द कर दिया। मैं रोगी की शय्या की ओर बढ़ी, और चौंककर पीछे हट गई। मैंने समझा कि शायद नर्स से भूल हो गई। वह व्यक्ति जो बिस्तरे पर बैठा हुआ मेरी ओर देख रहा था पहली बार देखने से बिलकुल अजनबी जान पड़ा। उनके सिर के बाल जो पहले काले थे अब भूरे हो गये थे और उनकी मूँछें भी इसी रंग की हो गई थीं। उनके गाल पिचक गये थे और उनका मत्था उभर आया था। और उनके चेहरे पर बाईं ओर किसी घाव का लम्बा दाग था जो पहले नहीं था। किन्तु अब भी मुझे किञ्चित् दुविधा थी।

“घबराओ नहीं, सावित्री।”

“अच्छा, तुम ही हो!”

“हाँ, मैं ही हूँ,” उन्होंने कहा। “कहो, कैसी रहीं?”

“खूब रही! पहले तो मैं बिलकुल पहचान नहीं सकी।”

“मिस्टर काशीनाथ पाण्डेय की सूरत मेरी इस सूरत से मिलती है?”

“जरा भी नहीं,” मैंने उत्तर दिया। “बड़ा आश्चर्यजनक परिवर्तन है। खैर, यह तो बताओ, तुम्हें हुआ क्या है?”

“कुछ भी नहीं,” उन्होंने बेसब्री से उत्तर दिया। “अपने को दुबला करने के लिए मुझे कई दिनों तक फ़ाका करना पड़ा। जहाज़ पर यात्रा करने के लिए मुझे अपने एक व्यवसायी मित्र का नाम और स्थान ग्रहण करना पड़ा। बड़ी सफ़ाई और हुनर का वह खेल था। यहाँ यह समझा जा रहा है कि मुझे स्नायु-दौर्बल्य का रोग हो गया है। बेहूदी बात! स्नायु तो मेरे शरीर में है ही नहीं!”

“एक मुद्दत तक तुमने मेरी ख़बर नहीं ली,” शिकायत-भरे स्वर में मैंने कहा।

“अपनी जान बचाने के लिए मैं युद्ध कर रहा था,” उन्होंने गम्भीर भाव से उत्तर दिया। “इस खेल के आन्तरिक चालों से तुम वाकिफ़ नहीं हो, और उनका वर्णन कर सकना भी असम्भव है। मैं चारों ओर से घेर लिया गया था। पेरिस में मुझे अपने जीवन की सर्वोच्च सफलता प्राप्त हुई लेकिन अन्त में मामला बिगड़ गया। और तुम यह अच्छी तरह जानती हो सावित्री, कि इसका क्या मतलब है।”

मैं उनके चेहरे की ओर ध्यान से देख रही थी जब वे बोल रहे थे। अपना विचित्र प्रभाव वे मेरे ऊपर पुनः स्थापित कर रहे थे। उनकी बातों से आज पहली बार मेरे हृदय में भय की भावना उदित हुई।

“किसी की हत्या भी तुमने की?” मैंने धीरे से पूछा।

“हत्या करने का मेरा इरादा नहीं था,” उन्होंने उत्तर दिया। “मोशिये लावेल नामक एक फ़्रांसीसी सेठ की हत्या मुझे मजबूरन करनी पड़ी। निकट से युद्ध करने के लिए उसने स्वयं मुझे मजबूर किया। हम दोनों ने एक-दूसरे के ऊपर गोलियाँ चलाई। मैं ज़ख्मी हो गया। उसे भी गोली लगी। उसकी तन्दुरुस्ती पहले ही से बहुत खराब थी, इसलिए वह बच नहीं सका। उसे जो आघात लगा वह भी उसकी मृत्यु के लिए उतना ही ज़िम्मेदार है जितनी कोई दूसरी बात। खैर, मैं भाग तो आया हूँ लेकिन भविष्य में मेरे सामने सिर्फ़ एक सिद्धान्त रहेगा— सब कुछ या कुछ नहीं।”

“अब तो तुम्हारे पास काफ़ी धन जमा हो गया होगा,” मैंने कहा, “फिर यह मार्ग अब छोड़ क्यों नहीं देते ?”

उपेक्षा का भाव उनके चेहरे पर झलक उठा।

“मुझे शरण कहाँ मिलेगी ?” उन्होंने उत्तर दिया। “सारे संसार का मैं भ्रमण कर चुका हूँ। शान्तिपूर्वक रहने के लिए मुझे कहीं भी स्थान नहीं मिल सकता। मेरे दुश्मन हर जगह मेरी खोज करेंगे। मेरे लिए तो शरण है केवल अस्त्रों की छत्रछाया में।”

“इस भेंट के बारे में क्या कहते हो ?” मैंने पूछा। “पुलिसवाले मुझसे अपरिचित नहीं हैं ?”

“यह भी एक समस्या है,” उन्होंने धीरे-धीरे कहा। “इसमें भी कम खतरा नहीं है लेकिन तुमसे मिलने के लिए मैं तड़प रहा था। तुमसे विलग रहना मेरे लिए कितना दुखद है, कह नहीं सकता।”

प्यार के ऐसे शब्द उनके मुख से आज पहली बार सुनने को मिले। किसी अज्ञात कारण से मैं फिर काँप उठी।

“मेरी आवश्यकता आज तुम्हें क्यों है ?” मैंने पूछा।

“मुकर्जी का खात्मा करने के लिए,” उन्होंने उत्तर दिया।

कमरे में खामोशी छा गई, और मैंने अनुभव किया कि वे मेरे चेहरे से मेरे मनोभावों का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं। मेरे चेहरे के भाव में कोई परिवर्तन नहीं हुआ और मेरी आँखों की ज्योति मन्द नहीं हुई, फिर भी मेरे लिए यह सन्तोष की बात थी कि कमरे में कुछ अन्धकार था। उस नासंग-होम की घीमी आवाज़ें, बाहर सड़क पर गाड़ियों के चलने की मन्द आवाज़ें और रह रह कर किसी मोटर के हॉर्न की चीखें हमारे कानों में पड़ती रहीं। बाहर करीब ही वृक्षों पर बैठी हुई चिड़ियाँ मधुर स्वरों में चहचहा रही थीं।

“सारी बातों का अन्धाज्रा मैंने लगा लिया है,” उन्होंने कहा। “मैं यहाँ बिलकुल सुरक्षित हूँ, बिलकुल सुरक्षित हूँ; अगर उस चतुर व्यक्ति की नज़र मेरे ऊपर न पड़े। इस हालत में भी वह मुझे तुरन्त पहचान लेगा। और ज्यों ही मैं यहाँ से हटा और हटना मुझे जरूर पड़ेगा; क्योंकि

अनेक महत्वपूर्ण कार्रवाइयाँ यहाँ करनी हैं, वह मेरा पीछा करेगा। इसलिए अब तो सवाल यह है कि मेरी जान रहे या उसकी।”

“यह तुमने कैसे समझ लिया कि मैं यह काम कर सकती हूँ?”
मैंने पूछा।

हास्यरहित मुस्कान उनके होठों पर पुनः व्यक्त हो गई।

“इसलिए कि यद्यपि यह बात मिस्टर मुर्कजी नहीं जानते, तुम्हारे आकर्षण से वे प्रभावित हो उठते हैं। वे शक्ति-सम्पन्न हैं और तुम्हारे आकर्षण के सम्मुख आत्म-समर्पण नहीं कर सकते किन्तु उसकी संगति में आने का लोभ वे संवरण नहीं कर सकते क्योंकि इससे उन्हें अपने जीवन में एक सर्वथा नवीन अनुभव प्राप्त होता है। तुम्हारे अस्तित्व की संगति से उनके अन्दर एक ऐसी अनोखी अनुभूति उत्पन्न होती है जो उन्हें कभी कहीं नहीं प्राप्त हुई। ये बातें मैंने अपनी आँखों से देखी हैं, सावित्री। पुरुषों को मैं उसी तरह समझ सकता हूँ जैसे पुस्तकों को।”

“स्त्रियों को भी समझ लेते हो?” मैंने साहसपूर्वक पूछा।

“बहुत काफ़ी।”

“मुझे यह काम किस तरह कराना चाहते हो?”

वे तनकर बैठ गये।

“मिस्टर मुर्कजी एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें मार सकना कठिन है,” उन्होंने कहा। “मूर्ख व्यक्ति सीधे मृत्यु के समीप पहुँच जाता है। मिस्टर मुर्कजी अज्ञा का कवच धारण किये रहते हैं और जैसे मृत्यु भी उनके समीप जाने से हिचकती है। इधर कई बार उनकी हत्या करने के प्रयत्न किये गये। एक बड़े होशियार निशानेबाज़ ने सौ गज की दूरी से उनके ऊपर गोली चलाई लेकिन निशाना चूक गया। मोटर चलाने में वे दक्ष नहीं हैं लेकिन उस दिन जब मोटर चलाते समय संचालक यंत्र उखड़ गया तो वे बड़ी सफ़ाई से सिर्फ़ हलकी चोटें खाकर बच गये। फिर भी अगर वे देहात में कुछ दिन और ठहर जाते, तो हम अवश्य सफल हो जाते। मुझे खबर मिली है कि वे आज-कल यहीं हैं।”

“वे करीब ही में मौजूद हैं,” मैंने कहा, “और आज रात को मैं उनके साथ भोजन करने जा रही हूँ।”

सूर्य के प्रकाश में पॉलिश किया हुआ लोहा जिस तरह चमक उठता है उसी तरह उनकी आँखें एक क्षण के लिए चमक उठीं।

“आज सवेरे एक सड़क के नुक्कड़ पर उनसे भेंट हो गई थी,” मैंने कहा।

“इस सम्बन्ध में मैं कोई प्रश्न नहीं करना चाहता,” उन्होंने रखाई से कहा। “जब कभी तुम बेवफ़ा हो जाओगी, तो मुझे यह बात माफ़ूम हो जायेगी। यह उपहार लो, सावित्री।”

तकिये के नीचे से हाथ निकालकर उन्होंने मेरे हाथ में सोने का एक छोटा-सा वक्स दे दिया। उस पर बड़ी सुन्दर, बड़ी विचित्र नक्काशी की हुई थी। मैं खुशी से उछल पड़ी। उन्होंने धीरे से स्प्रिंग दबाया। वक्स खुल गया। उस वक्स में सफ़ेद पाउडर भरा हुआ था, और ऊपर एक पाउडर-पफ़ रक्खा था।

“देखो होशियार रहो, पाउडर मुख में न जाने पाये,” उन्होंने चेतावनी दी। “किसी खाने या पीने की चीज़ में सिर्फ़ एक चुटकी डाल देना बालूनी होगा। ले लो इसे।”

वह वक्स मैंने अपने रेशमी बैग में डाल लिया। मैं अपने को यह बात समझाने की कोशिश कर रही थी कि एक बार पहले भी मैंने एक मनुष्य की हत्या की थी।

“सिर्फ़ इस आध आउंस ज़हर के लिए मुझे डेढ़ हजार रुपये देने पड़े,” उन्होंने कहा। “कितने मनुष्य संसार में इसकी खोज करते फिरते हैं। इस पाउडर को तुम बेख़टके छू सकती हो। जब तक यह शरीर के अन्दर न पहुँच जाय तब तक यह ख़तरनाक नहीं है।”

“और शरीर के अन्दर पहुँचकर यह क्या करता है?”

“कम से कम दो साल के लिए यह बलिष्ठ से बलिष्ठ मनुष्य को भी बिल्कुल अपाहिज और रोगी बना देता है।”

जतीन्द्रनाथ मुकर्जी

मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि मेरे लिए यह बेहतर होगा कि भविष्य में सावित्री पाण्डेय से दूर ही रहूँ। एक उस्ताद अपराधी की

शान्त, यंत्र-सदृश सहयोगिनी के रूप में उसने मुझे आकर्षित किया था। अपनी पुस्तक के एक पूरे अध्याय में मैंने उसके विचित्र चरित्र का विश्लेषण किया है। लेकिन अब मुझे यह अनुभव होने लगा है कि कठोर से कठोर और निर्दय से निर्दय स्त्री भी अपनी जाति की विशेषताओं और प्रवृत्तियों से मुक्त नहीं हो सकती। उन समस्त विगत अवसरों पर जब मुझे उसका विरोध करना पड़ा था उसने असीम शान्ति तथा आत्म-विश्वास का परिचय दिया था। पहले कभी किसी यथार्थ भावना की ज्योति मुझे उसकी आँखों में दृष्टिगोचर नहीं हुई। लेकिन रात को जिस सावित्री ने मेरे साथ भोजन किया वह पहले की सावित्री नहीं थी। उसके कपोलों पर रग आता-जाता रहा और वह पहले से बहुत अधिक सुन्दर लग रही थी। उसकी आँखें पहले से बड़ी दीख रही थीं, और उनमें बड़ा कोमल प्रकाश जगमगा रहा था। जानसन्स रेस्त्राँ के एक कोने में हम बैठे हुए थे। नित्य की भाँति उस कमरे में कितनी ही सुन्दर स्त्रियाँ मौजूद थीं। लेकिन किसी सुन्दरी की ओर लोगों का ध्यान इस कदर आकर्षित नहीं हो रहा था जितना सावित्री की ओर। और कोई भी इस योग्य नहीं थी।

“आप समझते हैं कि मैं अच्छी लग रही हूँ?” मेरी किसी बात के उत्तर में उसने पूछा।

“बहुत अच्छी,” मैं उत्तर दिया। “और तुममें कुछ परिवर्तन भी आ गया है। ऐसा जान पड़ रहा है जैसे इस जीवन में तुम्हें कोई नवीन आकर्षण प्राप्त होने लगा है।”

किंचित् कटुता के भाव से वह हँस पड़ी।

“कहाँ करूँ उस आकर्षण की खोज?” उसने पूछा।

“शायद यह परिवर्तन आन्तरिक है,” मैंने कहा। “शायद तुम्हारे जीवन का दृष्टिकोण बदलने लगा है। शायद अपने छोटे देवताओं से पीछा छुड़ाने का तुमने निश्चय कर लिया है।”

“इस मार्ग पर बहुत दूर निकल आई हूँ,” कठोर स्वर में उसने कहा। “लौटना कठिन है।”

बस इसी समय मैंने निश्चय किया कि मेरे लिए यह बेहतर होगा

कि भविष्य में इस स्त्री से भेंट न किया कलहूँ। हमारी आँखें मिलीं, और एकाएक उसकी कठोरता गायब हो गई। ऐसा जान पड़ा मानों मेरी दृष्टि उसके हृदय में प्रवेश कर गई और वहाँ के दृश्य देखने लगी। कितनी बातें वहाँ ऐसी थीं जिन्हें मैं समझ नहीं सका। नृत्य उसी समय आरम्भ हो गया और मैंने शान्ति की साँस ली। निस्तब्ध की जो खाड़ी हमारे बीच आ उपस्थित हुई थी उसे पार करने में हमें सहायता मिली। पगों के संचालन की कला में तो सावित्री निपुण नहीं किन्तु लय का उसे आश्चर्यजनक ज्ञान है। उसके नृत्य करते समय मुझे इस ज्ञान से बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ कि इस पाषाण-सी कठोर स्त्री का शरीर इतना कोमल, सुन्दर और मानुषिक है। और अपने उस आनन्द पर मैं लज्जित हुआ।

उस रात को वह न जाने क्यों अशान्त और आन्दोलित थी। कुछ समय तक वह बिना विश्राम किये नाचती रही। फिर एकाएक मुड़कर वह मेज़ की ओर चली। किसी मित्र से बात करने के लिए मैं रुक गया था। जब मैं उसके पास पहुँचा तो उसका चेहरा उतरा हुआ था, और उसका वह हाथ काँप रहा था जिसमें वह अपना सोने का पाउडर-वाकम लिये हुए थी।

“क्या मामला है?” मैंने सहानुभूतिसूचक स्वर में पूछा। “तबीअत खराब हो गई है क्या? शायद नृत्य के श्रम से—”

“नहीं, नृत्य से मुझे बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ,” उसने बीच में टोंककर कहा। “मैं बिलकुल चंगी हूँ।”

फिर भी वह आन्दोलित और परेशान नज़र आती रही। मैंने सोचा कि काफी पी लूँ, और रेस्त्राँ से बिदा होऊँ। मैंने प्याला उठाया। सहसा वह भोंके से घूम पड़ी, और उसकी कुहनी से मेरे हाथ पर धक्का लगा। काफी छलककर मेज़ पर गिर पड़ी। मेज़पोश चौपट हो गया। वह हँसने लगी। फिर उसे हाँफी आ गई। मेज़पोश बदल दिया गया। वह फिर ठीक हो गई। उस समय उसकी दशा उस व्यक्ति की-सी हो गई थी जिसे किसी विकट परिस्थिति का सामना पड़ा हो और वह विजयी हुआ हो!

“अपने इस बेढंगेपन पर मुझे सख्त अफसोस है,” पश्चात्तापपूर्ण स्वर में उसने कहा। “चलिए ज़रा देर तक और नृत्य करें। तब तक ये लोग मेज़ ठीक कर देंगे।”

इस बार पहले की अपेक्षा वह मुझे कुछ भारी लगी। उसके क़दम भी उतनी तेज़ी से नहीं उठ रहे थे।

“वह सुन्दर पाउडर-ब्राक्स तुम्हें किसने दिया था?” मैंने पूछा केवल वात्तिलाप आरम्भ करने के विचार से, किसी वास्तविक कौतूहल से नहीं।

एक क्षण के लिए वही पुरानी ज्योति उसकी आँखों में चमक उठी। उसका उत्तर मुझे विचित्र प्रतीत हुआ।

“शैतान ने! मैं निश्चय कर लिया है कि इसे वापस कर दूंगी।”

६

ईर्ष्या के खेल

सावित्रा

कैसा सुन्दर था वह दिवस जब मुझे निम्नलिखित पत्र मिला था—

“१४, सुरेन्द्रनाथ स्ट्रीट,
कालीनगर

श्रीमती जी,

आपको यह सूचित करते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि आपके चचा और हमारे मुअविकल स्वर्गीय गंगाराम दुबे के वसीयतनामे के अनुसार आपको उनकी जायदाद से तीन हजार रुपये मिलेंगे।

चूँकि स्वर्गीय गंगाराम की जायदाद अधिकतर वार-बांड की शकल में है, इसलिए अगर आप कृपा करके किसी दिन हमारे दफ़्तर में आने का कष्ट करें तो आपके रुपये हम आपको तुरन्त दे सकेंगे। यदि किसी कारण से आप स्वयं आने में असमर्थ हों, तो कृपया अपने आदेश भेजें।

भवदीय,

दास एंड कपूर।”

मैं खुशी से उछल पड़ी। स्वर्गीय चचा की यह भेंट मेरे लिए किसी बहुमूल्य से बहुमूल्य भेंट से कम न थी। इन दिनों एक अँगरेज दर्जन की दूकान पर काम करके मैं किसी तरह गुजर-बसर कर रही थी। सवेरे तड़के ही मैं काम पर पहुँच जाती और काफ़ी रात गये घर लौटती। मुझे भय था शेरसिंह से भी, जिसे मैं कभी प्यार करती थी, और जतीन्द्रनाथ मुकर्जी से भी, जिसने बिना किसी प्रयास के मेरे ऊपर बड़ा विचित्र प्रभाव जमा लिया था। और अब मैं आज़ाद हो गई—कम से कम कुछ समय के लिए। अब मैं कालीनगर से कहीं जाकर गुप्त रूप से रह सकती थी। बहुत सोच-विचार के बाद मैंने तारनपुर की यात्रा करने का निश्चय किया और एक बड़े जहाज़ पर श्रीमती सावित्री के नाम से अव्वल दरजे की एक सीट बुक कराई।

मैंने कुछ आवश्यक कपड़े खरीदे, एक हज़ार का एक नोट वाडिस में सी लिया और सामान लेकर जहाज़ पर सवार हो गई। पहले दो दिन बड़े सुन्दर, बड़े मधुर रहे। उस नये वातावरण में वह सब मिला जिसकी मुझे लालसा थी—नित्य की निरर्थक चिन्ताओं से पीछा छूट गया, नौकरी की पाबंदियों से मुक्ति मिल गई और अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति होने लगी। ज्यों ही जहाज़ नदी से समुद्र में पहुँचा, बादलों के परदे में सूर्य की रश्मियाँ भाँकने लगीं, मेरा हृदय सन्तोष से भर गया और मेरे सारे शरीर में शान्ति की लहरें दौड़ने लगीं।

भोजनालय में कोई विशेष स्थान प्राप्त करने का प्रयास मैंने नहीं किया। इसलिए मुझे एक मामूली कोने में जगह मिली थी जहाँ मेरे साथ भोजन करते थे ऐसे साधारण यात्री, जिनकी दृष्टियाँ केवल यात्रा-सम्बन्धी मोटी-मोटी बातों तक सीमित रहती हैं। लेकिन यही बात मेरे लिए सुविधाजनक भी थी। पूर्ण विश्राम के उस मधुर वातावरण में दिन-प्रतिदिन पूर्ण स्वच्छन्दता से साँस ले रही थी। फल वही हुआ जो स्वाभाविक था। जीवन के प्रति मेरी सोई हुई दिलचस्पी पुनः जागरित होने लगी। मैं जवान थी, शक्तिसम्पन्न थी। सूर्य के सुखद प्रकाश ने, शीतल हवा ने अपना काम किया। एक संध्या को मैंने अपने केश बड़ी सावधानी से सँवारे और बड़े सुन्दर वस्त्र धारण किये। अनेक

पुरुष किसी-न-किसी बहाने से उस रात को मेरे पास आये और मुझसे बातचीत करके आनन्दित हुए। दूसरे दिन जब हमारा जहाज़ टाइफून के बन्दरगाह में पहुँचकर रुका, तब अनेक व्यक्तियों ने मुझसे यह प्रस्ताव किया कि मैं उनके साथ सैर करने के लिए जाऊँ। किन्तु यह प्रस्ताव मुझे जँचा नहीं। मैंने उस छोटे-से दल में सम्मिलित होना अधिक पसन्द किया जिसमें अधिकतर वे लॉग शामिल थे जो मेरे साथ भोजन करते थे।

घंटों हम टाइफून के दर्शनीय स्थानों की सैर करते रहे। बाज़ार में पहुँचकर हम दूकानों पर सजी हुई भाँति-भाँति की वस्तुएँ देखते रहे, फिर हमने अनेक बेकार चीज़ें खरीदीं। यहीं पर कुछ क्षणों के लिए मेरा मन उदास हो उठा। सचित्र पोस्टकार्डों की मुझे कोई आवश्यकता न थी। इस विराट् संसार में एक व्यक्ति भी ऐसा नहीं जिसे मेरी परवाह हो, जो मेरी यात्राओं में दिलचस्पी रखता हो। सचित्र पोस्ट-कार्ड में खरीदती तो किसके पास भेजती?

अन्त में चाय पीने के लिए हमने एक बड़े होटल के लाउंज में प्रवेश किया। पीतल के चमकते-दमकते गुलदानों में नकली फूल खिले थे और मेज़ों पर संगमरमर के तरुते लगे थे। कमरे का सारा फ़र्निचर वेशक्रीमती जान पड़ता था। किन्तु इन चीज़ों में से किसी का कोई विशेष प्रभाव उस समय मेरे ऊपर नहीं पड़ सका। इसका एक विशेष कारण था। मैं आश्चर्य में डूब गई थी उस स्त्री को देखकर जो वहाँ अकेली बैठी हुई थी। वह काफ़ी जवान थी, छोटी किन्तु सुडौल शरीर वाली थी, क्रीमती वस्त्र धारण किये हुए थी और उसकी आँखें काली और बड़ी बड़ी थीं। लेकिन उसकी किसी शारीरिक विशेषता के कारण मेरा ध्यान उसकी ओर इस क़दर आकर्षित नहीं हुआ था। बात यह थी कि उस कमरे के एक कोने में बैठी हुई वह मेरी ओर घृणासूचक भाव से घूर रही थी। मुझे इस बात का पूरा विश्वास था कि मैं उससे अपरिचित थी और मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था। फिर भी यह विलकुल स्पष्ट था कि यहाँ एक ऐसी स्त्री बैठी थी जो मुझसे घृणा करती थी।

हम एक मेज के इर्द-गिर्द बैठ गये। मेरी बगल में एक फ्रांसीसी सज्जन बैठे हुए थे, जो जहाज पर मुझसे दो-एक बार बोले थे। वे व्यवसायी थे और जान पड़ता था कि उनका अधिकांश समय पुराने व्यवसायी मित्रों की खोज में व्यतीत होता था। उन्होंने मुझे बतलाया था कि पहले उनके पास जूते बनाने का एक बड़ा कारखाना था। उनका नाम था मोशिये लेनरमांड।

“क्या आप उस स्त्री से परिचित हैं?” उन्होंने कौतूहलपूर्ण स्वर में पूछा।

मैंने सिर हिलाया।

“उसे मैंने पहले कभी नहीं देखा,” मैंने उत्तर दिया।

“अच्छा!” उन्होंने अविश्वास-सूचक भाव से कहा। “तब जान पड़ता है कि उसे अजनबी पसन्द नहीं। वह आपकी ओर गुस्से की नज़र से देख रही थी, आपने देखा था?”

“मुमकिन है कि धोखे से उसने मुझे कोई और समझ लिया हो,” मैंने कहा।

मोशिये लेनरमांड को मेरा अनुमान सम्भव प्रतीत हुआ।

“बाज़ लोग बड़े क्रोधी होते हैं,” उन्होंने कहा।

मुझे फिर एक धक्का लगा जब एक घंटे के बाद मैं जहाज पर चढ़ने लगी। मैंने देखा कि वह भी सीढ़ियों पर चढ़ रही है एक कुली के साथ, जो उसके दो ट्रंक लिये हुए था। उन ट्रंकों पर अनेक लेवेल चिपके हुए थे। जब हम डेक पर पहुँचे, तो उसने फिर मेरी ओर देखा और मुँह बिचकाया। एक आकस्मिक प्रेरणा के वशीभूत होकर मैं तुरन्त उसके समीप जा पहुँची।

“क्या किसी तरह से मैंने आपको नाराज़ किया है?” मैंने पूछा।

“मैं तो समझती हूँ कि हम एक-दूसरे से अपरिचित हैं?”

वह मेरी ओर एकटक देखती खड़ी रही।

“तुम्हारा नाम क्या सावित्री पाण्डेय नहीं है?” उसने पूछा।

“हाँ, यही है मेरा नाम,” और भी चकित होकर मैंने स्वीकार किया।

“लेकिन आपको मेरा नाम कैसे मालूम हुआ?”

सन्देहसूचक भाव से निस्तब्ध खड़ी हुई वह मेरी ओर देखती रही।

“मैंने तुम्हारा चित्र देखा था,” उसने रुखाई से कहा।

“कहाँ ?”

“पेरिस में। वह चित्र उनके पास था।”

वह मुड़ गई दूसरी ओर, और मैं समझ गई कि वह मुझसे अधिक बातचीत करना नहीं चाहती। उसकी इस शुष्कता से मुझे कुछ शान्ति मिली। लेकिन यह शान्ति कायम नहीं रह सकी। बेचैनी मेरे मन में जमकर बैठ चुकी थी और प्रतिक्षण बढ़ती ही जा रही थी। अपना पहलेवाला ढंग मैंने पुनः ग्रहण किया और अपने सहयात्रियों से दूर रहने की कोशिश करने लगी। लेकिन मोशिये लेनरमांड ने मेरे इस मनोभाव की ओर ध्यान नहीं दिया। वह अपनी कुर्सी डेक के उस कोने में खींच लाये जहाँ मैं बैठी हुई थी।

“वह स्त्री ऐंग्लो इण्डियन है और उसका नाम एलसी एन० डिकसन है,” उन्होंने कहा। “दक्षिण अफ्रीका के किसी स्थान से वह आ रही है और तारनपुर में उतरेगी।”

“उसे तो मैं बिलकुल भूल गई थी,” मैंने असत्य उत्तर दिया।

मोशिये लेनरमांड विचारमग्नता के भाव से अपनी ठुड्डी खुजलाने लगे। मेरे इस विश्वासहीनता के भाव से उन्हें कुछ चोट पहुँची।

“अगर मैं आपके स्थान पर होता,” उन्होंने मलाह दी, “तो उससे दूर ही रहता। जिस ढंग से उसने आपकी ओर देखा था वह निस्सन्देह नीचतापूर्ण था।”

अधिक वार्तालाप करना मैंने अस्वीकार किया और अपने कमरे में जाकर सोने के विचार से उठ खड़ी हुई। अपने कमरे में जाने के लिए जब मैंने संगीतगृह में प्रवेश किया, तब वहाँ छिड़ा हुआ वार्तालाप एका-एक बन्द हो गया। मिसेज़ एलसी एन० डिकसन ने, मेरी ओर शिष्टतापूर्वक घूरकर देखा। मैं समझ गई कि मेरे आने के पहले वे मेरे ही बारे में कुछ कह रही थीं। मुझे क्रोध आगया। मैं सीधे उसके पास पहुँची।

“क्या तारनपुर में आप मेरे पति से भेंट करेंगी ?” मैंने पूछा।

ज्यों ही यह प्रश्न मेरे मुख से निकला मुझ खेद हुआ अपने लिए भी और उसके लिए भी। उसका चेहरा फ़क हो गया। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। मैं दो-तीन क्षणों तक प्रतीक्षा करती खड़ी रही, फिर उस कमरे से निकलकर अपने केबिन की ओर चली गई।

उसी रात को दस बजे के करीब किसी ने मेरे दरवाज़े पर धीरे धीरे थपकियाँ दीं। मैंने तुरन्त अनुमान लगाया कि आगन्तुक कौन है, और मेरा अनुमान सत्य निकला। वह मिसेज़ डिकसन ही थी। उसने सावधानी से दरवाज़ा बन्द कर दिया और अपने मुख पर उँगलियाँ रखकर मुझे भी सावधान रहने का संकेत किया।

“हमें सावधान रहना चाहिए,” उसने धीरे से कहा। “वहाँ पर उनका ज़िक्र करके तुमने बड़ा बुरा काम किया।”

“अपने पति का ज़िक्र?”

उपेक्षासूचक भाव से वह हँस पड़ी।

“तुमसे दस वर्ष पहले ही उन्होंने मुझे अपनी पत्नी बनाया था,” उसने उत्तर दिया। “और हम दोनों से पहले भी उनकी कई पत्नियाँ थीं। नियमित ढंग से उन्होंने किसी से विवाह नहीं किया, क्योंकि वैवाहिक रस्मों के वे प्रबल विरोधी हैं।”

इधर कुछ समय से मुझे भी इस सम्बन्ध में सन्देह होने लगा था। मैं दूसरी ओर देखने लगी ताकि वह मेरे चेहरे पर अंकित घृणा का भाव न देख सके।

“यदि दो स्त्रियाँ एक ही पुरुष को प्यार करती हों,” एलसी ने कहा, “तो उन्हें तमाम अन्य बातें भूल जाना चाहिए उस समय जब वे खतरे में हों। प्रेम तुम्हारे चेहरे पर मुझ दिखाई नहीं देता। तब तुम यहाँ क्या कर रही हो?”

“मैं नहीं समझती कि मैं इस विषय में या किसी अन्य विषय में आपसे बहस क्यों करूँ,” मैंने उत्तर दिया। “लेकिन वाक्या यह है कि मुझे नहीं मालूम था कि वे इस समय तारनपुर में हैं।”

मैंने समझा कि वह मेरे ऊपर आक्रमण कर देगी। अविश्वास की अग्नि उसकी आँखों में प्रज्वलित थी।

“तब इस जहाज पर तुम क्यों मौजूद हो ?” उसने पूछा ।

“मैं केवल सैर के लिए निकली हूँ,” मैंने कहा ।

वह मेरी ओर कुछ झुकी । केविन के उस स्वच्छ प्रकाश में मुझे उसका चेहरा रूखा-फीका और किसी क्रूर दृष्टिगोचर हुआ ।

“सुनो,” उसने कहा, “इस समय शेरसिंह के सामने जीवन या मरण की समस्या उपस्थित है ।

तुमने अवश्य किसी से सुना होगा कि वे तारनपुर में मौजूद हैं । किससे सुनी थी तुमने यह बात ?”

“मैं शपथपूर्वक कहती हूँ कि मुझे यह बात मालूम नहीं थी कि वे तारनपुर में हैं,” मैंने कहा ।

“बेवकूफ औरत !” वह दौत पीसकर बोली । “क्या यह सीधी-सी बात तेरी समझ में नहीं आती कि पुलिस सम्भवतः तेरा पीछा कर रही होगी—तुझमें लाभ उठा रही होगी ?”

“लेकिन आपकी स्थिति भी तो वैसी है जैसी मेरी है ?” मैंने उसे स्मरण कराया ।

“नहीं, नहीं,” उसने उत्सुकतापूर्वक मुझे आश्वासन दिया, “तुम्हारी जैसी स्थिति में मैं नहीं हूँ । मेरा जन्म तारनपुर ही में हुआ था । अनेक बार पहले भी मैं वहाँ जा चुकी हूँ । मैंने ही शेरसिंह को यह मुझाया था कि सुरक्षित अपराधी के छिपने के लिए तारनपुर से बढ़कर दुनिया में कोई स्थान नहीं । जहाँ वे इस समय हैं वहाँ मैंने ही उन्हें पहुँचाया था ।”

एक विचित्र ढंग से हमारा यह वार्तालाप एकाएक रुक गया । जहाज की एक सेविका हाथ में एक नीला लिफाफा लिये हुए अन्दर आई ।

“आपके नाम यह वायरलेस आया है, मिसेज़ दुबे,” जिस नाम से मैंने इस जहाज पर सीट बुक कराई थी उसी नाम से मुझे सम्बोधित करते हुए उसने कहा ।

“मेरे नाम ?” मैंने अविश्वाससूचक भाव से कहा । “किसी से भूल हो गई होगी । कोई यह नहीं जानता कि मैं इस जहाज पर यात्रा कर रही हूँ ।”

“यह मिसेज़ सावित्री दुबे के नाम ही आया है,” स्टीवर्ड्स ने मुझे

आश्वासन दिया । “इस नाम की कोई दूसरी महिला इस जहाज़ पर नहीं हैं ।”

मैंने लिफ़ाफ़ा फाड़ा । एलसी चमकती हुई आँखों से मुझे देखती रही । बड़ी कठिनाई से वह उस समय तक रुकी रही जब तक सेविका बिदा नहीं हो गई ।

“भूठी !” उसने फुफकारा । “अब देख अपनी करतूत ! तूने पुलिसवालों को कालीनगर से तारनपुर तक दौड़ लगाने का मौका दे दिया ।”

वह गालियाँ बकती रही । लेकिन मैंने कुल नहीं मुना । मेरा सारा ध्यान तो उन थोड़े से शब्दों पर लगा हुआ था जो तार के उस फ़ार्म पर अंकित थे—

‘डाम्बे ३१ मार्च जिनेसिस एलसी ।’

सहसा उसने जोर से मेरी कलाई पकड़ ली । फिर मेरे कंधे पर झुककर उसने तार पढ़ा ।

“गुप्त संकेतोवाली पुस्तक ले आओ,” उसने धीरे से कहा । “जल्दी करो ।”

“कौन पुस्तक ?” मैंने पूछा । “क्या कह रही हैं आप ?”

मेरा खयाल है कि अन्त में उसे विश्वास हो गया, क्योंकि उसने मेरी कलाई छोड़ दी ।

“यहीं ठहरी रहो,” मेरे हाथ से तार छीनकर उसने आज्ञा दी और तेज़ी से दरवाज़े की ओर बढ़ी ।

विचारों में डूबी हुई मैं चुपचाप बैठी रही । चन्द मिनट ही में वह वापस आगई । उसके कपोलों में सुर्खी आगई थी । वह तार उसने मेरे हाथ में दे दिया । उस पर लिखे हुए सन्देश के नीचे उसने पेंसिल से उसका मतलब यों लिख दिया था—

‘खतरा ९७ उससे तुरन्त निपटना चाहिए एलसी ।’

इसे मैंने देखा और सिर हिलाया ।

“एक शब्द भी मेरे समझ में नहीं आया,” मैंने स्वीकार किया । “शायद मैं मूर्ख हूँ ।”

“हाँ, तुम मूर्ख हो,” उसने कहा। “ऐसी हालत में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि शेरसिंह ने अपने सांकेतिक भाषा में तुम्हें परिचित नहीं कराया। इसका मतलब यह है कि ९७ नम्बरवाले कमरे में कोई ऐसा व्यक्ति सफ़र कर रहा है जो हमारे लिए ख़तरनाक है और एलसी को—यानी मुझे—उससे निपटना चाहिए। अब समझीं तुम?”

“लेकिन शेरसिंह को यह कैसे मालूम हुआ कि मैं इस जहाज़ पर सवार हूँ और यह सन्देश उन्होंने तुम्हारे पास भेजने के बजाय मेरे पास क्यों भेजा?”

“जो मुसाफ़िर कालीनगर से तारनपुर तक जहाज़ से यात्रा करते हैं उनकी सूची तारनपुर के पुलिस कमिश्नर के पास पहले ही से तारनपुर द्वारा भेज दी जाती है,” उसने उत्तर दिया। “पुलिस-विभाग में शेरसिंह का एक मित्र है। यह सम्भव है कि मेरी निगरानी भी की जा रही हो। वे यह बात अच्छी तरह जानते थे कि मैं तुम्हें खोज निकालूँगी और तुमसे अधिक उपयोगी सिद्ध होऊँगी। अब उस व्यक्ति का पता लगाना चाहिए जो ९७ नम्बरवाले क्रेडिन में सफ़र कर रहा है।”

उसने उस सेवक को आवाज़ दी जो उधर से जा रहा था। दरवाज़ा खोलकर सेवक ने अन्दर भाँका।

“स्टीवर्ड, क्या तुम मुझे उन महाशय का नाम बतला सकते हो जो ९७ नम्बर में सफ़र कर रहे हैं?” उसने पूछा।

“वह कमरा मेरी हद में नहीं है, मैडम,” उसने कहा।

एलसी ने पाँच रुपये का एक नोट उसकी ओर बढ़ाया।

“कृपा करके पता लगा दो,” उसने अनुरोध किया।

दो मिनट के अन्दर ही वह वापस आया।

“वे एक फ़्रांसीसी सज्जन हैं, मैडम,” उसने कहा। “उनका नाम है मोशिये लेनरमांड।”

सेवक यह सूचना दे ही रहा था कि हमें कमरे के बाहर एक सुपरिचित गूँजती हुई आवाज़ सुनाई दी।

“मैंने उस कारख़ाने का मूल्य पाँच लाख लगाया और मामला तय कर दिया। कुछ लोग मुफ़्त में अड़चने डालते हैं, जनाब।”

मोशिये लेनरमांड आगे बढ़ गये। एलसी मेरी ओर खड़ी देख रही थी।

“शुरू ही से मुझे उसके ऊपर सन्देह हो गया था,” उसने धीरे से कहा। “वह फ्रांस का मशहूर जासूस विलियर्स होगा। उसके व्यवसायी होने की बात बिल्कुल भूठी है।”

“अब आप क्या करेगी?” मैंने पूछा।

वह विचित्र ढंग से मुस्कराई।

“उनके आदेश का पालन करूँगी,” उसने धीरे से कहा।

दूसरे दिन सवेरे मोशिये लेनरमांड फिर मेरे पास आये और मुझसे वार्तालाप करने लगे। शुरू ही से वह मेरी ओर विशेष रूप से ध्यान देने लगे थे, लेकिन हमारी बातचीत हमेशा बिल्कुल मामूली ढंग की होती थी। आज भी इस तरह बातचीत आरम्भ हुई, और ज़रा देर में स्त्रियों के जूतों के विषय में बड़ी मनोरंजक बहस छिड़ गई। किन्तु सहसा विषय बदलकर उन्होंने मुझे एक भिन्न ढंग से सम्बोधित किया।

“तो अब आप उस स्त्री से दोस्ती जोड़ रही है जो टाइफून में ऐसी दीख रही थी माना आपका सिर काट लेना चाहती है?” उन्होंने कहा।

“नहीं, दोस्ती तो नहीं जोड़ रही हूँ,” मैंने सतर्कता से उत्तर दिया।

“कल रात को क्या वह आपके कमरे में नहीं थी?” उन्होंने पूछा।

“हाँ, ज़रा देर के लिए वह मेरे कमरे में आ गई थी,” मैंने स्वीकार किया। “लेकिन इसमें हज़ां क्या था?”

अपने जलते हुए सिगार से उठते हुए धुयें की ओर वे क्षण भर विचारमग्नता के भाव से देखते रहे।

“मैं समझता हूँ कि आपमें इतनी सरल बुद्धि है कि नेक सलाह के दो-चार शब्द आप आसानी से समझ सकें और स्वीकार कर सकें,” उन्होंने कहा। “यह है मेरी सलाह। इस मामले से दूर रहिए।”

“किस मामले से?” मैंने पूछा।

उन्होंने अपने कंधे हिलाये।

“उन मगरमच्छों को देखिए,” उन्होंने कहा। “कितने अच्छे हैं! इस समुद्र में ऐसे मगरमच्छ मैंने पहले कभी नहीं देखे थे।”

“दूसरे शब्दों में,” मुस्कराकर मैंने कहा—।

“बात खतम हो गई,” उन्होंने उत्तर दिया। “शायद मैं उतना कह गया जितना मुझे नहीं कहना चाहिए था।”

लेकिन मोशिये लेनरमांड का खयाल गलत था। पिछले कई दिनों से मेरे अन्दर एक अद्भुत परिवर्तन होता जा रहा था। शेरसिंह की संगति का विचार मुझे घृणित प्रतीत होने लगा था। और मेरे मन में यह विचार जड़ पकड़ने लगा था कि एक ईमानदार स्त्री की हैसियत से अपने जीवन का एक नवीन अध्याय आरम्भ करूँ।

इसलिए यद्यपि मुझे यह निश्चित रूप से ज्ञात हो गया था कि मोशिये लेनरमांड एक जासूस हैं, मैंने यह बात एलसी से नहीं कही हालाँकि मुझे यह आश्चर्यजनक बात देखने को मिली कि उन दोनों का साधारण परिचय एकाएक घनिष्ठता में परिवर्तित हो गया। कई घंटों तक वे एक साथ बैठे रहे और एलसी की आँखों का आकर्षण प्रतिक्षण बढ़ता गया। मैं डाक्टर के साथ डेक पर इधर-उधर टहल रही थी और जब हम उन दोनों के निकट से गुज़रे तो उनकी बातचीत के कुछ शब्द भी हमें सुनाई दिये—मोशिये लेनरमांड ने साहसपूर्वक प्रस्ताव किया कि वह उनसे अगले दिन तारनपुर में संध्या के समय एक नियत स्थान पर भेंट करें, और एलसी ने आँखें चमकाकर अपनी स्वीकृति दी। डिनर के बाद वे अपनी काफ़ी लेकर डेक पर आ बैठे। उनके सिर एक-दूसरे के बिल्कुल निकट पहुँच गये और उनकी आवाज़ें धीमी हो गईं। उधर से निकलने-वाले लोग उन्हें देखकर मुस्कराने लगे। यह स्पष्ट हो गया कि एक मनोरंजक प्रणय-व्यापार चल रहा है। डाक्टर महोदय मेरे पास थोड़ी देर के लिए फिर आगये थे और मेरे साथ चहलकदमी कर रहे थे। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ जब मोशिये लेनरमांड ने एकाएक डाक्टर को आवाज़ दी।

“ज़रा सुनिए, डाक्टर साहब।”

हम तुरन्त रुक गये। बड़ी कठिनाई से मोशिये लेनरमांड उठकर खड़े हुए।

“मेरा खयाल है कि मेरी तबीयत खराब हो गई है, डाक्टर साहब। ज़रा मेरे साथ कमरे तक चले चलिए।”

मोशिये लेनरमांड का चेहरा सहसा बिलकुल पीला पड़ गया। लड़-खड़ाकर उन्होंने डाक्टर का हाथ पकड़ लिया। जान पड़ता था कि वे अब गिरे, अब गिरे। हम अब एलसी की ओर मुड़े। उसने सिर हिलाया, और वह हम लोगों की तरह ही चकित और परेशान नज़र आई?

“हमने अभी काफ़ी ख़तम की थी,” उसने कहा। “मोशिये लेनरमांड, जो तेज़ी से बात कर रहे थे, एकाएक चुप हो गये। उन्होंने सिर में किसी तरह के दर्द की शिकायत की और उनकी हालत अजीब हो गई। तब उन्होंने डाक्टर को आवाज़ दी। बस इतना ही मैं जानती हूँ।”

धीरे-धीरे और लोग चले गये। मैं मोशिये लेनरमांड की खाली कुर्सी पर बैठ गई। जब एकान्त हो गया तो एलसी ने मेरी ओर विचित्र ढंग से देखा। उसकी अधखुली आँखों में विजय की चमक थी।

“ठीक हो गया!” उसने धीरे से कहा। “मेरा खयाल है कि अब मोशिये लेनरमांड तारनपुर में मेरा पीछा न पकड़ सकेंगे।”

“क्या तुमने उन्हें ज़हर दे दिया?” मैंने शंकित स्वर में पूछा।

अजीब तरीक़े से मुस्कराकर उसने मेरी ओर देखा।

“कुछ लोग गोली चलाना अधिक पसन्द करते हैं,” उसने कहा।

“मुझे वह तरीक़ा पसन्द है जिसमें बचत की सूरत रहती है।”

उस समय मैं समझ गई कि शेरसिंह ने उसे सारी बातें बतला दी हैं। तब उसके प्रति प्रेम की जो थोड़ी-बहुत अनुभूति मुझे कभी हुई थी घृणा में परिवर्तित हो गई।

तारनपुर के बन्दरगाह में हमने दूसरे दिन प्रातःकाल प्रवेश किया, और धीरे-धीरे डाक की ओर बढ़े। हम सब रेलिंग के सहारे आगे झुके हुए डाक पर उतरने के लिए तैयार खड़े थे, और आवश्यक आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। एकाएक मेरे मन में एक हलकी-सी सनसनी उठी और मेरे सारे शरीर में शीत की लहरें दौड़ने लगीं। मैं काँपने लगी, हालाँकि कड़ी धूप थी। लकड़ी के एक खम्भे के सहारे आगे कुछ झुका हुआ एक व्यक्ति खड़ा था, जिसके शरीर का रंग ताँबे के रंग का-सा था, जिसका चेहरा लम्बा और दुबला था, और जिसके पतले क्षुधित ओठ भेड़िये के ओठों की तरह नीचे झुके हुए थे। उसके वस्त्र मज़दूरों के-से थे—मँली

पगड़ी, मैला पायजामा, मैला कुर्ता । यह वेप-परिवर्त्तन ही नहीं पूरी कायापलट थी, फिर भी मैं पहचान गई शेरसिंह को । और यद्यपि उसने मेरी ओर दोबारा नहीं देखा, मैं समझ गई कि वह मुझे पहचान गया । उस समय मैंने वह किया जो उस परिस्थिति में पूर्णतया मूर्खतापूर्ण कार्य था । मैं उस जगह गई जहाँ एलसी खड़ी थी और उसका हाथ पकड़कर धीरे से दबाया ।

“उधर देखो,” सतर्कतापूर्वक उस मजदूर की ओर संकेत करते हुए मैंने कहा ।

बिना कोई दिलचस्पी प्रदर्शित किये एलसी एक क्षण तक उसकी ओर देखती रही तब सहसा उसके चेहरे का रंग बदल गया । उसके चेहरे का रंग उड़ गया, उसके ओठ खुले रह गये । और उसके आँखों में किसी शीघ्र आनेवाली अशुभ घटना की पूर्व-सूचना का भाव भर गया । उसने मेरी बांह पकड़ ली ।

“खतरा आ पहुँचा है,” उसने धीरे से कहा । “उन्हें मजदूरन भाग आना पड़ा है । अफ़सोस ! अब उस बँगले में हम एक दिन भी न रह सकेंगे ।”

एक क्षण के बाद लोग सीढ़ी की ओर बढ़े । और लोगों के बाद मैं भी जहाज़ से उतरी । एक अफ़सर मेरे ट्रंक पर खड़िया से जाने क्या लिखने लगा । मैं इन्तज़ार करती खड़ी रही । जब वह लिख चुका तो कुली ने ट्रंक उठाकर अपने सिर पर लाद लिया ।

“कहाँ जाइएगा ।” उसने पूछा ।

“होटल एक्सीलेंट,” मैंने उत्तर दिया । “मुझे एक टैक्सी चाहिए ।” टैक्सी पर मैं सवार होने ही जा रही थी कि किसी ने मेरी बांह छुई । मैंने मुड़कर देखा, वह एलसी थी ।

“वे तुमसे मिलना चाहते हैं,” उसने धीरे से कहा । “तुम कहाँ जा रही हो ?”

“होटल एक्सीलेंट,” मैंने उत्तर दिया । मेरा दिल डूब रहा था ।

“मैं सात बजे आऊँगी और तुम्हें उनके पास लिवा ले चलूँगी ।”

“वे मुझसे क्यों मिलना चाहते हैं ।” मैंने पूछा ।

शेरसिंह से कोई फ़िज़ूल के प्रश्न नहीं करता,” उसने मुख बनाकर उत्तर दिया। “अब तक तुम्हें यह बात जान लेनी चाहिए थी।”

मुझे आशंका होने लगी कि विपत्ति की काली घटाये मेरे सिर पर मँडरा रही है और इस सुन्दर यात्रा का अन्त सुखद न हो सकेगा। शेष दिन मैंने बड़ी बेचैनी से काटा। सात बजे एलसी आ पहुँची। उसके साथ एक छोटी-सी कार पर सवार होकर मैं शेरसिंह से मिलने के लिए रवाना हुई। भयानक धक्के और झटके खाते हुए हमने एक बड़े गन्दे मुहल्ले में प्रवेश किया। मुझे मालूम हुआ कि वह तारनपुर का एक बड़ा बदनाम मुहल्ला है जहाँ मैकड़ों छोटे-छोटे गन्दे होटल हैं, और जहाँ निम्न श्रेणी के बदचलन स्त्री-पुरुष बुरी तरह शराब पीते हैं, जुआ खेलते हैं और खुल्लम-खुल्ला रंगरेलियाँ मनाते हैं। मुझे भय की अनुभूति होने लगी।

“हम कहाँ चल रहे हैं?” मैंने पूछा।

“उस जगह जहाँ शेरसिंह बड़े सुरक्षित ढंग से छिपे रह सकते हैं,” एलसी ने उत्तर दिया। “तारनपुर की पुलिस भी उस स्थान पर उनकी खोज करने की हिम्मत मुश्किल से कर सकेगी।”

“यह स्थान हम लोगों के योग्य नहीं है,” गलियों पर दृष्टि जमाये हुए मैंने धीरे से कहा।

व्यंगसूचक भाव से उसने मुख बनाया।

“यह स्पष्ट है कि तुम उनके योग्य नहीं हो,” उसने कहा।

एक लम्बी, अँधेरी गली में पहुँचकर गाड़ी रुकी। उतना घिनौना था यह स्थान कि गाड़ी से उतरने में मुझे पसोपेश हुआ। एलसी ने मुझे धीरे से ढकेलकर नीचे उतारा, और एक मकान के अन्दर खींच ले गई। हमने एक निम्नतम श्रेणी के कमरे में प्रवेश किया। एक मोटी और भद्दी सूरतवाली स्त्री बार के पीछे खड़ी हुई थी। और जब कभी मैं किसी वीभत्स दृश्य की कल्पना करना चाहती हूँ तो उन पुरुषों का स्मरण करती हूँ जो लोहे की गन्दी मंजों के सामने लोहे की गन्दी कुरसियों पर बैठे शराब पी रहे थे और जिन्होंने पहले हमारी ओर क्रोधित दृष्टियों से देखा फिर आँखें मारने लग।

एलसी सीधे उस मोटी स्त्री के पास पहुँची और उसके कान में कुछ कहा। तीन-चार हड़ियोंवाली वह स्त्री सिर हिलाकर, पीले दाँत निकालकर मुस्कराई। फिर उसने सतर्कता से कमरे में इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई यह देखने के लिए कि उसके ग्राहकों में कोई अजनबी तो नहीं है। तब उँगली से इशारा करके उसने हमें कौंटर के पीछे बुलाया। कई सीढ़ियाँ उतरकर और एक पतले अँधेरे गलियारे में होकर हमने एक कमरे में प्रवेश किया जो बड़ा मनहूस और भयावह प्रतीत हो रहा था। एक कोने में विस्तरा लगा था जिस पर शेरसिंह आसीन था। अब भी उसके शरीर पर वही मजदूरों के-से वस्त्र थे और उसके चेहरे पर दुस्साहस का वह विकट भाव था जो भयानक पशुओं के मुखों पर उस समय व्यक्त हो जाता है जब शिकारियों के हमलों से बचने का कोई मार्ग उनके सामने नहीं रह जाता। बीभत्स ढंग से हँसकर जब वह स्त्री चली गई, तो शेरसिंह की आँखों का भाव देखकर मेरा खून सर्द हो गया। मुझे तुरन्त ज्ञात हो गया कि मैं जाल में फँस गई।

“चुड़ैल !” वह दाँत पीसकर बोला। “तू ही अपने उस प्रेमी पुलिस-वाले को यहाँ बुला लाई है !”

“यह भूठी बात है,” मैंने उत्तर दिया। “मैं केवल छुट्टी मनाने के लिए तारनपुर आई हूँ।”

“छुट्टी मनाने के लिए !” शेरसिंह ने कटु स्वर में कहा।

“छुट्टी मनाने के लिए !” एलसी चीख उठी। “मुनो तो इसकी बात !, अभी हम तुम्हें दिखला देंगे कि हम मुखबिरों से किस तरह निपटते हैं।”

जतीन्द्रनाथ मुकजी

दो मास तक स्वदेश में विस्तृत भ्रमण करने के बाद मार्च के दूसरे सप्ताह में जब मैं कालीनगर वापस आया तब मेरे मित्र मिस्टर कौल का तारनपुर से भेजा हुआ एक तार मिला। उसमें उन्होंने मुझसे तारनपुर आने का अनुरोध किया था। दूसरे ही दिन मैं एक शीघ्रगामी जहाज से तारनपुर के लिए रवाना हो गया। और एक सप्ताह के अन्दर ही मैं, कौल और तारनपुर के पुलिस कमिश्नर मि० ब्राउन, तारनपुर

के एक दूरस्थ भाग में स्थित एक बँगले की जाँच कर रहे थे, जहाँ एक संगीन जुर्म किया गया था। अपराधों के बहुतायत के कारण यह मुहल्ला इधर कुछ दिनों से बड़ा बदनाम हो गया है।

कौल से वात्तलाप करने का अवसर मुझे अभी तक नहीं मिला था, और मैं यह नहीं जानता था कि इस मामले में जिसमें कोई विशेषता दृष्टि-गोचर नहीं होती थी मेरी सहायता की जरूरत क्यों महसूस की गई। इस बँगले के निवासी, जो एक वृद्ध सज्जन थे, चौबीस घंटे पूर्व बेहोश पाये गये थे। उनके सिर में गहरे जख्म लगे थे और उनकी हालत अबतर थी। वे पड़ोस के एक अस्पताल में पड़े हुए थे और उनके बचने की कोई आशा नहीं थी। इतनी बातें बिलकुल साफ़ थीं। उनका बहुत-सा धन, जिसके बारे में पड़ोस के एक काफ़े में उन्होंने डींगे मारी थीं, लुट गया था और इसमें कोई सन्देह नहीं था कि यह चोरी उन्होंने बदमाशों की करतूत थी जिनकी शरारतों के कारण इस कुर्ब-जवार में आतंक छा गया था। हमने इस बात की जाँच की, कि चोर इस मकान के अन्दर किस तरह घुसे और स्थानीय पुलिसवालों के बयान सुने। इसके बाद कार पर सवार होकर हम चुपचाप पुलिस के सदर दफ़्तर की ओर रवाना हुए। वहाँ पहुँचकर मिस्टर ब्राउन के प्राइवेट कमरे में कौल ने उस रहस्य पर प्रकाश डाला जो मुझे हैरान किये हुए था।

“आप जानते हैं, मिस्टर मुकजी,” उन्होंने कहा, “कि मैंने आपको यहाँ क्यों बुलाया है?”

“शेरसिंह?”

कौल ने सिर हिलाकर सहमति प्रकट की। उनकी भूरी आँखों की चमक से मुझे ज्ञात हुआ कि उन्हें विश्वास हो गया है कि अन्त आखिर आ ही पहुँचा।

“पहले उसका पता कैरोबीन में लगा, और बाद में मालूम हुआ कि वह यहाँ है,” उन्होंने कहा। “और मुझे यह सूचना मिलने के बाद इस ज़िले में केवल अपराधों की संख्या ही नहीं बढ़ी, इस बात के लक्षण भी दृष्टिगोचर होने लगे कि उनके पीछे किसी उस्ताद अपराधी का

हाथ है। आज ही मिस्टर ब्राउन ने मुझे बतलाया था कि पिछले दो मास के अन्दर पचीस लाख रुपये की चोरियाँ यहाँ हुईं।”

“और संबद्ध करनेवाली कड़ी ?” मैंने पूछा।

“नौ दिन हुए,” मेरी ओर गौर से देखते हुए कौल ने कहा, “सावित्री दुबे कालीनगर के बन्दरगाह से तारनपुर की ओर रवाना हुईं। टाइथुन में उसी जहाज पर वह स्त्री भी सवार हो गई जो पेरिस में शेरसिंह के साथ थी और जो अपना नाम एल सी एन० डिकसन बतलाती है। सन्देह से बचने के लिए वह बड़े टेढ़े मेढ़े रास्ते से टाइफूम पहुँची थी। वे दोनों स्त्रियाँ तारनपुर आ रही हैं—आज रात को वे यहाँ पहुँच जायेंगी। बड़ी सावधानी से उनकी निगरानी की जायेगी इसके अलावा मिस्टर ब्राउन आपको एक ऐसा कागज दिखलायेगे जो दिलचस्पी से खाली न होगा।”

मिस्टर ब्राउन ने एक फाइल खोलकर मेरे सामने एक कागज रख दिया। उस पर निम्नलिखित पंक्तियाँ दर्ज थीं—

जान चैपमैन, एंग्लो-इंडियन, अविवाहित, कद पाँच फीट छः इंच, सिर के बाल सफ़ेद, डाढ़ी अधपकी, अन्य शारीरिक विशेषतायें अन्यत्र दर्ज हैं, पता रोज़ विला, पैनोरा। शतरंज का अच्छा खेलाड़ी है, खूब पत्र-व्यवहार करता है, अनेक समाचार-पत्र मँगाता है, रोज़ सैर करने जाता है, उसके पास एक छोटी मोटर कार है।

“और ?” मैंने पूछा।

“और यह कि,” मिस्टर ब्राउन ने कहा, “उस व्यक्ति ने कल पैनोरा के एक सार्वजनिक जुएखाने में सौ रुपये का नोट भुनाया था। वह नोट उन नोटों में से एक था जो उस स्थान से चोरी गये थे जहाँ से हम अभी आ रहे हैं।”

मैंने अपनी घड़ी पर दृष्टि डाली।

“पैनोरा यहाँ से कितनी दूर है ?” मैंने पूछा।

“छः मील के फ़ासले पर,” पुलिस कमिश्नर ने उत्तर दिया। “अब तक हम लोग वहाँ पहुँच गये होते लेकिन मित्रवर मिस्टर कौल ने आग्रह किया कि आपकी प्रतीक्षा कर ली जाय।”

हम तुरन्त रवाना हो गये। रास्ते में मैंने कौल से एक नया प्रश्न किया।

“आपने कहा था कि सावित्री दुबे उस जहाज़ पर सवार है जो आज रात को यहाँ पहुँच रहा है। यह तो उसका उस समय का नाम है जब वह अविवाहित थी?”

कौल ने सिर हिलाकर सहमति प्रकट की।

“किसी न किसी कारण से उसने अपना वह नाम पुनः ग्रहण कर लिया है। सम्भव है कि उसे शेरसिंह के सम्बन्ध की उस बात का पता लग गया हो जिसका मुझे कुछ समय से सन्देह था।”

मैंने अपनी आवाज़ काबू में रखने की कोशिश की। मैं यह नहीं चाहता था कि कौल को भी यह मालूम हो कि वह बात मेरे लिए कितनी महत्वपूर्ण है।

“आपका मतलब क्या है?” मैंने पूछा।

“मुझे ज्ञात हुआ,” उन्होंने उत्तर दिया, “कि शेरसिंह ने एलसी डिकसन को कई वर्ष पूर्व अपनी पत्नी बना लिया था। हो सकता है कि सावित्री दुबे को यह बात मालूम हो गई हो और उसकी सचाई की जाँच करने के लिए वह यहाँ आ रही हो। यह तो बिल्कुल निश्चित है कि इधर कई साल से उसका शेरसिंह से ज़रा भी सम्पर्क नहीं रहा। एक बात और है। शेरसिंह ने इन दोनों स्त्रियों में से किसी से नियमित रूप से विवाह नहीं किया। वह समस्त वैवाहिक रस्मों का विरोधी है।”

मिस्टर ब्राउन विचारमग्नता के भाव से खिड़की के बाहर देखते रहे।

“यह एक विचित्र बात है,” मिस्टर ब्राउन ने कहा, “कि आधुनिक युग के अनेक महान् अपराधियों का अन्त स्त्रियों की पारस्परिक ईर्ष्या के कारण हुआ। इस मामले में भी दो स्त्रियाँ तारनपुर आ रही हैं उस व्यक्ति से भेंट करने के लिए जिसका नाम शेरसिंह है। एलसी डिकसन का पीछा पेरिस से फ़्रांस का एक मशहूर जासूस कर रहा है जो एक मुद्दत से शेरसिंह की तलाश कर रहा है, और सावित्री दुबे की इस यात्रा से हमारे मित्र मिस्टर कौल का सन्देह विश्वास में परिवर्तित हो गया। मेरे पूर्वज कहा करते थे, ‘पुरुष को मनमानी कर लेने दो। स्त्री का पीछा करो।’”

गोधूलि हो गई थी जब हम पैनोरा पहुँचे। रोज बिला नामक वह बैंगला उस मुहल्ले के अन्तिम छोर पर एक एकान्त स्थान पर खाड़ी के तट पर कुछ चट्टानों के बीच बना हुआ था। कार सड़क पर छोड़कर, एक पगडंडी पर चलकर हम सदर दरवाजे के सामने पहुँचे। घंटी बजाने पर एक मोटी स्त्री बाहर निकली। जब यह पूछा गया कि मिस्टर चैपमैन घर पर हैं या नहीं तब उसने खेदमूचक भाव से सिर हिलाया।

“वह अपनी कार पर सैर करने के लिए गये हैं,” उसने कहा। “मुमकिन है वे आते हों, और यह भी मुमकिन है कि वे रात भर वापस न आयें। मुझे बड़ा अफ़सोस है। अगर आप लोग उनसे कुछ कहलाना चाहते हों, तो मुझे बतला दें। मैं कह दूँगी।”

“हम अन्दर बैठकर उनका इन्तज़ार करेंगे,” मिस्टर ब्राउन ने कहा। स्त्री दरवाजे से नहीं हटी।

“यह असम्भव है, महाशय,” उसने कहा। “मेरे मालिक लोगों से बहुत कम मिलते-जुलते हैं, और आपका यहाँ रुकना वे पसंद नहीं करेंगे।”

मिस्टर ब्राउन ने उसका कंधा छुआ। बड़े विचित्र भाव से वे उसकी आँखों में देख रहे थे।

“मैडम,” उन्होंने कहा, “मैं तारनपुर का पुलिस कमिश्नर हूँ, और मैं जहाँ चाहता हूँ जाता हूँ। इसके अलावा मुझे जान पड़ता है कि मैं तुम्हारी सूरत से परिचित भी हूँ।”

वह भारीभर्कम स्त्री तुरन्त पीछे हट गई। एक बड़ा दूषित भाव उसकी आँखों में व्यक्त हो गया।

“पुलिस कमिश्नर!” उसने धीरे से कहा। “लेकिन किसी ने यहाँ कौन-सी बुराई की है।”

हमने बैठक और भोजनालय की तलाशी ली, लेकिन हमें वहाँ कोई ऐसी चीज़ नहीं मिली जिससे जाहिर होता कि वह किसी ऐसे व्यक्ति की है जिसने रबर में अपार धन कमाया हो। कोई आपत्तिजनक वस्तु भी वहाँ दिखाई नहीं दी। लेकिन जब हम शयनागार में पहुँचे तब वहाँ हमें एक ऐसी चीज़ मिली जो निस्सन्देह महत्त्वपूर्ण थी। एक आलमारी के पीछे एक सफ़ेद चद्दर में लपेटी हुई शतरंज की एक बिसात छिपाकर

रक्खी हुई थी। यह बिसात वही थी और इसमें बन्द मोहरे वे ही थे जो उन अवसरों पर इस्तेमाल किये गये थे जब काशीनाथ पाण्डेय ने देवीगंज में मेरे साथ कई बार शतरंज खेला था। मेरे हृदय में प्रसन्नता की सनसनी दौड़ गई। यही थे वे मोहरे जिन्होंने मेरे और शेरसिंह के कौशल की परीक्षा ली थी।

“तलाशी खत्म हो गई,” मैंने कहा।

“नहीं, अभी खत्म नहीं हुई,” कौल ने कहा, अभियुक्त का पता लगाना तो बाक़ी ही है।”

वहाँ हम कुल आध घंटे तक रहे, और इस बीच मैं हमने सारे घर की अच्छी तरह खोज की। मोटरखाना खाली पड़ा था। एक ओर पड़े हुए पेट्रोल के खाली टिनों की ओर कौल ने इशारा किया।

“लम्बी सफ़र की तैयारी की गई थी,” उन्होंने कहा। “मेरा तो खयाल है कि आज उसकी मूर्त दिखाई नहीं देगी।”

हमने बिदा होने का इरादा प्रकट किया। गृहरक्षिका अब हमें रोकने का भरसक प्रयत्न करने लगी, क्योंकि शायद उसे किसी तरह विश्वास हो गया कि अब उसका मालिक आता ही होगा। लेकिन मिस्टर ब्राउन ने उसकी बात काट दी।

“मैडम,” मिस्टर ब्राउन ने कहा, “अब आप कृपा करके अपने को निगरानी में समझिए। मैं यहाँ एक सिपाही को छोड़ जाऊँगा जो आप पर नज़र रखेगा। कल आपका बयान लिया जायगा। इस बीच मैं आप किसी को पत्र लिखने या किसी से बात करने की कोशिश न कीजिएगा।”

उस सेविका की शिष्टता एकाएक लोप हो गई। वह गालियों और शिकायतों की बौछारे मारने लगी। मिस्टर ब्राउन उसकी बातें ध्यान से सुनते रहे। तब वह उस सिपाही की ओर मुड़े जो हमारी कार पर शोफ़र की बग़ल में बैठकर आया था और जिसे वह यहाँ छोड़ रहे थे।

“इस औरत पर बराबर नज़र रखना,” उन्होंने आज्ञा दी। “यह कहीं जाने-आने न पावे। यह बदमाशों के एक मशहूर अड्डे की है। और मुझे मन्वेह है कि इसका स्वामी वहीं जा छिपा है।”

सिपाही ने सिर हिलाकर सलाम किया और उस स्त्री के कन्धे पर

हाथ गूँथे। सहसा वह हँसने लगी और उसने सड़क की ओर इशारा किया।

“देखिए, वे चले आ रहे हैं,” उसने कहा। “आपने उनके सारे घर में गड़बड़ी मचा दी। देखें, अब आप उनसे क्या कहते हैं? पुलिस कमिश्नर! खूब रहे! वाह!”

हम सदर दरवाजे के समीप खड़े थे। मैं हैरान था। एक वृद्ध महाशय, जो बड़े मज्जन प्रतीत हो रहे थे, एक छोटी कार में आये। हम लोगों को देखकर उन्होंने शिष्टतापूर्वक अपनी कीमती फेल्ट हैट उठाई।

“नमस्कार, सज्जनो!” उन्होंने कहा। “आप लोग मुझसे मिलने आये हैं?”

“आप मिस्टर चैपमैन हैं?” मिस्टर ब्राउन ने पूछा।

“बेशक, मेरा नाम यही है,” तुरन्त उत्तर मिला।

“और यह आप ही का घर है?”

“मैंने इसे किराये पर लिया है, आपकी इनायत से, सज्जनो।”

वे कार से उतरे और हमारी ओर प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखने लगे। यह मैं और लोगो से अधिक जानता था कि वेष बदलने में शेरसिंह कैसा दक्ष है, लेकिन मैं तुरन्त समझ गया कि यह व्यक्ति शेरसिंह नहीं है। कौल की आँखें मेरी आँखों से मिलीं। वह मेरी राय से सहमत था।

“मेरा नाम ब्राउन है,” कमिश्नर ने कहा। “मे तारनपुर का पुलिस कमिश्नर हूँ। कृपा करके मेरे चन्द प्रश्नों के उत्तर दीजिए।”

“पुलिस कमिश्नर!” नवागन्तुक ने कहा, और यदि उसका आश्चर्य बनावटी था तो बड़ी कला थी उस बनावट में।

“बेशक! यहाँ आप कितने दिनों से रह रहे हैं?”

“दस महीने से, महाशय।”

“कल एक जुएखाने में आपने सौ का एक नोट भुनाया था?”

“हाँ, भुनाया था मैंने।”

“उसे आपने कहाँ पाया था?”

“अपने डेस्क में, महाशय। उसमें वह हफ्तों से पड़ा था।”

अब मैंने अपनी स्वतंत्र इच्छा से एक प्रश्न किया।

“यही एक कार आपके पास है?”

“जी हाँ,” तुरन्त उत्तर मिला। “मेरे गैरेज में एक से अधिक कारें रक्खी ही नहीं जा सकतीं।”

मैं अन्दर गया, और शतरंज की विसात उठा लाया।

“यह शायद आप ही की है?” मैंने पूछा।

उसने इनकारसूचक भाव से सिर हिलाया।

“मुझे पहले जो सज्जन यहाँ रहते थे वे इसे छोड़ गये थे। शतरंज खेलना मुझे नहीं आता।”

मैं गैरेज में गया और एक टायर निकाल लाया।

“अगर आपके पास कोई दूसरी कार नहीं है,” मैंने पूछा, “तो आपके गैरेज में रक्खे हुए सारे टायर इतने बड़े क्यों हैं?”

वह पगोपेश में पड़ गया, और सिर झुकाकर ज़मीन की ओर ताकने लगा। वह समझ गया कि खेल का अन्त आ पहुँचा। सिपाही एक छोटे, मोटे आदमी के साथ वापस आ रहा था।

“समीप के काफ़े के ये मालिक है,” सिपाही ने कहा। “ये अपने पड़ोसी मिस्टर चैपमैन को अच्छी तरह जानते हैं।”

“क्या मिस्टर चैपमैन यही हैं?” मिस्टर ब्राउन ने पूछा।

“नहीं, जनाब, नहीं,” सरायवाले ने जोर देकर उत्तर दिया। “चैपमैन को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। ये महाशय अजनबी हैं। मिस्टर चैपमैन आज सवेरे अपनी कार पर सवार होकर कैरोवीन चले गये, ऐसा मैंने सुना था।”

मिस्टर ब्राउन नक़ली चैपमैन की ओर मुड़े।

“अब कहिए?”

उस व्यक्ति ने अपने कंधे हिलाये।

“जिस काम के लिए मुझे पुरस्कार मिला था वह मैंने कर दिया,”

उसने खेदपूर्ण स्वर में कहा। “अब आप मेरे साथ जो कार्रवाई करना चाहें करें, आपको अख्तियार है।”

“इस घर को बन्द कर दो,” मिस्टर ब्राउन ने सिपाही को आदेश दिया, “और इस पुरुष और उस स्त्री को सदर दफ़्तर ले चलो। अब यहाँ

आगे कुछ नहीं होगा।” फिर हमारी ओर मुड़कर उन्होंने कहा, “चलिए, अब वापस चलें और जहाज़ के आने का इन्तज़ार करें। दोनों नहीं तो एक स्त्री जरूर हमें उस व्यक्ति के पास पहुँचा देगी। जिसकी हम तलाश कर रहे हैं।”

उस रात को मैंने और कौल ने एक बहुत बड़े रेस्त्राँ के एक कोने में भोजन किया। मिस्टर ब्राउन ने वादा किया था कि वे हमारे ही साथ काफ़ी पियेंगे। लेकिन हमें बड़ा आश्चर्य हुआ जब हमने काफ़ी पीने के समय से बहुत पहले ही उन्हें तेज़ी से अपनी ओर आते देखा। उनके पीछे पीछे एक लम्बे-तड़ंगे, डाढ़ीवाले सज्जन चले आ रहे थे जो देखने में सैनिक से लगते थे। मिस्टर ब्राउन बड़े गम्भीर मनुष्य थे, किन्तु इस समय यह स्पष्ट था कि वे कोई खास खबर लाये हैं।

“सज्जनो,” उन्होंने हमारे समीप बैठकर कहा, “एक बड़ी संगीन बात हो गई। वह नवयुवक, जो पाँच वर्ष से मेरे सेक्रेटरी के पद पर काम कर रहा था, आज भाग गया। यह बात साबित हो गई कि वह शुरू ही से अपराधियों के एक बहुत बड़े दल से मिला हुआ था। निस्सन्देह उसी ने उस व्यक्ति को सावधान कर दिया जिसे आप शेरसिंह कहते हैं। इससे भी बुरी बात यह हुई कि मुझे उसने यह झूठी सूचना दी थी कि दिल्ली नामक जहाज़ आज रात से पहले तारनपुर न पहुँचेगा। वह जहाज़ आज दोपहर को ही यहाँ पहुँच गया और तीसरे पहर उसके सारे मुसाफ़िर उतर गये। उन दोनों स्त्रियों की निगरानी करने की जो योजना मैंने तैयार की थी वह निष्फल गई।”

अज्ञात आशंकायें सहसा मेरे हृदय में उठ खड़ी हुईं। खतरे में पड़ी हुई सावित्री का चित्र मेरी आँखों के सामने आ गया। मुझे यह विश्वास नहीं था कि शेरसिंह से भेंट करने के लिए वह तारनपुर आई है। मैं उठने लगा, लेकिन मिस्टर ब्राउन ने मुझे बैठे रहने का इशारा किया।

“सुनिए,” उन्होंने कहा। “हमें अभी तक इतना मालूम हुआ है। सावित्री पहले होटल एक्सीलेंट गई। सात बजे संध्या के समय एलसी उससे भेंट करने आई और वे दोनों एक साथ एक कार पर होटल से बाहर गईं। सौभाग्यवश फ़्रांसीसी जासूस मोशिये विलियंस ने उनका

पीछा किया। एलसी का पीछा करते हुए वे तारनपुर आये हैं, और उनका कहना है कि कल रात को उसने उनकी जान लेने की कोशिश की थी। वह बड़ी बेरहम है, लेकिन बड़ी साहसी भी। विलियर्स का कहना है कि उन दोनों स्त्रियों में गहरा मनमुटाव है। उन्हें विश्वास है कि सावित्री दुबे, अपनी इच्छा के विरुद्ध, शेरसिंह से मिलने के लिए कहीं ले जाई गई है।”

“उन्होंने उन दोनों का पीछा कहाँ तक किया था?” मैंने पूछा।
“इस समय वे कहाँ हैं?”

“तारनपुर की सबसे खराब बस्ती तक उन्होंने उनका पीछा किया,” ब्राउन ने उत्तर दिया। “लेकिन जब उन्हें उन दोनों के निर्दिष्ट स्थान का पता लग गया, तो सहायता प्राप्त करने के लिए वे बुद्धिमत्तापूर्वक लौट आये। वे इस नगर की उस बस्ती में हैं जिसकी सफ़ाई में अभी तक नहीं कर सका। यह महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित करने का इरादा हमने अनेक बार किया, लेकिन प्रयत्न करते करते रह गये। आज रात को वह प्रयत्न जरूर किया जायगा।”

“चलिए चलें!” मैंने उत्सुकतापूर्वक कहा। हम दरवाजे की ओर बढ़े।

“मुझे बड़ा खेद है, सज्जनो,” ब्राउन ने कहा, “कि इस लड़ाई में मैं आप लोगों के साथ नहीं चल सकूँगा। अगर मैं उस बस्ती में पहुँचूँगा, तो आप लोगों की जानें खतरे में पड़ जायँगी और मेरी जान तो किसी तरह न बचेगी। मिस्टर जेम्स पैट्रिक, जो आपके सामने मौजूद हैं, मेरे बजाय इस दल का नेतृत्व करेंगे। विलियर्स बाहर खड़ी हुई एक कार में मौजूद हैं। सिपाहियों का एक काफ़ी बड़ा दल गुप्त रूप से उस बस्ती में पहुँचकर फैल गया है। बस अब केवल यही बात बाकी है कि मैं आप लोगों की सफलता के लिए मंगल-कामना प्रकट करूँ।”

कार पर सवार होकर नगर की अनेक मुख्य सड़कों पर होते हुए, हम उस भद्दी और गन्दी बस्ती में पहुँचे जहाँ खिड़कियों के सामने बंठे हुए स्त्री-पुरुष अत्यन्त घृणित प्रतीत होते थे। यहाँ की स्त्रियों के ओठों पर हँसी नहीं थी। उनके क्षुधित, मुझिये हुए, रंगे हुए चेहरों पर केवल एक

ही भाव दृष्टिगोचर होता था, और वह था—लोभ का भाव। अशान्त दृष्टियाँ हमारी कार पर जम जातीं, क्योंकि उसे देखकर धन प्राप्त करने की आशा पनप उठती।

“कानून के प्रति सम्मान की भावना तो यहाँ कहीं दिखाई नहीं देती,” मैंने कहा।

मिस्टर पैट्रिक ने कंधे हिलाये।

“हर बड़े बन्दरगाह में,” उन्होंने कहा, सारी दुनिया के आवारे हमेशा जमा रहते हैं। यह स्थान उनका सुरक्षित गढ़ है। जब कभी मजबूर होकर हम यहाँ आते हैं, तो सैकड़ों की तादाद में आते हैं।”

मैंने उनका मतलब तब समझा जब हम चन्द्र मिनट के बाद एक स्थान पर गाड़ी से उतरे। पतली, लम्बी, धुंधली गलियों का एक अजीब जाल-सा चारों ओर फैला हुआ था। और उन भरी हुई भीड़ में घुसते हुए हम आगे बढ़ रहे थे। हर मोड़ और कोने पर कोई-न-कोई धुमकड़-सा लगनेवाला व्यक्ति हमारे पास आता, और पैट्रिक के कान में कुछ कह जाता। आखिर जब हम एक अँधेरी गली के अन्तिम छोर पर पहुँचे, तब मिस्टर पैट्रिक हमारी ओर मुड़े।

“मेरे पीछे पीछ चले आइए,” उन्होंने कहा, “और होशियार रहिए। आपका एक घूँसा इन चूहों को बिलों की ओर भगा देने के लिए काफी होगा—लेकिन बराबर पीछे देखते रहिए। सामने से ये लोग आपका मुक्ताबला नहीं कर सकते, लेकिन पीछे से बार करने में ये निपुण हैं।”

हम चन्द्र छोटी छोटी सीढ़ियों पर उतरे, एक तंग गलियारे में गुजरे, और एक बड़े रद्दी और गंदे काफ़े में दाखिल हुए। दस-बारह आदमी शराब पी रहे थे, तीन-चार सो रहे थे या वदमस्त थे और एक मुँह ढके हुए गंदे क़र्श पर पड़ा था। एक बड़ी मोटी स्त्री कौंटर पर कुहनियाँ टेके खड़ी थी और गंदे वस्त्र उसके भट्टे शरीर से खिसके पड़ रहे थे। वह मूँछोंवाली थी, और उसकी काली आँखों में क्रूरता छलक रही थी। उसने घूर कर हमारी ओर देखा।

“पुलिस के नाम पर, मैडम,” पैट्रिक ने कहा।

“हाजिर हूँ आपकी सेवा के लिए,” उसने उत्तर दिया।

“आपके यहाँ आनेवाले गामूली अपराधियों की खोज में हम नहीं आये हैं,” पैट्रिक ने कहा। “एक ओर हट जाइए कृपा करके।”

स्त्री का चेहरा भयानक हो गया, लेकिन वह चुपचाप हट गई।

“यहाँ कुछ नहीं है,” वह मुनमुनाई। “एक शख्स शायद आया था, लेकिन वह चला गया।”

कौंटर के पीछे पहुँचकर हमने एक अँधेरे और बदबूदार घर में प्रवेश किया। चार-पाँच आदमी और साये की तरह आकर हममें मिल गये। हम सबके पास टार्च थे। उन कमरों में से कुछ सोने के काम में आते थे, कुछ गंदे कामों के लिए। इस समय सब खाली थे। एक जगह पत्थर की सीढ़ियों पर उतरते समय हम रुक गये। तीन व्यक्ति दीवारों में कुछ टटोलने लगे। तब एक गुप्त दरवाजा धीरे धीरे खुल गया, और नीचे एक गहरा, अँधेरा खड्ड दिखाई देने लगा। एक व्यक्ति अब आगे आ गया, और हमारा मार्ग-प्रदर्शक बन गया। उसने हाथ फैलाया, और एक लम्बी, पतली सीढ़ी नीचे गिराई। सीढ़ी जब नीचे टिक गई, तो हम एक-एक करके एक अँधेरे तहखाने में उतरे। सामने एक बन्द दरवाजा था जिसके सोंकों से रोशनी छनकर बाहर निकल रही थी, और उस कमरे से आ रही थी—किसी स्त्री के रोने की आवाज़। उस आवाज़ ने एक क्षण के लिए मुझे पागल बना दिया। खुरदुरे फ़र्श की ठोकर खाकर मैं आगे बढ़ा, लेकिन पैट्रिक ने मेरी बाँह पकड़ ली।

“सतर्कता से काम लीजिए,” उन्होंने धीरे से कहा। “अगर वह व्यक्ति अन्दर है और उसने आपको देख लिया, तो वह जरूर गोली चलायेगा। अच्छा यह होगा कि और लोग उसे घेर लें। हमने एक योजना बना ली है।”

मैं कठिनाई से उनकी बातें सुन सका, लेकिन दम साधे हुए चुपचाप खड़ा रहा। कोई अन्दर पहुँचने की तरकीब निकालने की कोशिश करने लगा। हम वहाँ सात आदमी थे, और उस भयंकर अपराधी को पकड़ने के लिए उतावले हो रहे थे, लेकिन पत्थर की दीवारें कई क्षण तक हमारा उपहास करती रही। विलियम दरवाजे पर अपनी उँगलियाँ दौड़ा रहे थे, लेकिन उन्हें कोई खंजीर या हैंडिल नहीं मिल रहा था। तब सहसा मैंने

शेरसिंह की आवाज़ सुनी। सदैव की भाँति वह आवाज़ शान्ति और नपी तुली थी, यद्यपि वह भली भाँति जानता रहा होगा कि वह बड़े खतरे में है।

“आखिरी बार पूछता हूँ, सावित्री,” उसने कहा। “सच्ची बात बतला दो। वे रुपये क्या हुए जो तुम्हें दिये गये थे और जो जवाहिरात की कीमत की तौर पर मिले थे ? और तुम तारनपुर क्यों आई हो ?”

कई क्षणों तक खामोशी रही। बड़ी कमज़ोर हो गई थी सावित्री की आवाज़।

“किसी ने वे रुपये मुझे नहीं दिये,” उसने उत्तर दिया। “जब से मैं तुमसे अलग हुई मैं खुद अपनी रोज़ी कमाती रही हूँ।”

ज़ोर की हँसी हुई मैं समझ गया कि दूसरी स्त्री भी अन्दर मौजूद है।

“भूठी !” कठोर स्वर में एलसी बोली। “बतला हमें कि तू तारनपुर क्यों आई, और कौल यहाँ क्यों आया ? और वह तेरा प्रेमी जतीन्द्रनाथ मुकर्जी, जो सैर सपाटे में लगा था, यहाँ कैसे आ पहुँचा ?”

“इन बातों के बारे में मैं कुछ नहीं जानती,” सावित्री ने कमज़ोर स्वर में उत्तर दिया। “मेरा चचा गंगाराम दुबे, ने मेरे लिए तीन हजार रुपये छोड़े थे। केवल छुट्टी मनाने के विचार से मैं तारनपुर आई थी।”

उपहाससूचक भाव से एलसी फिर हँसी। इसके बाद घंटी बजने की हलकी आवाज़ आई। एक क्षण खामोशी रही। फिर पैरों के चलने और किसी दरवाज़े के खुलने की आवाज़ें आईं। शेरसिंह जब बोला तो ऐसा जान पड़ा मानों भय उसके मन में समा गया हो।

“तुम्हें मैं काफ़ी मोक्का दे चुका, सावित्री” उसने कहा। “अब मैं तुम्हें एलसी की मर्जी पर छोड़ता हूँ।”

सावित्री का कर्ण स्वर कर्णतम हो गया।

“ऐसा मत करो, ऐसा मत करो,” वह गिड़गिड़ाने लगी। “मुझे बड़ा डर लग रहा है। दया करो, दया करो !”

बस मैं बावला हो गया ? अपनी सम्पूर्ण शक्ति से मैंने दरवाज़े पर ज़ोर लगाया। चरचराकर दरवाज़ा खुल गया, और हम सब एक ढेर

में अन्दर गिर पड़े। उस समय मैंने जो कुछ देखा वह कभी भूल नहीं सकता। सावित्री के हाथ-पैर बँधे हुए थे और वह भय से अधमरी होकर फर्श पर पड़ी थी। और एलसी डिकसन क्रोध की मूर्ति बनी हुई उसके ऊपर झुकी खड़ी थी। वेष बदले हुए शेरसिंह एक गुप्त दरवाजे में घुस रहा था। मेरा हाथ उठा, और उसका भी। हम दोनों की पिस्तौलें एक साथ चलीं, और इसके बाद ही गुप्त दरवाजे के गिरने की तेज आवाज़ हुई। मेरे कंधे में तेज दर्द हुआ, और शायद एक क्षण के लिए मैं पागल हो गया। तेजी से आती हुई बेहोशी को दूर रखने की कोशिश करता हुआ, मैं सावित्री के बंधन काट रहा था, और मूर्खतापूर्वक उससे जाने क्या क्या कह रहा था। उस समय की जो आखिरी बात याद है वह थी एलसी डिकसन की हँसी—

छः सप्ताह के बाद अस्पताल में सबसे पहले मिस्टर ब्राउन मुझसे मिलने आये।

“मिस्टर मुर्कजी,” ब्राउन ने कहा, “उस दिन शेरसिंह का भाग निकलना बड़ी खेदजनक घटना थी।”

“वह कैसे भाग निकला?” मैंने पूछा।

“उस कमरे के गुप्त दरवाजे में घुसकर” उन्होंने कहा, “एक रस्सी के सहारे वह नीचे एक सोते में उतर गया जो समुद्र से भिला हुआ है। जब समुद्र में ज्वार आता है, तो वह सोता उस मकान के ठीक नीचे तक आ जाता है। गुप्त दरवाजा उसने बाहर से बन्द कर लिया था। इसके बाद एक मोटर-बोट पर सवार होकर वह किसी ओर चला गया। मोटर-बोट दूसरे दिन किनारे पर लगी मिली, और ऐसा खयाल किया जाता है कि तूफान में फँसकर शेरसिंह समुद्र में डूब गया। जो हो, तब से वह कहीं देखा नहीं गया और उसके बारे में कोई खबर भी नहीं मिली।”

“एलसी डिकसन?” मैंने पूछा।

“उसे सात वर्ष की सज़ा हो गई,” उन्होंने गम्भीर स्वर में उत्तर दिया।

“और सावित्री दुबे?”

मिस्टर ब्राउन ने सन्देहपूर्ण दृष्टि से मेरे विस्तरे के समीप रखे हुए गुलदस्ते की ओर देखा।

“वह कुछ समय तक यहाँ रही। लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि इस समय वह कहाँ है।”

जब मिस्टर ब्राउन विदा हो गये तब मैंने नर्स को बुला भेजा।

“ये फूल किसने भेजे थे, सिस्टर?” मैंने नर्स से पूछा।

वह रहस्यपूर्ण ढंग से मुस्कराई।

“जब तक आपकी हालत नाजुक रही,” उसने कहा, “एक बड़ी सुन्दर भारतीय महिला रोज़ आपको देखने आती थी। एक सप्ताह हुआ वे कालीनगर चली गईं। लेकिन एक माली को वे आदेश दे गई हैं कि आप जब तक अस्पताल में रहें वह आपके लिए फूल भेज दिया करे।”

“कोई खत या सन्देश वे नहीं दे गई?”

“नहीं।”

“मैं कब तक कालीनगर जाने के योग्य हो जाऊँगा?” मैंने पूछा।

नर्स ने मेरी ओर ताड़ना की दृष्टि से देखा।

“एक पखवारे के अन्दर, अगर आप शान्त रहेंगे,” उसने उत्तर दिया।

“लेकिन अगर आप उत्तेजित होना शुरू करेंगे, तो आपको फिर बुखार आ जायगा और शायद आप कभी वापस न जा सकेंगे।”

“सिस्टर,” मैंने पूछा, “कभी आप प्रेम में पड़ी हैं?”

“एक मरीज़ का अपनी नर्स से ऐसा प्रश्न करना उचित नहीं,” नर्स ने उत्तर दिया। उसकी आँखों में एक मधुर चमक आ गई, और उसके ओठ काँप उठे।

“मुझे सहानुभूति की जरूरत है,” मैंने कहा। “लेकिन अगर आप मुझसे बात न करेगी, तो मैं सो जाऊँगा।”

“आप जितना ही अधिक सोयेंगे, उतनी ही जल्दी कालीनगर वापस जा सकेंगे।”

बस मैं सो गया।

७

शेरसिंह का उपहार

शेरसिंह

उस रात को तारनपुर में स्थित मिसेज बेली की सराय से सर्वथा मौलिक ढंग से बच निकलने के बाद, मैं कई मास तक रेतून के उस पहाड़ी तथा जंगली प्रदेश में कुत्तों का-सा जीवन व्यतीत करता रहा। पहाड़ पर बनी हुई उस भोंपड़ी में हम तीन लकड़हारे रहते थे—बुद्धन, मँगरू और मैं। अठारह वर्ष तक एक ही प्रकार का निरानन्द काम करते करते मेरे दोनों साथी उन्हीं जड़ वृक्षों के समान जड़ हो गये थे। उनकी डालें और तनें हम नित्य काटते-छाँटते थे। लकड़ी काटकर ठेले पर लादकर हम नीचे तराई में बसे हुए एक कस्बे में ले जाते थे, और वहाँ से मोटर-लारियों पर लादकर वह नगरों को भेज दी जाती थी। बुद्धन और मँगरू में, जहाँ तक मैं पता लगा सका, कोई गुण न था। गंदे तासों की एक गड़्डी उनके पास थी, और उससे वे आपस में जुआ खेलते और खेल में बेईमानी करते थे; जब कभी उनके पास काफी पैसे जमा हो जाते, वे शराब पी-पीकर बदमस्त हो जाते; और मेरा तो खयाल है कि थोड़े से पैसों के लिए भी किसी की भी हत्या कर डालने में उन्हें संकोच न होता, यदि उन्हें विश्वास हो जाता कि उनके ऊपर आँच न आयेगी। धूप में तपते-तपते उनके शरीर का रंग काला पड़ गया था, और यही हाल मेरा भी हुआ जा रहा था। वे जमीन के ढोंकों के समान थे जड़, बयसहीन, अनुभूतिशून्य। अपने पैसे और अपने विचार उनसे छिपाये रहने ही में मैं कुशल देखता था।

जैसा विकट एकान्त मुझे उन दिनों प्राप्त था, वैसे एकान्त की मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। मैं उन्हीं चीजों से घृणा करने लगा जो कभी मुझे भली लगती थीं—ताजे कटे हुए, पेड़ों की ताजी, तीखी महक, पानी बरसने के बाद जमीन की सौंधी-सुगंध, भाँति-भाँति के

ज्ञात अज्ञात कुसुमों की भीनी-भीनी खुशबू, वृक्षों की पत्तियों में हवा का साँय-साँय करना, डालों का चरचराना । इनमें कुछ समय तक मुझे आनन्द मिलता रहा । अक्सर मैं अरुणोदय के समय उठ बैठता, और पक्षियों के कल-गान सुनकर पूर्व में बादलों के परदे को चीरकर प्रकाश की रेखाओं को निकलते देखकर आनन्दित होता । लेकिन इन चीजों से प्राप्त होनेवाला वह आनन्द अधिक दिनों तक टिक नहीं सका । वह औरों के लिए था मुझ जैसों के लिए नहीं । मैं तो यह समझने लगा कि ऐसी छोटी छोटी बातों से आनन्दित होना मेरी दुर्बलता का लक्षण है, उम्र के ढलने का प्रमाण है । क्योंकि मुझे कोई गलत-फ़हमी नहीं थी अपने सम्बन्ध में, संसार में अपनी स्थिति के सम्बन्ध में । अक्सर रात के समय जब मेरे साथी सो जाते, मैं समाचार-पत्र पढ़ता जो क़रीब के क़स्बे में मुझे बड़ी कठिनाई से प्राप्त होते । उन पत्रों में मैंने पढ़ा अपने ही कारनामों का वर्णन अपने ही अपराध, साहस और चातुर्य का वर्णन; और पढ़ा मैंने कि फ़्रांस और भारत के कई जगत्प्रसिद्ध जासूस मुझे पकड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं । और उस समय तक प्रयत्न करते वे रहेंगे जब तक मुझे गिरफ़्तार न कर पायेंगे । पहाड़ी पर स्थित अपनी उस भोंपड़ी के द्वार पर लैम्प के धुंधले प्रकाश में यह सब पढ़ा मैंने और मुस्कराया । मैं जानता था कि जब तक चाहूँ स्वतन्त्र और सुरक्षित रह सकता हूँ, यदि सन्तोष और धैर्य धारण किये रहूँ । लेकिन परेशानी भी यही तो थी । मज़दूरों के वे मैले-कुचैले बेढंगे वस्त्र मुझे पसन्द न थे, न उनका वह रूखा-सूखा भोजन, न उनकी वह रद्दी शराब । धन कालीनगर में मेरी प्रतीक्षा कर रहा था—अपार धन । मैं जानता था कि उस धन के निकट पहुँचने के पहले मुझे इस गढ़ से निकलकर अपने शत्रुओं को एक बार फिर ललकारना होगा ।

एक दिन की एक घटना ने मेरे अन्दर एक नवीन योजना का सूत्र-पात किया । एक स्थान पर, जहाँ वह पहाड़ी सड़क खतरनाक थी, अपना टेला सड़क के बीच में रोककर हम तम्बाकू पीने लगे थे । सहसा सामने की एक मोड़ से एक कार तेज़ी से निकली, इतनी तेज़ी से कि ब्रेक छगाना उचित न था । लेकिन शोफ़र ने बड़ी होशयारी दिखाई, खड़ब

और ठेले पर लदै हुए पेड़ के तनों से थोड़ी-सी रगड़ खाकर दोनों के बीच से कार निकल गई। अगर उससे ज़रा भी चूक हो जाती, तो कार बगल के गहरे खड्ड में जा गिरती। आगे बढ़ जाने के बाद शोफ़र ने खिड़की से सिर और हाथ निकालकर हमारे ऊपर घूँसा ताना और हमें गालियाँ दीं। मित्रता के भाव से मैंने हाथ हिलाया, क्योंकि इस घटना से मेरे मन में एक विचार पैदा हो गया था। उस रात को मैंने देखा कि बुद्धन और मँगरू काफी नशे में हैं। तब अपनी योजना मैंने उन दोनों को सुनाई।

“दोस्तो !” मैंने कहा, “हम कुत्तों की-सी ज़िन्दगी बिता रहे हैं।”

गुराँकर दोनों ने सहमति प्रकट की। वे मुश्किल से कभी स्पष्ट शब्द बोलते थे।

“आज,” मैंने कहा, “मेरे दिमाग में एक खयाल पैदा हुआ है। अगर हमारा ठेला खड्ड के ज़रा और निकट होता या शोफ़र कुछ कम होशियार होता, तो कार हर्गिज़ बच न पाती। वह चूर चूर हो जाती और नीचे जा गिरती।”

अपने गलों से विचित्र शब्द करके वे सुनते रहे।

“कुत्तों की-सी है यह ज़िन्दगी,” मैंने दोहराया। “इसे सुधारने के लिए आवश्यकता है धन की। धन अगर तुम्हारे पास हो तो तुम जी भर कर मौज उड़ा सकते हो, नित्य बढ़िया शराब पी सकते हो, गाँव की सुन्दरियों के साथ रंगरेलियाँ मना सकते हो। आज जो स्त्रियाँ तुमसे दूर भागती फिरती हैं उस समय न भागेंगी, क्योंकि उनके ऊपर खर्च करने के लिए तुम्हारे पास पैसे रहेंगे।”

उनके हुक्के उनके मुखों से अलग हो गये थे, और वे ध्यानस्थ होकर सुन रहे थे।

“उस मोटरवाले के पास धन अवश्य रहा होगा। अगर वह नीचे खड्ड में गिरकर बेहोश हो जाता, तो उसके रुपये हम आसानी से ले लेते इस तरह के सैलानी इधर नित्य ही आते रहते हैं, और हम उनसे लाभ उठा सकते हैं। हमारे ठेले से टकराकर जब कोई मोटर नीचे जा गिरैगी तो हममें से कोई नीचे उतकर बेहोश मोटरवाले की जेब से उसकी पर्स निकाल लीयेगा। यहाँ सैकड़ों ऐसे स्थान हैं जहाँ उस पर्स को हम

छिपा सकते हैं—किसी पेड़ में, किसी दरार में अथवा किसी गड्ढे में। जो पर्स खो गई, सो खो गई। क्या कहते हो, साथियो ?”

इसमें सन्देह न था कि मेरी योजना उन्हें खूब पसन्द आई। बुद्धन के पीले दाँत बाहर निकले हुए थे और वह बड़े बीभत्स ढंग से मुस्करा रहा था। मँगरू की छोटी, गोल आँखों में भयानक लोभ चमक रहा था।

“तीनों को बराबर बराबर हिस्सा मिलेगा ?” मँगरू ने कहा।

“बिलकुल बराबर,” मैंने उत्तर दिया। “वाक़ी बातें मेरे ऊपर छोड़ दो।”

हम दूसरे दिन प्रातःकाल नये उत्साह से काम पर गये। कटे हुए पेड़ों की डालें छाँटकर हम ठेले पर लाद रहे थे और यह सोच रहे थे कि देखें आज घर लौटते समय सौभाग्य हमें कुछ भेंट करता है या नहीं। जब काम समाप्त हो गया और हम अपनी भोंपड़ी की ओर रवाना हुए, तब अपने साथियों में जैसी मान्यता मुझे दृष्टिगोचर हुई वैसी कभी नहीं हुई थी। और दिनों की तरह आज वे यन्त्र की तरह नहीं चल रहे थे, आशाजनित उत्साह से उछलते हुए चल रहे थे। मैं ऊपर-नीचे दृष्टि दौड़ाता चल रहा था। दिल में वह दूषित आशा लिये हुए हम हर मोड़ पर, हर मौक़े के स्थान पर रुक जाते। लेकिन मामला उतना आसान न था। कभी लोग हमें ऊपर या नीचे से देख लेते, कभी ड्राइवर बड़ी सावधानी प्रदर्शित करते। ख़ैर, चौथे दिन हमें सफलता प्राप्त हुई। एक छोटी मोटर, जिसे मैंने दूर ही से देख लिया था, सामने की मोड़ से तीव्र गति से बाहर निकली। ड्राइवर जोर से चिल्लाया, कार हमारे ठेले से वेग से टकराई, और कार और ड्राइवर दोनों नीचे खड्ड में जा गिरे। बड़ा ख़चिकर दृश्य था वह।

मैं नीचे उतरकर उस स्थान पर पहुँचा जहाँ हमारा शिकार पड़ा हुआ था, और उसके कोट के जेब से उसकी पर्स निकाल ली। तब मैंने उसके हृदय पर हाथ रखकर देखा। वह ज़िन्दा था। मैंने अपने साथियों को आदेश दिया कि वे ठेले को बग़ल में कर लें और उस पर्स को लकड़ियों के ढेर में छिपा दिया। इसके बाद हम आगे की घटनाओं की प्रतीक्षा करने लगे। थोड़ी देर के बाद एक सार्वजनिक सफ़री कार आ पहुँची।

तब उस दुर्घटना का वर्णन किया गया और घायल व्यक्ति के लिए उस कार में जगह की गई। हमारे सेवा-भाव से प्रसन्न होकर यात्रियों ने आपस में चांदा करके इनाम के तौर पर हमें पन्द्रह रुपये भेंट किये। बाद में हम घर पहुँचे, आग जलाई और पर्स खोली। उसमें एक हजार के नोट, आठ रुपये और कुछ रेजकारियाँ थीं। जो भयानक भाव मेरे साथियों के चेहरों पर प्रकट हुए उन्हें मैं कभी भूल न सकूँगा। रुपये मैंने तीन हिस्सों में बाँट दिये, और उस्ताद की तरह उनसे बातें करने लगा।

“मुनो, बुद्धन और मँगलू,” मैंने कहा, “मैं इसाफ़पसन्द आदमी हूँ। मैं तुम्हीं लोगों के बीच का आदमी जरूर हूँ लेकिन मैंने बहुत सफ़र किया है। मुझे बहुत तज़ुर्बा है, और मैं इस दुनिया को अच्छी तरह जानता हूँ। अगर तुम यह सब रुपया लेकर नीचे क़सबे में आज रात को जाओगे, तो तुम बहुत ज़्यादा शराब पी लोगे, नशे में अनाप-शनाप बकोगे, हमारा भेद खुल जायगा और हम सबको जेल जाना पड़ेगा। मैं तुमसे शपथ लेकर कहने को तैयार हूँ कि तुम्हारे रुपये सुरक्षित रहेंगे। इनामवाले सिर्फ़ पाँच-पाँच रुपये लेकर आज मौज़ करने जाओ। या तो ये रुपये मेरे पास रहने दो या जहाँ चाहो खुद छिपा दो।”

उनमें इतनी बुद्धि थी कि वे यह समझ लेते कि मैं उनसे अधिक बुद्धिमान हूँ और मेरी सलाह ठीक है। पस हमने उस स्थान की विचित्र भाषा में लकड़हारोंवाली क़सम खाई और एक-दूसरे से हाथ मिलाया। बाद में मैं उन दोनों के साथ क़सबे में गया, वहाँ उनके साथ मैत्री के भाव से थोड़ी-सी शराब पी, और एक बोतल बढ़िया शराब और बढ़िया तम्बाकू लेकर लौट गया। मैंने क़िफ़ायत से पिया, जैसा जीवन में सदैव करता रहा हूँ। भोंपड़ी के सामने घाटी की ओर मुख करके एक वृक्ष के सहारे उठकर मैं आराम से बैठ गया और देखने लगा प्रकाश और छाया के खेल। एक विराट् धुंधला दृश्य सामने फैला हुआ था, उधर दूर के ग्रामों में दो-चार दीपक टिमटिमा रहे थे, ऊपर आकाश में असंख्य तारे जगमगा रहे थे। मैं धीरे धीरे शराब पी रहा

था, पाइप पी रहा था और विचार कर रहा था। उस मनोहर वातावरण का सौंदर्य मुझे पसन्द आ रहा था किसी कदर, लेकिन उसने जो आनन्द मिल रहा था मुझे वह नकारात्मक ही था। सच तो यह है कि जीवन अपने सर्वोत्तम रूप में भी मुझे एक प्रकार का उत्साह-रहित सन्तोष ही प्रदान कर सकता था। मैं सोच रहा था महान् नगरों की बात, उस पहाड़ी में उस रात को जो महान् सौंदर्य मेरे चारों ओर बिखर पड़ा था उसकी अनुभूति मनुष्य को आत्मा के द्वारा ही हो सकती है। मुझमें स्थित मेरी कला-रसिकता को उसकी अनुभूति आन्दोलित तो अवश्य कर रही थी, किन्तु सन्तोष-जनक सिद्ध नहीं हो रही थी। मैं तो चाहता था नगरों का आनन्द, उनमें व्याप्त जीवनोत्साह, पार्थिव सुख तथा सौन्दर्य, सुरुचिपूर्ण वस्त्र, स्वादिष्ट भोजन, उत्तम मदिरा।

दूसरी बार उसी योजना से काम लेने पर हमें ढाई हजार रुपये प्राप्त हुए। लेकिन इस बार मामला सहज ही में समाप्त नहीं हुआ। सिर के बल गिरने के कारण ड्राइवर की गर्दन टूट गई लेकिन उसकी स्त्री को हलकी ही चोट आई। दोनों को हमने खड्ड से बाहर निकाला। उस स्त्री ने अपने बयान में टैले की स्थिति के सम्बन्ध में हमारे ऊपर आरोप लगाये, और अपने पति की पर्स के पाकेट-बुक के खो जाने के सम्बन्ध में अपने सन्देह प्रकट किये। उस क्रसवे से उसी रात को पुलिस के कई सिपाहियों ने आकर हमारी खानातलाशी और जामातलाशी ली। कुछ बरामद नहीं हुआ। खुद खामोश रहकर और बोलने का काम मेरे ऊपर छोड़कर मेरे साथी बच गये, और मैं तो बच ही गया। बाद में मैंने उनसे इस सम्बन्ध में गम्भीरतापूर्वक बात की।

“दोस्तो,” मैंने कहा, “यह खेल बहुत दिनों तक नहीं चल सकेगा। अभी कुछ समय तक हमें कुछ न करना चाहिए और होशियार रहना चाहिए। बाद में हम एक बार और करेंगे। लेकिन उसके लिए उपयुक्त अवसर का चुनाव हमें बड़ी सावधानी से करना पड़ेगा, क्योंकि वही होगा मेरा अन्तिम प्रयास। यदि वह सफल हो जायगा, तो मैं यहाँ से विदा हो जाऊँगा। उसके बाद तुम लोग भी अपना धन ज़मीन में गाड़

देना और यह खतरनाक काम फिर कभी न करना, क्योंकि इसे सफल बनाने के लिए मस्तिष्क की जरूरत पड़ती है और मस्तिष्क के मामले में तुम लोग विलकुल कोरे हो।”

वे समझ गये कि मेरा कहना ठीक है, इसलिए खामोश रहे। इसके बाद हमने अनेक कारें निकल जाने दिया। एक महीने के बाद हमने अपना अंतिम प्रयास किया, लेकिन उसका अन्त उस ढंग से नहीं हुआ जिसकी मैं कल्पना की थी। ठेले के समीप एक ऊँचे स्थान पर बैठा हुआ मैं झर-उधर दृष्टि दौड़ा रहा था। एकाएक सामान से लदी हुई एक सफ़री कार ऊपर से आती दिखाई दी। ड्राइवर की बगल में एक नवयुवती बैठी हुई थी और पीछे की सीट पर एक वृद्ध सज्जन आसीन थे। मैंने अपने संगियों को आवाज़ दी।

“साथियो, बड़ा अच्छा मौक़ा है हमारे लिए,” मैंने कहा। “ठेले को ज़रा उधर खिसका दो और होशयार रहो।”

जो कुछ हुआ उसकी मुझे ज़रा भी आशा न थी। उस घटना का एक पहलू आज तक मेरी समझ में नहीं आ सका। भाड़ियों के बीच में लुके-लुके मैंने देखा कि या तो मोटर में कोई गड़बड़ी आ गई है या उसके चलाये जाने के ढंग में कोई खराबी है। शोफ़र अपनी सीट पर हिल रहा था और कार बुरी तरह उगमग रही थी। एक बार तो ऐसा जान पड़ा कि बिना हमारे हस्तक्षेप के वह स्वयं खड्ड में जा गिरेगी। किन्तु उस लड़की के चेहरे से मैं अपनी दृष्टि किसी तरह हटा नहीं सका। जिस खतरे में वह उस समय पड़ी हुई थी उसका पूरा ज्ञान उसे रहा होगा, लेकिन उसके चेहरे पर भय का कोई चिह्न न था। मैंने देखा कि वह शोफ़र से कुछ कह रही है, उसे सावधान करने की कोशिश कर रही है, लेकिन यह स्पष्ट हो गया कि वह विलकुल बदहवास हो गया था। और कार उसके क़ाबू से बाहर हो गई थी। तब झुककर वह ब्रेक लगाने की कोशिश करने लगी। वह कुछ सफल हुई, कार की गति कुछ क्षणों के लिए मन्द हो गई। यह मौक़ा पाकर शोफ़र कार से कूद पड़ा और सड़क पर धूल में लोटने लगा। लड़की का पैर ब्रेक से फिसल गया और

गाड़ी फिर तेज हो गई। उसने व्हील पकड़ ली, लेकिन यह जाहिर था कि वह मोटर चलाना नहीं जानती थी। किसी तरह एक मोड़ पार हो गया, लेकिन दूसरे मोड़ के समीप ठेला खड़ा था ! कार भुकोरे खाती हुई तेजी से नीचे चली आ रही थी, वृद्ध महाशय बड़ी बदहवासी से चिल्ला रहे थे। मैंने देखा लड़की की आँखों का भाव। अकसर मेरे जीवन में ऐसे असाधारण क्षण आते हैं जब किसी अज्ञात प्रेरणा के वशीभूत होकर, अपने साधारण नियमों के विरुद्ध, मुझे कार्य करना पड़ता है। बड़ी होशियारी से हमने उस मोटर का गिरा देने की तैयारियाँ की थीं। लेकिन अपनी जान खतरे में डालकर मुझे उसकी रक्षा करनी पड़ी। मैं कुछ दूर आगे बढ़कर खिसककर सड़क पर आ गया। फिर साँस खींचकर, शरीर साधकर मैं उस कठिन कार्य के लिए तैयार हुआ और ऐन मौके पर कूदकर मोटर के बोर्ड पर चढ़ गया। सीट पर फैलकर मैंने अपने बाँयें हाथ से व्हील पकड़ ली। नवयुवती ने व्हील छोड़ दी और एक ओर हटकर मेरे लिए स्थान कर दिया। कुछ सेकेंड में व्हील मेरे दोनों हाथों में थी और मैं ड्राइवर की सेट पर आसीन था। जब मैं कूदकर उस पर चढ़ा था, तो कार सड़क के खूँट की ओरवाले किनारे से सिर्फ चन्द इंच के फासले पर थी। बड़ी होशियारी से मैंने उसे नीचे गिरने से बचा लिया। आगे का काम आसान था। बिना अधिक कठिनाई के मैं उसे सड़क के बीच में ले आया, धीरे-धीरे ब्रेक लगाया, आसानी से मोड़ पार किया और ठेले के समीप पहुँचकर उसे रोक दिया। जब लड़की ने ठेले को देखा, तो पहली बार उसके चेहरे पर भय प्रकट हुआ। चमकती हुई आँखों से वह मेरी ओर देखने लगी।

“आपने बड़े मौके से काम किया,” उसने कहा। “आपकी वह कूद बड़ी जबरदस्त थी!”

“आपके शोफर को क्या हो गया था?” मैंने पूछा।

“हमारा निजी शोफर एकाएक बीमार पड़ गया और मजबूरन मुझे इस लड़के को रखना पड़ा,” उसने उत्तर दिया। “लेकिन यह नौसिखिया निकला। पहाड़ की चोटी पर पहुँचकर यह बिलकुल घबरा गया।”

बृद्ध सज्जन अब कार से उतर चुके थे, और बड़े जोश से मुभसे हाथ मिला रहे थे।

“शाबश !” वे बोले। “बड़े नेक आदमी हो तुम ! वाह ! खुद अपने लिए भी तुमने आज बड़ा काम किया है ! अँगरेजी समझते हो ?”

“इंग्लिश, फ्रेंच और तमाम भारतीय भाषाये में बखूबी जानता हूँ।”

अब ! शान्त होने लगे थे। मैं समझ गया कि वे कोई यात्रा-प्रेमी, धनढेरा भारतीय सज्जन हैं।

“मेरा नाम गहेन्द्र विक्रमसिंह है,” उन्होंने कहा। “मैं राखीपुर का राज हूँ। आज के काम के लिए तुम्हें कभी अफ़मोस न होगा।”

मैं कार से उतरने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने मुझे तुरन्त रोका।

“कम से कम अगले नगर तक हमें पहुँचा दो,” जोर देकर उन्होंने कहा। “मैं तुम्हें काफ़ी इनाम दूँगा। हम यहाँ पड़े नहीं रह सकते, और उस लौंडे को तो मैं इस कार पर कदम भी नहीं रखने दूँगा।”

“आप कहाँ जा रहे हैं ?” मैंने पूछा।

“टाइफ़ून,” लड़की ने उत्तर दिया। “फिर वहाँ से कालीनगर।”

“अगर आप उस लड़के की वर्दी और उसके कागज़-पत्र मुझे ईला दें,” मैंने कहा, “और मेरे इन साथियों को मेरी ग़ैरहाजिरी के लिए मावज़ा दे दें, तो मैं आपको टाइफ़ून तक पहुँचा दूँ। इन्हें दूसरा मज़दूर रखना पड़ेगा।”

उन्होंने तुरन्त जेब में पर्स निकाली और उसमें से नोटों की गड़्डी निकालकर वे उन दोनों को बाँटने लगे।

“तय हो गया,” उन्होंने उत्सुकतापूर्वक कहा। “शर्तों के बारे में मैं तुमसे झगड़ा नहीं करूँगा, वादा करता हूँ।”

धूल-गर्द से सना हुआ वह मोटर-ड्राइवर लड़खड़ाता हुआ नीचे उतरा। उसके होश-हवास अब दुस्त हो चुके थे। उसे मैं एक एकान्त स्थान में ले गया और उसके कपड़े उतरवाकर खुद पहन लिये और अपने उसे दे दिये। फिर मैं कार में अपनी सीट पर आ बैठा और पुर्जों की जाँच की। आश्चर्य-भरी दृष्टियों से बुद्धन और मंगरू सौ-सौ के नोटों

की उन गड़्डियों को देख रहे थे जो राखीपुर के राजा ने उनके हाथों पर रख दी थीं।

“सलाम, दोस्तो !” हाथ हिलाकर मैंने कहा। “मुमकिन है मैं किसी दिन वापस आऊँ, और यह भी मुमकिन है कि कभी आऊँ। तुम्हारे सौभाग्य की कामना करता हूँ !”

अन्यमनस्क भाव से दोनों ने मेरे सलाम का उत्तर दिया। वर नीचे चल पड़ी। इस तरह हम टाइफून की ओर रवाना हुए.....।

तीन दिनों की उस यात्रा में राजकुमारी कुसुम अपने विचरों में खोई हुई बराबर मेरी बगल में बैठी रही। बहुत देर के बाद वह मुझसे बात कर लेती। बराबर उसकी उपस्थिति की अनुभूति मेरे मन में बनी रही, और मेरा खयाल है कि यही हाल उसका भी था।

“आप तो लकड़हारे हैं, फिर मोटर कैसे चला लेते हैं ?” यह था उसका पहला प्रश्न।

“मैं हमेशा लकड़हारा नहीं रहा हूँ,” मैंने उत्तर दिया।

“आपने उस लड़के के कागज़-पत्र क्यों लिये ?”

“इसलिए कि मैं कालीनगर जाना चाहता हूँ, और चाहता हूँ कि मुझे इस सम्बन्ध में किसी कठिनाई का सामना न करना पड़े,” मैंने स्वीकार किया।

किंचित् अनिच्छापूर्वक उसने यह विषय छोड़ दिया। दूसरे दिन बहुत देर तक खामोश रहने के बाद उसने प्रश्न करने का भाव धारण किया। इस बार उसे उत्तर देना मुझे उतना सरल प्रतीत नहीं हुआ।

“हम लोगों के लिए आपने अपनी जान खतरे में क्यों डाली ?” उसने एकाएक विचित्र ढंग से पूछा। उस समय दिन भर की कठिन यात्रा समाप्त होने जा रही थी।

“बात यह थी,” मैंने उत्तर दिया, “कि मुझे आपका वह भाव बहुत पसन्द आया जो उस भयानक परिस्थिति में भी आपके चेहरे पर व्यक्त था। मृत्यु प्रायः निश्चित थी, फिर भी आप शान्त थीं ! मैंने जो कुछ किया वह पूर्णतया असाधारण बात न थी। बुरे से बुरे व्यक्ति को भी कभी-कभी वैसा कार्य करने की प्रेरणा होती है।”

“क्या यह सत्य है कि रेतून के कुछ लकड़हारे उन यात्रियों का माल लूट लेते हैं जो दुर्भाग्यवश मोटर-दुर्घटनाओं में फँस जाते हैं।”

“बिल्कुल सत्य है,” मैंने स्वीकार किया। “अकसर उन दुर्घटनाओं की सृष्टि वे स्वयं ही करते हैं। मैंने खुद ऐसा किया है।”

वह काँप उठी।

“ऐसी बात न कहिए,” अविश्वाससूचक भाव से उसने कहा।

“बिल्कुल सच कह रहा हूँ,” मैंने आश्वासन दिया। “हमने आपकी गाड़ी को गिराने का इरादा कर लिया था। लेकिन बाद में मैंने जब आपको देखा तब मेरा इरादा बदल गया और मैं आपकी रक्षा करने की तदबीर सोचने लगा।”

वह विचित्र ढंग से हँस पड़ी, लेकिन मेरी ओर देख नहीं सकी।

“आप बड़े विचित्र हैं!” उसने कहा। “लकड़हारे का वेष आपने क्यों धारण किया था?”

“इसलिए कि मोटरों के अलावा मैंने और चीजें भी नष्ट की हैं,” मैंने उत्तर दिया। “पुलिस की नज़र से बचने के लिए मैंने रेतून में शरण ली थी। उस कष्टदायक जीवन से सम्बन्ध तोड़ने का सुअवसर मुझे आज प्राप्त हुआ है।”

उसने दीर्घ-निःश्वास खींचा।

“मुझे अफ़सोस है,” उसने कहा। “आशा करती हूँ कि आप अपने इस प्रयत्न में सफल होंगे।”

इसके बाद उसने कई बार कोशिश की कि मैं अपने बारे में बात करूँ। मेरे काल्पनिक अपराधों के कारणों के सम्बन्ध में भी उसने अनुमान लगाये। लेकिन अपने और अपने कार्यों के सम्बन्ध में बिल्कुल खामोश रहना ही मैंने उचित समझा। अन्त में वार्तालाप उसने बिल्कुल बन्द कर दिया।

टाइफ़ून पहुँचकर राजकुमारी कुसुम-सहित राजा महेन्द्र विक्रम-सिंह उसी दिन जानेवाले एक जहाज़ से कालीनगर के लिए रवाना हो गये। और मैं दो दिन बाद उनकी कार लेकर एक माल ढोनेवाले जहाज़ पर सवार होकर रवाना हुआ। कालीनगर पहुँचकर मैंने उनकी

कार उनके घर पर पहुँचा दी। वहाँ मुझे सूचना दी गई कि राजकुमारी कुसुम मुझसे तुरन्त भेंट करना चाहती हैं। उस बड़े मकान की एक छोटी-सी बैठक में मैं पहुँचाया गया। राजकुमारी तुरन्त आई। उसे देखते ही मुझे धक्का लगा। फ्रैशन में डूबी हुई यह नवयुवती उस नवयुवती से सर्वथा भिन्न थी जो उस दिन रेतून के पहाड़ पर केश बिखरे हुए, उपेक्षा का भाव धारण किये हुए, मृत्यु के मुख में उतरी आ रही थी।

“मेरे चचा ने मुझे आदेश किया था कि इसे मैं आपको दे दूँ,” एक लिफाफा मेरे हाथ में देकर उसने कहा। “और क्या मैं भी एक मामूली-सी चीज़ आपको भेंट कर सकती हूँ?”

एक सुन्दर छोटे-से फ्रेम में मढ़ी हुई अपनी एक फोटो उसने मुझे भेंट की। दोनों चीज़ें मैंने अपनी जेब में डाल लीं। जिस सोफ़े पर वह बैठी हुई थी उस पर उसने खिसककर मेरे लिए स्थान किया, लेकिन मैंने जाहिर किया कि यह बात मैंने नहीं देखी। एकाएक मुझे अपने अन्दर एक बड़ी अद्भुत तथा अप्रत्याशित भावना की अनुभूति हुई।

“वह संध्या मुझे कभी न भूलेगी,” राजकुमारी ने कोमल स्वर में कहा। “ग़ज़ब की थी आपकी वह कूद !”

सर्वथा विचित्र, नवीन तथा अज्ञेय प्रेरणाये उठने लगीं मेरे मन में। मुझे इच्छा होने लगी कि मैं इस भोली-भाली लड़की को ठीक-ठीक बतला दूँ कि मैं कौन हूँ? उसे समझा दूँ कि मैं इस संसार का एक पूर्णतया परित्यक्त प्राणी हूँ। फिर भी जब मैंने वह प्रयास किया तब मुझे अनुभव हुआ कि मेरे शब्द बड़े कमज़ोर हैं।

“राजकुमारी !” मैंने कहा, “मेरे खयाल में यह बेहतर होगा कि जहाँ तक हो सके आप इस मामले को भूल जायँ। यह याद रखिए कि और मोटरों की तरह मैंने आपकी मोटर को भी गिराने की तैयारी की थी। वह केवल एक क्षणिक विचार था जिससे मेरा इरादा पलट गया। विश्वास कीजिए, मैं मित्रता के योग्य नहीं हूँ।”

“लेकिन आप हो सकते हैं,” उसने कहा। “क्या आप इसकी कोशिश न करेंगे?”

नकारात्मक भाव से मैंने सिर हिलाया ।

“इसके लिए अब समय नहीं रहा,” मैंने उत्तर दिया । “मेरी तलाश की जा रही है और अन्त तक की जाती रहेगी । संसार में ऐसा कोई देश नहीं जहाँ मैं थोड़े समय के लिए भी हिराजत से या आराम से रह सकूँ । और अपनी इस अवस्था के लिए मैं स्वयं जिम्मेदार हूँ ।”

एक ही अवगुण ऐसा है जो मुझमें नहीं है, और वह है कायरता । किन्तु उस समय जब उस सुन्दरी का नन्हा सुकोमल हाथ आप ही आप मेरी ओर बढ़ने लगा, उसके सुन्दर ओठों में हलका-सा कम्पन हुआ और उसके लावण्यमय शरीर से बड़ी मधुर सुगंध उड़कर मेरे निकट आई, तब मेरा हृदय भय से भर गया—किसी और के भय से नहीं, अपने ही भय से । और उस समय मैंने वही किया जो करना चाहिए था—मैं तुरन्त उस कमरे से बाहर निकला और एक मिनट में मकान से बाहर हो गया ।

मिस्टर दलाल का चेहरा देखने के काबिल था जब मैं दूसरे दिन उनसे मिलने के लिए उनके दफ्तर में उपस्थित हुआ । अब भी मैं शोफ़र की बर्दी में था । शोफ़रवाली हैट मेरे लिए एक हद तक नक्राब का काम दे रही थी । लेकिन मेरी आवाज़ तुरन्त पहचानकर मिस्टर दलाल काँप उठे ।

“निस्सन्देह”, उन्होंने लड़खड़ाई हुई आवाज़ में कहा, “यह अनुचित है ।”

“यह अनुचित हो सकता है,” कुर्सी पर बैठकर मैंने कहा, “लेकिन आवश्यक था । यहाँ आने का एक अत्यन्त सुरक्षित साधन मुझे मिल गया था । और अब मुझे रुपये की जरूरत है ।”

उन्होंने दराज़ से अपनी चेक-बुक निकाली, लेकिन मैंने उसे एक ओर हटा दिया ।

“मुझे नक़द बीस हजार दीजिए,” मैंने कहा । “अपने क्लर्क को भेजकर बैंक से रुपये मँगवाइए ।”

शान्त बने रहने की कोशिश करते हुए उन्होंने मेरे आदेश का पालन किया । मैं मस्कराता हुआ उनकी ओर देखता रहा ।

“लोग कहते हैं,” मैंने कहा, “कि जब तक मैं यहाँ नहीं रहता आप बड़े दिलेरे बने रहते हैं, घबराहट का कोई लक्षण प्रकट नहीं करते ?”

“आपके समान यहाँ कोई दुस्साहसी नहीं है,” तुरन्त उत्तर मिला। “कोई इतनी बड़ी बाजियों पर हाथ नहीं मारता, और कोई ऐसे खतरे भी नहीं उठाता। औरों के ऊपर मैं नियन्त्रण रख सकता हूँ। वे मेरी सलाह पर चलते हैं और सतर्कता के सिद्धान्त का पालन करते हैं। लेकिन जब आप कालीनगर में रहते हैं, तब मैं एक क्षण के लिए भी चिन्ताओं से मुक्त नहीं हो पाता।”

मैंने अपने कंधे हिलाये।

“अब मैं आपको बहुत दिनों तक परेशान नहीं करूँगा,” मैंने वादा किया। “हाँ, एक मामला साफ़ करना है। तारनपुर में मुझे बतलाया गया था कि सावित्री दुबे ने आपसे एक बहुत बड़ी रकम वसूल की थी।”

“बिलकुल भूठी बात है यह,” मिस्टर दलाल ने उत्तर दिया। “उसने कभी मुझसे एक पैसा भी नहीं माँगा।”

सच्ची बात मुझे उस समय मालूम हुई। ईर्ष्या के वशीभूत होकर एलसी ने सारी बातें गढ़ी थीं। सौत का विचार-मात्र भी उसके लिए असह्य था। मेरे मन में क्षणिक सहानुभूति उत्पन्न हुई जब तारनपुर के उस काफ़े में असीम विवशता की दशा में पड़ी हुई सावित्री के भय की मैंने कल्पना की। जो हो, यद्यपि अब हम दोनों को एक-दूसरे से प्रेम न था, सावित्री ने मेरे प्रति अपने ढग से वफ़ादारी ही का परिचय दिया था।

“हमने तो सुना था कि आप तारनपुर में डूब गये,” मिस्टर दलाल ने कहा।

“मैं बड़ी कठिनाई से बचा,” मैंने स्वीकार किया। “कील और मुकर्जी वहाँ मौजूद थे, और एलसी और सावित्री के कारण उन्हें मेरा सूराम मिला। भाग्य ने उस रात को मेरी सहायता की, और मुझे बड़ी आवश्यकता थी उस सहायता की।”

मिस्टर दलाल अशान्ति के भाव से कुर्सी पर हिले।

“इस समय आपका कालीनगर आना बड़े पागलपन का कार्य है,” उन्होंने कहा।

“दुस्साहस है एक प्रकार का,” मैंने शान्त भाव से उत्तर दिया। “अगर मेरी तरह आपको भी लगातार कई मास तक नित्य दिन भर लकड़ी काटना और रूखा-सूखा खाकर और कभी-कभी रद्दी शराब पीकर समय काटना पड़ता, तो यहाँ के किसी शानदार होटल में भोजन करने के लिए शायद आप भी खतरा उठाने को तैयार हो जाते।”

“अब आप अवकाश ग्रहण क्यों नहीं कर लेते?” मेज़ पर भुककर वकील ने कहा। “आपके पास बहुत काफ़ी धन है और ग्रामीण जीवन आपको पसन्द भी है। वेष बदलने की अपनी अद्भुत कला से क्यों न पूर्ण लाभ उठाइए, अपने लिए कोई शान्त स्थान पसन्द कर लीजिए और खतरे में पड़ना छोड़ दीजिए?”

“आपका प्रस्ताव विचार करने के योग्य है,” मैंने स्वीकार किया। “लेकिन अभी दो-चार मामले तय करने हैं।”

मिस्टर दलाल मेरी ओर कौतूहलपूर्ण दृष्टि से देखते रहे। फिर उन्होंने उस दैनिक पत्र पर उँगली रक्खी जिसे मेरे आने से पहले वे पढ़ रहे थे।

“कल की महत्वपूर्ण घटना में तो आपको अवश्य दिलचस्पी होगी?”

“कौन-सी घटना?” मैंने पूछा।

अविश्वास के भाव से वे मुस्कराये। मैं समझ गया कि उन्हें इस बात पर विश्वास नहीं हुआ कि उस आनेवाली घटना के बारे में मैं कुछ नहीं जानता।

“कल आपके पुराने मित्र रायबहादुर जतीन्द्रनाथ मुकर्जी का विवाह होनेवाला है।”

अविश्वास की दृष्टि से मैं उनकी ओर देखने लगा।

“अब तक इस दुनिया से मैं बाहर रहा हूँ,” मैंने कहा। “किसके साथ उनकी शादी हो रही है?”

“क्या आप सचमुच नहीं जानते?”

“नहीं,” कुछ चिढ़कर मैंने उत्तर दिया।

“मिस्टर मुकर्जी उस महिला से शादी कर रहे हैं जिसे मैं मिसेज़ पाण्डेय के नाम से जानता था। अब वह अपने को मिसेज़ सावित्री दुबे कहती है।”

निस्सन्देह यह मेरे लिए कर्त आघात था। मैं सावित्री से विलग हो चुका था। उसे भी मैंने उसी तरह धोखा दिया था जैसे मैंने अन्य स्त्रियों को धोखा दिया था। लेकिन उसने मेरी सेवा बड़े प्रेम और वफ़ादारी से की थी। मेरे मन में उसके प्रति कोई दुर्भावना नहीं थी, विशेषकर इस समय जब मुझे यह मालूम हो चुका था कि उसने मेरे धन पर हाथ साफ़ नहीं किया। किन्तु मुक़र्जी की हत्या करने की मेरी पुरानी इच्छा पुनः बलवती हो गई। समाचार-पत्र उठाकर मैंने वह वैवाहिक सूचना पढ़ी।

“ठीक है!” मैंने कहा। “मैं उस दावत में शरीक होऊँगा जो शादी के बाद दी जानेवाली है। ज़रा देखूँगा कि वह हार कैसा है जो मिस्टर मुक़र्जी अपनी भावी पत्नी को भेंट करने जा रहे हैं। उनकी रुचि की परख करने में बड़ा मज़ा आयेगा।”

“आपका यह काम कोरा पागलपन होगा,” क्रोधपूर्ण स्वर में मिस्टर दलाल ने कहा।

मैंने मुस्करा दिया।

सावित्री

तारनपुर से मेरे वापस आने के ठीक दो महीने के बाद उस दिन क्लासिम स्ट्रीट में स्थित मेरी बैठक में जतीन्द्रनाथ मुक़र्जी ने प्रवेश किया। उस समय मैं एक कम्पनी के कुछ कागज़ात टाइप कर रही थी। वे क्षीण और दुर्बल दिख रहे थे, और यह स्पष्ट था कि वे अभी पूर्णतया स्वस्थ नहीं हुए थे। किन्तु उनके चरित्र की विशेषतायें ज्यों की त्यों मौजूद थीं। अभी मैं उनकी ओर चकित दृष्टि से देख ही रही थी कि उन्होंने एकाएक मुझे कर-पाश में बाँध लिया और मुझे अनुभव हुआ कि मेरे शरीर की सम्पूर्ण शक्ति शिथिल होती जा रही है। मेरे जीवन का सबसे अद्भुत, सबसे सुन्दर समय आ पहुँचा।

“मेरे साथ कब शादी करोगी, सावित्री?” मुझे मेरी कुर्सी पर बैठाकर और खुद मेरी अगल में बैठकर उन्होंने पूछा—

“आपको साथ शादी करूँ! यह क्यों कह रहे हैं आप?”

“इसलिए कि विवाह मे पहले सारी बातें तय कर लेनी पड़ती हैं,” उन्होंने उत्तर दिया। “अब मैं तुम्हें शेरसिंह की विधवा समझता हूँ। और मेरा खयाल है कि शेरसिंह से कहीं अधिक तुम मुझे चाहोगी।”

“लेकिन इस बात का क्या सबूत है कि वह इस संसार में अब नहीं है?” मैंने कहा। मेरा हृदय वेग से धड़क रहा था और मेरे शरीर का एक एक तार काँप रहा था।

उन्होंने मेरा हाथ जोर से पकड़ लिया।

“हम दोनों समझदार हैं,” उन्होंने कहा, “और हमें इस प्रश्न पर शान्त चित्त से विचार करना चाहिए। अगर वह जीवित भी हो, तो भी हमारे मार्ग में कोई नैतिक या कानूनी बाधा नहीं है। तुमसे पहले वह कई स्त्रियों को अपनी पत्नियाँ बना चुका था और तुमसे उसने नियमित रूप से विवाह भी नहीं किया था। इसलिए तुम पूर्णतः स्वतन्त्र हो और जिस किसी से चाहो विवाह कर सकती हो।”

मैं उनकी ओर झुकी। जो बात किसी दूसरे समय मुझे बिल्कुल असम्भव प्रतीत होती वह उस समय स्वाभाविक और बुद्धिमत्तापूर्ण जान पड़ी। सहसा वह पुराना भय मेरे मन में फिर उठ खड़ा हुआ।

“आप भूल रहे हैं,” मैंने अवरुद्ध कण्ठ से कहा, “आप भूल रहे हैं कि मैंने भी—”

उन्होंने धीरे से अपना हाथ मेरे मुख पर रख दिया।

“सावित्री,” उन्होंने कहा, “हम दोनों चाहे जो कुछ करें, चाहे जितने प्रायश्चित्त करें, रामदीन अब फिर जीवित नहीं हो सकता। उसकी विधवा को पेंशन मिल रही है—मैंने खुद इसका इन्तजाम कर दिया था। और उस खेदजनक घटना को तुम्हें भी उसी तरह भूल जाना चाहिए जिस तरह मैं भूल गया हूँ।”

“मैंने उसकी हत्या की थी। कैसे भूलूँ इस बात को?”

“अपने समय में मैंने भी बहुतों की हत्याएँ की हैं,” मैंने उत्तर दिया, “और शायद शेरसिंह की भी हत्या करूँगा, अगर वह ज़िन्दा है तो। उस मामले से अब हमें कोई सरोकार नहीं। क्षणिक आवेश के वशीभूत होकर तुमने वह काम कर डाला था। तुम उस व्यक्ति की

रक्षा कर रही थीं जिसे, अपने उस समय के विचारानुसार तुम प्यार करती थीं।”

“इससे भी अधिक मैं कर रही थी,” मैंने कहा। “मैं अपने अपमान का बदला ले रही थी। मैं एक मूर्ख लड़की थी उन दिनों—लेकिन मेरे अपने विचार थे, सिद्धान्त थे। उस समय तक किसी पुरुष ने मेरा चुम्बन नहीं किया था। धोखे से उसने मुझे चूम लिया। अगर पिस्तौल मेरे हाथ में होती, तो मैं उसी समय उसे गोली मार देती।”

उस व्यक्ति के मुखमंडल पर, जिसे मैं प्यार करती थी, सन्तोष का भाव व्यक्त हो गया।

“हमेशा से मेरा भी यही खयाल रहा है कि कोई ऐसी ही बात रही होगी,” मुकजी ने कहा। “खैर, इस समय तो प्रश्न यह है कि तुम मुझसे कब शादी करोगी?”

मेरा खयाल है कि मैंने दुर्बलता दिखाई। लेकिन सभी स्त्रियाँ दुर्बलता दिखाती हैं जब वह व्यक्ति जिसे वे प्यार करती हैं अनुनय-विनय करता है। एक मुद्दत तक मैंने तकलीफ़ उठाई थी, और वह समय आ गया जब अधिक आपत्ति कर सकना मेरे लिए असम्भव हो गया। मैं बिल्कुल निश्चेष्ट हो गई और केवल वही करने लगी जो मुझसे कहा जाता था, और ऐसा करने में मुझे अद्भुत आनन्द मिलने लगा। जिस तरह मैं उस समय थी, रद्दी वस्त्र पहने हुए, उसी तरह एक रेस्त्राँ में जाकर मैंने उनके साथ भोजन किया। विचित्र स्थान था वह और बड़ी भीड़ थी वहाँ, लेकिन उस समय मुझे वह महल-सा लग रहा था। बराबर हम मनसूबे बाँधते रहे—नहीं, वे योजनायें बनाते रहे और मैं सुनती रही। मेरी कठिनाइयों का अन्त हो गया। यह तय पाया कि एक सप्ताह के अन्दर ही हमारा विवाह सुधारवादी ढंग से हो जाय, उसके बाद हम स्वदेश का विस्तृत भ्रमण करें, फिर योरप की यात्रा के लिए रवाना हो जायें, और बाद में स्वदेश वापस आकर देहात में रहें। रेस्त्राँ से वापस आने के बाद जब वे मुझे मेरे स्थान पर छोड़कर चले गये और स्मृतियाँ मेरे नस्तिष्क में चक्कर काटने लगीं तब मेरा हृदय आशंका से आन्दोलित हो उठा। मेरे मन का यह भाव बहुत दिनों

तक दूर नहीं हो सका। मुझे भय सताने लगा शेरसिंह का। मैं यह विश्वास नहीं कर सकी कि उसका देहान्त हो गया। इसके विपरीत मुझे आशंका हुई कि वापस आयगा और मेरा यह नवीन सुख मुझसे छीनने की कोशिश करेगा। यह भय बराबर बढ़ता ही गया। मैंने अपने शयनागार के दरवाजे पर अन्दर से ताला लगा लिया और करीब करीब रात भर जागती रही। कहीं ज़रा-सा खटका होता और मैं चौंक पड़ती, कहीं किसी के पैरों की आहट होती और काँप उठती, कहीं किसी टैक्सी के रुकने की आवाज़ होती और मेरा हृदय वेग से धड़कने लगता। और अपने कमरे के उस अन्धकार से भी मुझे डर लग रहा था। मुझे जान पड़ा कि अन्धकार के उस पर्दे पर मुझे दृष्टिगोचर हो रहा है शेरसिंह का कठोर, बयसहीन चेहरा, उसकी विचित्र मुस्कान, असाधारण शक्तिवाली उसकी हरी-भूरी चमकती हुई आँखें। रात बीत गई, लेकिन भय क़ायम रहा। उसके बाद वाले सुन्दर दिवस भी उस भय से मुक्त न थे। उसी सप्ताह में जब एक दिन मैंने जतीन्द्र के साथ विवाह-मंडप में प्रवेश किया, तब एक बार फिर वही भय मेरे मन में उठ खड़ा हुआ। मुझे ऐसा जान पड़ा कि अन्य लोगों के साथ शेरसिंह भी मंडप में उपस्थित है। विवाह-सम्बन्धी क्रियायें सुचारु रूप से सम्पादित हो गईं और मैं अपने पति के साथ प्रसन्न मुद्रा धारण किये मंडप से बाहर निकली, लेकिन मेरा हृदय उस भय से मुक्त न था।

इसके बाद कुछ समय तक एक सुन्दर स्वप्न-सा मेरी आँखों के सामने चलता रहा। जतीन्द्र के सुसज्जित घर पर एक शानदार प्रीति-भोज का आयोजन किया गया था। सैकड़ों प्रतिष्ठित नर-नारी निमन्त्रित थे। सब लोग मुझसे परिचित होने के लिए आतुर हो रहे थे। दावत के बाद जतीन्द्र के वृद्ध रिश्तेदार मिस्टर निर्मलचन्द्र बनर्जी ने मुझसे अनुरोध किया कि मैं उन्हें मोतियों का वह हार दिखला दूँ जो जतीन्द्र ने मुझे भेंट किया था। मैं उन्हें तुरन्त उस कमरे में ले गई जहाँ मेरे समस्त आभूषण तथा अन्य वैवाहिक उपहार मेजों पर सजे हुए थे। वहाँ थोड़े-से लोग जमा थे जो करीब-करीब सब परिचित थे। कमरे के एक कोने में एक कुर्सी पर एक व्यक्ति बैठा हुआ था जो वहाँ की कारवाइयों में कोई

दिलचस्पी प्रदर्शित नहीं कर रहा था। वह एक जासूस था जो उपहारों की रक्षा करने के लिए खुफिया-विभाग से भेजा गया था।

“मैं जानता हूँ कि तुम्हें आज ही यात्रा के लिए रवाना होना है और तुम्हारे पास समय बहुत कम है,” मिस्टर बनर्जी ने कहा। “मैं उस हार को एक नज़र देखने के बाद ही यहाँ से बिदा हो जाऊँगा। मैं यह देखने के लिए उत्सुक हूँ कि जतीन्द्र मोतियों का सच्चा पारखी है या नहीं।”

मैंने हार के केस की ओर संकेत किया। दो-तीन व्यक्ति, जो उपहारों की परीक्षा कर चुके थे, मुझसे बात करने लगे। मिस्टर बनर्जी ने हार की ओर देखा, मत्था सिकोड़ा, आँखों पर चश्मा लगाया, कई क्षण तक निरीक्षण करते रहे, चश्मा उतारा और मुस्कराकर मेरी ओर मुड़े।

“ऐसी सतर्कता अनुचित नहीं” उन्होंने कहा। “लेकिन जब यहाँ एक जासूस मौजूद है, तब इसकी क्या जरूरत थी?”

“मैंने आपका मतलब नहीं समझा,” कुछ चकित होकर मैंने कहा।

“असली के बजाय यहाँ नकली हार रक्खा हुआ है,” मिस्टर बनर्जी ने कहा। “यह नकली चीज़ बेशक अच्छी है, लेकिन मैं तो असली चीज़ देखना चाहता था।”

मैंने झुककर हार की ओर देखा, और मुझे तुरन्त भय की अनुभूति हुई। निस्सन्देह वह असली हार नहीं था। उसे तो मैंने पहले कभी देखा भी नहीं था। वह और ही चीज़ थी जिसे अभी आध घंटा पहले अपने हाथ में लेकर कई महिलाओं को दिखाया था।

मैंने जासूस को बुलाया।

“मेरा मोतियों का हार यहाँ से आध-घंटे के अन्दर चोरी गया है,” मैंने कहा। “यह नकली हार है जो असली हार के बजाय यहाँ रख दिया गया है।”

जासूस ने तुरन्त कमरे का दरवाज़ा बन्द कर दिया। हम दोनों उपस्थित व्यक्तियों की ओर देखने लगे। मेरे और मिस्टर बनर्जी के अतिरिक्त वहाँ उस समय उपस्थित थे—राजकुमारी कुसुम, जो जतीन्द्र की अनिश्ठ मित्र थीं, मिसेज़ टोपा जो एक अघेड़ महिला थीं और

एक मैनिंक-से दीखनेवाले अधेड़ सज्जन, जो बिलकुल अजनबी जान पड़ते थे ।

“बड़े अफ़सोस की बात है !” अजनबी ने कहा । “पिछले आध-घंटे के अन्दर यहाँ सैकड़ों व्यक्ति आ-जा चुके हैं ।”

“अभी सिर्फ़ तीन मिनट पहले मैं उस कोने में जा बैठा था,” जासूस ने कहा । “उससे पहले मैं बराबर यहाँ मौजूद था । चोरी इसी तीन मिनट के अन्दर की गई होगी । क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ, मिसेज़ मुकर्जी, कि वहाँ पर उपस्थित सब लोगों से आप परिचित हैं ?”

“राजकुमारी कुसुम से मैं परिचित हूँ और मिसेज़ टोपा से भी; लेकिन आपसे तो शायद कभी मेरी भेंट नहीं हुई,” अजनबी की ओर मुड़कर मने कहा ।

अजनबी ने मेरी ओर मुस्कराकर देखा, और मने यह पहली बार देखा कि वह बिना फ़्रेम का चश्मा पहने हुए है । उसकी पेशानी बड़ी ऊँची थी और उसके अधपके बाल बड़ी सफ़ाई से पीछे की ओर फिरे हुए थे । यह तो मैं नहीं कह सकती कि उसे देखकर मुझे किसी की याद आ गई; लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि उसकी सूरत ने मुझे किसी क्रूर बचैन कर दिया ।

“मेरे लिए यह खेद की बात है, मिसेज़ मुकर्जी,” उसने शान्त भाव से कहा । “कि आपसे परिचित होने का सम्मान मुझे नहीं प्राप्त हो सका । लेकिन आपके पति मेरे पुराने मित्र हैं । मेरा नाम है मेजर विनायकराव पंडित ।”

“अगर आप मिसेज़ मुकर्जी से परिचित नहीं हैं,” जासूस ने कहा, “तो कृपया आप उस समय तक यहाँ रुके रहें जब तक मिस्टर मुकर्जी वापस न आ जायें ।”

“बड़ी खुशी से” मेजर पंडित ने उत्तर दिया । “उनसे अपना पुराना परिचय ताज़ा करने का अवसर मुझे प्राप्त हो चुका है ।”

राजकुमारी कुसुम, जो अभी तक चुपचाप खड़ी थी, एकाएक हँसने लगी ।

“मेजर पंडित पापा के बड़े पुराने मित्र हैं,” मेजर के हाथ में हाथ

डालकर राजकुमारी ने कहा। “आपको विवाहों और इस प्रकार के अन्य जलसों से बड़ी चिढ़ है। लेकिन चूँकि ये मिस्टर मुकर्जी से परिचित हैं, इसलिए मेरे साथ यहाँ आने को राजी हो गये। इन्हें क्या अब मैं यहाँ से लिवा ले जा सकती हूँ, मिसेज़ मुकर्जी? पापा क्लब में हम लोगों का इन्तज़ार कर रहे होंगे। देर हो रही है।”

स्पष्टतः जामूस को निराशा हुई। मैंने साधारण शिष्टाचार की कोई बात कही और उन दोनों से हाथ मिलाया।

यद्यपि मैं आपके लिए अजनबी हूँ, मिसेज़ मुकर्जी,” मेजर पंडित ने कहा, “मैं यह शुभकामना प्रकट करने की इजाज़त चाहता हूँ कि आप हमेशा सुखी रहें!”

हँसते और बात-चीत करते हुए वे इत्मीनान से बाहर चले गये। जामूस को कोई नया खयाल आया और वह उसकी जाँच करने के लिए चला गया। दुर्दमनीय प्रेरणा के वशीभूत होकर मैं उस मेज़ के समीप वापस आई, जिस पर वह हार रक्खा हुआ था। पहली बार मैंने हार के केस में एक लेबुल नत्थी किया देखा। उस लेबुल पर एक सुपरिचित हस्त-लिपि में लिखा था—‘शेरसिंह की भेंट’।

सहसा मेरे पति तेज़ी से कमरे में आये। वे यात्रा के लिए तैयार हो गये थे। मेरे हाथ में हाथ डालकर वे दरवाज़े की ओर मुड़े।

“चलो, तैयारी करो, प्रिये,” उन्होंने कहा। “वक्त बहुत कम है।”

“पहले मेरे एक सवाल का जवाब दे दीजिए,” मैंने अनुरोध किया। “क्या आप मेजर पंडित को जानते हैं?”

“नहीं, प्रिये,” उन्होंने उत्तर दिया।

मैंने जामूस को आते देखा और पति का हाथ पकड़ लिया। मेरा खयाल है कि मेरा चेहरा देखकर ही वे ताड़ गये होंगे कि कोई बात हो गई है।

“प्यारे,” मैंने धीरे से कहा, “मान लो कि वह हार....”

“क्या, प्रिये?”

“अगर हार चोरी चला गया हो तो?”

“मुझे ज़रा भी अफ़सोस न होगा प्रिये,” उन्होंने कोमल स्वर में

उत्तर दिया। “मैं तो तुम्हें चाहता हूँ जीवन भर के लिए, सदैव के लिए, अनन्तकाल के लिए !”

शेरसिंह

कोई मनुष्य, चाहे वह जितना प्रतिभावान् हो, समस्त परिस्थितियों का पहले ही से अनुमान नहीं लगा सकता। इसलिए, कुछ बातें मुझे हमेशा भाग्य के ऊपर छोड़ देनी पड़ती हैं। मैं यह नहीं तय कर पाया था कि हार गायब कर देने के बाद मैं मुकर्जी के घर से कैसे बच निकलूँगा अगर मेरे वहाँ से बिदा होने के पहले ही चोरी खुल गई तो ? लेकिन किस्मत ने इस बात का फ़ैसला कर दिया। मैं सम्मानपूर्वक निकल आया वहाँ से, उस नेक लड़की की सहायता से, जिसने रेतून के पहाड़ पर मृत्यु की उपेक्षा की थी।

“कहाँ चलिङ्गा ?” उसने पूछा, जब हम उसकी कार में बैठ गये।

“ईडेन गार्डन; अगर आप वहाँ तक चल सकें तो,” मैंने उत्तर दिया।

ट्यूब के द्वारा उसने शोफ़र को आदेश दिया।

तब वह अपनी सीट पर उठैग गई। उसके मुख का भाव मुझे हैरान कर रहा था।

“आप परेशान हैं ?” मैंने पूछा।

“मैं दुखी हूँ,” उसने उत्तर दिया।

“हस्तक्षेप करने के कारण ?”

नकारात्मक भाव से उसने सिर हिलाया।

“यह बात नहीं है। हार आपने चुराया था ?”

“बेशक,” मैंने स्वीकार किया।

“आप चोर हैं ?”

“मैंने कभी यह जाहिर नहीं किया कि मैं चोर नहीं हूँ।”

उसकी आँखों में आँसू छलक आये।

“इस बात का श्रेय आपको अवश्य है,” उसने कहा। “क्या मैं वह हार आपसे खरीद सकती हूँ ?”

“किसलिए ?”

“मिसेज़ मुकर्जी को वापस करने के लिए। क्या आप यह नहीं समझते कि उनके इस नुक़सान की ज़िम्मेदारी एक हद तक मेरे ऊपर भी है ?”

“नेकदिल राजकुमारी !” मैंने कहा, “वह हार आप खुशी से ले लीजिए। उसकी कीमत मुझे नहीं चाहिए। यह चोरी मैंने की थी इसलिए कि इसके अन्दर नाटकीयता थी, वह मुझे बेहद पसन्द आई थी। मैं और जतीन्द्रनाथ मुकर्जी एक-दूसरे के पुराने दुश्मन हैं। एक मुद्दत से वे मेरे पीछे बुरी तरह पड़े हुए हैं। उनकी बीबी से मेरा पुराना परिचय है। मेरे अहंभाव को यह बात पसन्द आई कि मैं वेष बदलकर उनकी दावत में शरीक होऊँ और उनकी बीबी का हार गायब कर दूँ।”

सिर से हैट उतारकर मैंने एक ओर रख दी। फिर मैंने कई बार अपने बालों पर हाथ फेरा, खोपड़ी दबाई और वह हार कुसुम के हाथ में दे दिया। अभी दो क्षण पहले वह रो पड़ने को थी। अब आँखें फाड़कर, आश्चर्य से चकित होकर वह मेरी ओर देख रही थी।

“आपके आश्चर्य की मैं कद्र करता हूँ,” मैंने कहा। “मेरी यह नक़ली खोपड़ी मेरे लिए पेरिस में तैयार की गई थी। बड़ी अद्भुत है यह। अगर जतीन्द्रनाथ जीतेंगे और मैं हारूँगा, तो यह किसी दिन खुफ़िया-विभाग के म्यूज़ियम की शोभा बढ़ायेगी।”

ईडेन गार्डन के सामने पहुँचकर कार रुक गई। कुसुम ने अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाया। उसने मेरी ओर देखा, और मेरे मन में वही भाव उत्पन्न हुआ जिसके कारण उस दिन मुझे उसके घर से भागना पड़ा था।

“मैं समझती हूँ कि आप बड़े भयानक और बड़े अद्भुत आदमी हैं,” उसने कहा। “जो हो, मुझे इस बात की खुशी है कि आपके ऋण का एक अंश मैंने चुका दिया।”

पागलपन मेरे ऊपर सवार हो गया। मैंने उसका हाथ चूम लिया। और मैं अपने मन में हँसा, क्योंकि उसने अपना हाथ खींचने की कोशिश नहीं की।

“पुरा ऋण चुक गया !” मैंने कहा, और एक ओर तेजी से चल पड़ा ।

८

रहस्यपूर्ण विज्ञापन

शेरसिंह

एक कुशल अपराधी की हैसियत से मुझे सदा सबसे अधिक इस बात की फ़िक्र रही है कि मैं समय-समय पर अपने को इस संसार के रंगमंच पर किसी सर्वथा नवीन चरित्र के रूप में उपस्थित करूँ । और उस मौलिक चरित्र की सृष्टि में मैं अपना सम्पूर्ण कौशल लगा देता हूँ । अपनी इसी परिमार्जित कला के द्वारा खुफ़िया-विभाग के धुरन्धर जासूसों को अनेक वर्षों तक चक्रमें दे-देकर बचते रहने में मुझे सफलता मिली है ।

मेजर पंडित की भूमिका में कुछ समय तक सफलतापूर्वक अभिनय कर चुकने के बाद मैंने निश्चय किया कि मैं अपने को एक अन्य चरित्र में परिणत करूँ और उस चरित्र के अनुकूल वातावरण तथा परिस्थिति की रचना करूँ । मैंने टैगोर स्ट्रीट के एक मकान में रहने के लिए चन्द कमरे ले लिये, साइमन स्क्वायर में एक छोटा-सा दफ़्तर क़ायम किया । दफ़्तर के दरवाज़े पर पीतल का प्लेट लगवा दिया, विज़िटिंग कार्ड, पोस्टकार्ड, लेटर-पेपर और लिफ़ाफ़े छपवा लिये; और उस महान् नगर में अपने को ‘मिस्टर रतन सी० गामर, जनरल मचेंट और एजेन्ट,’ के नाम से घोषित किया । यह कहना उचित नहीं कि मेरी इन कार्रवाइयों से व्यवसाय के केंद्र में कोई विशेष प्रभाव पड़ा । एक प्रसिद्ध बैंक में मैंने पन्द्रह हजार रुपये जमा कर दिये । मैं नित्य अपने नाम कई पत्र लिखता, उन्हें अपने दफ़्तर में खोलता और उनके उत्तर लिखता, ग्यारह बजे दफ़्तर से निकलकर कुछ समय तक इधर-उधर घूमता, दोपहर

के समय एक रेस्त्राँ में भोजन करता, और बाक़ी दिन रायल लाइब्रेरी के सुरक्षित एकान्त में काट देता ।

इन दिनों मुझे एक नया शौक़ लग गया था । सांकेतिक भाषा के अध्ययन में मुझे मज़ा आने लगा । मैं जानता था कि समाचार-पत्रों में अकसर ऐसे विज्ञापन प्रकाशित होते हैं जिनका वास्तविक अर्थ उनके स्पष्ट अर्थ से सर्वथा भिन्न होता है । एक पन्द्रह-बीस शीट कागज़ नष्ट करने और घंटों दिमाग़ लड़ाने के बाद मैं निम्न-लिखित पंक्तियों का वास्तविक अर्थ निकाल लेने में सफल हुआ —

“पाल ! जो कुछ तुम चाहते हो वह १७५२ में मिल सकेगा । विहसित आँखें तुम्हें आदेश देती हैं कि तुम हिम्मत न हारो । राबर्ट को साथ लाना ।”

उपर्युक्त विज्ञापन के केवल एक शब्द का अर्थ मुझे मालूम था । इसलिए मेरा मन विजय-गर्व से भर गया, जब उसके अन्दर छिपा हुआ निम्नलिखित अर्थ मैंने खोज निकाला :—

“हरे वस्त्र पहने हुए स्त्री डिनर का सूट पहने हुए पुरुष के साथ । रैफ़ेल के रेस्त्राँ में, सोमवार के दिन, रात में आठ बजे । कागज़ात लायेंगे । रुपये लाना ।”

मुझे दिलचस्पी मिली इस सन्देश में । अगर ये कागज़ात उस व्यक्ति के लिए मूल्यवान् थे जिसके लिए निमंत्रण था, तो सम्भवतः वे मेरे लिए भी मूल्यवान् साबित हो सकते थे । मैंने तुरन्त निश्चय किया कि सोमवार के दिन नियत समय पर रैफ़ेल के रेस्त्राँ में हरे वस्त्रोंवाली उस स्त्री और डिनर-सूटवाले उस पुरुष से मैं अवश्य भेंट करूँगा, यद्यपि वस्त्र-सम्बन्धी उनकी रुचि मुझे पसन्द नहीं आई; केवल एक कठिनाई मेरे सामने थी, और वह थी यह, कि कहीं उस व्यक्ति से मेरी मुठभेड़ न हो जाय जिसके लिए वास्तव में यह विज्ञापन निकाला गया था । इससे बचने की एक तरकीब मुझे सूझ गई । दूसरे दिन प्रातःकाल मैंने उसी पत्र में यह विज्ञापन छपवा दिया :—

“रैफ़ेल के रेस्त्राँ में । आठ बजे नहीं सात बजे ।”

परिणाम मैंने भाग्य के ऊपर छोड़ दिया ।

सोमवार की रात को पौने सात बजे मैं उस रेस्त्रां में पहुँच गया। मैंने एक मेज और तीन आदमियों के लिए सर्वोत्तम भोजन का ऑर्डर दे दिया। ज्यों ही मैं बाहर के कमरे में पहुँचा, मैं अपने मेहमानों को पहचान गया। पुरुष गेहुँए रंग का बलिष्ठ और लम्बा चौड़ा था और उसके शरीर पर एक भद्दा डिनर-सूट था। उसके सिर के बिखरे हुए बाल अधपके थे, मूँछें घनी थीं और आँखें खूब उभरी हुई। स्त्री गोरी थी, हरे रंग के योरपीय वस्त्र पहने थी, और रंग-सम्बन्धी उसकी रुचि भद्दी थी। वह एक ढंग से सुन्दर थी या कभी रही होगी, और उसके बाल अब भी भूरे थे। मुझे इधर-उधर ताकते देखकर वे मेरी ओर घूरने लगे। तुरन्त उनके समीप जाकर मैंने उनसे हाथ मिलाया।

“मैंने डिनर का ऑर्डर दे दिया है,” मैंने कहा। “आइए, चलिए।”

बिना किसी हिचक के उन लोगों ने स्वीकार कर लिया उस परिस्थिति को, और सन्तोष की दृष्टि से देखा बर्फ़ में रक्खी हुई सुनहरे कागवली बोतल को।

“मुझे कहना पड़ता है कि आप वैसे आदमी नहीं हैं जैसे आदमी से यहाँ भेंट होने की हमें आशा थी, ठीक है न वॉयलेट?” उस पुरुष ने कहा।

मैं मुस्कराया।

हम बैठ गये, और लगे एक-दूसरे का अध्ययन करने। स्त्री ने मेरी टाई और मेरे मोतियों के बटन को सराहना की दृष्टि से देखा। मैंने यह नियम बना लिया है कि ठीक ढंग के वस्त्र मेरे पास हमेशा रहें।

“मुझे विश्वास है कि एक भद्र व्यक्ति से व्यवसाय की बात करना अधिक रुचिकर होता है,” मेरी ओर तिरछी नज़र से देखकर स्त्री ने कहा। “उससे इतमीनान के साथ बात की जा सकती है।”

“काकटेल्स भी हैं!” उसके साथी ने खुश होकर कहा, जब चाँदी की तश्तरी लेकर शराब लानेवाला वेटर आया। “आप बड़ी खातिर कर रहे हैं हमारी, इसमें कोई शक नहीं।”

शराब का गिलास हाथ में लेकर, सिर झुकाकर मैंने उनके स्वास्थ्य की कामना की। शिष्टतापूर्ण खामोशी ही इस समय मुझे अपनी भूमिका के अनुरूप जान पड़ती थी। लेकिन मुझे यह भय सता रहा था कि काम की बात होने से पहले ही कहीं वह दूसरा व्यक्ति, जिसका स्थान मैंने ले लिया था, आ न जाय। इसलिए ज्यों ही शराब अपना असर दिखाने लगी मैंने दूसरी बोतल लाने की आज्ञा दी, और मेज पर आगे झुका।

“कागजात आप लोग लाये हैं?” मैंने पूछा।

“क्या आप यह समझते हैं कि हम लोग आप जैसे भद्र व्यक्ति को बेवकूफ बनाने आये हैं?” भेद-भरी दृष्टि से मेरी ओर देखकर स्त्री ने कहा। “लेकिन मैं चाहती हूँ कि आप यह समझ लें, मिस्टर—मिस्टर—”

“जैकोब,” मैंने बतलाया।

“मिस्टर जैकोब,” स्त्री ने कहा, “मैं जान के खिलाफ कोई कार्रवाई न करती; अगर वह ठीक तरह चलता जाता। हम दोनों की निभ नहीं सकी, यही है मामला। जान भारतीय ईसाई है और मैं एंग्लो-इण्डियन हूँ। मैं उसे नेक आदमी समझती थी, और इसी लिए मैंने उससे शादी की थी। उससे शादी करने के कारण मैं अपने हो समाज की दृष्टि में गिर गई; लेकिन कभी मैंने इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं की। वह शराबी नहीं था, और किसी दूसरी स्त्री की तरफ कभी मैंने उसे ताकते भी नहीं देखा। फिर भी मेरे जैसे स्वभाववाली स्त्री के योग्य वह नहीं था।”

जान के प्रति मुझे क्षणिक सहानुभूति हुई।

“जब उसने तलाक़ का दावा दायर किया,” उसने फिर कहा, “तब मेरी दशा शोचनीय हो गई, मुझे बड़ा आघात लगा। यह बात तुम अच्छी तरह जानते हो, पीटर?”

“यही बात तो मेरे साथ भी हुई थी,” वह गुरगिया। “मैं उसका सिर तोड़ देता; अगर मैं यह समझता कि वह हम लोगों के पीछे जासूस लगा देगा।”

“सिर तो उसका टूटेगा ही अगर वह सावधान नहीं हो जायेगा और वैसी ही हरकतें करता रहेगा जैसी अब तक करता रहा है,” स्त्री ने कहा। “वह दूसरों के गले दबाकर धन ँटेगा, और मैं भिखारिन बनी फिरेगी ! यह नहीं चल सकता। तलाक़ हो जाने से क्या होता है ? मैं उसे दिखा दूंगी कि मैं कौन हूँ।”

“हाँ, तो ज़रा कागज़ात के बारे में बात हो जाय ?” मैंने कहा।

स्त्री ने अपना पुराना रद्दी हैंड-बैग खोला और कई क्षण उसके अन्दर देखती रही।

“वे यहाँ हैं, मिस्टर जैकोब,” सन्तोषपूर्ण स्वर में उसने कहा। “अभी आपको मिल जायेंगे।”

“इस शर्त पर कि आप रुपये देने को तैयार हों,” पुरुष ने कहा। “नक़द देना होगा, और भगड़े की कोई बात रहने नहीं पायेगी।”

“तैयार हो ? बेशक देने को तैयार हैं ये,” तीक्ष्ण-स्वर में स्त्री ने कहा। “तैयार न होते, तो यहाँ आते ही क्यों ? ठीक कह रही हूँ या नहीं, मिस्टर जैकोब ?”

“बिलकुल ठीक,” मैंने उत्तर दिया। “मैं एक काफ़ी बड़ी रक़म अपने साथ लाया हूँ। अब सिर्फ़ एक बात मुझे तय करनी है, और वह यह है कि आपके कागज़ात खरीदे जाने के क़ाबिल हैं या नहीं।”

“आप इस तरह बात कर रहे हैं गोया यह मामला आप ही के ऊपर निर्भर करता है,” स्त्री ने कहा।

“निर्भर करे या न करे, मुझे सावधानी से काम तो करना चाहिए,” मैंने उत्तर दिया। “मेरा खयाल है कि यह बात आप आसानी से समझ सकती हैं।”

उसका साथी भदे ढंग से हँसने लगा।

“आपके लिए भी इसमें नोच-खसोट की काफ़ी गुंजाइश रहेगी,” हँसकर उसने कहा।

“बस, रहने दो, सैम,” स्त्री ने असन्तोषपूर्ण स्वर में कहा। “हम यहाँ काम से आये हैं, मज़ाक़ करने नहीं।”

मैं मतलब की बात पर आया।

“मैं समझता हूँ,” मैंने कहा, “कि अब इस बात का समय आगया है कि आप अपने कागजात मुझे ज़रा एक नज़र देखने दें।”

स्त्री ने अपने साथी की ओर देखा। सिर हिलाकर उसने रज़ामन्दी प्रकट की।

“जहाँ तक मैं समझता हूँ इसमें कोई बुराई नहीं है,” उसने कहा। “सारी बातें उनमें हैं। जान और उसके पूँजीवादी मित्र की मरम्मत करने के लिए उनमें बहुत काफ़ी मसाला है।”

स्त्री ने अपना हँडबैग खोला, और उसमें से टाइप किये हुए दस-बारह कागज़ निकाले जो मैले थे और कुछ फट भी गये थे।

“पहले इसे देखिए,” स्त्री ने कहा। “यह उस भाषण की नक़ल है जो पिछले नवम्बर में मिल-मजदूरों की सार्वजनिक सभा में देने के लिए जान ने तैयार किया था।”

“पिछले नवम्बर में,” मैंने दोहराया, कुछ और सूचना पाने की आशा में।

“उस सभा में जो हड़ताल करने के बारे में निश्चय करने के लिए बुलाई गई थी,” स्त्री ने कुछ बेसब्री से कहा।

मैंने नज़र दौड़ाई उन टाइप किये हुए पृष्ठों पर। उस भाषण में मिल-मजदूरों से हड़ताल करने की जोरदार अपील की गई थी, और उन्हें आश्वासन दिया गया था कि यदि वे पूर्ण हड़ताल करने में सफल हुए तो एक मास के अन्दर ही उन्हें विजय अवश्य प्राप्त होगी और मिल-मालिक मजबूर होकर उनकी कुल माँगें स्वीकार कर लेंगे। उन्हें इस बात का भी आश्वासन दिया गया था कि उनके साथ ही रेलवे और खानों के श्रमजीवी भी हड़ताल कर देंगे, और उन सबके सम्मिलित आन्दोलन से सरकार भी एक बार हिल उठेगी। भाषण के अन्त में अतिशयोक्ति-पूर्ण क्रान्तिकारी भावों से भरी हुई पंक्तियाँ थीं, और एक सादे पृष्ठ पर अनेक सुप्रसिद्ध मजदूर-नेताओं ने उस भाषण से पूर्ण सहमति प्रकट की थी।

“यह भाषण...” मैंने प्रश्नसूचक स्वर में कहना शुरू किया, क्योंकि मामला अब भी मेरी समझ में नहीं आया था।

“दिया नहीं गया,” पुरुष ने मेरा जुमला पूरा कर दिया। “वह सब तो आप जानते ही हैं। जान उस सभा में शेर के बजाय मेमना बना हुआ पहुँचा। मंच पर उपस्थित होकर उसने कहा कि हड़ताल के लिए वह समय उपयुक्त नहीं है। इतना ही नहीं, दूसरे दिन मजदूरों को भुलावे में डालकर उसने मिल-मालिकों की शर्तें स्वीकार कर लेने के लिए उन्हें मजबूर कर दिया।”

“यह सन्तोषजनक है जहाँ तक इसकी जरूरत है,” सतर्कतापूर्वक मैंने कहा। “और आगे...”

“अब इसे देखिए,” स्त्री ने विजयसूचक स्वर में कहा। “यह राजा राखीपूर का पत्र है जो जान को उसी दिन सबेरे प्राप्त हुआ था। राजा साहब स्वयं कई मिलों के स्वामी हैं और मिल-मालिक संघ के अध्यक्ष भी।”

मैंने वह पत्र पढ़ा। अब मैंने समझा कि जान और कोई नहीं प्रसिद्ध मजदूर-नेता और व्यवस्थापिका सभा का सदस्य मिस्टर जान सोमर ही है। पत्र में लिखा था :—

“प्रिय मिस्टर जान सोमर,

एक विशेष सन्देशवाहक के द्वारा यह पत्र आपकी सेवा में भेज रहा हूँ, और आशा करता हूँ कि यह सुरक्षित ढंग से आपको प्राप्त हो जायेगा। इस पत्र से जिस बात का सम्बन्ध है वह मिल-मालिक संघ के द्वारा तय नहीं की जा सकती। लेकिन मैं और सर अर्जुन धिनेरिया उस वार्ता का समर्थन करते हैं जो उस दिन मेरे और आपके बीच हुई थी, और हम दोनों कल आपको एक लाख रुपये इस शर्त पर देने को तैयार हैं कि जो हड़ताल कल होनेवाली है वह न होने पाये। इस रकम को आप जिस तरह चाहें खर्च कर सकते हैं।

भवदीय,

महेन्द्रविक्रमसिंह,

राजा राखीपूर।

पुनश्च :—आपके और हमारे हित में यह अच्छा होगा कि आप इस पत्र को तुरन्त जला डालें।”

मामला अब बिलकुल साफ़ हो गया। मैं सोचने लगा कि काफ़ी रुपये साथ लाया हूँ या नहीं।

“राजा साहब की सलाह मान कर आपके पति ने यह पत्र जला क्यों नहीं डाला?” कौतूहलवश मैंने पूछा।

स्त्री हँस पड़ी। विकट मक्कारी भरी थी उसकी हँसी में।

“जान ने इसे फाड़ डालने का आदेश मुझे दिया था,” उसने उत्तर दिया। “और उसने मुझे इसे फाड़ते भी देखा था। लेकिन उन दिनों मुझे महाशय जान के ऊपर संदेह होने लगा था; इसलिए दिखलाने के लिए मैंने एक गश्ती चिट्ठी फाड़ डाली, और इसे रख छोड़ा।”

“खूब सफ़ाई दिखाई तुमने,” मुस्कराकर उसके साथी ने कहा। “बेचारे जान की मरम्मत का सामान कर दिया तुमने।”

“बहुत ठीक किया मैंने,” अपने शीशे में मुख देखते हुए स्त्री ने कहा। “मरम्मत की उसे बड़ी ज़रूरत है।”

ज़रा देर तक खामोशी रही। अपनी कुर्सी मेज़ के ज़रा और निकट खींचकर पुरुष ने व्यावसायिक ढंग से मुझे सम्बोधित किया।

“अच्छा, मिस्टर जैकोब या जो कुछ आपका नाम हो,” उसने कहा “अब यह मामला तय हो जाना चाहिए। आपको उस भाषण की नक़ल मिल गई जो अपने साथियों के इच्छानुसार जान सोमर मिल-भजदूरों की उस सभा में देनेवाला था। आपको राजा राखीपूर का वह पत्र भी मिल गया जिससे यह पूरी तरह साबित हो जाता है कि जान ने अपना वह प्रस्तावित भाषण क्यों नहीं दिया। और...” मेज़ पर घूसे जमाता हुआ वह कहता गया, “अब मैं आपको यह बतला देना चाहता हूँ कि एक लाख रुपये जान को दूसरे दिन संध्या के समय उसके क्लब में मिल गये, और उसने ये रुपये अपने नाम चार विभिन्न बैंकों में जमा कर दिये। राजा साहब के खत के पुस्त पर पेंसिल से उन बैंकों के नाम लिख दिये गये हैं।”

“और जब मैंने उससे प्रस्ताव किया कि वह मुझे सौ रुपया प्रति मास गुज़ारे के तौर पर दिया करे,” स्त्री ने क्रोधपूर्ण स्वर में कहा, “तो उसने मेरा पत्र अपने वकीलों के द्वारा मेरे पास वापस कर दिया।”

मैं अपनी कुर्सी पर पीछे उठग गया। मुझे अपना रास्ता दिखाई देने लगा।

“अगर यह सौदा तय हो जाय, और आपके ये कागजात मैं आपसे खरीद लूँ,” मैंने कहा, “तो इन्हें किस तरह इस्तेमाल करने की आशा आप मुझसे करेंगी?”

“आप जिस तरह चाहें इस्तेमाल करें,” स्त्री ने उत्तर दिया। “मुझे तो सिर्फ़ इस बात से सरोकार है कि कीमत काफ़ी मिले।”

“हम जानते हैं कि आप किसका प्रतिनिधित्व कर रहे हैं,” पुरुष ने मुस्कराकर कहा। “अगर यह सौदा पट गया, तो बहुत जल्द ये कागजात आर्थर सीमोर के हाथ में पहुँच जायेंगे।”

“तो आप कोई शर्त नहीं लगाना चाहतीं?” मैंने पूछा।

“नहीं,” स्त्री ने तीव्र स्वर में कहा। “जान से अब मुझे कोई सरोकार नहीं रहा। वह कुत्ता है कुत्ता। अगर ये कागजात आप ‘नैशनल मिरर’ में प्रकाशित करा दें, तो भी मुझे कोई परवाह न होगी।”

“तब तो अब सिर्फ़ कीमत तय होना बाक़ी रह गया है,” मैंने कहा।

नशे की सुर्खी गायब हो गई मेरे मेहमानों के चेहरे से। क्षणिक उदारता के स्थान पर आ गया स्वाभाविक लोभ का भाव। उन्हें भय था इस बात का कि कहीं वे कम न माँग बैठें और इस बात का भी कि ज्यादा माँगने से कहीं मैं बहक न जाऊँ।

“जान इन कागजात के लिए एक अच्छी रकम दे सकता है,” स्त्री ने धीरे से कहा।

“लेकिन उसके हाथ तो आप इन्हें बेचना नहीं चाहतीं,” मैंने कहा।

“नहीं, हर्गिज़ नहीं,” उसने स्वीकार किया। “देखिए, मिस्टर जैकोब, आपसे इनके लिए मैं दस हजार रुपये लूंगी।”

इतने ही रुपये मैं अपने साथ भी लाया था। मैंने चुपचाप दस हजार के नोट मेज़ पर गिन दिये और कागजात अपनी जेब में रख लिये। दोनों को आश्चर्य हुआ इस तरह इतनी आसानी से सौदा तय हो जाने पर। स्त्री ने नोट अपने हैंड-बैग में रख लिये और मैंने बिल चुका दिया।

उन लोगों से बिदा लेने के लिए जब मैं उठातब मैंने देखा कि एक अघेड़ व्यक्ति दरवाजे के समीप खड़ा हुआ हमारी ओर हैरानी की दृष्टि से देख रहा है। मैं तुरन्त समझ गया कि यही है वह व्यक्ति जिसका स्थान मैंने इस मामले में छीन लिया है।

“यह सौदा हँसी-खुशी से तय हो गया,” मैंने कहा। “अब आप लोग मुझे इजाजत दें। और लोग मेरा इन्तज़ार कर रहे होंगे।”

अपना बैग बायें हाथ से पकड़कर स्त्री ने दाहिना हाथ मेरी ओर बढ़ाया।

“आपने हमारे साथ बड़ी शराफ़त का वर्ताव किया है, मिस्टर— मिस्टर—क्या बतलाया था आपने अपना नाम?”

“नाम की चिन्ता न कीजिए,” मैंने उत्तर दिया, “खासकर इस वजह से कि वह फ़र्ज़ी था और इस समय के लिए रख लिया गया था। नमस्कार आप दोनों को!” और मैं चलता बना।

बाहर वर्षा हो रही थी; लेकिन मैं चलता गया। बड़ी ज़रूरत महसूस हो रही थी मुझे उस समय ताज़ी हवा की। मुझे घृणा हो गई थी उस रेस्त्राँ के वातावरण से, अपने उन मेहमानों के चरित्र से, उस निकृष्ट सौदे से। मैं हँसने लगा धीरे से। यह विचित्र बात थी कि मुझ जैसे हृदयहीन अपराधी को इस मामूली दुष्कृत्य से अरुचि हो। मैंने चोरियाँ की थीं, डाके डाले थे, हत्याएँ की थीं, लेकिन इस तरह का काम मुझे पहले कभी नहीं करना पड़ा था। खैर, इस मामले का जो अपमान-जनक पहलू था वह समाप्त हो चुका था। अब इसे आगे बढ़ाने से मेरी स्वाभाविक निर्दयता की भावना को सन्तुष्टि प्राप्त होने की आशा थी। अपने निवास-स्थान पर पहुँचकर, विह्वली पीकर मैं अपनी योजना तैयार करने लगा। मैं समझ गया कि मिस्टर जान सोमर और राजा राखीपूर की इज़्जत अब मेरे हाथ में है। और यह असम्भव था कि दस हज़ार की जो पूँजी मैंने इस काम में लगाई थी वह बेकार जाय और उन दोनों के द्वारा मुझे काफ़ी मुनाफ़ा न हो। इसी समय एकाएक मुझे एक नई बात सूझ गई। मैंने तुरन्त मिस्टर दलाल को एक लम्बा पत्र लिखा जिसमें कुछ महत्वपूर्ण आदेश थे।

दूसरे दिन प्रातःकाल में अपने दफ्तर में उपस्थित हुआ और मिस्टर दलाल के सन्देश की प्रतीक्षा करने लगा। दो घंटे के बाद टेलीफोन की घंटी बजी। मिस्टर दलाल बोल रहे थे। सदैव की भाँति इस समय भी उन्होंने मुझे उसी तरह कायदे के साथ सम्बोधित किया जिस तरह वे अपने अन्य सम्मानित मुवक्किलों को सम्बोधित करते थे। यह प्रकट था कि वे परेशान थे।

“आपके आदेश मैंने पूरे कर दिये, मिस्टर—गामर,” उन्होंने कहा। “लेकिन मुझे यह कहना पड़ता है कि जो काम आपने शुरू किया है वह इतना जबरदस्त है कि मैं हैरान हो गया हूँ।”

“ठीक-ठीक बतलाइए कि आपने क्या किया है ?” मैंने कहा।

“मैंने आपके प्रतिनिधि की हैसियत से विभिन्न स्टाकब्रोकरों के द्वारा महेन्द्र कॉटन मिल्स के बीस हजार शेयर साठ रुपये प्रतिशेयर के हिसाब से बेचे हैं। सौभाग्यवश इस प्रकार के शेयरों के मूल्य में वृद्धि होने के लक्षण दृष्टिगोचर नहीं हो रहे हैं।”

“बहुत ठीक,” मैंने कहा। “इस समय मूल्य क्या है ?”

“आपकी कार्रवाइयों के कारण मूल्य स्वभावतः कुछ गिर गया है,” मिस्टर दलाल ने उत्तर दिया। “जिन स्टाकब्रोकर के दफ्तर में मैं इस समय मौजूद हूँ उनकी राय है कि इस बात का मैं कुछ खयाल न करूँ। उनका खयाल है कि दिन में साधारण स्थिति फिर उत्पन्न हो जायेगी।”

“ठीक है। हिसाब किस दिन होगा ?”

“चौथी तारीख को। आपकी ओर से मैंने जिन ब्रोकरस से सौदा किया है वे यह जानना चाहते हैं कि यदि प्रत्येक शेयर पर एक-चौथाई मुनाफ़ा दिखाया जा सके तो क्या आप अपनी कार्रवाई अगले चन्द दिनों के अन्दर बन्द कर देंगे ?”

“हर्गिज नहीं,” मैंने जोर देकर कहा। “यह कार्य इसी तरह होता रहना चाहिए जब तक मैं नया आदेश न दूँ।”

मैंने रिसीवर रख दिया, बैग में हमेशा की तरह नमूने की चीजें भरीं और दफ्तर से निकलकर रेले स्ट्रीट की ओर रवाना हुआ। आषट् घंटे में

मैं राजा राखीपूर की कोठी पर पहुँच गया। बटलर ने मुझे सूचना दी कि राजा साहब अन्दर मौजूद तो जरूर हैं, लेकिन अगर भेंट की बात पहले से तय नहीं हुई है तो उनसे मिल सकना असम्भव है। बटलर को दो रुपये देकर मैं वेंटिंग रूम तक पहुँचा। चश्माधारी सेक्रेटरी को मैंने समझाया कि स्वयं राजा साहब के हित में यह आवश्यक है कि वे मुझसे भेंट करना स्वीकार करें। अन्त में, मैं उनके सामने उपस्थित किया गया।

“आपके लिए मैं क्या कर सकता हूँ—मिस्टर गामर?” मेरे कार्ड पर दृष्टि डालकर उन्होंने पूछा।

मैं अपने वेष-परिवर्तन की परीक्षा करना चाहता था। कमरे में काफ़ी रोशनी थी। लेकिन यह स्पष्ट हो गया कि राजा साहब यह नहीं जान सके कि कभी उनसे मेरी भेंट हुई थी। वे मेरा सम्बन्ध उस शोफ़र तथा लकड़हारे से नहीं जोड़ सके जिसने उन्हें रेतून के पहाड़ से टाइफ़ून तक पहुँचाया था।

“मैं एक बड़े गम्भीर मामले के सम्बन्ध में आपसे भेंट करने आया हूँ, राजा साहब,” मैंने कहा, “और मैं यह चाहता हूँ कि आपको किसी तरह की ग़लतफ़हमी न हो। मैं आपसे एक पैसा भी नहीं चाहता। इसके विपरीत मैं आपको आर्थिक हानि उठाने से बचाना चाहता हूँ। लेकिन मेरी इस भेंट का एक गम्भीर पहलू भी है।”

वे टकटकी बाँधे हुए मेरी ओर देखते रहे।

“कहते चलिए,” तीक्ष्ण स्वर में उन्होंने कहा।

“पिछले नवम्बर में,” मैंने कहा, “मिलों में जो हड़ताल होने जा रही थी उसे आपने रोका था, और एक प्रसिद्ध नेता को रिश्वत देकर अपने को करोड़ों की हानि उठाने से बचाया था। इस काम में एक दूसरे मिल-मालिक आपके साथ शरीक थे। मुझे ज्ञात हुआ है कि उन महाशय का इधर देहान्त हो गया।”

विचित्र भाव से राजा राखीपूर मेरी ओर देख रहे थे। मुझे एका-एक ज्ञात हुआ कि उनकी आँखें अगणित भुर्रियों से घिरी थीं और उनके चेहरे का रंग बड़ा भद्दा था। उनकी आवाज़ लड़खड़ा गई, जब उन्होंने ज़बान खोली।

“यह सब क्या कह रहे हैं आप ?”

मैंने जेब से दोनों कागज़ निकाले और उनके ज़रा और निकट गया ।

“यह है,” मैंने कहा, “सोमर का वह भाषण जो वह देनेवाला था । इसमें गज़दूरों को हड़ताल करने की सलाह दी गई थी, और इस पर अन्य मजदूर नेताओं के हस्ताक्षर हैं । और यह है सोमर के नाम आपका वह खत जिसमें हड़ताल रोकने के लिए आपने उसे एक लाख रुपये देने का प्रस्ताव किया था । और यह रकम उसे दूसरे दिन संध्या के समय उसके क्लब में भेंट की गई थी ।”

राजा साहब के चेहरे से स्वाभाविक शान का भाव गायब हो गया । जान पड़ा जैसे वे बेहोश हो जायेंगे ।

“या खुदा !” उन्होंने कहा । “सोमर ने क़सम खाकर कहा था कि यह खत उसने जला डाला !”

“उसने अपनी स्त्री को इसे जला डालने का आदेश दिया था । लेकिन स्त्री ने अपना काम सिद्ध करने के लिए इसे रख छोड़ा था । कुछ महीने हुए उसके पति ने उसे तलाक़ दे दिया । यह है उसका बदला । उसने उस भाषण की नक़ल और आपका पत्र मेरे हाथ बेच दिया है । इस मामले की अन्य बातें भी मुझे मालूम हैं ।”

जेब से रूमाल निकालकर राजा साहब अपना मत्था पोंछने लगे । उन्हें रास्ता सूझने लगा ।

“ये कागज़ात मैं आपसे ख़रीद लूँगा,” उन्होंने प्रस्ताव किया ।

“राजा साहब,” मैंने उत्तर दिया, “मैं ठग नहीं हूँ ।”

“रुपये आपको बड़े सुरक्षित ढंग से मिल जायेंगे ” उन्होंने आग्रहपूर्वक कहा । “किसी को कानो-कान ख़बर न होगी । पुलिस को मैं हर्गिज़ इत्तला न दूँगा । मैं इसे साफ़ सौदा समझूँगा । मूल्य बतलाइए । मैं नीच नहीं हूँ ।”

“और मैं भी जैसा पहले कह चुका हूँ, ठग नहीं हूँ” मैंने कहा । “मैं निश्चय कर चुका हूँ कि इन कागज़ात को समाचारपत्रों में प्रकाशित कराऊँगा ।”

राजा साहब उछलकर खड़े हो गये । “इससे आपको क्या लाभ होगा ?” भरपूर हुए स्वर में उन्होंने पूछा ।

“शायद अधिक आर्थिक लाभ तो न होगा,” मैंने स्वीकार किया । “हाँ, एक पत्र ऐसा है जो इन कागजात के लिए मुझे एक काफ़ी बड़ी रकम दे देगा ।”

“सुनिश्चित,” प्रभावपूर्ण स्वर में उन्होंने कहा, “कोई पत्र आपसे ऐसी उदारता से सौदा करने को तैयार न होगा जितनी उदारता से सौदा करने को मैं तैयार हूँ । इन कागजात का प्रकाशित किया जाना कदापि उचित नहीं है । अगर यह बात जाहिर हो गई कि मैंने सोमर को हड़ताल रुकवाने के लिए रिश्वत दिया था, तो मजदूर-संघ कल ही मेरे खिलाफ़ लड़ाई छेड़ देगा । एक मजदूर भी मेरी मिलों में काम न करेगा । इसके अलावा मेरी पार्टी बदनाम हो जायेगी । आर्थिक हानि तो होगी ही, मेरा राजनैतिक जीवन भी नष्ट हो जायेगा । मान जाइए, मिस्टर गामर, आप व्यवसायी-से मालूम होते हैं । व्यवसाय की बात कीजिए । मैं आपको अभी एक लाख रुपये का चेक देने को तैयार हूँ ।”

“राजा साहब !” मैंने उत्तर दिया, “अगर मैं आपके इच्छानुसार ऐसा सौदा करूँ तो यह भयानक अपराध होगा । मेरा अन्तःकरण इसके विरुद्ध है । समाचार-पत्रों से मैं साफ़ और खुला सौदा कर सकता हूँ । आपके राजनैतिक जीवन की रक्षा मैं नहीं कर सकता । हाँ, यह जरूर कर सकता हूँ कि आपकी आर्थिक हानि कुछ कम हो । मैं आपको चार दिन का समय देता हूँ । इस बीच मैं आप महेन्द्र मिल्स लिमिटेड के अपने जितने शेयर निकाल सकें निकाल डालें ।”

“तो आप वादा करते हैं कि चार दिनों तक कुछ न करेंगे ?”

“हाँ, मैं वादा करता हूँ ।”

अपनी कुर्सी पर बैठकर वे मत्था पोंछने लगे ।

“खैर, कम से कम यह अवकाश तो है ही,” उन्होंने कहा । “अब इस मामले के सम्बन्ध में एक दूसरे को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए, मिस्टर गामर ।”

“हम एक दूसरे को अच्छी तरह समझ चुके हैं, और इससे अधिक समझ नहीं सकते।”

“खैर,” उन्होंने उत्तर दिया। “मैं यह चाहता हूँ कि तिड़ीबाजीवाला विचार आप अपने दिमाग से निकाल दें। आपके पास एक चीज बेचने लायक है, और मैं उसे खरीदना चाहता हूँ। यह एक सीधा-सादा व्यावसायिक सौदा है, और हर व्यावसायिक सौदे का उद्देश्य यही होता है कि आप जो कुछ बेचना चाहते हैं उसकी अधिक से अधिक कीमत आपको मिले। मैंने एक लाख कहा था। मुझे यह एक काफ़ी अच्छी रकम मालूम हुई; लेकिन अगर जरूरत हो तो मैं इससे अधिक दे सकता हूँ। देखिए, यहीं रुकिए और मेरे साथ लंच खाइए। इसके बाद शराब और सिगार पीते हुए हम इस मामले पर विचार करेंगे।”

“आपका खाना खाना मेरे लिए जायज़ न होगा,” कोट के बटन बन्द करते हुए मैंने कहा। “जैसा-वादा कर चुका हूँ, आपको चार दिन का मौका मिलेगा।”

अपना पता बता देने का अनुरोध करते हुए मेरे पीछे-पीछे दरवाज़े तक गये। उन्हें इस बात का इतना विश्वास था कि मैं अपना निश्चय बदल दूंगा कि उन्होंने अपने सेक्रेटरी को गली में मेरे पीछे दौड़ाया। अन्त में तीसरे दिन संध्या के समय भेंट करने का वादा करके मैंने उससे पीछा छुड़ाया। यह वादा मैंने एक क्षणिक दुर्बलता के वशीभूत होकर कर दिया। मुझे खयाल आगया कि अगर कहीं संयोगवश उस दिन यहाँ कुसुम से भेंट हो गई, तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।

दोपहर के भोजन के बाद मैं मिस्टर जान सोमर के मकान पर हाज़िर हुआ। रद्दी मकान था वह। एक गंदा सेवक मुझे ऊपर के एक कमरे में लिवा ले गया। चन्द मिनट के बाद मिस्टर सोमर पाइप पीते हुए अन्दर तशरीफ़ लाये। अपने महत्त्वपूर्ण पद के अनुरूप आप मिलनसारी और खुशमिज़ाजी के भाव धारण किये हुए थे।

“मैं नहीं जानता कि आप कौन हैं,” उन्होंने कहा, “लेकिन तशरीफ़ रखिए। मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?”

“मैं आपके लिए बुरी खबर लाया हूँ, मिस्टर सोमर।”

“अच्छा !” दाँतों से पाइप दाबे हुए और मेरी ओर घूरने हुए उन्होंने कहा। “आखिर आप हैं कौन ? आपका नाम तो मुझे परिचित नहीं मालूम होता।”

“इससे कोई मतलब नहीं,” मैंने उत्तर दिया। “आप चाहें तो मुझे एक पत्रकार कह सकते हैं। आज के चौथे दिन एक ऐसी बात होनेवाली है जो आपके लिए अप्रिय सिद्ध होगी। चूँकि उसके लिए एक हद तक मैं भी जिम्मेदार हूँ, इसलिए मैं आपको चेतावनी देने आया हूँ।”

“आप मुझे बेकार तंग कर रहे हैं,” उन्होंने बेचैन होकर कहा।

“हर्गिज नहीं,” मैंने उत्तर दिया। “मामला यों है। मेरे कब्जे में आपके उस भाषण की नक़ल है जो गत नवम्बर में आप मिल-मजदूरों की सार्वजनिक सभा में देनेवाले थे, और मेरे पास राजा राखीपूर का वह पत्र भी है जिसमें हड़ताल रोकने के लिए उन्होंने आपको एक लाख रुपये देने का प्रस्ताव किया था। मैं यह भी जानता हूँ कि यह रकम दूसरे दिन आपको आपके क्लब में मिल गई थी, और मुझे उन बैंकों के नाम भी मालूम हैं जिनमें ये रुपये आपने जमा किये थे।”

सोमर भी वैसा ही कायर था जैसे राजा साहब थे। लेकिन उसने अपनी कायरता दूसरे ढंग से प्रदर्शित की।

“भूठा, मक्कार, शोहदा !” वह चिल्ला उठा। “ऐसा भूठा किस्सा गढ़कर यहाँ आने की तुझे कैसे हिम्मत हुई ? निकल यहाँ से नहीं तो मैं खुद तुझे नीचे ढकेल दूँगा।”

“मेरा काम हो गया,” मैंने कहा। “मैं खुशी से चला जाऊँगा।” उठकर मैं दरवाज़े की ओर बढ़ा।

“रुको !” वह फिर चिल्लाया। “यह मनगढ़न्त किस्सा तुमने किससे सुना ?”

“मुझे यह किस्सा मालूम ही कैसे होता अगर यह सच्चा न होता ?” मैंने उत्तर दिया। “बहुत जल्द सारी बातें सारे संसार को मालूम हो जायेंगी। ये कागज़ात मुझे आपकी वीथी से प्राप्त हुए थे।”

“भूठी बात है यह,” उसने तीव्र स्वर में कहा। “वह खत उसने मेरे सामने जला डाला था।”

मैं मुस्कराया। आखिर बेचारा बुद्धू ही तो था।

“उसने आपको धोखा दिया,” मैंने उत्तर दिया। “वह एक गश्ती चिट्ठा थी जिसे उसने आपके सामने जलाया था। राजा साहब का खत उसने छिपा लिया था। कल रात को इसे रैफेल के रेस्त्राँ में मैंने उससे खरीदा था।”

अब विश्वास हुआ मिस्टर जान सोमर को, और विश्वास ने भय को जन्म दिया।

“अच्छा, ज़रा सुनिए,” उसने कहा। “आइए, हम लोग बैठकर इस मामले पर विचार करें। मैं सिगार और मिह्स्की मँगवाता हूँ।”

“इस खातिरदारी की कोई ज़रूरत नहीं,” मैंने उत्तर दिया। “ये कागज़ात चार दिन के अन्दर अखबारों में छप जायेंगे। मैं तो सिर्फ़ आपको खबर देने आया था।”

उसका माथा गिकुड़ गया।

“यह मैं कैसे मान लूँ कि यह सब कोरी गिदड़-भभकी नहीं है?” उसने सन्देहसूचक भाव से कहा। “वे कागज़ात आपके पास हैं?”

“हाँ, है,” मैंने उत्तर दिया।

उसने कोई चाल खेलने की कोशिश नहीं की, क्योंकि मेरा खयाल है कि उसे अपने लम्बे-चौड़े और बलिष्ठ शरीर पर भरोसा था। उत्तेजित साँड़ की भाँति सिर झुकाये और मुट्ठियाँ कसे हुए वह मेरी ओर झपटा। बड़ी उपहासास्पद थी वह मुठभेड़।

दूसरे दिन समाचार-पत्रों में महेन्द्र काटन मिल्स लिमिटेड के शेयर के सम्बन्ध में बड़ी सनसनी-खेज खबरें छपी हुई थी। उन शेयरों के मूल्य की मन्दी का कारण कोई समझ नहीं सका। केवल चौबीस घंटों में यह रहस्यपूर्ण परिवर्तन हुआ। जब मैं दफ़्तर पहुँचा तब मिस्टर दलाल ने टेलीफोन के द्वारा बड़े जोरदार शब्दों में मुझे अनुरोध-विनय किया कि ढाई लाख का मुनाफ़ा लेकर मैं अपनी कार्रवाई बन्द कर दूँ। उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि इन शेयरों के सम्बन्ध में कोई गड़बड़ी की बात नहीं है और मन्दी शीघ्र ही दूर हो जायेगी। ध्यानपूर्वक मैंने उनकी सब बातें सुनी, और उन्हें आदेश दिया कि वे मेरी कार्रवाई

जारी रहने दें और उसमें किसी तरह की दखलंदाजी न करें। उन्होंने विरोध करना शुरू किया, लेकिन मैंने रिसीवर रख दिया फिर मैं 'नेशनल मिरर' के कार्यालय की ओर रवाना हुआ।

बड़ी कठिनाई से सहायक सम्पादक के पास मेरी पहुँच हुई। वह डूबला-पतला था, चश्मेदार था, और लगातार सिग्रेट पी रहा था। उसने मुझे बतलाया कि सम्पादक महोदय से मेरी भेंट किसी तरह नहीं हो सकती। तब मैंने उसे सारा क्रिस्ता सुनाया और कागजात भी दिखलाये। वह तुरन्त कमरे से बाहर गया और ज़रा देर के बाद सम्पादक के साथ वापस आया। दोनों कौतूहलपूर्ण भाव से मेरी ओर देखने लगे।

“आप कौन हैं, मिस्टर गामर?” सम्पादक ने पूछा।

“व्यापारी हूँ,” मैंने उत्तर दिया। “ये कागजात मुझे उस स्त्री से प्राप्त हुए हैं जिसे सोमर ने हाल ही में तलाक़ दे दिया है। उसे सोमर से द्वेष है।”

“यह कैसे मान लिया जाय कि ये कागजात जाली नहीं हैं?”

“जो कोई इन्हें एक बार पढ़ेगा उसे विश्वास हो जायगा कि ये असली हैं,” मैंने उत्तर दिया। “कल राजा राखीपूर से मैंने इनके संबंध में बात किया था, और उन्हें बतलाया था कि ये शीघ्र ही प्रकाशित कर दिये जायेंगे। और मैंने उन्हें यह सलाह दी थी कि वे अपने जितने शेर बेच सकें बेच डालें। बाक़ी हाल आप अपने आर्थिक स्तम्भों में देख सकते हैं।”

दोनों व्यक्ति आपस में कुछ देर तक फुसफुसाते रहे। तब सम्पादक महोदय एक कुर्सी खींचकर मेरी बग़ल में बैठ गये।

“इन कागजात को हम क्या करें, मिस्टर गामर?” उन्होंने पूछा।

“एक बड़ी रकम देकर आप इन्हें मुझसे ख़रीद लें और इन्हें अपने पत्र में प्रकाशित कर दें।”

“बड़ा भगड़ा होगा?”

“भगड़े की बात आप जानिए। इनकी असलियत से आपके कार्य का औचित्य प्रमाणित हो जायगा।”

बिचारमग्नता के भाव से वे खिड़की से बाहर देखने लगे। उनका

चेहरा पत्थर के समान कठोर था, किन्तु उनकी आँखों में अत्यधिक कोमलता भरी थी।

“सोमर के ऊपर वज्रपात करने में हमें ज़रा भी हिचक न होगी,” उन्होंने कहा, “लेकिन राजा राखीपूर की स्थिति भिन्न है। समाज में उनकी बड़ी ख्याति और सम्मान है।”

“इस भंडाफोड़ के आघात को राजा साहब सह लेंगे,” मैंने कहा। “उनके कार्य में कुछ न कुछ औचित्य तो है ही। उन्होंने देश को बहुत बड़ी हानि उठाने से बचाया था, हालाँकि उनके साधन निंद्य तथा अनैतिक थे।”

“राजा साहब की सफ़ाई में निस्सन्देह बहुत कुछ कहा जा सकता है,” सम्पादक ने कहा। “आप क्या लेंगे इनके लिए?”

“तीस हज़ार,” मैंने उत्तर दिया। “और शुक्रवार से पहले ये प्रकाशित न किये जायें।”

“यह क्यों?”

“मैंने राजा साहब को चार दिन का समय दिया था।”

“कागज़ात आप हमारे पास छोड़ जायेंगे?”

मैं विचार में पड़ गया। मेरे निश्चय के बदलने की कोई सम्भावना तो मुझे नहीं दिखाई देती थी, फिर भी न जाने क्यों मुझे दुविधा हो रही थी, अन्तिम पग रखने में।

“आप इन्हें अपने पास रख सकते हैं,” मैंने कहा, “मुझे इस आशय का पत्र देकर, कि ये कागज़ात मेरे हैं और अगर मैं इन्हें प्रकाशित न कराना चाहूँ तो गुरुवार को तीसरे पहर आप इन्हें मुझे वापस कर देंगे।”

“रुपये के बारे में आप क्या कहते हैं? आप कुछ पेशगी चाहते हैं?”

“आप तीस हज़ार देने को तैयार हैं?”

“हम मोल-तोल नहीं करते। जो चीज़ आप दे रहे हैं उसका मूल्य लगा सकना कठिन है, क्योंकि उसका कोई निश्चित भाव नहीं है। सवाल यह है कि क्या आप कुछ पेशगी चाहते हैं?”

“जी नहीं,” मैंने उत्तर दिया। “धन्यवाद! गुरुवार को या तो

मैं कुल रकम लूंगा या अपने कागजात वापस मांग लूंगा। मेरा खयाल है कि मैं क़ीमत ही लूंगा।”

“मुझे भी यही आशा है,” सम्पादक ने उत्साहपूर्वक कहा।

गुरुवार के दिन महेन्द्र काँटन मिल्स के शेयरों की स्थिति और भी खराब हो गई। और ‘इंडियन टाइम्स’ में यह संक्षिप्त सूचना प्रकाशित हुई कि राजा राखीपूर प्रबल स्नायुक दौर्बल्य से पीड़ित होकर रेले स्ट्रीट-वाले अपने मकान में रोग-शय्या पर पड़े हुए हैं। थोड़ी देर तक अपने दफ़्तर में रहकर किसी मूर्खतापूर्ण प्रेरणा से प्रेरित होकर मैं रेले स्ट्रीट की ओर रवाना हो गया। एक प्रमुख डॉक्टर की गाड़ी बाहर खड़ी हुई थी। एकाएक सदर दरवाज़ा खुला, और डॉक्टर स्वयं बाहर निकला। अभी तक राजा साहब की बीमारी के विचार में मेरा केवल मनोरंजन ही हुआ था। डाक्टर के समीप कुसुम भी खड़ी हुई थी। मैं भ्रम में गया उस समय कि मेरे अपराधी जीवन का अन्त अब निकट आ गया है। दुर्बलता मुझे घेरने लगी। साहस मेरा साथ छोड़ने लगा। शैशव की विशेषताएँ वापस आने लगीं। जो निरर्थक कौतूहल मुझे यहाँ खींच लाया था वह शान्त हो गया, और बुरी तरह शान्त हुआ। मेरे ऊपर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा। कुसुम के उतरे हुए चेहरे और उसकी अश्रुपूर्ण आँखों ने मेरी हृदयहीनता पर कठोर आघात किया। एक नई योजना मेरे मस्तिष्क में उठ खड़ी हुई। केवल एक ही अच्छी बात इसमें थी— मेरा जीवन खतरे में पड़ गया।

ढाई बजे नीचे के दीवानखाने में कुसुम एक नवागन्तुक का स्वागत करने के लिए आई। उस व्यक्ति को देखकर वह आश्चर्य से चकित रह गई। उँगली उठाकर मैंने उसे सतर्क किया।

“मेजर पंडित,” मैंने याद दिलाया।

“आप हैं !”

मैं जानता था कि मेरे उस वेष या चाल-ढाल में कोई त्रुटि न थी। मैंने पूर्णतः परिणत कर दिया था अपने को मेजर पंडित की भूमिका में— वे ही मेजर पंडित जो जतीन्द्रनाथ मुकर्जी के वैवाहिक प्रीति-भोज में शरीक हुए थे।

“आप क्या चाहते हैं?” कुसुम ने पूछा।

“तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ” मैंने उत्तर दिया। “आज सबेरे मैंने तुम्हें देखा था। तुम बड़ी परेशान थीं उस समय।”

कृतज्ञतासूचक भाव से वह मुस्कराई; लेकिन एक क्षण के बाद ही चिन्ता की छाया आगई उसके चेहरे पर।

“बड़ी कृपा की बात है यह,” उसने कहा; “लेकिन आप बड़ा खतरा उठा रहे हैं। मिस्टर जतीन्द्रनाथ मुकर्जी ऊपर मौजूद हैं। इस समय वे मेरे चचा के पास हैं।”

“यहाँ वे क्या कर रहे हैं?” मैंने पूछा।

“चचा ने उन्हें बुलाया है यह देखने के लिए कि क्या वे हमारी सहायता कर सकते हैं? कोई भगड़ा खड़ा हो गया है। मैं नहीं जानती कि वह क्या है; लेकिन चचा कहते हैं कि इससे उनका सर्वनाश हो जायगा।”

इस विचार से कि मेरा पुराना दुश्मन निकट है मेरा सम्पूर्ण अस्तित्व उत्तेजित हो उठा। फिर भी दुर्बलता मौजूद रही।

“तुम क्यों दुखी हो?” मैंने पूछा। “क्या तुम्हारे चचा ने तुम्हारे साथ हमेशा अच्छा व्यवहार किया है? क्या उन्हीं के दुःख के कारण तुम दुखी हो?”

“हाँ, उन्हीं के दुःख के कारण,” उसने तुरन्त उत्तर दिया। “मैं जानती हूँ कि बहुतेरे लोग उन्हें कठोर-हृदय और स्वार्थी कहते हैं। लेकिन मुझे तो वे सबसे अधिक प्रिय हैं। उन्हें दुखी देखती हूँ, तो मेरा हृदय फटने लगता है।”

मैंने अपनी घड़ी पर दृष्टि डाली।

“सुनो,” मैंने कहा, “मुझे यहाँ से चले जाने के लिए पाँच मिनट का समय दो। जब मैं चला जाऊँ, तो अपने चचा को यह सन्देश दे देना। उनसे कह देना कि मिस्टर गामर ने अपना निश्चय बदल दिया और पाँच बजे के पहले ही उन्हें उनका पत्र मिलेगा।”

“आपका इस मामले से क्या सम्बन्ध है?” आश्चर्यसूचक स्वर में उसने पूछा।

“जाने दो इस बात को, ” मैंने उत्तर दिया। “मुकर्जी के सामने मेरा सन्देश मत देना।”

मेरे साथ वह दरवाजे तक गई; लेकिन जब मैं उसे खोलने लगा तब उसने मुझे रोका। उसके पैर हलके हो गये थे। मेरे हाथ उसने अपने हाथों में ले लिये, और उसकी साँस मेरे चेहरे पर लगी।

“मैं आपको धन्यवाद देने जा रही हूँ,” उसने धीरे से कहा।

सम्पादक और सहायक सम्पादक दोनों ने मुझसे बहुत अनुनय-विनय किया कि मैं अपना निश्चय न बदलूँ। उन्होंने मूल्य की रकम बढ़ा दी, सरकार से मेरे लिए सम्मान प्राप्त करने का वचन दिया और मेरी देश-भक्ति तथा अन्य सद्गुणों से अपील की। लेकिन मैं अटल रहा। अन्त में मैंने अपने कागजात वापस ले लिये, उन्हें एक सादे लिफाफे में बन्द किया, लिफाफे पर राजकुमारी कुसुम का पता लिखा, गुलाब के फूलों का एक बड़ा गुच्छा खरीदा, एक सन्देशवाहक की सेवायें प्राप्त कीं, उसके साथ एक टैक्सी पर सवार होकर रेले स्ट्रीट पहुँचा, और उसके द्वारा अपने सामने लिफाफा और फूलों का गुच्छा कुसुम के पास भेजवा दिया।

रात के समय अपने कमरे में बैठकर मैं सारे मामले पर विचार करने लगा। महेन्द्र काँटन मिल्स सम्बन्धी मेरी कार्रवाइयों से मुझे साढ़े तीन लाख रुपये का लाभ हुआ। इसके अलावा मैं ठगी करने से बच गया, और द्वन्द्व-युद्ध में मिस्टर जान सोमर को पछाड़ा। लेकिन मैं आसानी से दस लाख पैदा कर लेता; अगर कुसुम को देखकर मैं मूर्ख न बन जाता।

फिर भी आश्चर्य की बात तो यह है कि मैं सन्तुष्ट था उस सौदे से।

९

महान् अन्त

जतीन्द्रनाथ मुकजी

एक पखवारे से मैं अपनी पत्नी, सावित्री के साथ राखीपूर में स्थित राजा महेन्द्र विक्रमसिंह के महल में मेहमान था। उस रात को राजा साहब के सुसज्जित डाइनिंग-हॉल में एक शानदार डिनरपार्टी का आयोजन था। उस समय की बात है जब भोजन समाप्त होने को था।

“जब आप खुफिया-विभाग में थे, मिस्टर मुकजी,” राजा साहब ने कहा, “तो आपकी बड़ी शोहरत थी, और आपकी आश्चर्यजनक सफलताओं की कहानियाँ अकसर सुनने को मिलती थीं। लेकिन आप यह तो बतलाइए कि आपकी सबसे बड़ी असफलता कौन-सी थी?”

“भारत के सबसे बड़े अपराधी को सजा न दिला सकना,” एक क्षण की दुविधा के बाद मैंने उत्तर दिया। “तीन साल से मैं उसकी तलाश में था; लेकिन जब मैंने नौकरी से अवकाश ग्रहण किया तब भी वह फ़रार था। मैं और वह बराबर एक-दूसरे का मुकाबला करते रहे। कभी उसे दबना पड़ता, कभी मुझे। किन्तु यथार्थ यह है कि वह कभी हमारे जाल में पूरी तरह फँस नहीं सका। यद्यपि एक दर्जन अभियोग ऐसे थे जिन्हें हम उसके खिलाफ़ बख़ूबी साबित कर सकते थे; लेकिन हम एक साधारण अभियोग के लिए भी प्रमाण जुटा न पाते थे कि वह हमारे चंगुल से निकल भागता?”

“वह कभी जेल गया है?” किसी ने पूछा।

“कभी नहीं,” मैंने उत्तर दिया। “जेल जाना तो दूर रहा, वह कभी किसी मैजिस्ट्रेट के सामने पेश भी नहीं किया जा सका।”

“उसका नाम क्या है?” राजा साहब ने किंचित् दिलचस्पी से पूछा। मैं मुस्कराया।

“नाम तो वह मौक़े के अनुसार रख लेता है। मैं उसके एक दर्जन

“पहले कभी ऐसा नहीं हुआ,” राजा राखीपूर ने चिढ़कर कहा। “किसी ने जरूर मेरे बिजली-घर में कुछ गड़बड़ी कर दी है। मोम-बत्तियाँ लाओ, चेताराम !”

बटलर धूमकर धीरे-धीरे दरवाजे की ओर बढ़ा। लेकिन वह दरवाजे तक पहुँच नहीं पाया। एक नई सनसनी आने को थी। उस अन्धकाराच्छादित कमरे में चारों ओर आग की नन्हीं-नन्हीं चिनगारियाँ जल उठीं, और बिना किसी शब्द के धीरे-धीरे हम लोगों की ओर बढ़ने लगीं। एक चिनगारी राजा साहब की कुर्सी के ठीक पीछे पहुँचकर रुक गई। किसी ने टार्च की तेज़ रोशनी हम लोगों के चकित चेहरों पर फेंकी। फिर एक विचित्र आवाज़ उस कमरे की पूर्ण निस्तब्धता में गूँजने लगी। बड़ी शान्त और गम्भीर थी वह आवाज़। उसका एक-एक शब्द पिस्तौल की आवाज़ की तरह हमारे कानों में पड़ने लगा।

“महिलाओ और सज्जनो,” नवागन्तुक ने कहा, “आप लोग बेकार परेशान न हों। असभ्य भाषा में यह एक प्रकार का ‘होल्ड अप’ है। अगर आप लोग अपने अपने स्थान पर बैठे रहेंगे, खामोश रहेंगे और मेरी आज्ञायें मानेंगे, तो आप एक हद तक सुरक्षित रहेंगे। अगर कोई अपनी कुर्सी से उठेगा या दियासलाई जलायेगा, तो मैं या मेरे चार सहयोगियों में से कोई तुरन्त गोली चला देगा। हमारे पास पिस्तौलें हैं, और मुझे विश्वास है कि आप यह अच्छी तरह समझ लेंगे कि हमारा विरोध करना बिल्कुल फ़िज़ूल होगा।”

“हे ईश्वर !” राजा साहब ने कहा। “मेरे तमाम नौकर कहाँ चले गये ? तुम यहाँ किस तरह आये ?”

“आपको अपने साधनों के भेद बतला देना नीति के विरुद्ध है,” उस व्यक्ति ने कहा, “लेकिन यह बतला देने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है कि हम सदर दरवाजे से अन्दर आये। आपके नौकर नौकरीवाले कमरे में उसी तरह बन्द हैं जैसे आप लोग यहाँ बन्द हैं, आपके टेलीफोन के तार काट दिये गये हैं, आपका बिजलीघर हमारे कब्जे में है और महल में हर जगह हमारा कड़ा पहरा है। महिलाओ आप लोग कृपया अपने गहने उतारकर अपने सामने मेज़ पर रख दें। आप लोग न तो विलम्ब करें और

न गहनों को छिपाने ही की कोशिश करें। मैडम," आवाज़ भयानक होगई, और टार्च का तीव्र प्रकाश मेज़ के दूसरी ओर बैठी हुई एक महिला के घबराये हुए चेहरे पर पड़ा, "अगर आप अपने गहने फ़र्श पर गिराने या किसी दूसरे ढंग से छिपाने की कोशिश करेंगी, तो मज़बूरन हमें ऐसी कार्रवाई करनी पड़ेगी जिससे हमें भी खेद होगा।"

"मैं क्या करूँ?" मेरी बग़ल में बैठी हुई एक महिला ने धीरे से कहा। "मैं अपने पन्ने पहने" हुए हूँ, और ये दस लाख के हैं। उन्होंने बहुत मना किया था, लेकिन मैंने उनकी बात नहीं मानी।"

"आपको भी वही करना होगा जो अन्य महिलायें कर रही हैं," मैंने कहा। "इस नाटक का पड़ला अंक आदेशानुसार ही खेला जाना चाहिए।"

काँपती हुई उँगलियों से उसने अपना हार उतारा। तब राजा साहब की कुर्सी के पीछे खड़े हुए उस व्यक्ति ने ज़बान खोली।

"दूसरे अंक में क्या मिस्टर मुकर्जी मंच पर उछल-कूद करेंगे?" व्यंग्यपूर्ण स्वर में उसने पूछा।

तब मैं समझ गया कि वह व्यक्ति कौन है, और मुझे याद आ गई यह बात कि शेरसिंह ने प्रण किया था कि जब कभी उसे उपयुक्त अवसर प्राप्त होगा वह मेरी जान लेगा। वह बड़ी आसानी से मेरे ऊपर निशाना साध सकता था, लेकिन न जाने क्यों हत्या का भय मुझे कभी सता नहीं सका।

"मुमकिन है कि मैं कुछ समय तक मंच पर उछल-कूद करूँ," शराब की गिलास हाथ में लेकर मैंने कहा, "लेकिन फ़ैसला तो तीसरा अंक ही करेगा। तुम क्या पसंद करोगे, शेरसिंह—कालीनगर में फाँसी पर लटकना, या पेरिस में गोली का शिकार बनना?"

यह दुस्साहसमात्र था, अतिरंजित नाटकीयता थी, और दूसरे ही क्षण मुझे पश्चात्ताप हुआ। एक हलकी-सी खटक हुई, शेरसिंह की पिस्तौल मेरे मस्तक पर तन गई, और प्रकाश के उस छोटे से गोलाकार में पिस्तौल की नली चमक उठी। एक क्षण के लिए बिकट निस्तब्धता छा गई। फिर सावित्री की चीख कमरे में गूँज उठी। इस बीच गहनों का एकत्र किया जाना बराबर जारी रहा।

“मैं समझता हूँ कि इस आवाज से अच्छी तरह परिचित हूँ,” पिस्तौल भुकाकर शेरसिंह ने शान्त स्वर में कहा। “बीच-बचाव करके तुमने अच्छा ही किया, नेकदिल महिला। एक न एक दिन या तो तुम्हारे पति मेरी जान लेंगे, या मैं ही उनकी जान लूँगा। लेकिन अगर पुलिसवालों का एक दस्ता लेकर वे मेरा पीछा नहीं करेंगे, तो मेरी और उनकी लड़ाई उसी समय होगी जब हम दोनों के पास हथियार होंगे और जोड़ बराबर की मानी जायगी।”

सिसकी और दीर्घ-निःश्वास की आवाज हुई। खामोशी फिर टूटी ज़रा कम नाटकीय ढंग से।

“क्या मैं भी कुछ कह सकती हूँ?” राजकुमारी कुसुम ने पूछा।

प्रकाश तुरन्त उसके मुख पर पड़ा। उसकी निश्चलता देखकर मैं दंग रह गया। पूर्ण शान्ति बरस रही थी उसके चेहरे पर। उसकी आँखें चमक रही थीं और उसके अरण कपोल खिले हुए थे। उस समय उसकी दशा उस मुग्ध दर्शक की-सी हो गई थी जो पूर्ण मनोयोग से किसी जटिल नाटक की बारीकियाँ देख रहा हो। अंधकार के परदे से उस आवाज ने उसे उत्तर दिया। स्वर बदल गया था उसका।

“जो कुछ कहना चाहती हो कृपया जल्द कह डालो।”

“मैंने अपनी अँगूठियाँ, इयर-रिंग और ब्रेसलेट मेज़ पर रख दिये हैं। मैं जवाहिरात का एक हार पहने हुए हूँ जिसमें एक स्मृति-चिह्न लगा हुआ है। यह बहुत कीमती तो नहीं है, लेकिन मेरे एक प्रिय संबंधी की भेंट है। क्या इसे मैं रोक सकती हूँ?”

राजकुमारी के हार पर जिसे वह जाँच कराने के लिए हाथ में पकड़े हुए थी रोशनी पड़ी, फिर मेज़ पर रखे हुए उसके गहनों के छोटे से ढेर पर।

“कृपा करके अपना हार अपने पास रखो,” शेरसिंह ने कहा। “और अपनी अँगूठियाँ, अपने इयर-रिंग और अपने ब्रेसलेट फिर पहनकर मुझे और भी सम्मानित करो। हम बच्चों से उनके खिलौने छीनने के लिए यहाँ नहीं आये हैं।”

कुसुम हँस पड़ी। बड़ी आश्चर्यजनक थी वह हँसी। पूर्णतः स्वाभाविक थी वह, और उसमें भरी थी आन्तरिक प्रसन्नता।

“अपने गहनों पर आपकी आलोचना मुझे पसंद नहीं आई,” उसने शिकायत की। “लेकिन चूँकि आप इतनी उदारता दिखा रहे हैं, इसलिए आपकी बात माने लेती हूँ।”

“क्या यह महज दिल्लगी है?” अपनी भतीजी के निरुद्धेग से उत्साहित होकर राजा राखीपुर ने कहा। “क्योंकि अगर यह दिल्लगी है, तो बहुत हो चुकी दिल्लगी।”

“अगर आप अपनी कुर्सी से उठने की कोशिश करेंगे, तो आपको मालूम हो जायगा कि यह दिल्लगी है या और कुछ!” तुरन्त उत्तर मिला।

“क्या ये लोग इस खामरूथाली में हैं कि इस संगीन मामले के बाद ये बच रहेंगे?” ठाकुर हिम्मतबहादुरसिंह ने कहा, जो एक तालुकदार और स्पेशल मैजिस्ट्रेट थे।

“यह आपकी भूल है, ठाकुर साहब,” शेरसिंह ने कहा। “हम किसी खामरूथाली में नहीं हैं। हम सही तौर पर जानते हैं कि हमारे ऊपर ज़रा भी आँच न आ सकेगी। अगर आपको विश्वास न हो, तो मैं बाज़ी बंदने को तैयार हूँ।”

“बड़ा विकट जीव है!” राजा साहब के शिकारी बलवीरसिंह, ने धीरे से हँसकर कहा। “काश एक बार मैं उसका चेहरा देख पाता!”

“मेरा चेहरा देखोगे, तो जीते न बचोगे,” तुरन्त उत्तर मिला।

“अगर मैं एक दियासलाई जलाऊँ, तो क्या होगा?” एक नवयुवक ने पूछा, जो कुसुम की बगल में बैठा था।

“एक गोली से मैं दियासलाई बुझा दूँगा,” शेरसिंह ने गम्भीर स्वर में उत्तर दिया, “और दूसरी गोली से तुम्हें खत्म कर दूँगा। महिलाओं और सज्जनों जान पड़ता है कि अब हमारा काम समाप्त हो गया। जब तक हम लोग दरवाज़े के बाहर न पहुँच जायें। कोई अपने स्थान से उठने की कोशिश न करे, नहीं तो उसे तुरन्त हमारी गोली का शिकार बनना पड़ेगा। बाहर पहुँचकर हम दरवाज़े पर ताला लगा देंगे। उसके बाद आप लोग जो कुछ करना चाहेंगे कर सकेंगे। अगर आपको सलाह की ज़रूरत हो, तो मेरी राय में यह बेहतर होगा कि आगे का काम आप मिस्टर बलवीरसिंह पर छोड़ दें। वे शिकारियों का

एक दल बनाकर हमारा पीछा करेंगे। हर शिकारी अपनी सवारी खुद चुन लेगा, कोई मोटर साइकिल पर सवार होगा, कोई घोड़े पर कोई साइकिल पर और कोई पैदल ही दौड़ लगायेगा। हम अपने पीछे कोई सुराग नहीं छोड़ जायेंगे, लेकिन कम-से-कम एक बार तो आप एक ऐसे शिकार का पीछा कर लेंगे जो आपको मौत के घाट उतार सकेगा। आइए, और कोशिश कीजिए। हम आपका स्वागत करेंगे।”

किसी ने उत्तर में एक शब्द भी कहने की कोशिश नहीं की। आग की चिनगारियाँ बराबर हमारी ओर लगी रहीं जब तक डाकू धीरे-धीरे दरवाजे की ओर बढ़ते रहे। फिर हमने दरवाजे के बन्द होने और उस पर ताला लगाये जाने की आवाजें सुनीं। हो गई हमारी स्वतन्त्रता की घोषणा। हम सब उठ खड़े हुए क़रीब-क़रीब एक साथ। दो स्त्रियाँ रो रही थीं। पन्नोंवाली स्त्री अन्य स्त्रियों से कम घबराई हुई थी।

“चाहे जो होता, यह तमाशा देखने से मैं कभी न चूकती, ”उसने कहा।

“मेरी राय है कि उन लोगों का पीछा किया जाय,” बलवीरसिंह ने कहा। “वह व्यक्ति बेशक शिकार किये जाने के योग्य है।”

“मैं तमाम नौकरों को इसी समय बर्खास्त कर दूँगा,” राजा साहब गुर्राये। “कोई आता क्यों नहीं? क्या सब मर गये?”

सब लोग बोल रहे थे, लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकल रहा था। हमने घंटियाँ बजाई जो आवाज़ नहीं दे सकीं, दरवाजे पर धक्के लगाये लेकिन बेकार क्योंकि वह कई इंच मोटा था। किसी ने दियासलाई का बक्स निकाला। दियासलाई के क्षणिक प्रकाश में बड़ा विचित्र लगा वह छोटा सा दल। कई कुर्सियाँ एक के ऊपर एक रखकर और उन पर चढ़कर में खिड़कियों तक पहुँचा लेकिन वे इतनी तंग थीं कि उनमें किसी दुबले से दुबले व्यक्ति का घुस सकना भी असम्भव था। अन्त में राजा साहब टटोल-टटोलकर साइड-बोर्ड से शराब की एक ताज़ी सुराही उठा लाये।

“भाड़ में जाय यह सब!” उन्होंने कहा। “आइए थोड़ी-सी और पियें। यह कहने में मुझे संकोच नहीं है कि मेरा सारा शरीर काँपा जा रहा था। मुझे तो ऐसा मालूम होता था मानो कोई जल्लाद हाथ में

नंगी तलवार लिये हुए मेरे पीछे खड़ा हो। उसकी पिस्तौल असली थी। एक बार उसकी नली मेरी गर्दन पर छू गई थी। ओफ़ !”

बलवीरसिंह ने कहीं अन्धकार के परदे से मुझसे एक प्रश्न किया। “मिस्टर मुकर्जी,” उसने कहा, “आप किसी प्रसिद्ध अपराधी का जिक्र कर रहे थे, जिसका नाम शायद शेरसिंह था। इस व्यक्ति को भी आपने—”

“हाँ, शेरसिंह ही था यह,” मैंने उत्तर दिया।

बड़ा मार्मिक था वह दृश्य। उस कमरे के निविड़ अन्धकार में हम सब बैठे हुए रुक-रुककर बात कर रहे थे, और प्रतीक्षा कर रहे थे उस समय की जब राजा साहब के सेवक किसी तरह हमारी मदद को आ सकेंगे।

“आप बड़े खुशकिस्मत हैं, मिस्टर मुकर्जी,” ठाकुर हिम्मतबहादुर-सिंह ने फ़र्माया। “बड़ी आसानी से वह आपसे निपट सकता था—चुपचाप बैठे हुए हिरन की तरह आपको अपनी गोली का शिकार बना सकता था।”

“बिल्कुल ठीक कहा आपने,” मैंने स्वीकार किया। “लेकिन शेरसिंह का पीछा करने में सबसे ज्यादा दिलचस्प बात यही है कि चुपचाप बैठे हुए हिरन के ऊपर गोली चलाना वह पसंद नहीं करता। उसकी यह बात बिल्कुल सत्य थी कि अन्त उस समय आयेगा जब हम दोनों में से कोई चपेट में आ जायगा और हम दोनों के पास हथियार होंगे। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं अब यह सोचने लगा हूँ कि बेहतर यही होगा कि इस लड़ाई का फ़ैसला न हो। अपराधियों का पता लगाना बड़ा मनोरंजक खेल है, लेकिन इस खेल का मज़ा कम होता जाता है ज्यों ज्यों समय बीतता है।”

मदद आ पहुँची। ताले की दूसरी कुंजी खोज निकाली गई। दर-वाज़ा खुला, और सेवकों का एक अच्छा-खासा दल लैम्प और मोमबत्तियाँ लिये हुए कमरे में आया। चन्द मिनट तक निरर्थक तथा अस्पष्ट बातों की झड़ती लगी रही। फिर ज्ञात हुआ कि सेवकों का हाल भी दोनों ओर से ख़न्द कर दिया गया था, और उस पर उसी तरह कड़ा पहरा लगा दिया गया था जिस तरह डाइनिंग हाल पर। यह भी मालूम हुआ कि मेहमानों के शयनागारों में भी ख़ूब लूट-खसोट की गई, और ठाकुरों के

उस दल में कम-से-कम बीस-पचीस आदमी ज़रूर शामिल थे। राजा साहब ने गरज-गरजकर जो आज्ञायें दीं वे सब बेकार साबित हुईं। बाद में पता लगा कि टेलीफोन के तार काट देने की बात ठीक थी, मोटर-खाने में रक्खी हुई तमाम मोटरें बेकार कर दी गई थीं, अस्तबल खाली पड़े थे और तमाम घोड़े खोलकर इधर-उधर भगा दिये गये थे। हम सबसे निकट के क़स्बे से आठ मील की दूरी पर थे, और सबसे निकट के ग्राम से चार मील की दूरी पर। और महल के विशाल हाते के चारों ओर ऊसर थे या गुंजान बाग़। विकट एकान्त था चारों ओर। जितना ही हम विचार करते उतना ही हमें ज्ञात होता कि कितना आश्चर्यजनक था यह डाका।

स्वभावतः समाचारपत्रों ने उपर्युक्त सनसनीखेज डाके के विशद वर्णन प्रकाशित किये, और कई पत्रकार और फ़ोटोग्राफ़र ताज़े समाचारों और चित्रों की तलाश में कालीनगर से राखीपुर आये। इस बात ने कि मैं भी राखीपुर के राजमहल में मेहमान था और मेरी पत्नी भी डाके का शिकार बनी इस मामले को और भी सरस तथा उत्तेजनापूर्ण बना दिया, और मेरे साहित्यिक मित्रों ने इस बात से पूरा-पूरा लाभ उठाया। मिस्टर कौल भी दो कुशल मातहत अफ़सरों के साथ कालीनगर से नशरीफ़ लाये। लेकिन तीसरी रात को उन्होंने भी स्वीकार किया कि इस डाके की योजना इतनी आश्चर्यजनक होशियारी और दूरदेशी से तैयार की गई थी कि किसी बात का ज़रा भी सुराग़ पा सकना असम्भव था। लूटे गये गहनों का मूल्य तीस लाख निश्चित किया गया, और उन्हें बरामद करा देनेवाले व्यक्ति को एक बड़ी रक़म इनाम के तौर पर देने की घोषणा की गई। हर जगह जाँच की जाने लगी, और देश के बाहर जानेवाले तमाम रास्तों और बन्दरगाहों पर कड़ी नज़र रक्खी जाने लगी। लेकिन देश अथवा विदेश में चोरी के जवाहिरात बेचनेवाले प्रसिद्ध सौदागरों में ज़रा भी सक्रियता दृष्टिगोचर नहीं हुई। यह ज्ञात हुआ कि डाकुओं का वह दल अपनी मोटरों पर महल से दो मील तक गया, और फिर मानो इस भूमंडल से ही अदृश्य हो गया।

किसी किसान, चरवाहे या गड़रिये ने उन रहस्यपूर्ण मोटरों को नहीं देखा। कौल भी, जो मेरे परिचितों में सबसे अधिक आशावादी थे, कई दिनों की निरर्थक जाँच और खोज के बाद निराश होकर काली-नगर वापस गये।

मैं पत्नी-सहित शिकार खेलने के लिए महल में ठहरा रहा। शिकार का निश्चित दिवस आ पहुँचा—कभी नहीं भूल सकेंगे हम उस दिन को। घोड़ों पर सवार होकर हम जंगल की ओर रवाना हुए। हम छोटे छोटे दलों में बँट गये। सावित्री और कुसुम मेरे साथ थीं। कुसुम एक बड़े सुन्दर घोड़े पर सवार थी जो उसके चचा ने अभी दो-चार दिन पहले उसे भेंट किया था, और बड़ी प्रसन्न दीख रही थी वह। हमने थोड़ी देर तक शिकार खेला, और बड़ी देर तक इन्तज़ार करते रहे। तीसरे पहर एक हिरन का पीछा करते हुए हम जंगल के एक छोर पर पहुँचे। हिरन घनी झाड़ियों में अदृश्य हो गया। निराश होकर रुककर हम किसी दूसरे शिकार का इन्तज़ार करने लगे। एकाएक राजकुमारी ने गर्दन मोड़कर एक ओर देखा, और चौंककर कुछ कहा। एक व्यक्ति, जो एक सफ़ेद घोड़े पर सवार था और जिसे आज ही एक बार पहले मैंने जंगल के दूसरे सिरे पर देखा था, हमारी ओर चला आ रहा था। मुझे स्वीकार करना चाहिए कि पहले इस बात में मुझे कोई महत्त्व नहीं दिखाई दिया। वह अभ्यस्त सवार हमीं लोगों के-से वस्त्र पहने हुए था, और उसमें कोई ऐसी बात नहीं थी जिससे यह मालूम होता कि वह हमारे ही दल का आदमी नहीं है। लेकिन जब वह हमारे समीप पहुँचकर कुछ गज के फ़ासले पर रुक गया, तब मैंने जाना कि वह कौन है।

“जतीन्द्रनाथ मुकर्जी,” उसने कहा, “मैं प्रस्ताव करता हूँ कि हम दोनों में दस मिनट के लिए सुलह हो जाय। आप यह स्वीकार करेंगे कि मैं यह प्रस्ताव कर सकने की स्थिति में हूँ।” उसने अपने रिवाल्वर की ओर इशारा किया जो उसके दाहिने हाथ में था।

“सुलह ही सही, शेरसिंह,” मैंने उत्तर दिया। “मुझसे क्या चाहते हो तुम ?”

“आपसे कुछ नहीं । मैं तो राजकुमारी कुसुम से बात करने आया हूँ ।”

बोलते समय उसने कुसुम की ओर दृष्टि भरकर देखा, और उसकी आवाज में एक विचित्र विशेषता आगई ।

“राजकुमारी,” उसने कहा, “उस रात को मेरा आदेश समझने में मेरे सहयोगी से भूल हो गई थी, और उसने गलती से तुम्हारे गहने भी उठा लिये थे । उन्हें वापस करने के लिए मुझे यहाँ रुके रहना पड़ा ।”

उसने झुककर एक मुहरबन्द बक्स कुसुम के हाथ में दे दिया । मैंने देखा कि बक्स लेते समय राजकुमारी ने अपनी उँगलियों से उसकी उँगलियाँ पकड़ लीं । वह अलग हट गया ।

“मैं जानती थी कि भूल से ऐसा हो गया होगा,” कुसुम ने कोमल स्वर में कहा । मुख फेरकर वह दूसरी ओर देखने लगा । उसके चेहरे का भाव बदल गया । उसके हँठों पर वही पुरानी व्यंग-मूचक मुस्कान व्यक्त हो गई ।

“अच्छी तरह गौर करने के बाद तुम्हें लूटने का विचार भी मुझे पसन्द नहीं आया, सावित्री,” मेरी पत्नी की ओर मुड़कर उसने कहा, “खासकर इस वजह से कि बहुत काफ़ी माल मेरे हाथ आया है । तुम्हारी नई दौलत तुम्हें मुबारक रहे । यह लो ।”

उसने सावित्री के हाथ में भी एक छोटा-सा पैकेट दे दिया । फिर उसने अपना घोड़ा पीछे हटाया, लेकिन रुका रहा । मैं समझ गया कि वह कुछ और कहना चाहता है ।

“तो हमारे मित्र मिस्टर कौल निराश होकर कालीनगर लौट गये ?” शेरसिंह ने मुस्कराकर कहा । “किसी दिन मेरी तरफ़ से उन्हें बतला दीजिएगा कि अपराधी हमेशा घटना-स्थल से बहुत दूर नहीं भाग जाता । अक्सर खोज करनेवाला हाथ उस चीज़ के ऊपर से गुज़र जाता है । जिसे वह खोजता है ।”

“तुम्हारा यह सन्देशा मुझे याद रहेगा,” मैंने वादा किया । “तुम यह समझ रहे हो न कि इस पड़ोस में तुम्हारी मौजूदगी की रिपोर्ट मुझे करनी पड़ेगी ?”

“अगर आप रिपोर्ट न करेंगे,” उसने शान्तभाव से उत्तर दिया, “तो अगले कुछ घंटे मेरे लिए दिलचस्पी से बिल्कुल खाली होंगे। अगर आप भी इस मामले में हाथ लगायें, और मैं आपको इस बात का धेय देता हूँ कि आप अपने सहयोगियों में सबसे अधिक चतुर हैं, तो भी मैं दावा करता हूँ कि यहाँ मे बड़ी आसानी से बच निकलूँगा।”

वह मेरी ओर झुका।

“ज़रा देर के लिए स्त्रियों को यहाँ से हटा दीजिए,” उसने अनुरोध किया। “मैं आपसे अकेले में कुछ कहना चाहता हूँ।”

सावित्री ने मेरे संकेतानुसार तुरन्त अपना घोड़ा मोड़ दिया। लेकिन कुसुम रुकी रही। वह शेरसिंह की ओर टकटकी बाँधे हुए देख रही थी। दोनों की आँखें मिली, और मुझे यह विचित्र जान पड़ा कि उनके बीच भावों का ऐसा आदान-प्रदान हो रहा है। फिर मैंने शेरसिंह को सिर हिलाते देखा।

“मुकर्जी से मैं एकान्त में बात करना चाहता हूँ,” उसने जोर देकर कहा। “जितना ही मैं यहाँ रुकूँगा उतना ही कठिन हो जायगा मेरा बच निकलना।”

तब मुड़कर वह सावित्री के पीछे चली। लेकिन थोड़ी दूर जाकर वह रुक गई। शेरसिंह मेरी बगल में आगया। उसने अपना रिवाल्वर अब अपने कोट की जेब में डाल लिया था। अब वह मेरी दया पर निर्भर था, और यह बात वह अच्छी तरह जानता था। फिर भी उसे कोई भय न था और यह उचित भी था।

“जतीन्द्रनाथ मुकर्जी,” उसने कहा, “यह है हमारे द्वन्द्व का अन्त, क्योंकि मैंने समाप्त कर दिया अपना जीवन, जीवन के उस अर्थ में जिसे हम दोनों समझते हैं। किस्मत ने हमें एक-दूसरे का दुश्मन बना दिया है। अनेक अवसर ऐसे आ चुके हैं जब किस्मत एक की हत्या दूसरे से करा सकती थी। वह सब समाप्त हो गया अब।”

“तुम इस तरह बात कर रहे हो मानो स्वेच्छा से अवकाश ग्रहण कर रहे हो— लेकिन तुम बचने की आशा कैसे करते हो?” मैंने पूछा।

“हर जगह तुम्हारी माँग है। तुम्हारी गिरफ्तारी के लिए

हर जगह पुरस्कार की घोषणाये की जा चुकी हैं। मेरा समय ज़रूर गुजर चुका है, लेकिन और लोग मैदान में हैं जो उस समय तक दम न लेंगे जब तक तुम्हें अदालत के सामने हाजिर न कर देंगे।”

“अपने संबध में बात करने के लिए मैं इस समय नहीं रुका हूँ।” उसने अन्यमनस्कता से उत्तर दिया। “मैं उस लड़की के बारे में बात करना चाहता हूँ।”

“राजकुमारी कुसुम के बारे में ?”

“हाँ !”

“उसके बारे में क्या कहना चाहते हो ?” आश्चर्यसूचक भाव से मंगल कहा। यद्यपि अभी कुछ देर पहले की बातें मुझे याद थीं।

“कोई मुजायका नहीं। मानव-जीवन के रहस्यों को तुम खूब समझते हो, मुकर्जी, यद्यपि तुम परदे के उस पार हो और मैं इस पार हूँ। तुम जानते हो कि हममें जो सबसे महान् हैं वे महान् हैं अपनी भूलों के कारण। वह लड़की मेरे बाद के जीवन की भूल है। उसके अन्दर ‘रोमांस’ है, एक अद्भुत भावना है—ईश्वर के लिए, मुकर्जी, ब्रुत की तरह बैठे मत रहो ! मनुष्य बनो, और जाहिर करो कि तुम मेरी बात समझ रहे हो ?”

स्मृतियाँ आईं मेरे मस्तिष्क में, और मैंने सिर हिलाया।

“समझ रहा हूँ,” मैंने कहा। “कहते चलो।”

“तब, ईश्वर के लिए, बतला दो उसे कि मैं कौन और क्या हूँ ? बतला दो उसे कि मेरी अनेक जीवित स्त्रियाँ हैं—वे स्त्रियाँ जिन्हें मैंने धोखा दिया है। बतला दो उसे कि अगर किसी पुलिसवाले का हाथ मेरे कन्धे पर पड़ गया तो मेरे प्राण किसी तरह नहीं बचेंगे—मुझे फाँसी दी जायगी कालीनगर में या पेरिस में। बतला दो उसे कि मैंने कैसा जीवन व्यतीत किया है अब तक। परदा फाड़कर उसे दिखा दो मेरा असली रूप। बतला दो उसे कि मैं हृदय से अपराधी हूँ—अपराध से प्रेम करने के कारण अपराधी बना हूँ।”

“मैं बतला दूँगा उसे जो कुछ तुमने कहा है,” मैंने वादा किया।

“खूब हो तुम !” धोड़ा मोड़कर, उत्तेजित स्वर में उसने कहा।

“मेरी ओर से नहीं अपनी ओर से कहना। सत्य तुमसे छिपा नहीं है। उसे पीड़ा पहुँचाओ, अगर जरूरत हो तो। दिखला दो उसे मेरा अँधेरा पहलू। एक मनुष्य की हैसियत से, मुकजी, दुग्मन की हैसियत से, कसम खाओ कि यह सब करोगे तुम !”

“मैं कसम खाना हूँ,” मैंने उत्तर दिया।

ये शब्द मेरे मुख से निकले ही थे कि उसका घोड़ा हवा से बातें करने लगा। मैंने हलकी-सी चीख सुनी कुसुम की। वह तुरन्त मेरे समीप भाई।

“आपने उन्हें जाने क्यों दिया मिस्टर मुकजी? मैं उनसे एक बात कहना चाहती थी।”

“तुम्हारे लिए वे एक सन्देश दे गये हैं,” मैंने उत्तर दिया, गम्भीर स्वर में।

शेरसिंह

उस दिन गुमगई के काफ़ इम्पीरियल में मैंने अपने मित्र सुप्रसिद्ध बीमा एजेंट अमृतलाल रोहित के साथ दोपहर का भोजन किया। इस दावत का आयोजन हुआ था हमारी साभ्रीदारो के एक बहुत बड़े मामले का काम समाप्त करने के लिए। रेस्त्राँ के एक दूर के कोने में हमारी मेज़ लगी हुई थी, इसलिए हम पूरी आज़ादी से बात कर सकते थे।

“अब तो आप बड़े धनी हो गये होंगे?” किंचित ईर्ष्यामिश्रित स्वर में रोहित ने कहा।

“काफ़ी धन है मेरे पास,” मैंने उत्तर दिया। “वास्तव में यह भी एक कारण है मेरे इस फ़ैसले का कि संसार के मूर्खों से टैक्स वसूल करना अब बन्द कर दूँगा।”

“अवकाश ग्रहण करने का इरादा तो नहीं है?,” रोहित ने धबराकर पूछा।

“बेशक, यही है इरादा,” मैंने कहा। “मैंने अपना सारा काम समाप्त कर दिया है, तमाम गुप्त संकेत जला डाले हैं, सारे गुप्त-स्थान बन्द कर दिये हैं और अपने कुल मित्रों और सहयोगियों से बिदा ले चुका हूँ। दलाल

से भी मैं बिदा ले चुका हूँ—बड़ा घुटा हुआ शैतान है वह और बड़ी सफलतापूर्वक एक जमाने से भलमनसाहत का ढोंग रचे हुए है। उस शैतान को अब नित्य नये मुक्किल मिलने लगे हैं—मेरा मतलब है असली मुक्किलों से। वैसा ही अद्भुत जीव है वह जैसे आप हैं।”

“जहाँ तक मेरा सवाल है,” मेरे साथी ने शराब पीते हुए कहा, “मेरी स्थिति कभी वैसी कठिन नहीं रही जैसी आपकी रही है। आपकी तरह मैंने कभी खतरे नहीं उठाये। कभी एक धेले की भी चोरी मैंने नहीं की। कभी किसी आदमी के ऊपर मैंने हाथ नहीं उठाया।”

मैं हँस पड़ा धीरे से। जो हो, आखिर दुनिया में ढोंगियों की जरूरत भी तो रहती है।

“जिन लोगों ने यह सब किया है उनके द्वारा कम से कम बीस लाख रुपये आपने पैदा किये हैं,” मैंने उसे याद दिलाया।

“यह धन मैंने अपनी बुद्धि और मेहनत से कमाया है,” विश्वास-सूचक भाव से उसने उत्तर दिया। “मेरे नाम और मेरी स्थिति के परदे में कितने ही ऐसे काम किये जा सके हैं जिनका किसी दूसरे तरीके से किया जाना असम्भव था। इसी मामले को ले लीजिए मिसाल के तौर पर क्या मेरी सहायता के बिना आप बीस लाख रुपये के मूल्य के जवाहिरात देश से बाहर भेज सकते थे?”

“यह तो मानी हुई बात है,” मैंने कहा। “ऐसे मामलों में आप उस्ताद है।”

रोहित न हाथ हिलाया।

“बिल्कुल मामूली था वह काम,” उसने कहा। “अपने बारे में बात कीजिए मित्र ! आप अभी जवान हैं और उत्तेजना आपके लिए जरूरी है उसी तरह जिस तरह प्रेमिका जरूरी है प्रेमी के लिए, शराब जरूरी है शराबी के लिए, जुआ जरूरी है जुआड़ी के लिए। कितना जबरदस्त पड़ाव मारा है आपन अभी—बीस लाख हड़प लिये और मजा यह कि कोई सुराग पीछे नहीं छोड़ा ! उस्तादी इसे कहते हैं। इन चीजों का स्थान आपके जीवन में कौन चीज लेगी।”

मैंने कंधे हिलाये, क्योंकि यही प्रश्न मैं भी अपने से कर चुका था।

“प्रयोगशाला के अनेक साधन हैं,” मैंने उत्तर दिया।

इस सम्बन्ध में मिस्टर रोहित को सन्देह था।

“यह सब तो ठीक है,” उसने कहा। “लेकिन अगर आपने अपने बचाव के वे सैकड़ों साधन नष्ट कर दिये हैं जिन्हें अद्भुत कौशल से आपने तैयार किया था, तो अगले चन्द सालों तक आपको बड़ी सावधानी से चलना पड़ेगा। कालीनगर और पेरिस आपको आसानी से वहीं भूलेंगे।

“अपनी बचत का भार मैं आपके ऊपर डालना चाहता हूँ। हाल के मुनाफ़े में आपका हिस्सा आपको आज मिल चुका है। एक लाख रुपये इस लिफ़ाफ़े में हैं। यह रकम पुरस्कार है उस जरूरी काम का जो अब आप करेंगे।”

रोहित की आँखें चमक उठीं।

“कठिन है वह काम?” उत्सुकता से उसने पूछा।

“नहीं,” मैंने आश्वासन दिया। “आपको ज़रा भी कष्ट न होगा। मेरा खयाल है कि यहाँ के एक अस्पताल का डाक्टर आपका मित्र है। नाम लेने की जरूरत नहीं।”

“यह किसी क्रूर सही है,” रोहित ने सतर्कतापूर्वक कहा।

“तब यह काम बड़ी आसानी से हो जायगा,” मैंने कहा। “जो थैला मैं कल आपके दफ़्तर में छोड़ आया था उसमें कुछ कपड़े, गहने, कागज़ात और अन्य मामूली चीज़ें हैं। मेरी कद-क्रामत का जो लावारिस मरीज़ अब उस अस्पताल में मरे, उसके शरीर पर मेरे वस्त्र हों और उसके पास मेरी वे चीज़ें निकलें जिनका चुनाव इस ढंग से किया गया है कि मेरी शिनाख़्त आसानी से की जा सके। मेरी मृत्यु के सम्बन्ध में अस्पताल के अधिकारी नगर के अधिकारियों को सूचना देंगे और नगर के अधिकारी कालीनगर की पुलिस को, पेरिस की पुलिस को और प्रेस को ख़बर कर देंगे। और आप भी यह ख़बर फैलाने में सहायता देंगे कि एक प्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय अपराधी का देहान्त हो गया।”

“इसमें मुझे कोई कठिनाई दिखाई नहीं देती,” मेरे साथी ने स्वीकार किया।

“कोई कठिनाई है ही नहीं इसमें।”

“और इसके बाद ?”

इनकारसूचक भाव से मैंने सिर हिलाया।

“संसार में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जिसे मैं अपनी योजना बतलाऊँगा,” मैंने कहा। “और मुझे कोई जल्दी भी नहीं है। मैं समझता हूँ कि मेरी इस बात से आप सहमत होंगे कि अभी कुछ समय तक मैं यहाँ बिना इस भय के रह सकता हूँ कि कोई मुझे पहचान लेगा।”

“यह बिल्कुल सही है,” अपनी कुर्सी पर पीछे उठँगकर और मेरी ओर विचारमग्न भाव से देखते हुए रोहित ने कहा, “पार्क में मैंने आपको देखा और पहचान नहीं सका, यहाँ दरवाजे पर भी मैंने आपको देखा और पहचान नहीं सका। और जब आप मुझसे बोले तब भी मैं आपको पहचान नहीं सका। आप एक सद्गुण, शरीफ़, रसिक और वृद्ध योरपीय मालूम होते हैं। कोई बात आपमें ऐसी नहीं है जिससे आप हिन्दुस्तानी मालूम हों मेरा तो खयाल है, मिस्टर शेरसिंह, कि आज दिन इस संसार में कोई ऐसे कलाकार नहीं जो वेष-परिवर्तन में आपका मुकाबला कर सकें।”

“मैं यह नहीं कहूँगा मिस्टर रोहित,” मैंने उत्तर दिया, “कि आप मेरी बेजा तारीफ़ कर रहे हैं, क्योंकि आपने जो कुछ कहा है वह सत्य है। अच्छी बात है, मैं इस समय जिस तरह हूँ उसी तरह अपना शेष जीवन व्यतीत करूँगा। एक सप्ताह के अन्दर मैं यहाँ से चला जाऊँगा। मुमकिन है कि अब आप मुझे कभी न देखें या मेरे बारे में कभी कुछ न सुनें। इसके विपरीत यह भी सम्भव है कि मुझे फिर प्रेरणा हो। इसलिए इस समय मैं कोई वादा नहीं करना चाहता, कोई वक्तव्य नहीं देना चाहता।”

“मैं यह जानने के लिए उत्सुक रहूँगा कि आप कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं,” रोहित ने कहा।

मैंने सिर हिलाया, और वेटर को बुलाकर बिल लाने का आदेश दिया।

“मुझे इच्छा हो रही है,” मैंने कहा, “कि दुनिया के परदे से गायब हो जाऊँ। चलिए लारेंस गार्डेन चलें और सुन्दर स्त्रियों की छवि देखें।”

एक पखवारे के बाद एक दर्जन समाचार-पत्रों में मैंने अपनी

मृत्यु की सूचनाये देखीं। कई ब्रिटिश, फ्रेंच और भारतीय पत्रों ने टीका-टिप्पणी भी की। 'ली जॉर्नल' ने लिखा कि शेरसिंह जैसे दक्ष, अद्भुत तथा भयानक अपराधी के देहावसान की सूचना पाकर फ्रांस और भारत दोनों शान्ति की साँस लेंगे। 'डेली टेलीग्राफ' ने भारतीय पुलिस को इस बात के लिए दोषी ठहराया कि उसने मुझे मेरे इच्छानुसार संसार से बिदा हो जाने दिया। 'इंडियन टाइम्स' ने मेरे ऊपर एक लम्बा सम्पादकीय लेख प्रकाशित किया, और यही किया, 'नेशनल मिरर' ने भी। केवल एक भारतीय पत्र ने एक ऐसी घटना का जिक्र किया जिससे मेरे रक्त में उन्माद प्रवाहित होने लगा—एक ऐसा उन्माद, एक ऐसी दुर्बलता, जिसकी चर्चा करना भी मुझे पसन्द नहीं। उसने लिखा कि मेरे दाह-संस्कार के दिन एक भारतीय महिला ने तार-द्वारा गुमगई के एक प्रसिद्ध माली को आदेश दिया था कि वह मेरी चिता पर चढ़ाने के लिए अस्पताल में फूल और हार भेज दे। फूलों और हारों के साथ एक कार्ड था जिस पर किसी निरर्थक सन्देश के बजाय केवल एक शब्द अंकित था—'कुसुम !' यही शब्द तो मुझे पसन्द था इन दिनों।

सावित्री

सख्त गर्मी और यात्रा की उत्कट इच्छा के कारण हम गंगोरी पहुँचे थे। दिन का तीसरा पहर था और हम हिमालियन क्लब के ग्रामदे में बैठे हुए उस मनोरम घाटी की सुन्दर छवि और आकाश से आर्तें करनेवाले हिमाच्छादित पर्वतराज की अद्भुत शोभा अवलोकन कर रहे थे। मन्द, धधुर भरी वह रहा था, और वृक्ष मस्ती से झूम रहे थे। भाँति-भाँति के सुकोमल पुष्प भीनी-भीनी सुगंध बिखेर रहे थे। कैसा उल्लास, कैसा आनन्द, कैसी मस्ती भरी थी उस स्वर्गीय वातावरण में। आनन्द हिलोरें ले रहा था मेरे मन में, सन्तोष प्रवाहित था मेरे कण-कण में। मेरे पति खोये हुए-से बैठे थे मेरी बगल में। क्लब का मन्त्री उधर आ निकला। अर्धचेतना से जागकर जनीन्द्र ने उससे शतरंज खेलने का प्रस्ताव किया।

“शतरंज मैं बहुत कम जानता हूँ मिस्टर मुर्जी,” खेदसूचक स्वर

में मन्त्री ने कहा। “यहाँ मिस्टर पाल मेडोज नामक एक योरपियन सज्जन रहते हैं। देखिए, उधर पेड़ों की मुर्मुर में वे टहल रहे हैं। वे शतरंज के शातिर खेलाड़ी हैं, और अच्छे खिलाड़ियों की तलाश में रहते हैं। आप चाहे तो मैं उनसे कहूँ।”

“धन्यवाद,” जतीन्द्र ने उत्साहपूर्ण स्वर में कहा। “जरूर कहिए उनसे।”

मन्त्री उस व्यक्ति के पास गया। वह दुबला-पतला था, उसके बाल सफ़ेद थे और उसकी मुखाकृति साफ़ और आकर्षक थी। सर्ज का एक बढ़िया सूट वह धारण किये हुए था और पाइप पी रहा था। स्पष्टतः उसने मन्त्री का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और वह तुरन्त आ पहुँचा। मन्त्री ने उससे हमारा परिचय कराया और हम एक एकान्त कमरे में पहुँचे। बिना बिछी, मुहरे लगे और खेल शुरू हुआ। सहसा मैं धीरे से चीख उठी। जतीन्द्र मूर्ति बन गये। हम पहचान गये शेरसिंह को। हम दोनों उसे देख रहे थे और वह हमें देख रहा था।

“बड़ा मनोरंजक संयोग है यह,” शेरसिंह ने कहा मुस्कराकर, किन्तु उसकी मुस्कान में अब पहले की तरह व्यंग न था। “हमारा परिचय, मिस्टर मुकर्जी; आरम्भ हुआ था देवीगंज में इसी तरह शतरंज के खेल के साथ।”

“हमने तो सुना था कि तुम्हारा देहान्त हो गया,” मैंने कहा।

एक दीर्घ-निश्वास खींचा उसने।

“मैंने बड़ी तैयारियाँ की थीं यह खबर फैलाने के लिए,” उसने कहा। “मेरे लिए यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि आज दो ऐसे व्यक्तियों से मेरी भेंट हो गई जो हर हालत में मुझे पहचान लेने की क्षमता रखते हैं। खैर, कोई हर्ज नहीं, चार वर्ष तो मैंने इस तरह आनन्दपूर्वक बिता ही दिये।”

“इतना समय बीत गया?” मैंने धीरे से कहा, क्योंकि जतीन्द्र अब भी बोलने का कोई लक्षण प्रकट नहीं कर रहे थे।

“चार साल और कुछ महीने,” शेरसिंह ने कहा। “एक ऐसे जीवन के जिसका अन्त बहुत पहले हो जाना चाहिए था, इतना समय निकाल

लेना मामूली बात नहीं है। यहाँ मेरा एक सुन्दर बँगला है, एक छोटी-सी कृषिशाला है और एक सुन्दर बाग है, जिसमें मैंने तरह-तरह के योरोपीय और भारतीय फूलों के पौदे उगाये हैं। करीब ही है मेरा घर, क्लब के बाहर से दिखाई देता है। यहाँ मैं अध्ययन करता हूँ, शतरंज खेलता हूँ, और पर्वत पर घूमता हूँ। मेरा सेवक यहीं का निवासी है, और कुशल पर्वतारोही है। उसके साथ कहीं भी जा सकने के योग्य अब मैं हो गया हूँ।”

“अब क्या होना चाहिए?” जतीन्द्र ने धीरे से कहा।

“यह आपके ऊपर निर्भर है,” जेर्गमह ने उत्तर दिया।

मैंने अपने पति का हाथ पकड़ लिया और गौर से उनके चेहरे की ओर देखा। यह स्पष्ट था कि इस विकट समस्या के महत्त्व को वे अच्छी तरह समझ रहे थे। कितने सुन्दर थे पिछले चार वर्ष! स्वदेश के अतिरिक्त, हमने मिस्र, इटली, फ्रांस, जर्मनी और इंग्लैंड में विस्तृत भ्रमण किया था और बाकी समय अपने देहातवाले घर में व्यतीत किया था। मैं अपने दोनों बच्चों की देख-रेख करती थी और जतीन्द्र अपनी जायदाद और कृषिशाला की। जिन बन्धनों से वे अपने पुराने पेशे से सम्बद्ध थे, वे शिथिल हो गये थे; लेकिन मैं जानती थी कि इस समय उनका भस्तिष्क किस तरह काम कर रहा था। यहाँ उनके सामने एक ऐसा व्यक्ति बैठा था जो एक भयानक अपराधी था, जिसे सजा दिलाने का वे प्रण कर चुके थे और जिसका न्याय, नैतिकता और नागरिकता की प्रत्येक दृष्टि से दंडित किया जाना परमावश्यक था। किन्तु मैं यह भी जानती थी कि किसी विशेष कारण से उन्हें भी इस कर्त्तव्य से उतनी ही घृणा थी जितनी उससे उनके कारण मुझे थी। गहन चिन्ता का कुहासा सहसा जतीन्द्र के चेहरे से हट गया। उन्होंने फ़ैसला कर डाला। मैं उसे सुनने के लिए चिन्तित हो उठी।

“शेरसिंह,” उन्होंने कहा, “तुम्हें मौक़ा मिलेगा। मेरा कर्त्तव्य तुम अच्छी तरह समझते हो। और तुम यह भी जानते हो कि मैं एक ऐसा आदमी हूँ जो आम तौर से अपने कर्त्तव्य के पालन करने की कोशिश करता है। फिर भी मुझे इस बात का विश्वास है कि एक

अपराधी की हैसियत से तुम्हारा जीवन समाप्त हो गया, और मेरी व्यक्तिगत इच्छा यही है कि मैं तुम्हारी आजादी में खलल न डालूँ। आओ, हम इस मामले का फैसला किस्मत पर छोड़ दें। इस खेल में हम दोनों की योग्यता बिलकुल एक-सी है। किस्मत ही ने हम दोनों की आज इस तरह मुठभेड़ कराई है। आओ, मेरी खामोशी और तुम्हारी आजादी की बाज़ियाँ लगाकर हम एक बाज़ी खेलें।”

मैंने देखा कि शेरसिंह की आँखें चमक उठीं और मैं समझ गई कि यह प्रस्ताव उसे पसन्द आया।

“आपका यही मतलब है न,” उसने कहा, “कि अगर मैं जीत जाऊँगा, तो बाकी जीवन भर आप मेरी आजादी में खलल न डालेंगे और अगर हार जाऊँगा तो मुझे अपने दुष्कृत्यों का परिणाम भुगतना पड़ेगा।”

“अगर तुम हार जाओगे,” जतीन्द्र ने कहा, “तो मैं एक तार मिस्टर कौल के पास भेज दूँगा और दूसरा फ्रांस के सर्वोच्च पुलिस अफ़सर के पास।”

“तय हो गईं शर्तें” शेरसिंह ने कहा। “आपका अहित अन्तःकरण वनाम मेरी स्वतन्त्रता।”

मैच शुरू हुआ। मोहरे बढ़ने और पिटने लगे। शेरसिंह की बाज़ी दबी और दबती ही चली गई। मेरा हृदय काँप उठा। जतीन्द्र उठकर गुसलखाने में चले गये। शेरसिंह का फ़र्जी पिट रहा था और उसके बचने की कोई सूरत नज़र नहीं आती थी।

“बे यहाँ नहीं है,” मैंने धीरे से कहा। “बदल लो मोहरे और निकाल लो बचत की सूरत।”

शेरसिंह ने मेरी ओर इस तरह देखा मानो मैंने कोई अपमान-जमक बात कह दी हो।

“खेल इस तरह नहीं खेला जाता,” उसने शान्त भाव से कहा।

वे वापस आये। शेरसिंह का फ़र्जी पिट गया। लेकिन एकाएक जतीन्द्र का खेल गिरने लगा। शेरसिंह ने शह लगाई। जतीन्द्र ने

फर्जी का अर्दब लगाया । फर्जी कट गया । शेरसिंह ने दूसरी शह लगाई । मात हो गई ।

“ऐसा रही खेल मैंने कभी नहीं खेला,” जतीन्द्र ने कहा । “आपकी जीत रही, मिस्टर मेडोज़ !

पसीने की बूंदें शेरसिंह के मत्थे पर उभर आई थीं ।

“इस जीत के लिए मैं कृतज्ञ हूँ,” शान्त स्वर में उसने कहा । “लेकिन जीतने की मुझे आशा नहीं थी ।”

“मैं और सावित्री आज ही यहाँ से चले जायेंगे,” जतीन्द्र ने कहा ।

“इसकी ज़रूरत नहीं,” शेरसिंह ने तुरन्त कहा । “कल मैं पर्वता-रोहण शुरू करूँगा और शायद एक हफ़्ता या दस दिन के बाद लौटूँगा । मैं अनुरोध करता हूँ कि आप लोग यही रुके रहें । क्या मैं तुमसे एक मिनट बात कर सकता हूँ सावित्री ?”

जतीन्द्र कमरे से बाहर चले गये । उन्होंने न तो फिर शेरसिंह से बात की और न उसकी ओर देखा । जो प्रश्न शेरसिंह की ज़बान से निकलने को था उसका उत्तर मैंने पहले ही दे दिया ।

“कुसुम अच्छी तरह है,” मैंने कहा । “वह अभी तक अविवाहित है ।”

“मुझे यह सुनकर दुख हुआ कि वह अविवाहित है,” उसने कहा । “हालाँकि इस संसार का कोई पुरुष उसके योग्य नहीं है । मैं तुम्हें एक काम सौंपना चाहता हूँ । अगर कभी मेरे इधर के जीवन का भेद खुले, तो मैं चाहता हूँ कि वह जान ले यह बात भी ।”

उसने अपनी जेब से पत्रों का एक सुन्दर केस निकाला । उस केस में केवल एक मुड़ा-मुड़ाया कार्ड था जिस पर कुसुम की हस्त-लिपि में उसी का नाम लिखा हुआ था ।

“जिस तरह मैंने अपने जीवन की रूप-रेखा तैयार की थी,” पहले ही की तरह व्यंगसूचक ठंग से मुस्कराकर उसने कहा, “उसी तरह मैंने अपनी मृत्यु की योजना भी तैयार की । तब मुझे ज्ञात हुआ कि मेरी चिन्ता पर चढ़ाने के लिए राजकुमारी कुसुम ने फूल भेजे हैं और मेरा हृदय उस लज्जा से भर गया जो उस व्यक्ति को होती है जो

कांडे भद्दा काम कर डालता है। जो प्रायश्चित्त में कर सकता था मैंने किया। पूरी तरह से सुरक्षित हो जाने पर भी मैंने अपना जीवन मूर्खतापूर्ण ढंग से खतरे में डाल दिया। मैं अपने दाहसंस्कार में सम्मिलित हुआ। अपनी चित्ता से एक फूल और यह कार्ड मैं चुरा लाया; अगर कभी मेरी मृत्यु का भेद उसे ज्ञात हो," दरवाजे की ओर मुड़कर उसने कहा, "तो मैं चाहता हूँ कि यह बात भी उसे मालूम हो जाय। शायद इसे वह प्रायश्चित्त समझे।"

मैंने अपना हाथ उसकी बांह पर रख दिया। मंरी वाणी जैसे लोप हो गई। जब मंभे वे शब्द मिले जो मैं कहना चाहती थी तो वह चला गया था।

शेरसिंह को जो अन्तिम झलक हम मिला वह अपने ढंग से रूपक-मय थी। दूसरे दिन प्रातःकाल जब हम क्लब के सामने टहल रहे थे, तो नदी के उस पार पहाड़ पर जानवाले मार्ग पर हमें दो मनुष्य सुव्यवस्थित गति से चलते हुए दृष्टिगोचर हुए। उनकी पीठों पर थैले थे और उनके हाथों में लम्बे डंडे। वे उस दूरी में तीर्थयात्री से प्रतीत होते थे।

"देखिए, मिस्टर मंडोज़ अवतारोहण कर रहे हैं," उनकी ओर इशारा करके क्लब के मन्त्री ने कहा। "लोग कहते हैं कि उन्होंने श्वर की सबसे ऊँची चोटी पर चढ़ने का इरादा कर लिया है। यहाँ के मार्ग-दर्शकों का कहना भी यही है कि उनका यह निश्चय मूर्खतापूर्ण है। आधुनिक यन्त्रों से सज्जित व्यक्ति भी जहाँ आज तक नहीं पहुँच सके वहाँ ये हज़रत कैसे पहुँचेंगे?"

उन दो विचित्र मूर्तियों को मैं देखती ही रह गई। बिदा देने के भाव से मैंने हाथ हिलाया। लेकिन शेरसिंह ने एक बार भी मुड़कर पीछे नहीं ताका।

